



**SAFALTA IAS**

"We Discover Your Potential"

POWERED BY



i-Magnus

# हिंदी मध्यम

# MPPSC MAINS

## FULL NOTES



## PAPER-I PART-A UNIT-I

# प्राचीन भारत का इतिहास



@safaltaias



[www.safaltaias.com](http://www.safaltaias.com)



By:-Aditya Sir



## प्रारंभिक ज्ञानकारी

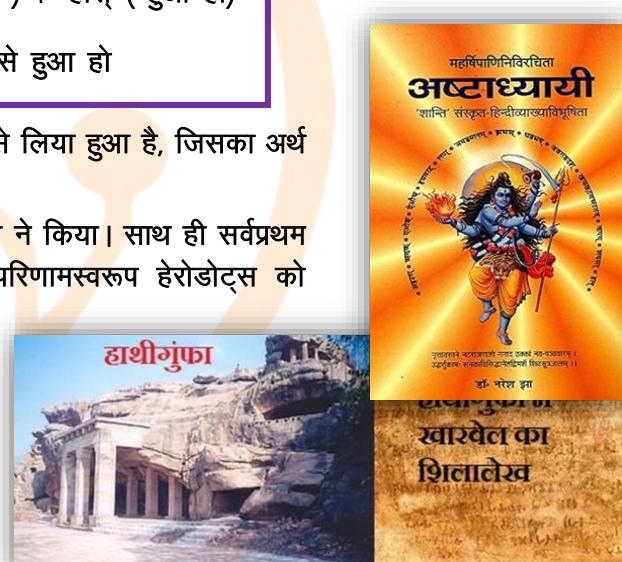
इतिहास – इति ( निश्चित रूप से ) + हास् ( हुआ हो )

→ ऐसा जो निश्चित रूप से हुआ हो

- **History - History** (हिस्ट्री) शब्द ग्रीक शब्द हिस्टोरिया से लिया हुआ है, जिसका अर्थ होता है – 'खोजना या जानना'।
- प्रथम बार हिस्ट्री शब्द का प्रयोग ग्रीक इतिहासकार हेरोडोटस ने किया। साथ ही सर्वप्रथम इतिहास को क्रमबद्ध तरीके से हेरोडोटस ने ही लिखा, परिणामस्वरूप हेरोडोटस को इतिहास का पिता कहा जाता है।

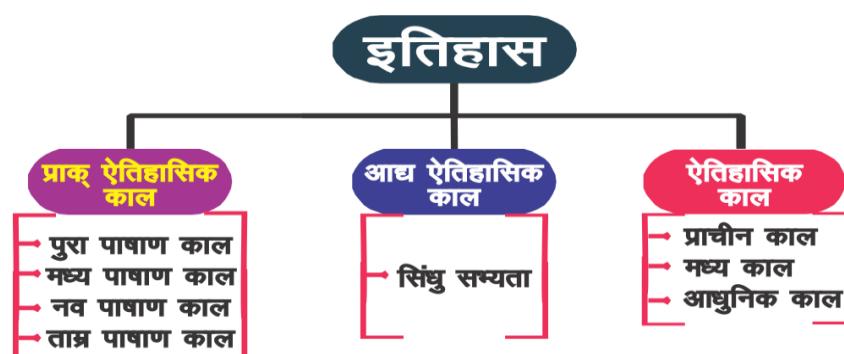
### इतिहास की परिभाषाएं –

- ✓ इतिहास अतीत की घटनाओं का वर्तमान में क्रमबद्ध तरीके से किया गया अध्ययन इतिहास कहलाता है।
- ✓ प्रो.घाटे के अनुसार – “इतिहास मानव जाति के भूत का वैज्ञानिक लेखा-जोखा है।”
- ✓ जी.आर. एल्टन – इतिहास को अतीत तथा वर्तमान के बीच सेतु के रूप में परिभाषित करते हैं।”
- ✓ ई.एच.कार के अनुसार – “प्रत्येक इतिहास विचार का इतिहास होता है और इतिहासकार के मन में उन विचारों का पुनर्निर्माण होता है, जिनका इतिहास अध्ययन करता है।



### इतिहास का विभाजन

इतिहास के विभाजन का आधार लिपि (Script) को माना गया है। इस आधार पर इतिहास को तीन भागों में बांटा गया है

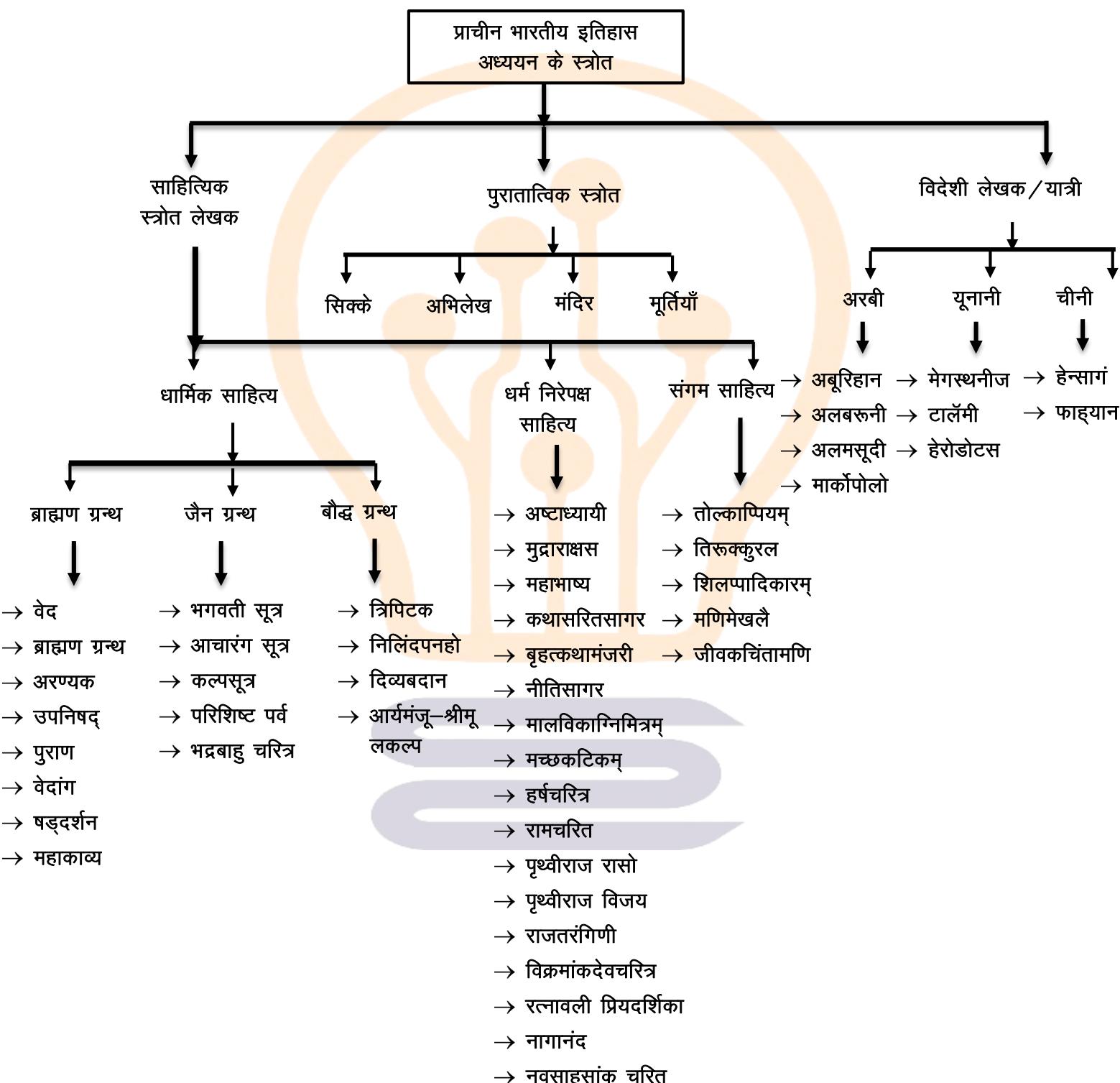


1. **प्रागैतिहासिक काल** – मानव विकास का वह काल है जिस काल में मनुष्य ने लिपि का आविष्कार नहीं किया तथा इसके अन्तर्गत हम पाषाणकाल (Stone age) का अध्ययन करते हैं।



2. आद्यऐतिहासिक काल – मानव विकास का वह काल है, जिस काल में मनुष्य ने लिपि का आविष्कार तो कर लिया था, किन्तु आज हम उस लिपि को पढ़ने में समर्थ नहीं हैं। इसके अंतर्गत हम सिन्धु घाटी सभ्यता का अध्ययन करते हैं।
3. ऐतिहासिक काल— मानव विकास का वह काल जिस काल में मनुष्य ने लिपि का विकास कर लिया था तथा उस लिपि को आज हम पढ़ने में भी समर्थ हैं। इसके अन्तर्गत हम 6वीं शताब्दी ई. पू. से आधुनिक काल के इतिहास का अध्ययन करते हैं।

### प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के स्रोत

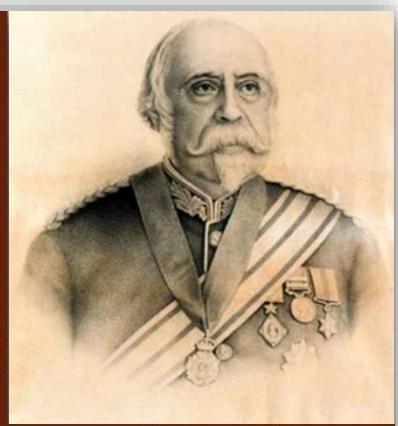


- भारत के लिए सर्वप्रथम भारतवर्ष नाम – पाणिनिकृत अष्टाध्यायी में मिलता है।
- किसी अभिलेख में सर्वप्रथम भारतवर्ष खारवेल के हाथीगुफा अभिलेख में मिलता है।

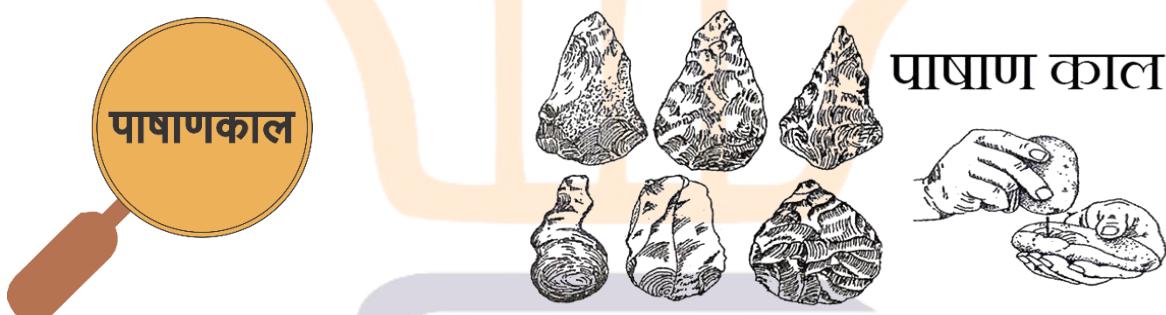
### भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

परिचय – भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) की स्थापना 1861 में तत्कालीन वायसरॉय लार्ड कैनिंग के समय सर एलेक्जेंडर कनिंघम के प्रयासों से हुई थी।

- पुरातत्व के क्षेत्र में इनके अविस्मरणीय योगदान के कारण ही इन्हें 'भारतीय पुरातत्व का जनक' कहा जाता है।
- ASI पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय के अधीन कार्य करता है।
- ASI के प्रथम महानिदेशक सर एलेक्जेंडर कनिंघम थे। जबकि पहले भारतीय महानिदेशक 'राय बहादुर दयाराम साहनी' थे।
- भारतीय पुरातत्व विभाग की स्थापना का श्रेय लार्ड कर्जन के समय (प्राचीन स्मारक परिरक्षण अधिनियम 1904) को दिया जाता है।
- हड्ड्या और मोहनजोदहो के उत्खनन के समय ASI के महानिदेशक सर जॉन मॉर्शल थे।



सर अलेक्जेंडर कनिंघम



- मानव द्वारा जब पत्थर का उपयोग उपकरण के रूप में किया।



## पाषाण काल (25 लाख ई. पूर्व)

- पाषाण काल का विभाजन पत्थरों के औजारों के स्वरूप में होने वाले परिवर्तन के आधार पर तीन भागों में किया गया है।
- 1) पुरापाषाण काल (**Paleolithic**) – (25 लाख – 10 हजार ई. पूर्व)
- 2) मध्यपाषाण काल (**Mesolithic**) – (10 हजार – 7 हजार ई. पूर्व)
- 3) नवपाषाण काल (**Neolithic**) (7 हजार – 3 हजार ई. पूर्व)

### 1. पुरापाषाण काल (**Paleolithic**) – शिकार

- पेलियोलिथिक ग्रीक भाषा का शब्द है जिसमें पेलियो का अर्थ है प्राचीन (पुरा) एवं लिथेस का अर्थ है पाषाण अर्थात् पुरापाषाण।
- इस काल में मानव शिकार, मछली पकड़ना तथा भोजन एवं फलों का संग्रहण करता था।
- वर्तमान मनुष्य के शारीरिक अवशेष प्राप्त नहीं हुए हैं।
- इस समय के मनुष्य नेग्रीटो जाति से संबंधित था।
- 1870 ई. में लार्नेट ने पुरापाषाण काल को तीन भागों में बाँटा गया है –

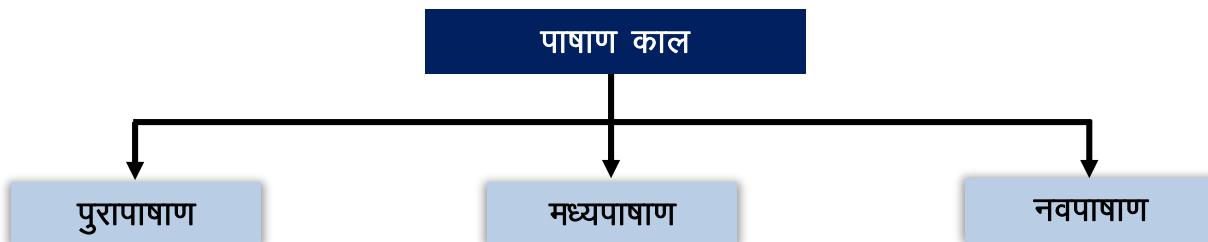
  - निम्नपुरापाषाण काल – 5 लाख से 50 हजार ईसा पूर्व – हिम युग, भीमबेटका।
  - मध्यपुरापाषाण काल – 50 हजार से 40 हजार ईसा पूर्व – फलक, बेधनी, खुरननी, खज्जिरन।
  - उच्चपुरापाषाण काल – 40 हजार से 10 हजार ईसा पूर्व – होमोसेपियस मानव का उदय चकमक पत्थर।

#### ➤ निम्नपुरापाषाण काल –

- इस काल में मनुष्य क्वार्टजाइट पत्थरों (स्फटिक पत्थर) का उपयोग करता था।
- इस काल में भारत में उपकरण के आधार पर दो संस्कृतियाँ विकसित हुई – चापर–चॉपिंग पेबुल संस्कृति तथा हेंड–एक्स संस्कृति।
- ✓ चापर–चॉपिंग पेबुल संस्कृति (उत्तर की संस्कृति) – इसके उपकरण पंजाब (पाकिस्तान) की सोहन नदी घाटी तथा मिर्जापुर की बेलन घाटी (विन्ध्यन) से प्राप्त हुए।
- इसलिए इसे सोहन संस्कृति भी कहते हैं।
- Note* – सोहन संस्कृति से प्राप्त उपकरणों की खोज के पितामह – डी.एन. बाडिया (1928)
- ✓ हेंड–एक्स संस्कृति (दक्षिण की संस्कृति) –
- सबसे पहले रॉबर्ट ब्रूशफुट ने 1863 में मद्रास के पल्लवरम नामक स्थान से एक हाथ की कुल्हाड़ी (**hand axe**) प्राप्त की।
- इसी प्रकार 1864 में विलियम किंग द्वारा मद्रास के अतिरमपक्कम नामक स्थान से कुल्हाड़ी के साक्ष्य प्राप्त किए गए।
- हेन्ड-एक्स संस्कृति को “मद्रासी संस्कृति” भी कहते हैं।
- 1982 में अरुण सोनकिया ने म.प्र. के सीहोर जिले के हथनौरा नामक स्थान से मानव की खोपड़ी का साक्ष्य प्राप्त किया है, जिसे नर्मदा मानव कहा।

*Note* - हिमाचल प्रदेश के चौतरा से चापर – चापिंग पेबुल के साथ–साथ हेण्ड-एक्स संस्कृति के साक्ष्य प्राप्त होते हैं, इसलिए चौतरा को उत्तर व दक्षिण भारत के निम्न पुरापाषाण काल की संस्कृति का मिलन स्थल माना गया है





### ► मध्यपुरापाषाण काल –

- इस काल में जैस्पर, चर्ट तथा फिलंट के पत्थर प्रयुक्त होने लगे, जिनसे बने उपकरण कलीवर, स्क्रेपर प्वाइंट, ब्यूरिन आदि।
- पत्थर से तोड़कर फलक नामक औजार बनाया गया।
- इसलिए सांकलिया महोदय ने इसे फलक संस्कृति की संज्ञा दी।
- एच.डी. सांकलिया द्वारा महाराष्ट्र में स्थित नेवासा को इस संस्कृति का प्रारूप स्थल कहा है।

### ► उच्चपुरापाषाण काल –

- इस काल के उपकरण ब्लेड प्रकार के थे।
- इस काल में चकमक पत्थर उद्योग की स्थापना हुई, मानव संभवतः आग से परिचित हुआ।
- इस काल को ब्लेड-ब्यूरिन संस्कृति भी कहते हैं।
- होमोसेपियन्स मानव का उदय इसी काल में हुआ।
- मिर्जापुर क्षेत्र के इलाहाबाद स्थित बेलन घाटी के लोहदा नाला से इस काल की अस्थि निर्मित मातृदेवी की प्रतिमा प्राप्त हुई जो कौशम्बी संग्रहालय में रखी हुई है।
- नक्काशी तथा चित्रकारी दोनों कलाओं का इस काल में विकास हुआ।

**Note** – पुरापाषाणकालीन मनुष्य द्वारा की गई चित्रकारी तथा निवास के साक्ष्य म.प्र. के रायसेन जिले के भीमबेटका नामक स्थान से प्राप्त होते हैं, जिसकी खोज 1958 में विष्णु श्रीधर वाकणकर द्वारा की गई।

- भीमबेटका स्थल से प्राकृतिहासिक से लेकर ताप्रपाषाण काल तक के चित्र प्राप्त होते हैं।





## 2. मध्यपाषाण काल (Mesolithic) –

- इस काल में छोटे पत्थरों के औजार बनाए गये, इसलिए इसे लघु पाषाण काल या माइक्रोलिथिक ऐज कहा जाता है।
- इस काल की सबसे पहले जानकारी सी.एल.कार्लाइल ने दी, उन्होंने 1867 में विध्य क्षेत्र से पहला लघुपाषाण उपकरण प्राप्त किया।
- इस काल में व्यक्ति ने पशुपालन प्रारंभ किया एवं सर्वप्रथम कुत्ते को पालतू बनाया गया।
- इस काल में मानव ने तीर-कमान का आविष्कार किया।
- इस काल में मानव द्वारा अंत्येष्टि संस्कार प्रारंभ किया गया।
- पशुपालन का प्रथम साक्ष्य म.प्र. के होशंगाबाद जिले के आदमगढ़ तथा राजस्थान के बागोर से प्राप्त होता है।

**Note** – उ.प्र. के 'सराय नाहरराय' से मानव कंकाल तथा 'हदहा' से स्त्री पुरुष को एक साथ दफनाने के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

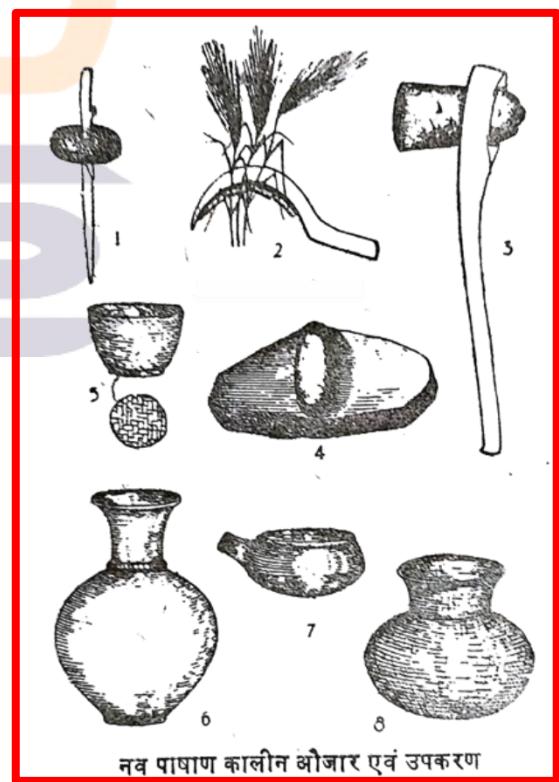
- महदहा** – प्रतापगढ़ (उत्तरप्रदेश) – हड्डी के उपकरणों के साक्ष्य प्राप्त हुए।
- दमदमा** – प्रतापगढ़ (उत्तरप्रदेश) – युगल व एकल शवाधान एवं हड्डियों के साक्ष्य प्राप्त हुए।
- सरायनाहरराय** – प्रतापगढ़ (उत्तरप्रदेश) – मानव युद्ध के प्रथम साक्ष्य और अंत्येष्टि संस्कार के साक्ष्य प्राप्त हुए।

## 3. नवपाषाण काल (Neolithic) –

- इस काल से संबंधित पुरातात्त्विक खोज डॉ. प्राइम रोज ने शुरू की।
- नवपाषाण काल में कृषि की खोज की गयी।
- उन्होंने 1842 में कर्नाटक के लिंगसुगर नामक स्थान से नवपाषाणकालीन उपकरण खोजे।
- बाद में 1860 में ली मेसुरियर ने उत्तरप्रदेश की टोंस नदी घाटी से कई नवपाषाणकालीन उपकरण प्राप्त हुए।
- पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत के मेहरगढ़ नामक स्थान से कृषि (गेंहू एवं जौ) के प्राचीनतम साक्ष्य मिले हैं।
- पॉलिशदार पत्थर के औजार का उपयोग।

**Note** – नवीन खोजों के अनुसार – कृषि का प्राचीनतम साक्ष्य उत्तरप्रदेश के संतकबीर नगर के लहुरादेव से प्राप्त हुआ है, यहाँ चावल की कृषि के साक्ष्य 9 हजार से 8 हजार ई. पू. तक के प्राप्त हुए हैं।

- इस काल में पहिए और आग का आविष्कार किया गया।
- इलाहाबाद के कोल्डीहवा नामक स्थान से 'चावल या धान की खेती' के साक्ष्य मिले हैं।
- स्थाई जीवन तथा बस्तियों का निर्माण प्रारंभ हुआ।
- कृषि उत्पादों को रखने के लिए मिट्टी के बर्तन बनाए गए।
- कश्मीर के बुर्जहोम नामक स्थान से मानव के साथ कुत्ते को दफनाने तथा गर्तावास के साक्ष्य प्राप्त हुए।
- कश्मीर के गुफकराल से भी गर्तावास के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- इसी काल में कर्नाटक के संगनकल्लू तथा पिकलीहल से राख के टीले मिले हैं।
- बिहार के चिरांद नामक स्थान से हड्डी के उपकरण (हिरण के सिंगों से निर्मित) प्राप्त हुए।
- सर्वप्रथम इसी काल में कुंभकारी दृष्टिगोचर होती है।





पात्र परम्परा	काल
1. काले-लाल चित्रित मृदभाण्ड (BRPW)	सिंधु घाटी सभ्यता
2. गेरुवर्णी मृदभाण्ड (OCP)	ऋग्वैदिक काल
3. चित्रित – धूसर मृदभाण्ड (PGW)	उत्तर वैदिक काल
4. उत्तरी काले पॉलिसदार मृदभाण्ड (NBPW)	महाजनपदकाल

### ✓ मृदभाण्ड

- विश्व में सर्वप्रथम मृदभाण्ड की खोज फिलेण्डर महोदय ने की।
- भारत में सर्वप्रथम मृदभाण्ड की खोज बी.बी. लाल ने की।
- भारत में मृदभाण्ड के प्राचीनतम साक्ष्य चौपानीमाण्डो (इलाहाबाद, उ.प्र.) से प्राप्त हुए हैं।
- सर्वाधिक मृदभाण्ड के साक्ष्य हस्तिनापुर (मेरठ, उ.प्र.) से प्राप्त हुए हैं।
- मृदभाण्ड का काल निर्धारण थर्मोल्युमिनेंस विधि द्वारा किया जाता है।

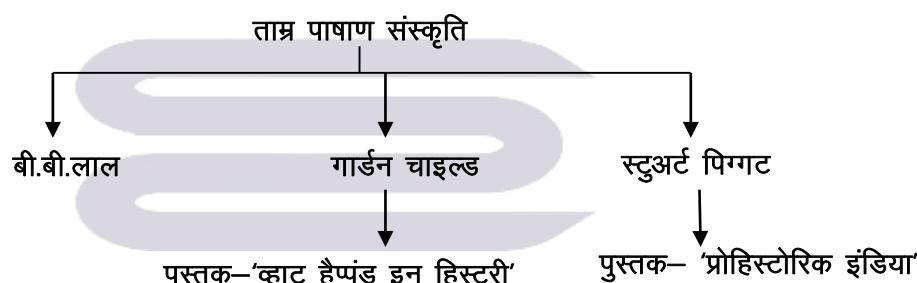
गैरिक मृदभाण्ड, चित्रित धूसर मृदभाण्ड तथा काले चमकीले मृदभाण्ड



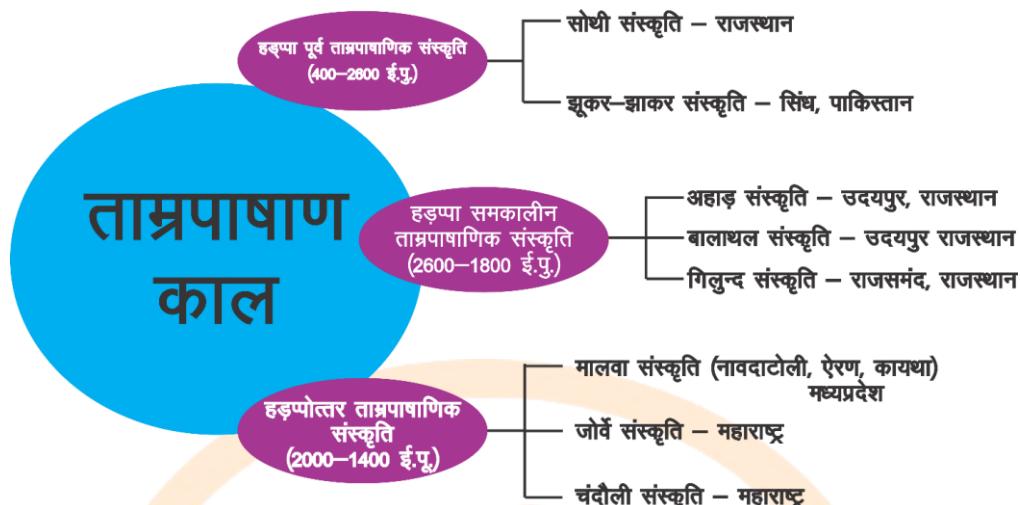
### ताम्र पाषाण काल



### ताम्र पाषाण काल



- मानव द्वारा प्रयुक्त प्रथम धातु – तांबा
- यह ग्रामीण संस्कृति थी।
- मनुष्य द्वारा ग्रामों का विकास।
- वस्त्र निर्माण से परिचित।
- सबसे बड़ी ताँबे की निधि – मध्यप्रदेश के गुगेरिया (बालाघाट)
- मृदभाण्ड – BRW - Black Red Ware (काले लाल मृदभाण्ड)
- मकान निर्माण में मिट्टी एवं प्रस्तर का प्रयोग।



## 1. हड्ड्या पूर्व ताम्रपाषाणिक संस्कृति (400–2600 BC) –

- सोथी संस्कृति (बीकानेर) राजस्थान।
  - झाकर-झाकर संस्कृति – सिंध पाकिस्तान।

## 2. हड्ड्या समकालीन ताम्रपाषाणिक संस्कृति (2600–1800 BC)

- आहड़ संस्कृति – तांबवती खोजकर्ता— रत्नचन्द्र अग्रवाल क्षेत्र – उदयपुर
  - गिलुन्द संस्कृति – क्षेत्र राजसमंद – एक मात्र पाषाणिक स्थल जहाँ से पकी हुई ईटों के साक्ष्य प्राप्त हुए।
  - बालाथल संस्कृति – ताँबे की भट्टी तथा दुर्ग निर्माण मिट्टी की मोटी दीवार, कुष्ठ रोग का प्राचीनतम प्रमाण तथा योगी की मूर्ति के साक्ष्य प्राप्त हुए। राजस्थान राज्य में स्थित।



### 3. हड्डपोत्तर ताम्रपाषाणिक संस्कृति – (2000–1400 BC)

a. मालवा संस्कृति – सबसे अच्छे प्रकार के मुदभाण्ड प्राप्त हुए।

- नावदाटोली –
  - मालवा संस्कृति में सर्वप्रथम उत्खनित एवं सबसे बड़ा स्थल।
  - यहां से ताप्रपाषाणिक संस्कृति में प्रयोग किये जाने वाले सभी प्रकार के अनाजों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
  - कायथा – उज्जैन जिले, मृदभाण्ड वराहमिहिर, ताप्रपाषाणिक वाकणकर 1964
  - एरण

Note - Y.A. जेने रोडो पोक्सी ने मालवा संस्कृति की तुलना मध्य एशिया की चूष्ट संस्कृति से की।

## b. जोर्वे संस्कृति – टोटीदार बर्तन

- स्थान – दाइमाबाद (अहमदनगर) एवं इनामगाँव (पुणे), नेवासा
  - दोहरी संस्कृति के प्रमाण (नगरीय तथा ग्रामीण सम्भिता) प्राप्त हुए।
  - आधुनिक महाराष्ट्र में विस्तार
  - शवाधान – उत्तर से दक्षिण की ओर



c. चंदौली (पुणे)

- बच्चों के लिए अन्त्येष्टि कलश का प्रमाण प्राप्त।
- टोंटीदार मृदभाण्ड के साक्ष्य प्राप्त

## भारतीय इतिहास

### प्राचीन इतिहास

#### समयकाल

- मानव के आगमन से लेकर
- 8 वीं शताब्दी तक
- कुछ इतिहासकार 701 ई. और 800 ई. के बीच में प्राचीन इतिहास का अंत मानते हैं।
- इस काल में ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि हुए।

### मध्यकालीन इतिहास

#### समयकाल

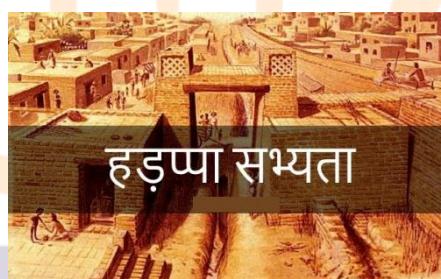
- 712 ई. (मो. बिन कासिम ने आक्रमण किया)
- 1757 ई. (प्लासी के युद्ध तक)
- कुछ इतिहासकार 1707 ई. तक जब औरंगजेब की मृत्यु हुई।

### आधुनिक इतिहास

#### समयकाल

- 1757 ई.
- 1947 ई.
- कुछ इतिहासकार 1964 तक मानते हैं जब नेहरू की मृत्यु हुई।

### हड्ड्या सभ्यता



हड्ड्या सभ्यता

#### ❖ अन्य नाम –

- हड्ड्या सभ्यता
- सिंधु घाटी सभ्यता
- कांस्य युगीन सभ्यता – (तांबा + टिन = कांसा)
- आद्य ऐतिहासिक सभ्यता
- सिंधु-सरस्वती सभ्यता
- सैन्धव सभ्यता

#### ❖ खोज –

- 1826 – सर्वप्रथम चार्ल्स मेसन ने हड्ड्या स्थित टीलों पर ध्यान केन्द्रित करते हुये उसमें किसी सभ्यता के दबे होने की आशंका जताई।
- 1853 – कनिंघम ने हड्ड्या का भ्रमण किया परन्तु वह इस स्थान का महत्व समझ नहीं पाये।





3. 1856 – ब्रन्टन बन्धुओं (जेम्स एंड विलियम) द्वारा कराची से लाहौर के मध्य रेल लाइन बिछाई जा रही थी, परन्तु उन्होंने इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया बल्कि उन ईटों को रेलवे लाईन के नीचे बिछाने के काम में लिया।

4. 1921 – सर जॉन मार्शल के नेतृत्व में दयाराम साहनी द्वारा हड़प्पा नामक नगर की खोज की गई।

**Note** - हड़प्पा की खोज के समय भारतीय पुरातात्त्विक विभाग के अध्यक्ष जे.एल. मार्शल थे।


**Daya Ram Sahni**

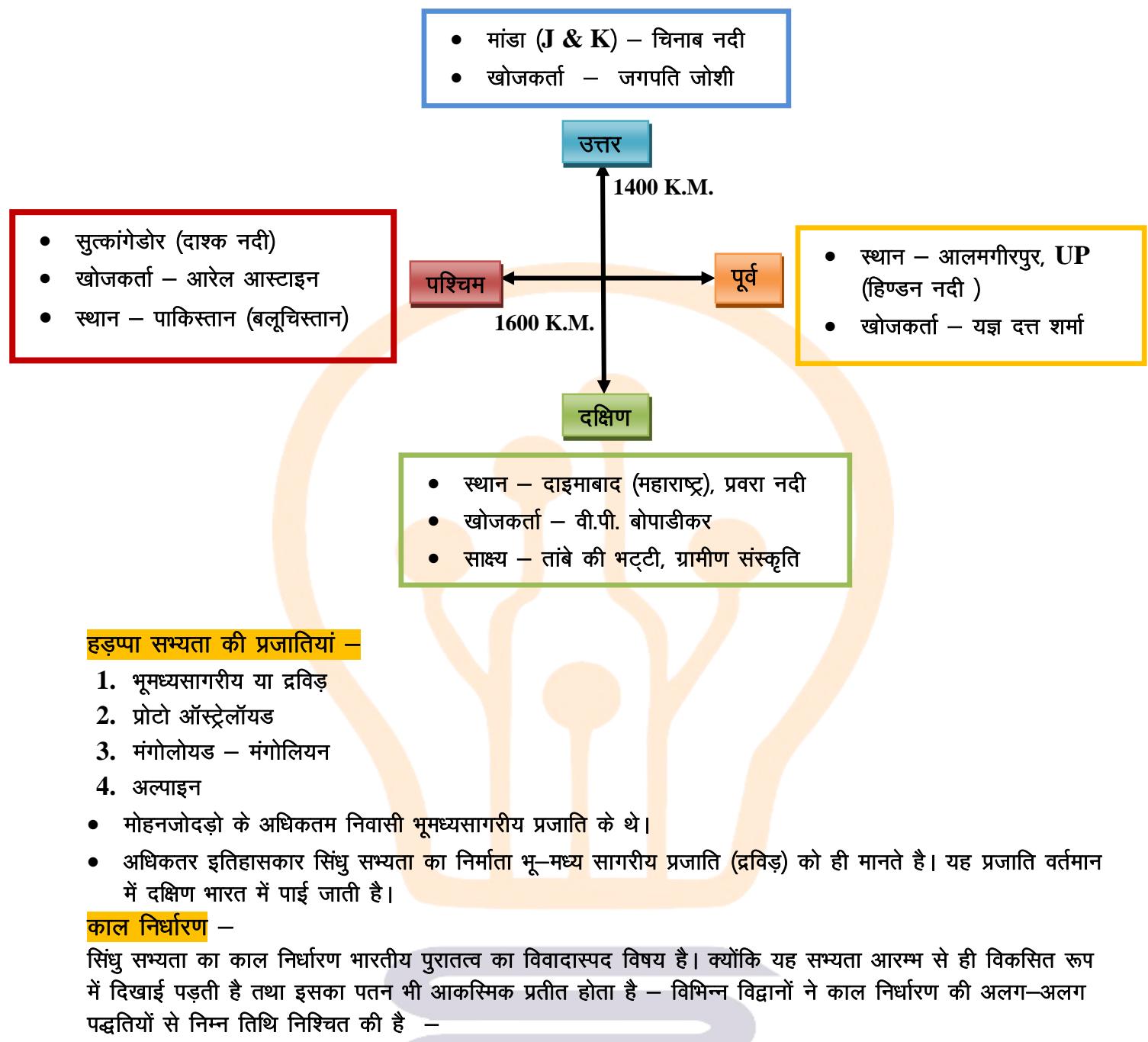
**R D Banerji**

**John Marshall**

### सिन्धु घाटी सभ्यता का क्षेत्र विस्तार

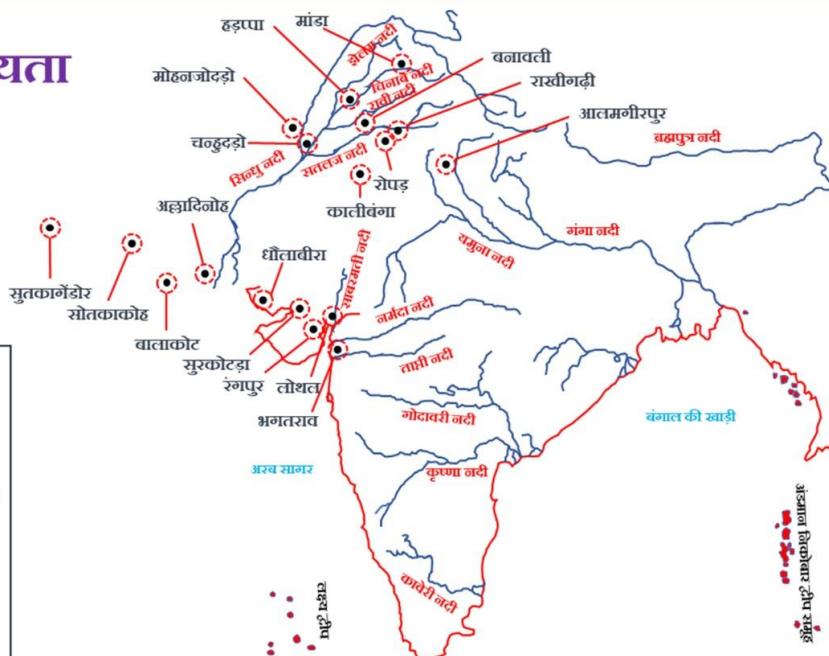
- **क्षेत्रफल – 12,99,600 Km<sup>2</sup>**
- **देशों में विस्तार –** भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान (2 स्थल – शोर्तगोई एंड मुडीगांक)
- **भारतीय राज्यों में विस्तार –**
  - जम्मू कश्मीर
  - पंजाब
  - हरियाणा
  - राजस्थान
  - महाराष्ट्र
  - उत्तरप्रदेश
  - गुजरात
- **आकार –** त्रिभुजाकार
- **हड़प्पा सभ्यता का क्षेत्र विस्तार –**
- **पूर्व से पश्चिम – 1600 किमी.**
- **उत्तर से दक्षिण – 1400 किमी.**





## हड्पा सभ्यता के प्रमुख स्थल, प्राप्ति साक्ष्य एवं उनके खोजकर्ता

### सिंधु नदी धाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल



### हड्पा

- ❖ खोज – 1921 में दयाराम साहनी द्वारा
  - वर्तमान स्थिति – मोटांगोमरी पंजाब प्रांत, पाकिस्तान (रावी नदी)
  - सिंधु सभ्यता का उत्खनित प्रथम स्थल
- ❖ साक्ष्य –
  - कुम्हार का चाक
  - R-37 कब्रिस्तान
  - 6:6 की पंक्ति में कुल 12 कमरे, 18 वृत्ताकार चबूतरे जिन पर गेहूं व जौ के साक्ष्य एवं 15 श्रमिक आवास
  - हड्पा के नगर से सर्वाधिक अभिलेखीय मुहरों का साक्ष्य प्राप्त हुए।
  - तांबे की बनी इक्का गाड़ी
  - हड्पा की मुहरों पर सर्वाधिक एक श्रृंगी पशु का अंकन मिलता है।
  - एक आयताकार मुहर में स्त्री के गर्भ से निकलता पौधा अंकित है।
  - मछुआरे का चित्र अंकित बर्तन तथा कांस्य दर्पण के साक्ष्य

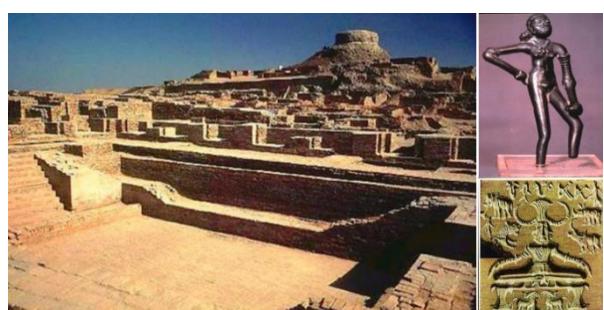
**नोट-** हड्पा के दुर्ग को माउन्ट AB नाम दिया गया।

### मोहनजोदड़ो

- ❖ अर्थ – मृतकों का टीला (सिंधु नदी)
- ❖ खोज – 1922 राखलदास बनर्जी द्वारा
  - वर्तमान स्थिति – लरकाना जिला (सिंधु प्रान्त) पाकिस्तान (सिंधु नदी) दाहिना तट

अन्य नाम –

- मृतकों का टीला
- प्रेतों का टीला
- सिंध का बाग





- ❖ साक्ष्य – बृहद स्नानागार (11.88 मीटर लम्बा, 7.01 मीटर चौड़ा, 2.43 मीटर गहरा) है।
- पशुपति मोहर (तीन मुख) – हाथी-बाघ दायी ओर भैसा-गेंडा बायी ओर तथा चार हिरण नीचे की ओर स्थित
- 4 इंच लंबी कांसें की नर्तकी की मूर्ति
- विशाल अन्नागार, बृहद सभागार
- दाढ़ी वाले पुरोहित की मूर्ति
- चमकते हुए बंदर का चित्र

## चन्हूदड़ो

- ❖ खोज – 1931 में एन. जी. गोपाल दास मजूमदार द्वारा
- ❖ वर्तमान स्थिति – सिंध प्रांत, पाकिस्तान (सिन्धु नदी)–बाँधे तट
- नोट – यहाँ किसी भी भाग में दुर्ग के साक्ष्य प्राप्त नहीं हुए। (दुर्गीकरण का अभाव)

- ❖ साक्ष्य –
  - ताप्रपाषाण काल की झूकर तथा झाकर संस्कृति के साक्ष्य
  - कुत्ते द्वारा बिल्ली का पीछा किये जाने का साक्ष्य
  - मनका या खिलौना बनाने के कारखानों का साक्ष्य
  - लिपस्टिक के साक्ष्य
  - कंधे का साक्ष्य
  - इत्र का साक्ष्य
  - मिट्टी की बैलगाड़ी
  - दो मछलियों के अंकन वाली मुद्रा

## लोथल

- ❖ खोज – 1954 में रंगनाथ राव द्वारा
  - स्थिति – गुजरात के अहमदाबाद जिले में (भोगवा नदी)
  - लोथल को लघु हड्पा या लघु मोहनजोदड़ो कहते हैं।
  - लोथल के दोनों भाग एक ही सुरक्षा प्राचीर से घिरे हुये हैं।
- ❖ साक्ष्य –
  - धान की भूसी
  - अग्नि वेदिका
  - फारस की मुहरे
  - युगल समाधियां
  - हाथी दाँत का पैमाना
  - ममी का मॉडल
  - घोड़े की मृणमूर्ति
  - चालाक लोमड़ी का चिन्ह
  - कपड़ों का रंगाई कुण्ड
  - तांबे की मोहर
  - गोदीबाड़ा/डॉकयार्ड – आकार – 214 मी. × 36 मी. × 3.3 मी.



## कालीबंगन

- ❖ खोज – 1953 में अमलानंद घोष द्वारा
  - दोनों टीले अलग-अलग सुरक्षा प्राचीर से घिरे।
  - अर्थ – काले रंग की चूड़ियां
  - वर्तमान स्थिति – राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में (घग्गर नदी)



❖ साक्ष्य –

- जुते हुए खेत के साक्ष्य
  - अग्नि कुण्ड
  - अलंकृत ईट
  - लकड़ी की बनी नाली का एकमात्र साक्ष्य
  - ऊँट की हड्डियों का कंकाल
  - भूकंप आने का साक्ष्य
  - एक मृणपटिका पर मनुष्य के साथ बकरी का चित्र
  - मिश्रित फसल के साक्ष्य
- नोट— कालीबंगा के मकान कच्ची ईटों से बने हुए हुए थे।

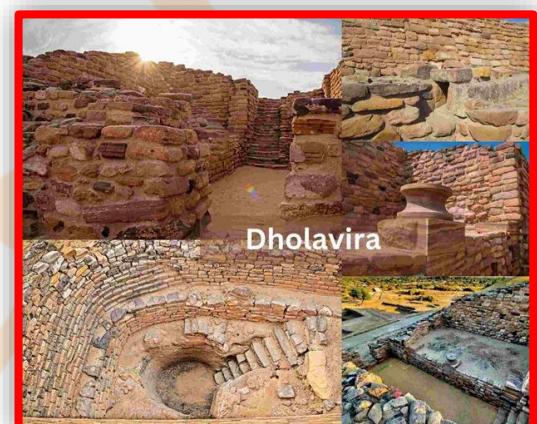
### धौलावीरा

❖ खोज – जगपति जोशी द्वारा जबकि उत्खन्न 1990–91 में रविन्द्र सिंह विष्ट ने कराया।

- शास्त्रिक अर्थ – सफेद कुआं
- एकमात्र नगर जो 3 भागों में बंटा था।
- वर्तमान स्थिति – गुजरात की कच्छ की खाड़ी में स्थित।
- ये भारत का 40वां यूनेस्को विश्व विरासत स्थल (2021) है।
- शैलकृत स्थापत्य के प्राचीनतम प्रमाण हैं।

❖ साक्ष्य –

- 10 अक्षरों वाली नेम प्लेट
- स्टेडियम का साक्ष्य
- 16 बड़े तालाबों के साक्ष्य
- सर्वोत्तम जल निकास प्रणाली का साक्ष्य
- दो नहरों का साक्ष्य



### बनावली

❖ खोज – 1973 में आर.एस. बिष्ट द्वारा

- वर्तमान स्थिति – हिसार (हरियाणा) रंगोई नदी

❖ साक्ष्य –

- अच्छी किस्म की जौ का साक्ष्य
- मिट्टी के बने हल का साक्ष्य
- जल निकास प्रणाली का अभाव
- अग्निवेदिका का साक्ष्य
- मछली पकड़ने का कांटा

### राखीगढ़ी –

- खोज – 1969 में सूरज भान द्वारा
- वर्तमान स्थिति – हिसार, हरियाणा (घग्गर नदी)

❖ विशेष –

- यहाँ मृतकों को उत्तर-दक्षिण दिशा की ओर लिटाकर दफनाया जाता था।
- सिंधु घाटी सभ्यता का भारत में सबसे बड़ा स्थल।

### रोपड़ –

- खोज – 1953 में यज्ञदत्त शर्मा द्वारा
- वर्तमान स्थिति – रूप नगर, पंजाब (सतलज नदी)



## ❖ विशेष

- आजादी के पश्चात भारत में खोजा गया हड्प्पाई स्थल
- मानव के साथ कुत्ते दफनाने का साक्ष्य

**रंगपुर –**

- खोज – 1954 में एस.आर राव द्वारा
- वर्तमान स्थिति – काठियावाड़ गुजरात (भादर नदी)
- चावल, ज्वार, बाजरा का साक्ष्य, धान की भूसी के साक्ष्य
- सैंधव सभ्यता का आरस पुत्र
- कच्ची ईंटों के दुर्ग, नालियाँ, मृदभांड, वाट

**सुरकोटदा –**

- खोज – 1964 में जगपति जोशी द्वारा
- वर्तमान स्थिति – कच्छ, गुजरात (सरस्वती नदी)

## ❖ विशेष –

- कलश शवादान, घोड़े का अस्थिपंजर
- दुर्ग तथा नगर क्षेत्र एक ही रक्षा प्राचीर से घिरे थे।

**कुणाल –**

- हिसार, हरियाणा (धगगर नदी)
- खोज – 1974 ई. में जे.पी. जोशी एवं आर.एस. विष्ट द्वारा
- टेराकोटा की मुहर, सूक्ष्म मोती के साक्ष्य
- दो चाँदी के मुकुट

**अलीमुराद –**

- पाकिस्तान में स्थित
- एकमात्र ग्रामीण स्थल

**दाइमाबाद –**

- तांबे की बनी बैलगाड़ी
- प्रवरा नदी के तट पर अवस्थित

**कोटदीजी –**

- अवस्थिति – सिंध प्रांत (पाकिस्तान)
- उत्खनन – फजल अहमद (1955)
- सिंधु नदी किनारे स्थित
- यहां पथर से निर्मित घर व अग्रफलक के साक्ष्य मिले।

**रोजदी –**

- सौराष्ट्र (गुजरात) में स्थित हड्प्पाई स्थल
- कच्ची ईंटों के चबूतरे, पक्की मिट्टी के मनके, हाथी के अवशेष

**बालाकोट –**

- 1979–81 में जार्ज एफ. डेल्स द्वारा उत्खनित
- खैबर– पख्तून (पाकिस्तान) में स्थित हड्प्पाई स्थल
- कुनहार नदी तट पर स्थित।





- ज्यादातर कच्ची ईंटों का प्रयोग
- बंदरगाह, सीप उद्योग

### भगवानपुरा –

- कुरुक्षेत्र (हरियाणा) में स्थित, सरस्वती नदी के किनारे।
- हड्डपाई स्थल के उत्खननकर्ता— जी.पी. जोशी
- रंगीन कांच की चूड़ियां, तांबे की चूड़ियों की प्राप्ति

### कुंतासी –

- मोरबी (गुजरात) में स्थित हड्डपाई पुरातात्त्विक स्थल
- बंदरगाह बस्ती के साक्ष्य, सेलखड़ी के हजार मनकों के साक्ष्य

### मिताथल –

- भिवानी (हरियाणा) स्थित हड्डपाई स्थल
- 2 टीले मिले, गुप्त सिक्के, तांबे के दो, कुल्हाड़ी
- कच्ची ईंटों से निर्मित घर

### देशलपुर –

- भुज (गुजरात) स्थित हड्डपाई स्थल
- खोजकर्ता — ऑरेल स्टाइन
- विशाल प्राचीर युक्त भवन, छज्जे वाले कमरों के साक्ष्य।
- तांबे के मुहरों के साक्ष्य

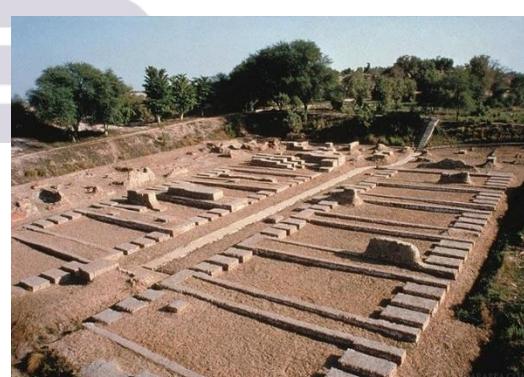
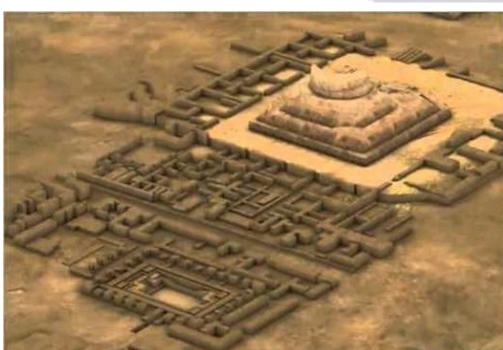
### गणेरी वाला –

- धगगर नदी तट स्थित, पंजाब (पाकिस्तान) में स्थित
- गेंडा मूर्ति, तांबे की मुहर के साक्ष्य

### भगतराव / भगत्रव –

- भरूच (गुजरात) में स्थित हड्डपाई स्थल, किम नदी पर
- उत्खननकर्ता — डॉ. एस.आर. राव
- महत्वपूर्ण बंदरगाह

## हड्डपा सभ्यता का नगर नियोजन



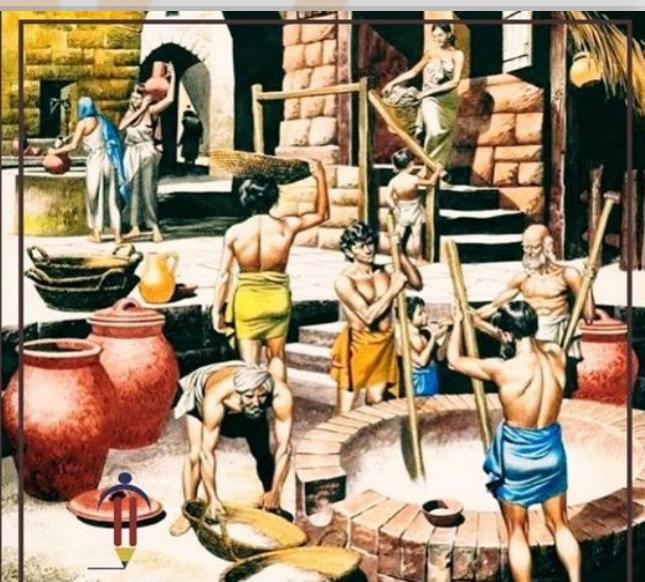
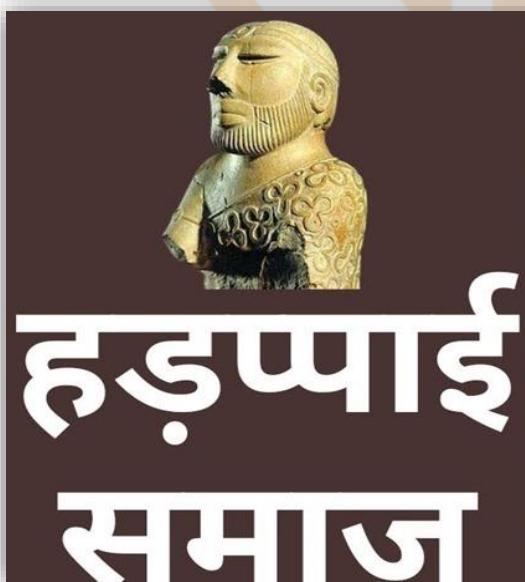
- हड्डपा सभ्यता एक सुव्यवस्थित नगरीकृत सभ्यता थी जिसका प्रमाण हड्डपा सभ्यता से प्राप्त अवशेषों से मिलता है, इसके नगर नियोजन की निम्न विशेषताएं थीं –
- **नगर** – हड्डपाई नगर सामान्यतः दो हिस्सों में बंटे रहते थे, जिसका पश्चिमी हिस्सा दुर्ग तथा पूर्वी हिस्सा नगर कहलाता था।



**सामान्यतः** दुर्ग सुरक्षा प्राचीर से घिरे हुये होते थे (अपवाद—चन्द्रदण्डो में किलाबंदी का अभाव) तथा नगर पर सुरक्षा प्राचीर का अभाव होता था (अपवाद — कालीबंगा दोनों टीले प्राचीर से घिरे हुये थे)।

- **भवन** — सैधववासियों ने अपने भवनों को सुव्यवस्थित ढंग से निर्मित किया, घर में आंगन, स्नानागार, रसोई, कमरे आदि का निर्माण मिलता है। कुछ भवन एक मंजिला तथा कुछ दो या दो से अधिक मंजिल के होते थे, भवनों का निर्माण निश्चित आकार 4 (लंबाई) : 2 (चौड़ाई) : 1 (मोटाई) की पकी ईंटों के माध्यम से होता था। प्रत्येक भवन के दरवाजे सड़क की ओर ना खुलकर गली की ओर खुलते थे, खिड़कियां सामान्यतः सड़क की ओर खुलती थीं।
- **सड़क** — सड़के प्रायः कच्ची होती थी (अपवाद—मोहनजोदहो) तथा पूर्व से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण जाती हुई एक दूसरे को समकोण पर काटती थी। ऑक्सफोर्ड चौराहे का निर्माण तथा सड़कों ग्रिड पद्धति पर आधारित थी। मुख्य सड़क 6–9 फीट चौड़ी तथा सहायक सड़क 3–4 फीट चौड़ी होती थी।
- **नालियाँ** — सड़कों के दोनों ओर पकी ईंटों द्वारा नालियों का निर्माण किया गया था, जिन्हें बड़े-बड़े पत्थरों से ढंक दिया गया था, नालियों को साफ करने के लिए जगह—जगह ढक्कन युक्त मेनहोल बने थे। नालियाँ सड़कों के साथ—साथ शहर के बाहर तक जाती थी, जहाँ इन्हें किसी बड़े तालाब या नदियों में खोल दिया जाता था।
- स्पष्ट है कि यह सभ्यता विकसित शहरी सभ्यता थी, जो वर्तमान भारत में उत्कृष्ट शहरों के निर्माण हेतु मार्गदर्शन कर सकती है तथा स्मार्ट सिटी को आधार प्रदान कर व्यस्थित नगर नियोजन को प्रोत्साहित करती है।

### हड्पा सभ्यता की सामाजिक व्यवस्था



हड्पाई लिपि न पढ़े जाने के कारण हड्पाई समाज का समग्र वर्णन नहीं किया जा सकता है, किन्तु प्राप्त अवशेषों के आधार पर समाज की निम्नलिखित विशेषताएं थीं —

- **वर्ग विभाजन** — हड्पाई समाज मुख्यतः चार वर्गों में विभाजित था — विद्वान वर्ग, योद्धा वर्ग, व्यापारी वर्ग, श्रमिक वर्ग।
- **बहु प्रजातीय समाज** — प्राप्त अवशेषों से चार प्रकार की हड्पायी प्रजातियों की पहचान की गई है।
  - भूमध्य सागरीय — सर्वाधिक संख्या में
  - अल्पाइन
  - प्रोटो आस्ट्रेलायड
  - मंगोलायड



- **मातृसत्तात्मक समाज तथा महिलाओं की स्थिति** – हड्डप्पा सभ्यता में महिलाओं की स्थिति अच्छी प्रतीत होती है। हड्डप्पाई स्थलों से प्राप्त मातृदेवी की अत्याधिक मृणमूर्तियों की उपस्थिति के कारण इतिहासकार इस सभ्यता को मातृसत्तात्मक समाज मानते हैं।
- **विषमतामूलक समाज** – सभ्यता से प्राप्त नगरों के अवशेष से ज्ञात होता है कि समाज में सम्पन्न वर्ग जो सम्भवतः दुर्ग टीले पर निवासरत था एवं सामान्य वर्ग जो नगर या पूर्वी टीले पर निवास करते थे। इस सबके बावजूद इस समाज में छुआछूत आदि के साक्ष्य प्राप्त नहीं होते।
- **शिक्षित एवं शांतिप्रिय समाज** – हड्डप्पाई लिपि व विकसित व्यापार से ज्ञात होता है कि हड्डप्पावासी शिक्षित थे। सामान्यतः हड्डप्पाई स्थलों के उत्खनन में कोई अस्त्र-शस्त्र की प्राप्ति नहीं हुई, जिसके आधार पर कहा जा सकता है, हड्डप्पाई लोग शांतिप्रिय थे।
- **खान-पान एवं वेशभूषा** – हड्डप्पाई लोग सामान्यतः मांसाहारी एवं शाकाहारी दोनों थे। हड्डप्पावासी सूती व ऊनी वस्त्र धारण करते थे एवं चन्हूदड़ो से प्राप्त मनकों के कारखानों एवं सौन्दर्य प्रसाधन के आधार पर कहा जा सकता है कि हड्डप्पावासी सौन्दर्य प्रसाधन एवं आभूषण प्रिय लोग थे।
- **मनोरंजन के साधन** – मछली पकड़ना, जानवरों को लड़ाना, चौसर खेलना, शिकार करना आदि (शतरंज के साक्ष्य – बनावली)।
- **अंतिम संस्कार** – तीन प्रकार की मृतक प्रणालियाँ प्रचलित थी – 1. पूर्ण समाधीकरण (हड्डप्पा) 2. आंशिक समाधीकरण (हड्डप्पा) 3. दाह संस्कार (मोहनजोदड़ो)।

### हड्डप्पा सभ्यता की धार्मिक व्यवस्था

## हड्डप्पा सभ्यता – धार्मिक जीवन



सेंधव सभ्यता से धार्मिक स्थलों के आभाव के चलते, सभ्यता के धर्म के विषय में वहाँ से प्राप्त मुहरें, मृणमूर्तियों आदि के आधार पर अनुमान लगाया जा सकता है।

- **मातृदेवी की उपासना** – ज्यादातर प्राप्त मृणमूर्तियों एवं मोहरों पर मातृदेवी की आकृति अकित है, जिसके आधार पर कहा जा सकता है, यह समाज मातृदेवी उपासक रहा होगा।
- **पशुपति उपासक** – मोहनजोदड़ो से प्राप्त मुहर जिस पर पशुपति का अंकन मिलता है इसलिए माना जाता है सिन्धुवासी पशुपति उपासक थे।
- **प्रकृति पूजक** – हड्डप्पा से प्राप्त मुहरों पर अंकित स्त्री के गर्भ से निकलता पौधा दिखाया गया है, जो सम्भवतः ऊर्वरता की देवी मानी गयी होगी। इसके अलावा पीपल के वृक्ष का अंकन एवं एकश्रृंगी पशु आदि के भी अंकन मिलते हैं।



- **अग्निपूजक** – कालीबंगा तथा लोथल से प्राप्त अग्निवेदिका के आधार पर माना जा सकता है, कि सिन्धुवासी अग्निपूजक थे।
- **स्वास्तिक तथा सूर्य उपासना** – हड्ड्पाई स्थल से प्राप्त स्वास्तिक चिन्ह के आधार पर कहा जा सकता है कि हड्ड्पाई सूर्य पूजक भी थे।
- **योग में विश्वास** – मोहनजोदङ्गे से प्राप्त योगी की मूर्ति के आधार पर कहा जा सकता है कि हड्ड्पाई योग में विश्वास करते थे।
- **जलपूजक** – मोहनजोदङ्गे से प्राप्त विशाल स्नानागार से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि सिन्धुवासी जलपूजक थे।
- **लिंग व योनि पूजक** – हड्ड्पा स्थलों से प्राप्त अनेक लिंग व छल्लों के साक्ष्य प्राप्त हुये जो हड्ड्पाईयों का लिंग पूजक होना मानते हैं।
- हड्ड्पा में धार्मिक तत्व तो निहित है, परंतु धर्म की भूमिका शक्तिशाली नहीं थी अतः हड्ड्पा सभ्यता एक लौकिक सभ्यता थी जो धर्म तथा कर्मकाण्डों पर आंशिक रूप से आधारित थी।

### हड्ड्पा सभ्यता की आर्थिक व्यवस्था

हड्ड्पा सभ्यता एक उत्कृष्ट व्यापारिक सभ्यता थी, जो प्रत्येक प्रकार की आर्थिक गतिविधियों में संलग्न थी, जो इस प्रकार है। कृषि → अतिरिक्त उत्पादन → कृषि अधिशेष → व्यापार

- **कृषि** – अधिकतर हड्ड्पाई स्थल नदियों के किनारे बसे थे, जिससे उर्वरक भूमि कृषि कार्य के लिए आसानी से उपलब्ध थी। रंगपुर व लोथल से चावल एवं हड्ड्पा से गेहूँ जौ आदि के साक्ष्य प्राप्त हुये हैं। बनावाली से हल का खिलौना एवं कालीबंगा से जुते हुये खेत यह प्रमाणित करते हैं कि सिन्धुवासी कृषि हेतु हल का प्रयोग करते थे। फसलों का ज्ञान (राई, मटर)।

**Note** – कपास का उत्पादन सम्भवतः सिन्धुवासियों ने सर्वप्रथम प्रारंभ किया।

- **पशुपालन** – कूबड़ वाला सांड, भेड़, बकरी आदि प्रमुख पालतु पशु थे, किन्तु सम्भवतः घोड़े से हड्ड्पावासी अपरिचित थे। गधे व ऊंट का उपयोग बोझा ढोने में।

#### उद्योग–धंधे –

- धातु व्यवसाय – सोना, चाँदी, तांबा, कांसा आदि।
- मोहर निर्माण – मोहरों का निर्माण सेलखड़ी से होता था जो प्रायः वर्गाकार या आयताकार होती थी।
- मनका निर्माण – चन्हूदङ्गे मनका निर्माण का प्रमुख स्थल था।
- वस्त्र निर्माण – सूती तथा ऊनी वस्त्रों का निर्माण।

- **वाणिज्य व्यापार** – हड्ड्पा सभ्यता से आंतरिक तथा बाहरी व्यापार दोनों होते थे। आंतरिक व्यापार सभ्यता के विभिन्न नगरों तथा बाहरी व्यापार मेसोपोटामिया, अफगानिस्तान, मिस्र आदि देशों के मध्य होता था। भुगतान संतुलन हड्ड्पा के पक्ष में था।

**Note** – मेसोपोटामिया स्थित अक्काड के प्रसिद्ध सप्राट के सारगौन अभिलेख (2350 BC) से बाह्य व्यापार की पुष्टि होती है, इस अभिलेख में मेसोपोटामिया का व्यापार माकन, दिलुमन तथा मेलुहा नामक द्विपो से होता था।

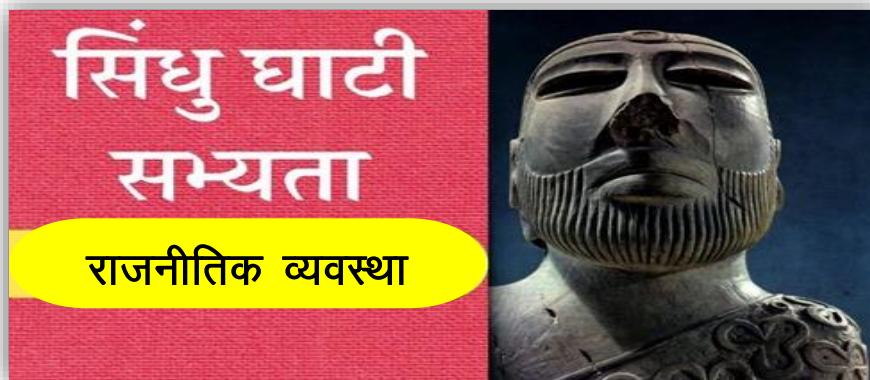
- **विनिमय का माध्यम** – हड्ड्पा सभ्यता में वस्तु विनिमय प्रणाली प्रचलित थी।

- **मानक मापतौल प्रणाली** – हड्ड्पा सभ्यता में 4 अंक या उसके गुणन का प्रयोग माप तौल प्रणाली में किया जाता था।

- **यातायात व्यवस्था** – स्थल एवं जलमार्ग दोनों से यातायात सम्पन्न होता था। स्थल मार्ग में बैलगाड़ी या अन्य पशुगाड़ी द्वारा तथा जलमार्ग पर नौकाओं से यातायात होता था।

- इस आधार पर कहा जा सकता है कि हड्ड्पा की सभ्यता की आर्थिक व्यवस्था सम्पन्न थी।

## हड्पा कालीन राजनीतिक व्यवस्था



हड्पा भारतीय उप-महाद्वीप की पृथक सुनियोजित नगरीय सभ्यता थी। हड्पा कालीन स्थिति की जानकारी पुरातात्त्विक साक्ष्यों से मिलती है परंतु हड्पाई लिपि के अभी तक न पढ़े जाने के कारण स्पष्ट जानकारी का अभाव है।

- ◆ लिपि के न पढ़े जा सकने के कारण हड्पाई राजनीतिक स्थिति एवं प्रशासनिक व्यवस्था के स्पष्ट साक्ष्य नहीं मिले हैं हालांकि इतिहासकारों ने इस पर भिन्न-भिन्न मत दिये हैं –

### 1. पुरोहित वर्ग शासक –

- समर्थक – पिंगट, व्हीलर, डी.डी.कौशाम्बी
- साक्ष्य – दाढ़ीयुक्त टेराकोटा की मूर्ति मोहनजोदङ्गे से प्राप्त।  
→ विभिन्न शहरों में ताबीज मिलना रुद्धिवादिता दर्शाता है।
- खंडन – मंदिर के साक्ष्य नहीं

### 2. व्यापारी वर्ग शासक –

- समर्थक – आर.एस. शर्मा
- साक्ष्य – नगरों की उपस्थिति,  
आंतरिक-बाह्य व्यापार  
व्यापारिक उन्नति एवं मुहरें
- खंडन – व्यापारिक वर्ग का स्पष्टतः उल्लेख नहीं,

#### अन्य –

- ✓ हंटर – जनतंत्रात्मक शासन
  - ✓ मैके – प्रतिनिधि शासक का शासन मानते हैं।
  - ✓ बी.बी. स्टुर्ब हड्पाकालीन प्रशासन को गुलामों पर आधारित प्रशासन मानते हैं।
  - ✓ बी.बी. लाल – सैंधव काल में भी छोटे-बड़े राज्य रहे होंगे तथा प्रत्येक का अलग-अलग मुख्यालय रहा होगा।
- स्पष्ट है कि विद्वानों में हड्पाई राजनीति प्रशासन को लेकर मत भिन्नता है परंतु सभी हड्पा में एक व्यवस्थित शासन व राजनीतिक व्यवस्था का समर्थन करते हैं। हड्पा में एक समान नगरीय व्यवस्था, सङ्क प्रणाली, मूर्तियाँ, अपशिष्ट प्रबंधन, नगर नियोजन, एक समान माप-तौल पद्धति आदि तत्वों में मौजूद एकरूपता एक संगठित प्रशासनिक व्यवस्था की ओर इंगित करती है।

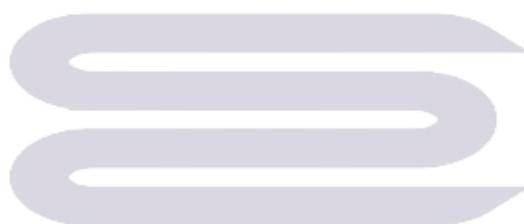


## हड्डपाई कला एवं संस्कृति

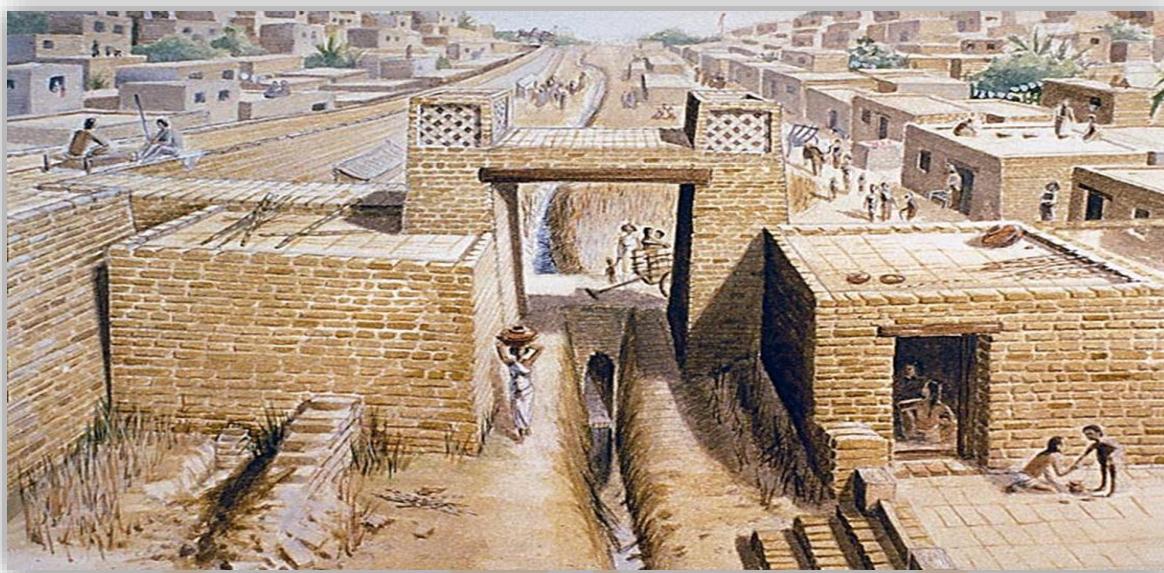


हड्डपाई लिपि के ज्ञान के अभाव तथा क्षैतिज खुदाई न हो पाने के कारण हड्डपाई कला एवं संस्कृति पर प्रकाश सीमित ही है, किन्तु प्राप्त अवशेषों के आधार विभिन्न बिंदुओं के माध्यम से हड्डपाई कला एवं संस्कृति को समझा जा सकता है।

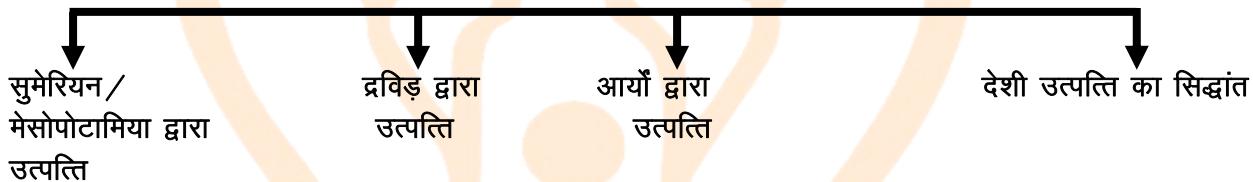
- **स्थापत्य कला** – हड्डपा, मोहनजोद़हो आदि स्थानों की खुदाई से प्राप्त भवन सिन्धुवासियों की स्थापत्य कला को दर्शाते हैं। ये लोग भवन निर्माण में प्रायः पक्की ईटों का प्रयोग करते थे, भवन सामान्यतः एक या दो मंजिल होते थे। व्यवस्थित व उत्कृष्ट जलनिष्कासन प्रणाली हड्डपाईयों की वैज्ञानिक दृष्टिकोण का श्रेष्ठ नमूना है।
- **मूर्तिकला** – खुदाई के दौरान अनेक मिट्टी, पत्थर व धातु की मूर्तियाँ मिली हैं – जैसे – मोहनजोद़हो से प्राप्त सेलखेड़ी की योगी की मूर्ति एवं कांसे की नर्तकी की मूर्ति, टेराकोटा, हड्डपाई मूर्तिकला का श्रेष्ठ उदाहरण है।
- **मोहरे** – हड्डपा से लगभग 2000 मोहरे प्राप्त हुई हैं, जिनमें से अधिकांश सेलखेड़ी से निर्मित हैं। लोथल से तांबे की मोहर एवं मोहनजोद़हो से पशुपतिनाथ की मोहर प्राप्त हुई हैं। सैंधव मोहरों पर सर्वाधिक एक शृंगी बैल का चित्रण मिला है।
- **मृदभाण्ड** – हड्डपाई, बर्तन हाथ या चाक से बने थे, बर्तन भट्टे में पकाए जाते थे। बर्तनों को लाल रंग से पोतकर उन पर काली रेखाओं से विभिन्न पशु-पक्षियों के चित्र बनाए जाते थे।
- **लिपि** – भावचित्रात्मक दायें-से बाँयें लिखी जाती थीं। हड्डपाई लिपि भावचित्रात्मक थी, जिसे बूस्ट्रोफेदन भी कहा जाता है। हड्डपाई लिपि में मूल चिन्हों की संख्या 64 है जबकि अक्षरों की संख्या 250–400 है। हड्डपाई लिपि में सर्वाधिक U-आकार का चिन्ह एवं सर्वाधिक मछली का अंकन मिलता है।



## हड्पा सभ्यता का उद्भव



हड्पा सभ्यता के प्रादुर्भाव से संबंधित विभिन्न विद्वानों में मतभेद है, जिसका कारण हड्पाई लिपि का ना पढ़ा जाना है। उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर जो मत प्रस्तुत किए गए हैं। वो निम्न हैं –



- a. **सुमेरियन / मेसोपोटामिया द्वारा उत्पत्ति** – गार्डन चाइल्ड, मार्टिमर व्हीलर एवं डी.डी. कौशाम्बी आदि इतिहासकारों का मानना है कि मेसोपोटामिया से लोगों या विचारों के आने से हड्पा सभ्यता का उद्भव संभव हुआ। उपरोक्त विद्वानों ने अपने मत के पक्ष में हड्पा एवं मेसोपोटामिया से प्राप्त अन्नागार एवं शहरीय की लकड़ी का प्रयोग, जो दोनों सभ्यताएं समान रूप से प्रयोग करती थी।
- ✓ खंडन –
  - ◆ मेसोपोटामियाई लोग मन्दिरों का निर्माण करते थे, किन्तु हड्पाई स्थलों से अभी तक मन्दिर के साक्ष्य प्राप्त नहीं हुए।
  - ◆ हड्पाई लिपि भावचित्रात्मक जबकि मेसोपोटामिया में कीलाक्षर लिपि का प्रचलन था।
  - ◆ मेसोपोटामिया में नगर नियोजन अनियमित जबकि हड्पा में सुव्यवस्थित था, हड्पाई मकान पक्की ईंटों के जबकि मेसोपोटामिया में कच्ची ईंटों का प्रयोग किया जाता था।
  - ◆ मेसोपोटामिया में मुख्यतः बेलनाकार मुहरें जबकि हड्पा सभ्यता में आयताकार व वर्गाकार मुहरें प्राप्त हुईं।
- b. **द्रविड़ों द्वारा उत्पत्ति का सिद्धांत** – राखलदास बनर्जी व सुनीति कुमार चटर्जी का मत है सैंधव सभ्यता का निर्माण द्रविड़ों द्वारा किया गया है, जिसके पक्ष में तर्क है, कि द्रविड़ भी हड्पाईयों की तरह भूमध्यसागरीय प्रजाति के थे, लिपि की समानता, मातृसत्तात्मक समाज जल पूजा एवं लिंग पूजा आदि में समानता का तर्क देते हैं।
- ✓ खंडन – द्रविड़ों में जो सभ्यता बसाई वह महापाषाणिक सभ्यता थी एवं ग्रामीण संस्कृति थी, जबकि हड्पाईयों ने बड़े-बड़े शहर बसाए।
- c. **आर्यों द्वारा उद्भव** – एस.आर. राव, के.एन. शास्त्री, पुलाल्कर, रामचन्द्र एवं लक्ष्मण स्वरूप जैसे विद्वानों ने हड्पा सभ्यता को आर्यों द्वारा निर्मित बताया, इन्होंने अपने पक्ष में मत देते हुए कहा –
  - ◆ आर्यों का प्रारम्भिक निवास तथा हड्पा सभ्यता का सकेन्द्रण दोनों सप्त सैंधव प्रदेश ही स्थित था।
  - ◆ ऋग्वेद में वर्णित प्रमुख नदियों के किनारे हड्पाई नगरों का होना।

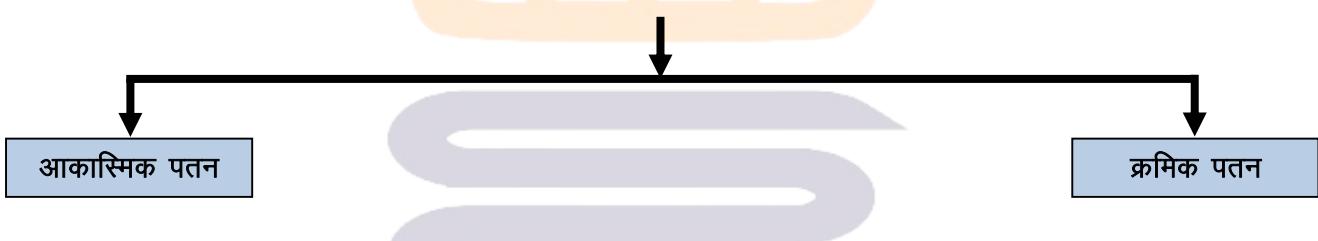


- ◆ आर्यों में अग्निपूजा का प्रचलन रहा, इसी प्रकार हड्ड्या स्थल कालीबंगन व लोथल से अग्निकुण्ड के साक्ष्य प्राप्त हुए।
- ✓ खंडन –
  - ◆ आर्यों की संस्कृति ग्रामीण जबकि हड्ड्याई नगरीय संस्कृति थी।
  - ◆ आर्य पितृसत्तात्मक जबकि हड्ड्या सभ्यता मातृसत्तात्मक थी।
  - ◆ आर्य घोड़े तथा लोहे से परिचित थे, किन्तु हड्ड्यावासी दोनों से अपरिचित थे।
- d. **देशी उत्पत्ति का सिद्धान्त** – यह मत सर्वाधिक मान्य है, फेयर सर्विस एवं रोमिला थापर के अनुसार सोधी, झूकर-झाकर, ईरानी-बूलची कोटदीजी, आमरी-नाल आदि देशी संस्कृतियों से हड्ड्या सभ्यता का विकास हुआ।

### हड्ड्या सभ्यता का पतन



लगभग 13 लाख वर्ग कि.मी क्षेत्र में फैली इस सभ्यता के पतन में निश्चितता नहीं है, जिसका कारण सिंधु सभ्यता की लिपि का ना पढ़ा जाना, एवं सैंधव स्थलों की क्षैतिज खुदाई का अभाव है, किन्तु प्राप्त पुरातात्त्विक साक्ष्यों के आधारों पर हम कह सकते हैं कि पतन के निम्न कारण हैं –



### आकास्मिक पतन के कारण

- आर्यों का आक्रमण – मार्टिमर व्हीलर, स्टुअर्ट पिगगट एवं गार्डन चाइल्ड के अनुसार आर्यों ने आक्रमण कर हड्ड्या सभ्यता को नष्ट कर दिया, अपने मत के पक्ष में इन विद्वानों ने कुछ पुरातात्त्विक साक्ष्य रखे, उनके अनुसार मोहनजोदहो से प्राप्त 26 नरकंकाल, जिन पर तेज धारदार अस्त्रों के घाव हैं तथा हड्ड्या से प्राप्त 'H' कब्रगाह को आक्रमणकारियों की कब्रें माना है, वही दूसरी तरफ साहित्यिक साक्ष्य भी प्रस्तुत करते हुए कहा ऋग्वेद में वर्णित "हरयूपिया" की पहचान हड्ड्या से की है, उसी प्रकार इन्द्र के लिए प्रयुक्त पुरन्दर शब्द को उन्होंने आर्य आक्रमण से जोड़ा है।
- किन्तु सूक्ष्म विश्लेषण के पश्चात् ऐसा ज्ञात है कि मार्टिमर व्हीलर के द्वारा प्रस्तुत पुरातात्त्विक साक्ष्य अपर्याप्त एवं साहित्यिक साक्ष्य संदिग्ध है।
- बाढ़ – जे.एल मार्शल, एस.आर. राव, मैके महोदय आदि ने बाढ़ को हड्ड्या सभ्यता के पतन का कारण माना उन्होंने अपने मत के पक्ष में बताया कि मोहनजोदहो में 7 बार बाढ़ का साक्ष्य एवं लोथल एवं चन्द्रदहो से बाढ़ के साक्ष्य मिले हैं। किन्तु लगभग 13 लाख वर्ग कि.मी. में फैली हड्ड्या सभ्यता सम्पूर्ण बाढ़ से नष्ट हो गई, यह तर्क संगत नहीं है।



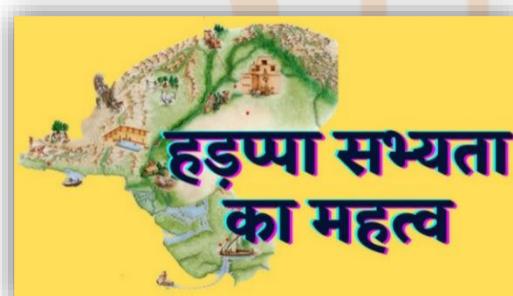
- c. नदी मार्ग मे परिवर्तन – एच.टी. लैम्ब्रिक तथा माधो स्वरूप वत्स के अनुसार सैंधव सभ्यता का पतन नदियों के मार्ग परिवर्तन के कारण हुआ। अपने मत का साक्ष्य देते हुए कहा, सिन्धु नदी के मार्ग परिवर्तन से मोहनजोदङ्गे तथा घग्गर नदी के सूखे जाने के कारण कालीबंगा का पतन हो गया। बताया जाता है कि पहले सतलुज नदी और यमुना नदी, घग्गर नदी (सरस्वती) की सहायक नदियाँ थी, किन्तु सतलुज मार्ग परिवर्तित कर सिन्धु में तथा यमुना मार्ग परिवर्तित कर गंगा नदी मे मिल गयी, परिणामस्वरूप घग्गर नदी का प्रवाह तंत्र कमजोर पड़ गया तथा इसके किनारे समस्त बसे हड्डप्पाई नगरों का पतन प्रारंभ हो गया।
- d. महामारी – केनेडी महोदय के अनुसार महामारी हड्डप्पा सभ्यता के पतन का कारण है, अपने मत के पक्ष मे साक्ष्य देते हुए उन्होने मोहनजोदङ्गे से मलेरिया के साक्ष्य प्रस्तुत किए, लेकिन सिर्फ मोहनजोदङ्गे के आधार पर यह नहीं कहा जा सकता कि समस्त सभ्यता महामारी से परित हुई।

### क्रमिक पतन

- a. पारिस्थितिकी असंतुलन – फेयर सर्विस महोदय के अनुसार हड्डप्पावासियों ने नगरीयकरण की होड़ में प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन किया, परिणामस्वरूप पारिस्थितिकी असंतुलन हुआ, कम वर्षा के कारण, कृषि पतित हुई परिणामस्वरूप हड्डप्पाई व्यापार प्रभावित हुआ और शनैः शनैः सभ्यता का पतन हो गया।
- b. 900 साल सूखा – आई.आई.टी. खड़गपुर के विद्वानों के अनुसार उत्तर-पश्चिम में 900 साल का सूखा पड़ा परिणामतः हड्डप्पाई लोग प्रवजन कर गये, एवं हड्डप्पाई नगर वीरान हो गए।
- c. जलवायु परिवर्तन – ए.एन. घोष एवं आरेल स्टाइन के अनुसार हड्डप्पा सभ्यता का पतन जलवायु संबंधी कारणों से हुआ था। अतः जनसंख्या का पूर्व की ओर पलायन हुआ। इसके साथ ही नई कृषि भूमि का विकास हुआ तथा पूर्व की ओर बस्तियों की संख्या बढ़ने लगी।

उपरोक्त कारणों के आधार पर कह सकते हैं कि हड्डप्पाई सभ्यता का पतन किसी एक कारण से न होकर विभिन्न कारकों से परिणामस्वरूप क्रमिक रूप से हुआ था।

### हड्डप्पा सभ्यता का प्रभाव/देन



- समतामूलक समाज
- सतत् विकास
- नगरीकरण
- समुद्री व्यापार
- खेती के साक्ष्य
- प्रकृति प्रेमी (उर्वरा)
- महिला सशक्तिकरण

सिन्धु सभ्यता का भारतीय क्षेत्र मे विस्तृत प्रभाव पड़ा, जिसे निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत देखा जा सकता –

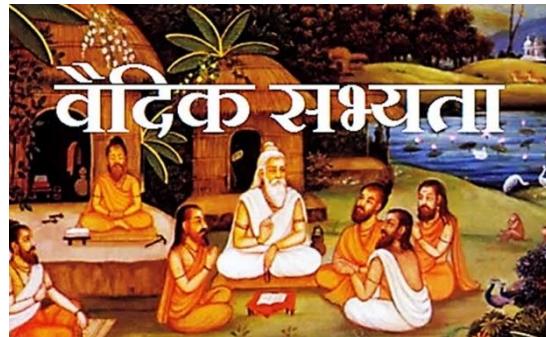
- सिन्धु सभ्यता के नगरीयकरण को कालान्तर में अपनाया गया जिससे गंगा घाटी मे द्वितीय नगरीयकरण संभव हो पाया।
- भारतीयों ने सर्वप्रथम हड्डप्पाईयों के कपास और धान की खेती का ज्ञान प्राप्त किया, इसके साथ-साथ हल का प्रयोग तथा एक साथ कई फसलों की खेती आरंभ की, उदाहरण – गेहूँ, जौ, मटर, सरसों, चना, कपास आदि आगे इन फसलों का प्रचलन भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों मे शुरू हुआ।
- सैन्धववासियों ने ही सर्वप्रथम मध्य एवं पश्चिमी एशिया के साथ समुद्री व्यापार की नींव डाली।
- धार्मिक क्षेत्र मे भी भारतीयों ने हड्डप्पाईयों से बहुत कुछ सीखा, उदाहरणतः भारतवासी, शिव, मातृदेवी, तुलसी, स्वास्तिक, पीपल आदि की पूजा करने लगे।
- कला क्षेत्र मे भी हड्डप्पाईयों का व्यापक प्रभाव पड़ा, हड्डप्पाई बड़े उदर वाली मृणमूर्तिया बनाते थे, यह शैली भारतीय मृणमूर्तियों की प्रमुख विशेषता बन गयी तथा वर्तमान मे भी इसी ढर्रे पर कई मूर्तियों का निर्माण हुआ।



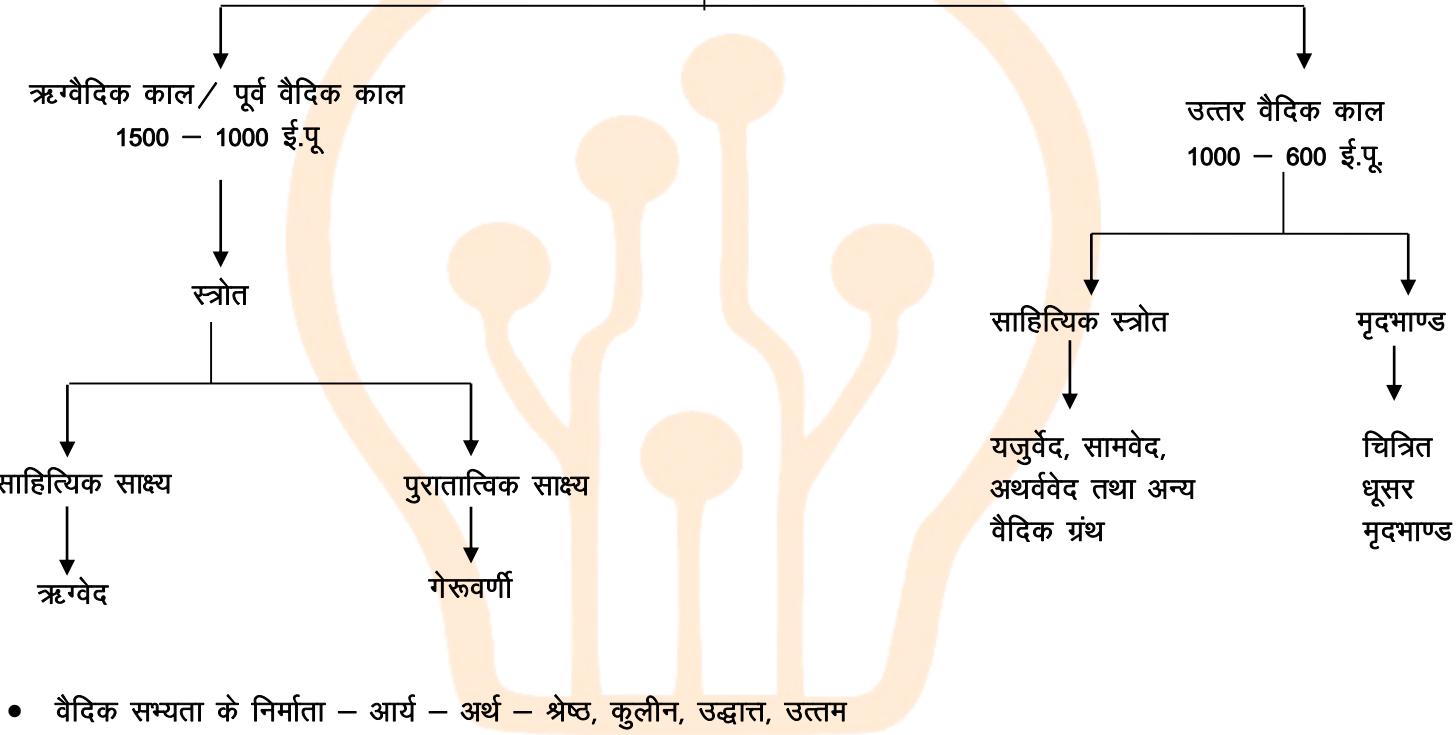
- हड्डपाई लोगों द्वारा निर्मित बैलगाड़ी तथा इक्का गाड़ी आज भी भारतीय सड़कों पर देखी जा सकती है।
- भारतीय समाज विभाजन कई हद तक हड्डपाईयों से प्रभावित हुआ, हड्डपाई समाज में शासक तथा पुरोहित वर्ग जो उत्पादन प्रक्रिया में प्रत्यक्ष भाग नहीं लेते थे, वहीं दूसरी तरफ व्यापारी, शिल्पी, लिपिक, श्रमिक वर्ग के लोगों का उत्पादन में क्रिया में महत्वपूर्ण योगदान था। आगे चलकर ये वर्ग भारतीय समाज में भी नजर आते हैं, भारतीय समाज में ब्राह्मण तथा क्षत्रिय, जो उत्पादन में भाग नहीं लेते थे तथा वैश्य व शूद्र उत्पादक वर्ग में शामिल थे।
- हड्डपा सभ्यता ने भारतीय उपमहाद्वीप को तकनीकी तथा वैज्ञानिक ज्ञान की एक विरासत प्रदान की है। उदाहरण के लिए हड्डपाई लोगों को दशमलव तथा विभाजन प्रणाली का भी ज्ञान था, इसके अतिरिक्त उन्होंने मृदभाष्डों का निर्माण चाक के माध्यम से किया एवं पहिए का प्रयोग बड़े स्तर पर किया। साथ ही हड्डपाई लोग मानक माप, बांट तथा मुहरों का उपयोग करते थे। किसी न किसी रूप में इनका प्रयोग आगे भी होता रहा। इसी तरह हड्डपाई लोगों को धातु की ढलाई पद्धति का ज्ञान था। उनके इस ज्ञान से अगली पीढ़ी के लोगों ने भी लाभ उठाया। इस प्रकार भारतीय संस्कृति पर हड्डपा सभ्यता का व्यापक प्रभाव देखा जा सकता।

### अन्य तथ्य

- सिंधु घाटी सभ्यता की लिपि को पढ़ने का सर्वप्रथम प्रयास 1925 में एल.ए. बैडेल ने किया।
- अलेकजेण्डर कनिंघम के अनुसार हड्डपाई लिपि का संबंध ब्राह्मी लिपि से है।
- कपास की खेती सर्वप्रथम सिन्धुवासियों ने की इसलिए यूनानियों ने कपास को **Sindon** कहा।
- आजादी के बाद सर्वाधिक हड्डपा स्थल गुजरात में खोजे गए।
- मोहनजोदहो से प्राप्त स्तूप टीले का निर्माण कुषाण शासक कनिष्ठ के शासक काल में हुआ।
- स्टुअर्ट पिंगट ने हड्डपा एवं मोहनजोदहो को एक विस्तृत साम्राज्य की जुड़वाँ राजधानी कहा।
- हड्डपा सभ्यता से गाय, लोहा आदि के साक्ष्य प्राप्त नहीं हुए हैं।
- हड्डपाई लोग सम्बवतः मन्दिर निर्माण भी नहीं करते थे।
- मेसोपोटामिया के लोग हड्डपा सभ्यता को मेलूहा के नाम से जानते थे।
- अंतिम संस्कार की तीनों विधियों के साक्ष्य – कालीबंगा से प्राप्त होते हैं।
- बालाकोट, अल्लाहदीनो तथा कोटदीजी पाकिस्तान में स्थित अन्य हड्डपाई स्थल हैं।
- भगवानपुरा तथा मिताथल हरियाणा में स्थित अन्य प्रमुख क्षेत्र थे।

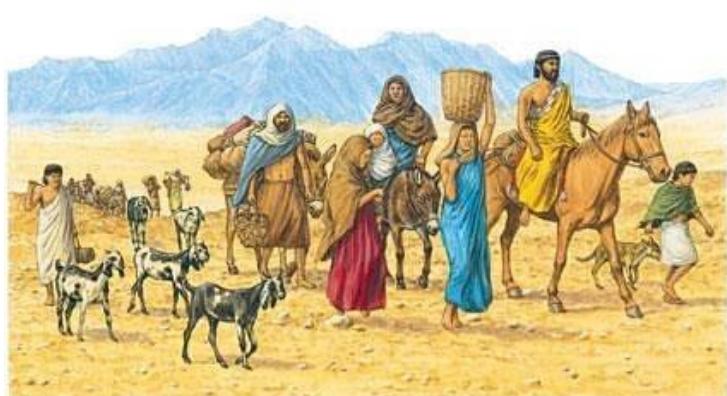


### वैदिक सभ्यता (1500 ई.पू. से 600 ई.पू.)



- वैदिक सभ्यता के निर्माता – आर्य – अर्थ – श्रेष्ठ, कुलीन, उद्घात, उत्तम

### आर्यों का आगमन





आर्यों के आगमन के संबंध में विभिन्न विद्वानों के निम्न मत हैं –

पश्चिम	जर्मनी (पंक्रा और हट्ट)	साक्ष्य— 1. स्केन्डेनेवियाई क्षेत्र में भारोपीय भाषा का प्रचलन 2. शारीरिक बनावट में समानता
मध्य एशिया	हंगरी और डेन्यूब (पी. गाइल्स)	प्राकृतिक आधार को साक्ष्य माना जैसे पशु-पक्षी, गेहूँ-चावल, वनस्पति आदि में समानता
उत्तरी ध्रुव	मैक्समूलर	सर्वाधिक मान्य मत पुस्तक: <b>Sacred of the east, lecture on the science &amp; language</b>
भारत	बालगंगाधर तिलक	पुस्तक: <b>The Arctic homes of Arya</b>
	एल.डी. कल्लर	कश्मीर
	राजबलि पाण्डेय	मध्यप्रदेश
	गंगानाथ झा	ब्रह्मर्षि देश
	दयानन्द सरस्तवी	तिब्बत
	सम्पूर्णानन्द / अविनाशचन्द्र	सप्तसैंधव क्षेत्र

साक्ष्य – ऋग्वेद में दी गई भौगोलिक स्थिति

### वैदिक साहित्य –

- वेद – संस्कृत – विद – ज्ञान को जानना
- संकलनकर्ता – कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास
- भाषा – संस्कृत
- लिपि – ब्राह्मी

### उपनाम

- श्रुति – वेदों को सुनकर याद रखा गया
- नित्य – वेदों का ज्ञान अमर है।
- अपौरुषेय – वेदों की रचना देवताओं के द्वारा की गयी

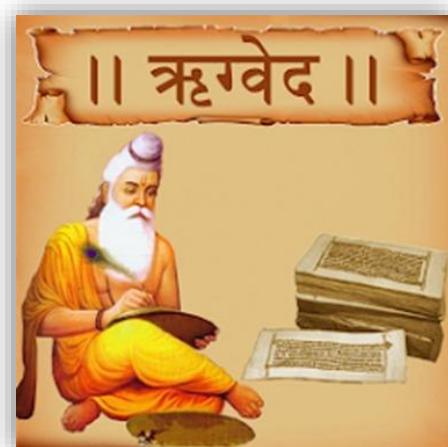
वेदों की संख्या – चार है

ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद

### ऋग्वेद

ऋग्वेद – ऋक् – ऋचाओं का समूह

- उपवेद – आयुर्वेद (धन्वंतरि)
- पाठकर्ता – होतृ/होता
- 10 मण्डल, 1028 सूक्त, 10,580 ऋचायें
- यह विश्व का सबसे प्राचीनतम् ग्रंथ जिसकी तुलना ईरानी ग्रंथ जेंद–अवेस्ता से की जाती है।
- ऋग्वेद में चार समुद्रों की चर्चा की गई है।
- ऋग्वेद में हिमालय को 'हिमवंतं' कहा गया जहां की कई चोटियों का उल्लेख हुआ – जैसे— मूजवंत, शिलावंत, अर्जिक, सूषोम/सुमेरु
- ऋग्वेद में मरुस्थल के लिये 'धन्वं' शब्द का प्रयोग किया गया है।
- "असतो मा सद्गमय" का उल्लेख है।
- वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा दी गयी है।





### ❖ मण्डल –

- ✓ 2-7 वां मंडल सर्वाधिक प्राचीन, गोत्र मण्डल, ऋषि मण्डल, वंश मण्डल कहते हैं।
- ✓ सर्वाधिक नवीन मंडल – प्रथम मण्डल व 10 वां मंडल (सबसे लम्बा मंडल)
- 1. मण्डल – मृदुच्छन्दा, दीर्घतमा, मेधातिथि, अगस्त – अग्नि देव का समर्पित
- 2. मण्डल – ग्रहत्समद – आर्य तथा अनार्यों की चर्चा
- 3. मण्डल – विश्वामित्र – गायत्री मंत्र जो सूर्य की पत्नि सविता को समर्पित है।
- 4. मण्डल – वामदेव – कृषि का उल्लेख (24 बार)
- 5. मण्डल – अत्रि – भजन, 87 सूत्र की चर्चा
- 6. मण्डल – भारद्वाज – हरयूपिया, इन्द्र को पुरंदर कहा गया है।
- 7. मण्डल – वरिष्ठ – दशराज्ञ युद्ध, का वर्णन
- 8. मण्डल – कण्ण और आंगीरस की चर्चा
- 9. मण्डल – कश्यप – सोम (पवमान) की स्तुति
- 10. मण्डल – विमदा, इन्द्र, शची, मित्र – पुरुष सूक्त और नादीय सूक्त, पुरुरवा – उर्वशी संवाद यम–यमी संवाद की चर्चा

### ❖ 10वें मंडल के पुरुष सूक्त में – वर्ण व्यवस्था का उल्लेख – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र

### ❖ नदीयसूक्त –

- 42 नदियों की चर्चा लेकिन वर्णन 19 नदियों का है।

1. सिंधु – हिरण्यनी नदी,
2. वितस्ता – झेलम
3. परुष्णी – रावी
4. विपासा – व्यास
5. शतुद्री – सतलज
6. अस्तिकनी – चिनाब
7. दृष्ट्वती – घग्गर
8. सदानीरा – गण्डक
9. कुभा – काबुल नदी
10. सुवास्तु – स्वात नदी
11. गोमती – गोमल नदी
12. कुमु – कुर्म

- ✓ सर्वाधिक महत्वपूर्ण नदी – सिन्धु
- ✓ सर्वाधिक पवित्र नदी – सरस्वती – नदीतमा, मातेतमा, देवीतमा
- ✓ गंगा का उल्लेख – 1
- ✓ यमुना का उल्लेख – 3

(Note – दस्यु को अनार्य, अनसा (चपटी नाक) कहा गया है।

- अकर्मन (वैदिक कर्मों पर विश्वास न करने वाला) व्यक्ति
- शिशनदेवा – लिंगपूजक
- पुरु नामक कबीला त्रासदस्यु के नाम से भी जाना जाता था।

### ❖ ऋग्वेद में उल्लेखित प्रमुख शब्द

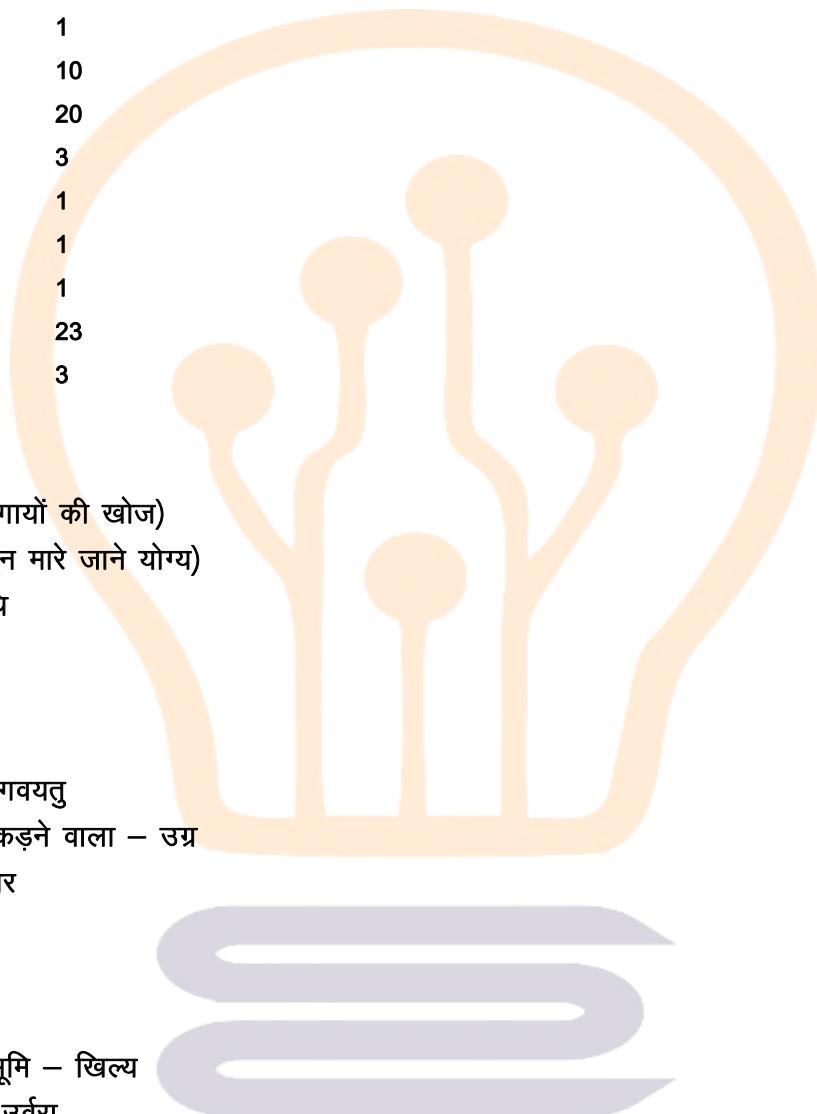
- |            |   |     |
|------------|---|-----|
| ● पिता     | — | 335 |
| ● जन       | — | 275 |
| ● इंद्र    | — | 250 |
| ● माता     | — | 234 |
| ● अश्व     | — | 215 |
| ● अग्नि    | — | 200 |
| ● गौ       | — | 176 |
| ● विश      | — | 170 |
| ● सोमदेवता | — | 144 |



• विद्धि	—	122
• सभा	—	8
• समिति	—	9
• विष्णु	—	100
• वरुण	—	30
• रुद्र	—	3
• ब्राह्मण	—	15
• क्षत्रिय	—	9
• वैश्य	—	1
• राष्ट्र	—	10
• सेना	—	20
• यमुना	—	3
• गंगा	—	1
• राजा	—	1
• पृथ्वी	—	1
• वर्ण	—	23
• गण	—	3

### ❖ प्रयुक्त शब्द

- गविष्टि – युद्ध (गायों की खोज)
- अघन्या – गाय (न मारे जाने योग्य)
- गौहन्ता – अतिथि
- दुहिता – पुत्री
- दुहित्र – पुत्र
- गोधूलि – शाम
- दूरी माप हेतु – गवयतु
- अपराधियों को पकड़ने वाला – उग्र
- सूतकार – रथकार
- स्पश – गुप्तचर
- पुरप – दुर्गपति
- दूरी – गवयुति
- पशुचारण योग्य भूमि – खिल्य
- उपजाऊ भूमि – उर्वरा
- बड़ी नहर – कुल्या
- हल – लांगल
- हल से बनी नालियां – सीता
- गोबर की खाद – करीष या शकृत



## ऋग्वैदिक कालीन राजनैतिक व्यवस्था



भूमिका –

ऋग्वेद ग्रंथ से ऋग्वैदिक कालीन जीवन पर प्रकाश पड़ता है।

### ऋग्वैदिक कालीन प्रशासनिक ईकाई



- **राजनैतिक संगठन / प्रशासन ईकाई –**  
ऋग्वैदिक काल में आर्यों के प्रशासन की मूल ईकाई परिवार (कुटुम्ब) हुआ करती थी। जिसका मुखिया कुलप कहलाता था, अनेक परिवार मिलकर एक ग्राम का निर्माण करते थे, जिसका मुखिया ग्रामिणी होता था तथा कई गांवों के समूह मिलकर विश का निर्माण करते, जिसके प्रमुख विशपति कहलाता, अनेक विश मिलकर जन का निर्माण करता जिसका प्रधान अधिकारी राजा, गोप या जनस्य गोपा कहलाता था।
- **राजा अथवा सम्राट –**  
राजा जन का प्रमुख अधिकारी होता था, जिसके दो प्रमुख कार्य होते थे, प्रथम युद्ध के समय कबीलों का नेतृत्व करना तथा कबीले की समृद्धि के लिए यज्ञों का अनुष्ठान करना। कबीले से जुड़कर पहचान – भरत कबीले का राजा। राजा का पद प्रायः वंशानुगत ही होता था, परंतु राजा निरंकुश नहीं होता था।
- **प्रमुख प्रशासनिक अधिकारी –**
  - पुरोहित – राजा का परामर्शदाता तथा राजा के लिये धार्मिक अनुष्ठान किया करता था।
  - सेनानी – सेना का प्रधान, सैन्य संगठन की देखभाल तथा राजा की अनुपस्थिति में सेना का संचालन।
  - ग्रामिणी – यह ग्राम का मुखिया होता था, तथा ग्राम में राजा के कर्तव्य का निर्वहन करता था।

**Note:-** (चारागाह या बड़े जत्थे का प्रधान – व्राजपति), पुरप – दुर्ग का अधिकारी।
- **सैन्य प्रशासन –**  
ऋग्वैदिक काल में राजा स्थायी सेना नहीं रखता था तथा युद्ध के समय कबीले के नवयुवकों की भर्ती कर ली जाती थी। आर्यों की सेना को मिलिशिया कहा जाता था। सेना प्रमुख – सेनापति।
- **राजस्व प्रशासन –**
- ✓ **सभा –** श्रेष्ठजनों की संस्था जिसका कार्य न्याय करना था। (ऋग्वेद में 8 बार उल्लेख)



- ✓ अर्थवेद में उल्लेख – प्रजापति की पुत्री
- ✓ अध्यक्ष – सभापति
- ✓ सदस्य – सभेय
- ✓ सदस्यों का चुनाव एक वर्ष हेतु
- ✓ अयोग्य – राजा को हटाने का अधिकार भी सभा के पास था।
- ✓ आधुनिक व्यवस्थापिका के रूप में सभा
- ✓ समिति – कबीले का प्रत्येक सदस्य शामिल होता था, तथा राजा के निर्वाचन संबंधी कार्य करती थी। (ऋग्वेद में 9 बार उल्लेख) मूल रूप से राजनीतिक संस्था, ईशान – सभापति।
- ✓ विदध – आर्यों की सबसे प्राचीन संस्था, जिसका कार्य संभवतः लूट का माल बांटना, धार्मिक एवं सेना से संबंधित कार्य था। (ऋग्वेद में 122 बार उल्लेख)
- न्याय एवं दण्ड व्यवस्था –
- ✓ पुलिस – उग्र
- ✓ अपराधी – जीवगृभ
- ✓ जुर्माना – गार्यों के रूप में लिया जाता था।  
ऋग्वैदिक काल में न्याय संबंधित कानूनों की कोई विधिवत् व्यवस्था नहीं थी।  
किन्तु न्याय व्यवस्था का सर्वोच्च अधिकारी राजा हुआ करता था, अन्य न्यायिक संस्था के रूप में सभा भी कार्य करती थी।  
ऋग्वेद में चोरी, धोखेबाजी, डकैती, पशु चुराना आदि अपराध प्रचलन में थे, अपराधों के लिए कठोर दण्ड दिया जाता था, परंतु मृत्यु दण्ड का प्रचलन नहीं था।

## ऋग्वैदिक सामाजिक व्यवस्था



ऋग्वैदिक काल के सामाजिक इतिहास

- प्रकृति – पितृसत्तात्मक, समतामूलक समाज
- भूमिका –  
ऋग्वेद से आर्यों की सामाजिक जानकारी प्राप्त होती है, जो इस प्रकार है –
- पितृसत्तात्मक परिवार –  
इस काल में परिवार सामान्यतः संयुक्त होते थे तथा परिवार पर पिता का पूर्ण नियंत्रण होता था, जो गृहपति कहलाता था।  
ऋजास्व तथा विश्वामित्र की कथा से जानकारी मिलती है कि पिता के अधिकारों में राज्य हस्तक्षेप नहीं कर सकता।
- वर्ण व्यवस्था –  
दसवां मण्डल पुरुष सूक्त  
ऋग्वैदिक समाज चार वर्णों में विभाजित था – ब्राह्मण (अध्ययन या अध्यापन), क्षत्रिय (रक्षण, शासन), वैश्य (कृषि या उत्पादक वर्ण), शूद्र (अन्य तीन वर्णों की सेवा) कर्म पर आधारित, वर्ग विभेद नहीं था।  
किन्तु ऋग्वैदिक वर्ण व्यवस्था जन्म पर आधारित ना होकर कर्म पर आधारित थी, पुष्टि ऋग्वेद में उल्लेखित एक मंत्र से होती है, एक विद्यार्थी कहता है, मैं कवि हूं मेरी माता अन्न पीसती है तथा मेरे पिता चिकित्सक है। एक अन्य उदाहरण के रूप में विश्वामित्र जन्म से क्षत्रिय थे किन्तु कर्म से ब्राह्मण थे।
- स्त्रियों की दशा –  
ऋग्वैदिक काल में स्त्रियों की दशा बेहतर थी।
  - वे अपने पतियों के साथ यज्ञ कार्य में भाग लेती थी।



- शिक्षा का अधिकार था, उदा.— लोपामुद्रा, विश्ववारा, घोषा, सिकता, अपाला आदि।
- बाल विवाह, सती प्रथा आदि का प्रचलन नहीं था।
- विधवा विवाह, अन्तर्जातीय विवाह आदि का प्रचलन।
- महिलाएँ सभा, समिति तथा सम्पत्ति में भाग लेती थी।
- महिलाओं के समान की पुष्टि ऋग्वेद में जायेदस्तम् अर्थात् “पल्नि ही गृह है” से होती है।
- शतपथ ब्राह्मण में पत्नी को पति की अद्वागिनी कहा गया है।
- कबीलाई प्रथाएं –
  - ऋग्वैदिक समाज में कुछ कबीलाई प्रथायें थीं जैसे – बहु विवाह (मरुतों ने रोदसी को मिलकर भोगा था)।
  - जाति प्रथा व अस्पृश्यता का अस्तित्व नहीं।
 नियोग प्रथा आदि।
- विवाह व्यवस्था –  
अनुलोम (उच्च वर्ण का पुरुष तथा निम्न वर्ण की महिला) तथा प्रतिलोम विवाह (उच्च वर्ण की महिला तथा निम्न वर्ण का पुरुष) का उल्लेख मिलता है।
- दास प्रथा –
  - ऋग्वैदिक समाज में दास प्रथा का प्रचलन थी, किन्तु दासों को घरेलू कार्यों में लगाया जाता था, न कि कृषि कार्य में।
- खान-पान –
  - आर्य सामान्यतः शाकाहारी एवं मांसाहारी होते थे।
  - शाकाहारी – चावल, जौ, क्षीरपकोंदन (दही+यव), सोमरस, दूध, दही आदि का सेवन, सत्तू+दही – करंभ, अपूपघृतकतम् (मालपुवे)
  - मांसाहारी – भेड़, बकरी आदि।
- वेशभूषा –
  - वस्त्र – सूत, ऊन मृग के चमड़े के वस्त्र धारण करते थे।
  - वस्त्र चार प्रकार – वास (कमर के नीचे का वस्त्र), अधिवास (अंगरखा), तथा उष्णीय (पगड़ी), नीवि (अन्तःवस्त्र)
- आभूषण –
  - कर्ण शोभन (कर्णजूल), निष्कग्रीव (कण्डहार), करीर (शिरोभूषण), अंगूठी भुजवंद आदि।
- मनोरंजन के साधन –
  - घुड़ दौड़, रथदौड़, मल्ल-युद्ध, नृत्य संगीत, जुआ आदि।

### ऋग्वैदिक आर्थिक व्यवस्था



#### • भूमिका –

यह मुख्यतः कबीलाई व्यवस्था थी। ऋग्वैदिक समाज की आर्थिक व्यवस्था की जानकारी ऋग्वेद से मिलती है, इस समाज की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार पशुपालन, फिर कृषि एवं उद्योग धंधे के प्रमाण मौजूद थे, जिन्हें निम्न प्रकार समझ सकते हैं –



- पशुपालन –

अस्थायी जीवन – ऋग्वैदिक आर्य अर्थ (सम्पत्ति) के रूप में प्रथमतः पशुपालन करते थे, जिसमें वह गाय, भेड़ बकरी, अश्व आदि पालते थे। आर्य के लिए गायों का महत्व सर्वाधिक था, गाय को सम्पन्नता का द्योतक माना जाता था। आर्यों का सर्वाधिक प्रिय पशु घोड़ा था।

- कृषि –

सिंचार्इ हेतु दो प्रकार का जल – 1. स्वयंजा – वर्षा, तालाब का जल, 2. खनित्रया – कुआं या भूमि खोदकर। कृषि आर्यों का द्वितीय व्यवसाय था, क्योंकि इस समय भूमि महत्वहीन थी। फिर भी ऋग्वेद में कृषि का 24 बार उल्लेख है तथा अन्य कृषि से संबंधित वाक्यों का उल्लेख है।

जैसे – लांगल (हल), सीता (हल से बनी नालियां) आदि। यव (जौ), ब्रीहि (चावल) आदि फसलों का उत्पादन करते थे।

- उद्योग धंधे –

ऋग्वैदिक आर्य प्रायः वस्त्र उद्योग, बढ़ई, कर्मकार, रथकार, कुम्हार आदि कार्य करते थे।

संभवतः अयस् शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में कांसे या तांबे के रूप में हुआ, जिससे पता चलता है, कि आर्यों को धातु शिल्प का ज्ञान भी था।

- व्यापार –

ऋग्वेद में मुख्यतः आंतरिक व्यापार का प्रचलन था, जो गाड़ियों, रथों एवं पशुओं द्वारा होता था, व्यापार हेतु सुदूर क्षेत्र में भ्रमण करने वाले व्यक्तियों के समूह को पणि कहा जाता था।

ऋग्वेद में समुद्री व्यापार का कोई उल्लेख नहीं है, फिर भी भुज्य की यात्रा का वर्णन है, जिससे ज्ञात होता है, ऋग्वैदिक आर्यों को नौकाओं का ज्ञान था। इस काल में सूदखोर वर्ग को वेकनाट कहते थे।

- विनिमय का माध्यम –

ऋग्वैदिक में विनिमय का माध्यम व्यापक रूप से वस्तु विनिमय प्रणाली थी, किन्तु सम्भवतः विनिमय के लिए गाय, घोड़े, निष्क आदि का भी प्रयोग किया जाता रहा होगा।

### ऋग्वैदिक आर्यों का धार्मिक जीवन



**प्रकृति पूजक –**

ऋग्वैदिक आर्य जब प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को समझने में असफल हुये तब उन्होंने प्रकृति को देव रूप में पूजना प्रारंभ किया जैसे – सूर्य, पृथ्वी, जल, अग्नि आदि।

- स्तुति और यज्ञ –

आर्यों की उपासना की विधि अत्यधिक सरल थी। वे देवताओं को प्रसन्न करने के लिए स्तुति और यज्ञ किया करते थे, तथा उसके फल के रूप में पुत्र–पौत्रों धन–धान्य आदि की कामना करते थे।

- मन्दिरों एवं मूर्ति पूजा का अभाव –

ऋग्वेद में किसी प्रकार के मंदिर या मूर्ति का उल्लेख नहीं मिलता, अपितु वे देवताओं को प्रसन्न करने हेतु स्तुति और यज्ञ किया करते थे।

- स्वर्ग – नरक की अवधारणा –



आर्यों का मानना था कि सद्काम तथा पुण्य करने वाले लोग स्वर्ग में सुख का भोग करते हैं। अनैतिक विचार वाले एवं दुष्ट लोग नरक की आग में जलेंगे।

- ऋत् की अवधारणा – ऋत् का अर्थ नैतिकता होता है, ऋग्वैदिक आर्यों में नैतिकता बनी रहे इसके लिये ऋत् की अवधारणा पर बल दिया गया। प्रकृति में नैतिक नियमों का नियमन वरुण देव करते थे अतः वरुण देव को ऋतस्यगोपा कहा गया है।
- देवताओं की श्रेणियां – ऋग्वेद के अनुसार आर्यों के कुल 33 देवता थे।

✓ आकाशवासी –

- बहुदेववादी
- पुरुष भाव की प्रधानता
- द्यौ – (आकाश) – आर्यों के सबसे प्राचीन देव
- वरुण – (ईरानी –अहुरमज्दा), यूनान (यूरेनस) – समुद्र का देव— पृथ्वी, सूर्य का निर्माता, विश्व का नियामक आदि।
- मित्र – शपथ एवं प्रतिज्ञा के देवता
- सूर्य, विष्णु आदि
- सविता – सूर्य की पत्ती के रूप
- ऊषा – प्रातः काल की देवी
- अश्विन – संकट के देवता, चिकित्सक
- पूषन – पशुओं के देवता

✓ अंतरिक्षवासी –

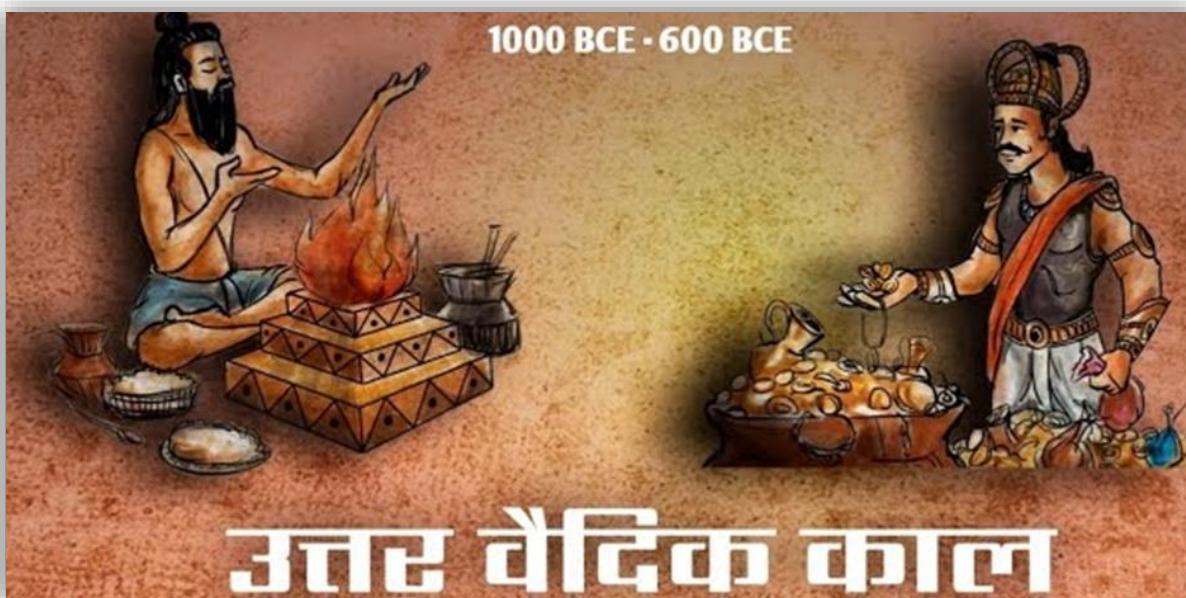
- इंद्र – वर्षा, आंधी, तूफान तथा बिजली का देवता, पुरन्दर
- रुद्र – अतिक्रोधित, स्वभाववाला देव, कृतवास (खाल धारण करने वाला), ऋष्यम्बक
- मरुत – तूफान का देवता
- अदिति – देवों की जननी तथा बंधनों से मुक्ति प्रदान करने वाली देवी

✓ पृथ्वीवासी –

- अग्नि – मनुष्य तथा देवताओं के मध्य मध्यस्थिता करने वाले
- सोम – आर्यों के हर्षोल्लास का देवता तथा वनस्पतियों का देवता
- वृहस्पति – देवताओं के गुरु
- सरस्वती – वाणी की देवी

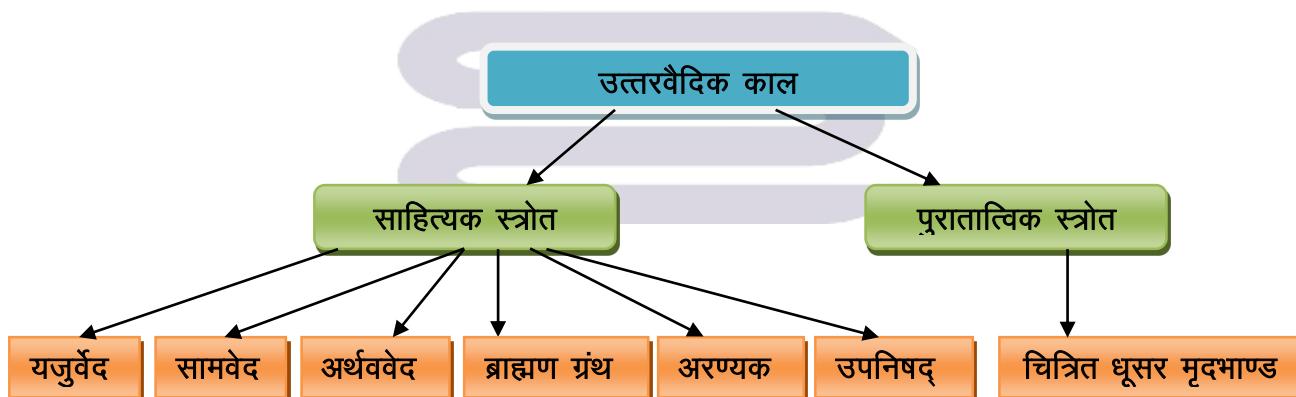
(Note – हेनोथिज्म – (ऋग्वैदिक ऋषियों ने जिस समय जिस देवता की प्रार्थना की, उसे सर्वोच्च मानकर उसमें सम्पूर्ण गुणों का आरोपण कर दिया, मैक्समूलर ने इस प्रवृत्ति को हेनोथिज्म कहा है)

उत्तरवैदिक काल 1000–600 ई.पू.



भारतीय इतिहास में उस काल को उत्तरवैदिक काल कहा जाता है, जिस काल में सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण ग्रंथों, अरण्यकों, उपनिषदों आदि की रचना हुई।

- उत्तरवैदिक में आर्यों ने यमुना, गंगा एवं दक्षिण सदानीरा नदियों को जीत लिया, तथा आर्यावर्त का विस्तार कर उत्तर में हिमालय, पश्चिम में गंधार, पूर्व में विदेह तथा दक्षिण में नर्मदा नदी तक कर दिया था।
- शतपथ ब्राह्मण ग्रंथ में उल्लेख है कि विदेह माधव ने अपने गुरु राहुगण की सहायता से अग्नि द्वारा सरस्वती नदी से लेकर गण्डक (सदानीरा) नदी तक के क्षेत्र को साफ किया।
- मगध और अंग सभी अनार्य राज्य थे, जिन्हें अथर्ववेद में ब्रात्य कहा गया।
- ऋग्वैदिक जन संयुक्त होकर बड़े-बड़े जनपदों का निर्माण करने लगे। जैसे – पुरु और भरत कबीला मिलकर कुरु एवं तुर्वश और क्रिवि कबीला मिलकर पांचाल जनपद की स्थापना की।
- शतपथ ब्राह्मण में पांचालों को तथा अथर्ववेद में कुरुओं को श्रेष्ठ बताया, कुरुओं का अंतिम राजा निचक्षु था जो अपनी राजधानी हस्तिनापुर से कौशाम्बी लाया
- उत्तरवैदिक काल में ऋग्वैदिक व्यवस्था जटिल होने लगी थी।





### सामवेद –

- साम – गायन पद्य ग्रंथ
- पाठकर्ता – उद्गाता
- उपवेद – गंधर्ववेद (नारद)
- ज्यादातर मंत्र ऋग्वेद से लिये गये हैं।
- भारतीय संगीत का जनक माना जाता है।

### यजुर्वेद –

- पाठकर्ता – अध्वर्यु
  - उपवेद – धनुर्वेद (विश्वामित्र)
  - यज्ञ – विधियों एवं कर्मकाण्ड का उल्लेख
  - गद्य व पद्य दोनों में
- a. कृष्ण यजुर्वेद – पद्यात्मक और गद्यात्मक
  - b. शुक्ल यजुर्वेद – पद्यात्मक – वाजसनेयी संहिता भी कहते हैं।



### अथर्ववेद –

- पाठकर्ता – ब्रह्म
- उपवेद – शिल्पवेद (विश्वकर्मा)
- वशीकरण, जादूटोना, भूत-प्रेत व औषधियों का वर्णन मिलता है।
- परीक्षित को मृत्युलोक का देवता कहा गया है।
- सभा – समिति का उल्लेख
- प्रजापति की पुत्रियाँ कहा गया।
- इसे ब्रह्मवेद, श्रेष्ठवेद, लौकिकवेद, नवीनवेद, लोकप्रियवेद भी कहा जाता है।
- करीष का उल्लेख मिलता है।
- कुरु एवं पांचाल जनपद को श्रेष्ठ एवं मगध जनपद को ब्रात्य बताया गया है।
- पृथुवैन्य को हल के रूप में उल्लेख नोट-महाभारत को पंचमवेद कहा जाता है।

### ब्राह्मण ग्रंथ –

वैदिक मंत्रों की व्याख्या हेतु ————— कर्मकाण्ड पर आधारित

मूल कर्म – योग प्रतिपाद्य

1. ऋग्वेद के ब्राह्मण –

ऐतरेय ब्राह्मण – महिलाओं को सभी दुखों का कारण बताया है।  
कौषितकी ब्राह्मण – शंखायन ऋषि द्वारा रचित।

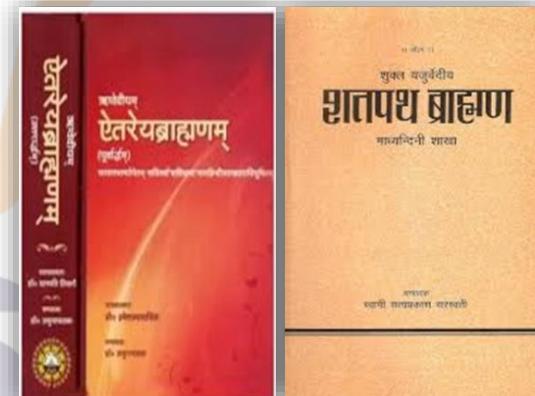
2. यजुर्वेद के ब्राह्मण – महिला को पुरुष की अर्धागिनी कहा गया है।

a. शतपथ – अश्वमेध के सन्दर्भ में जनक, दुष्टंत तथा जन की चर्चा की गयी है।  
b. तैत्तरीय – मनुष्य का आचरण देवों के समान होना चाहिए। इसमें मन को सर्वोच्च प्रजापति माना गया है।

3. सामवेद के ब्राह्मण –

a. पंचविंश – सरस्वती नदी का विलुप्त होने तथा पुनः प्रकट होने का उल्लेख मिलता है।  
b. षडविंश – 26 अध्याय – ताण्डकशेष ब्राह्मण की संज्ञा  
c. जैमिनीय ब्राह्मण

4. अथर्ववेद – एकमात्र ब्राह्मण – गोपथ – केवल्य की अवधारणा की चर्चा मिलती है।



### आरण्यक –

- वन में रचा गया साहित्य।
- इन ग्रंथों का मनन अरण्य (वन) में किया गया।

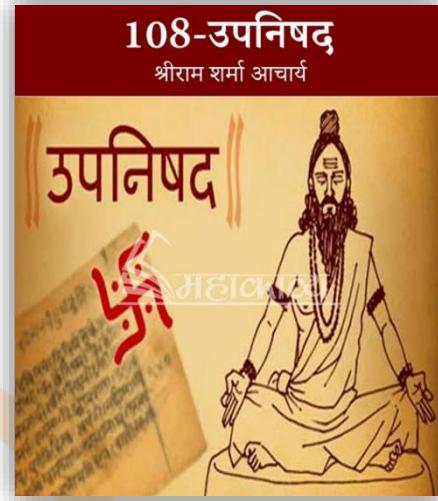
- विषय वस्तु – अध्याय, विंतन तथा दर्शन आदि।
- अर्थवेद का कोई अरण्यक नहीं।
- यज्ञ एवं कर्मकाण्ड का विरोध।

#### उपनिषद/वेदांत –

- विषय – दार्शनिक
- संख्या – 108
- शंकराचार्य के अनुसार संख्या – 10
- प्रमाणिक उपनिषद – 13
- ✓ दारा शिकोह ने 52 उपनिषदों का अनुवाद “सिर-ए-अकबर” के नाम से किया।
- ❖ बृहदारण्यक उपनिषद – यजुर्वेद
  - सर्वाधिक बड़ा उपनिषद
  - पुनर्जन्म का स्पष्ट साक्ष्य मिलता है।
  - इसमें याज्ञवलक्य ऋषि और गार्गी (महिला) के बीच हुये संवाद का उल्लेख मिलता है।
- ❖ छांदोग्य उपनिषद – सामवेद
  - इसमें कृष्ण का उल्लेख देवकीपुत्र तथा आंगिरस का शिष्य के रूप में मिलता है।
  - सत्यकाम जाबालि ऋषि की कहानी की चर्चा है।
  - पंचमवेद की संज्ञा – 3 आश्रमों का उल्लेख मिलता है।
- ❖ मुण्डकोपनिषद – अर्थवेद
  - यज्ञो की तुलना टूटी नौकाओं से की गई है।
  - सत्यमेव जयते भारत के राष्ट्रीय वाक्य को यही से लिया गया है।
- ❖ जबालोपनिषद – यजुर्वेद
  - चारो आश्रमों का उल्लेख मिलता है।
- ❖ कठोपनिषद – यजुर्वेद
  - यम-नचिकेता संवाद का वर्णन
- ❖ मांडूक्य उपनिषद – अर्थवेद
  - सबसे छोटा उपनिषद
- ❖ इशोपनिषद – यजुर्वेद – याज्ञवलक्य तथा श्वेतकेतु संवाद का उल्लेख
- ❖ श्वेताश्वतोषनिषद – यजुर्वेद – भवित की अवधारणा, योग, सांख्य व वेदांत के सिद्धांत व जगत संबंधी विचार का उल्लेख है।

#### वेदांग –

- मंत्रों का वैदिक साहित्य को हेतु।
- शूद्र – कर्मकाण्ड से संबंधित नियम।
- शिक्षा-वैदिक उच्चारण – वेदों की नाक
- कल्प – वेदों के हाथ
- व्याकरण – पाणिनी – वेदों के मुख
- निरुक्त – यास्क ऋषि – जाति शब्द का पहली बार प्रयोग – वेदों के कान
- वैदिक शब्दों के अर्थ का उल्लेख – व्युत्पत्ति
- छंद – पिंगल ऋषि – वेदों के पैर, वेदों के आवरण
- ज्योतिष – लगधमुनि – वेदों के नेत्र
- यज्ञ व अनुष्ठान के समय का बोध
- a. श्रौत सूत्र – वैदिक कर्मकाण्ड का कल्प विधान, इसमें हवन, योग, इष्टियाँ एवं सत्र प्रकल्पित है। शुल्व सूत्र इसका भाग है। इसी से रेखा गणित का प्रारंभ हुआ।



#### वेदों के 6 अंग वेदांग





- b. गृह्य सूत्र – 16 संस्कार, 8 प्रकार के विवाह का वर्णन है।
- c. धर्म सूत्र – 4 पुरुषार्थ, वर्णाश्रम धर्म, व्यक्तिगत आचरण, राजा एवं प्रजा के कर्तव्य आदि का विधान है।
- d. शुल्व सूत्र – यज्ञ वेदिका का निर्माण संबंधी ज्यामितीय ज्ञान उल्लेखित है।

### 16 संस्कार –

1. गर्भाधान
2. पुंसवन
3. सीमान्तोन्नयन
4. जातकर्म
5. नामकरण
6. निष्क्रमण
7. अन्नप्राशन
8. चूडाकर्म / मुण्डन
9. कर्ण छेदन
10. विद्यारम्भ
11. उपनयन
12. वेदारम्भ
13. केशान्त
14. समावर्तन
15. विवाह
16. अंत्येष्टि



### 8 प्रकार के विवाह –

- धर्म के अनुकूल –
  - ◆ ब्रह्म विवाह
  - ◆ देव विवाह
  - ◆ आर्ष विवाह
  - ◆ प्रजापत्य विवाह
- धर्म के विपरीत –
  - ◆ गन्धर्व विवाह
  - ◆ असुर विवाह
  - ◆ राक्षस विवाह
  - ◆ पैशाच विवाह

- 1 ब्रह्म विवाह
- 2 दैव विवाह
- 3 आर्ष विवाह
- 4 प्राजापत्य विवाह
- 5 असुर विवाह
- 6 राक्षस विवाह
- 7 गन्धर्व विवाह
- 8 पैशाच विवाह

### विवाह के प्रकार

### 4 पुरुषार्थ –

1. धर्म
2. अर्थ
3. काम
4. मोक्ष

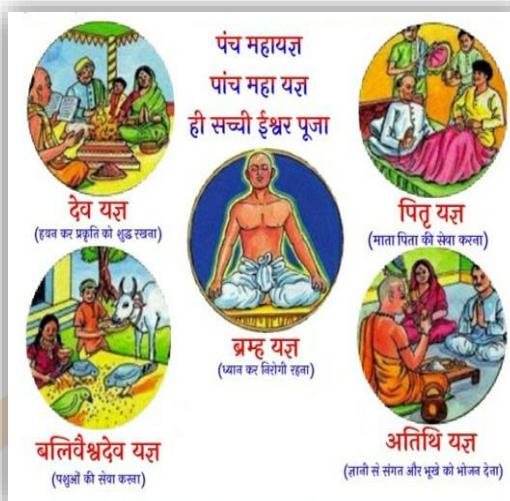




## आश्रम व्यवस्था – 4

1. ब्रह्मचर्य आश्रम
2. गृहस्थ आश्रम
3. वानप्रस्थ आश्रम
4. संन्यास आश्रम

- पंच— महायज्ञ एवं  
त्रयऋण का उल्लेख
- a. ब्रह्म यज्ञ
  - b. पितृ यज्ञ
  - c. देव यज्ञ
  - d. भूत यज्ञ
  - e. नृ—यज्ञ या अतिथि यज्ञ  
त्रय ऋण —
  - a. ऋषि ऋण
  - b. पितृ ऋण
  - c. देव ऋण



## आश्रम व्यवस्था



## स्मृति ग्रन्थ

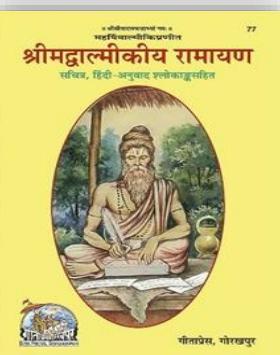
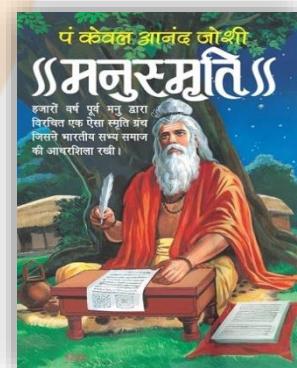
➤ महर्षि मनु – हिंदू विधि संहिता

1. मनु स्मृति – (शुंग काल)
  - 7 प्रकार के दास का उल्लेख
  - सती प्रथा का समर्थन
  - पिता द्वारा लिया गया कर्ज पुत्र को अदा करना चाहिए।
2. नारद स्मृति – (गुप्त काल)
  - सती प्रथा का विरोध किया
  - महिला पुर्णविवाह का अधिकार
  - 15 प्रकार के दास का उल्लेख
  - पहली बार दीनार शब्द का उल्लेख
3. मैत्रायणी संहिता – महिलाओं की तुलना शराब व जुएँ से की।

### महाकाव्य –

1. रामायण – (9 ई.पू.)

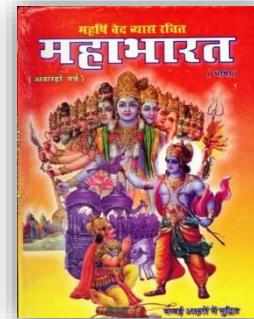
- रचनाकार – वाल्मीकी
- भाषा – संस्कृत
- लिपि – ब्राह्मी
- इसे आदिकाव्य भी कहते हैं।
- इसे चतुर्विंशति संहिता भी कहते हैं।
- इसमें सात काण्ड – बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किंधाकाण्ड, सुन्दर काण्ड, लंकाकाण्ड, उत्तर काण्ड।





## 2. महाभारत – (9 ई.पू.)

- रचनाकार – महर्षि वेदव्यास
- भाषा – संस्कृत, लिपि – ब्राह्मी
- इसमे 18 पर्व का वर्णन है।
- इसके छठे पर्व को भीष्म पर्व कहते (गीता ज्ञान) है।
- विश्व का सबसे बड़ा महाकाव्य है।
- इसे जयसंहिता, भारत, महाभारत, शतसाहस्री संहिता (1,000,00)
- भारत – 8000 श्लोक
- महाभारत – 24,000 श्लोक
- फैजी ने फारसी अनुवाद – रज्मनामा (अकबर काल) नाम से किया।

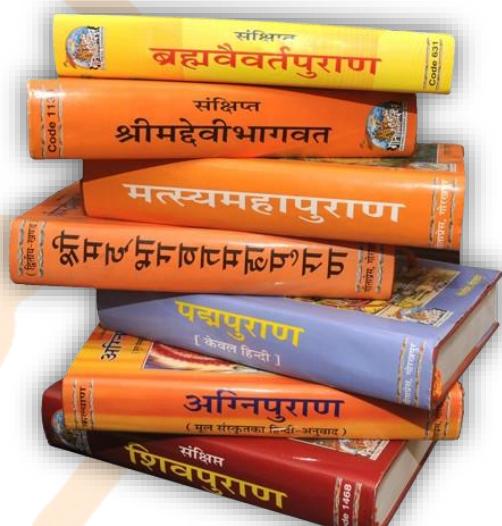


## 3. पुराण – इनमें प्राचीन राजाओं की वंशावली का वर्णन मिलता है, इसका संकलन लोमर्हष ऋषि तथा उनके पुत्र उग्रश्रवा ने किया। इनकी संख्या 18 है।

- मत्स्य पुराण – सर्वाधिक प्राचीन, सातवाहन एवं शुंग वंश की जानकारी
- विष्णु पुराण – मौर्यों की जानकारी
- वायु पुराण – गुप्त वंश की जानकारी
- लिंग पुराण – शिव के 28 रथों का वर्णन
- स्कन्द पुराण – सबसे बड़ा
- भविष्य पुराण – सबसे छोटा
- गरुड़ पुराण – सबसे नवीन पुराण

✓ पुराणों के पांच विषय –

1. सर्ग – संसार की सृष्टि (बनाना)
  2. प्रतिसर्ग – प्रलय के बाद पुनः सुष्टि
  3. वंश – देवताओं तथा ऋषियों के वंशों का वर्णन
  4. मन्वन्तर – दो मनुओं के मध्य अन्तर, समय मापन की खगोलीय अवधि
  5. वंशानुचरित – कलियुग के प्रतापी राजाओं की वंशावली
- उत्तरवैदिक काल में राजा को – (बलिहार) – कर लेने वाला कहा गया



## उत्तरवैदिक काल की राजनैतिक व्यवस्था



● भूमिका –

उत्तरवैदिक काल में आर्य सभ्यता पूरब एवं दक्षिण की ओर बढ़ रही थी। हिमालय से लेकर विध्याचल तक आर्यों के प्रभाव में आ गया था, उत्तरवैदिक साहित्यों से मिली जानकारी के अनुसार हम उत्तरवैदिक राजनैतिक व्यवस्था को निम्न बिन्दुओं के अनुसार समझ सकते हैं।



- जनपदों का उदय –

उत्तरवैदिक काल में ऋग्वैदिक जन संयुक्त होकर जनपदों का स्वरूप ले लिया जैसे भरतों तथा पुरुओं से कुरु जनपद एवं तुर्वश तथा क्रीवि से मिलकर पांचाल जनपद का निर्माण हुआ।

इस समय कबीलाई जनों के स्थान पर बड़े-बड़े क्षेत्रीय जनपदों का उदय हुआ।

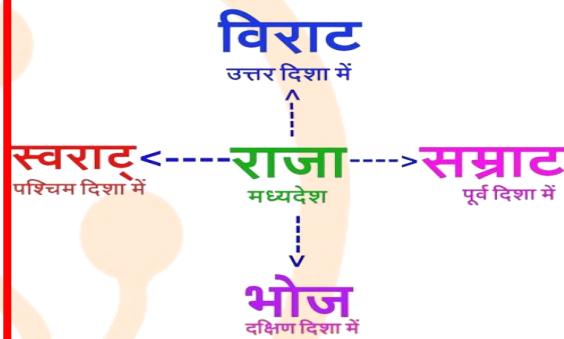
- राजा –

इस काल में भी राजा का पद वंशानुगत था, किन्तु ऋग्वैदिक काल की अपेक्षा उत्तरवैदिक काल के राजाओं की शक्तियों में असीम वृद्धि हुई। राजा को स्वयं का दैवीय स्वरूप सिद्ध करने के लिए बड़े-बड़े यज्ञों का अनुष्ठान करने लगे जैसे – अश्वमेध यज्ञ, राजसूय (राजा को दिव्य शक्ति प्राप्त), वाजपेयी यज्ञ (रथ दौड़) आदि।

उत्तरवैदिक काल में राजा बड़ी-बड़ी उपाधियां लेने लगे जैसे – ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार – पूर्व का सम्राट्, पश्चिम के स्वराट्, उत्तर के विराट्, दक्षिण के भोज, तथा मध्यदेश के राजा आदि उपाधि धारण करते थे।



### अलग-अलग दिशाओं में राजा का सम्बोधन



- प्रमुख शासन अधिकारी –

उत्तरवैदिक प्रशासन में शासन अधिकारियों का विस्तार हुआ, जो रत्निन कहलाते थे।

शतपथ ब्राह्मण के अनुसार रत्नियों की संख्या 12 है जो इस प्रकार हैं –

- पुरोहित – मुख्य पुजारी – राजगुरु
- युवराज – उत्तराधिकारी
- महिषी – राजा की पत्नी, पटरानी
- सेनानी – सेनाध्यक्ष
- सूत (सारथी) – राजा का सारथी
- ग्रामिणी – ग्राम प्रमुख
- क्षत्रि / क्षत्रि – प्रतिहार द्वारपाल
- संग्रहीत – (कोषाध्यक्ष)
- भागदुध – (कर संग्रहकर्ता)
- अक्षवाप – (पासे फेंकने वाला, लेखापाल), आय-व्यय गणनाध्यक्ष
- गोविकर्तन – (वन अधिकारी)
- पालागल – (राजा का मित्र और विदूषक, संदेशवाहक)



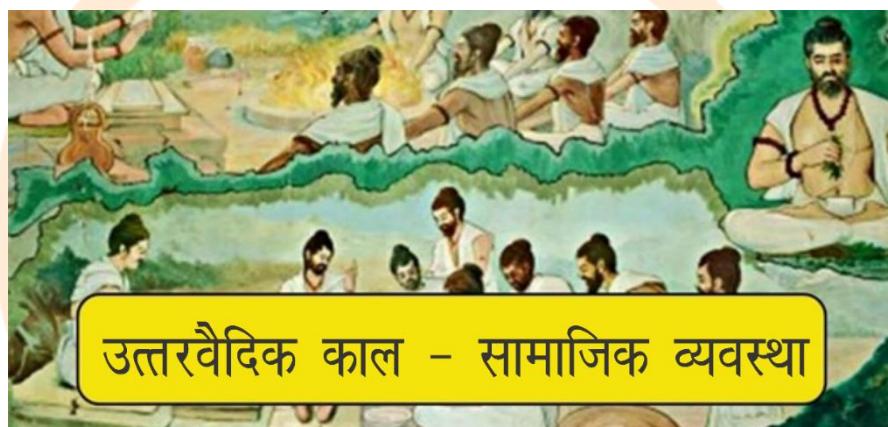
- सभा, समिति तथा विदथ –

विदथ उत्तरवैदिक काल में विलुप्त हो चुकी थी।

सभा, समिति विद्यमान थी किन्तु राजा की शक्तियों में वृद्धि के कारण निःसंदेह इनकी शक्तियों का छास हुआ था, परन्तु राजा निरकुंश नहीं हुआ, उत्तरवैदिक काल में भी राजा सभा तथा समितियों का समर्थन प्राप्त करने का प्रयत्न करता था।

- राजस्व प्रशासन –  
नियमित कृषि के विस्तार से पहली बार स्थायी कर प्रणाली स्थापित हुई, अब बलि (कर) नियमित हो गयी जो सम्भवतः उपज 1/6 भाग होता था जिसे भागदूध नामक अधिकारी द्वारा वसूला जाता था।
- सैन्य संगठन –  
सेना अभी भी अस्थायी ही थी। युद्ध के समय नवयुवकों की भर्ती कर ली जाती थी।
- न्याय और दण्ड व्यवस्था –  
राजा सर्वोच्च न्यायाधिकारी होता था। ग्राम स्तर न्याय ग्राम्यवादिन द्वारा किया जाता था। दण्ड के स्वरूप में शारीरिक यातनायें, जुर्माना आदि प्रचलित थे। अपराध सिद्धि हेतु जल परीक्षा एवं अग्नि परीक्षा प्रचलित।

### उत्तरवैदिक काल की सामाजिक व्यवस्था



- भूमिका –  
उत्तरवैदिक आर्यों के जीवन में यह परिवर्तन का काल था, आर्यों ने कबीलाई पद्धति छोड़कर स्थायी जीवन प्रारम्भ किया।
- पितृसत्तात्मक परिवार –  
उत्तरवैदिक आर्यों का समाज पितृसत्तात्मक था। परिवार के सभी महत्वपूर्ण निर्णय पिता द्वारा लिये जाते थे। अजीगर्त तथा शुनःशेष की कथा के आधार पर कहा जा सकता है, कि राज्य भी पारिवारिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं कर सकता। इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि पिता पुत्र के संबंधों में मधुरता नहीं थी।
- वर्ण व्यवस्था –  
उत्तरवैदिक काल में चतुर्वर्ण व्यवस्था कर्म से आधारित ना होकर अब जन्म पर आधारित हो गई। प्रारम्भिक तीन वर्णों को (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) द्वितीय कहा गया एवं शूद्रों से उपनयन संस्कार छीन लिये गये।
- महिलाओं की दशा –  
उत्तरवैदिक काल में महिलाओं की स्थिति में तुलनात्मक रूप से गिरावट आयी, मैत्रायणी संहिता में महिला की तुलना शराब, जुएँ से की गई। बाल विवाह का प्रचलन बढ़ने लगा सामान्य वर्ण की महिलाओं से उपनयन संस्कार छीन लिया गया। सभा, समिति में महिलाओं का प्रवेश वर्जित कर दिया गया, किन्तु फिर भी उच्च परिवारों की महिला शिक्षा ग्रहण कर सकती थी। उत्तरवैदिक काल में कुछ विदूषियों की चर्चा की गई जिसमें गार्गी, मैत्रायणी आदि प्रमुख हैं, सती प्रथा आंशिक थी।
- समतामूलक –  
वर्ण व्यवस्था जटिल हो जाने के बावजूद भी छुआछूत का अभाव था। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार गोविकर्तन तक्षा (बद्धी) एवं रथकार जैसे रत्निन जो कि शूद्र थे, उन्हें भी उपनयन संस्कार का अधिकार था।
- विवाह व्यवस्था –





अनुलोम तथा प्रतिलोम विवाह का प्रचलन था, गृहसूत्र में 8 विवाहों का उल्लेख किया गया है, इसके साथ विधवा विवाह एवं नियोग प्रथा का भी प्रचलन था।

अंतर्जातीय विवाह भी सामान्यतः देखने को मिला है।

- **दास व्यवस्था –**

यहां भी दासों को घरेलू कार्यों में लगाया जाता था, न कि उत्पादन कार्यों में।

- **गोत्र व्यवस्था –**

अर्थर्ववेद में गायों के आधार पर पहली बार समाज में गोत्र की स्थापना की चर्चा मिलती है, जिसमें एक ही मूल पुरुष से उत्पन्न समस्त संतानों के लिए गोत्र शब्द का प्रयोग किया गया।

- **आश्रम व्यवस्था –**

ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम, सन्यास आश्रम का वर्णन मिलता है।

- **खान–पान –**

आर्य सामान्यतः शाकाहारी एवं मांसाहारी होते थे।

— शाकाहारी — चावल, जौ, क्षीरपकोंदन (दही + यव), सोमरस, दूध, दही आदि का सेवन, सत्तू+दही — करंभ, अपूपघृतवत्तम् (मालपूवे), मांसाहारी — भेड़, बकरी आदि।

- **वेशभूषा –**

वस्त्र — सूत, ऊन मृग के चमड़े के वस्त्र धारण करते थे

वस्त्र चार प्रकार — वास (कमर के नीचे का वस्त्र), अधिवास (अंगरखा), तथा उष्णीय (पगड़ी), नीवि (अन्तःवस्त्र)

- **आभूषण –**

कर्ण शोभन (कर्णजूल), निष्कग्रीव (कण्डहार) करीर (शिरोभूषण), अंगूठी भुजवंद आदि।

- **मनोरंजन के साधन –**

घुड़ दौड़, रथदौड़, मल्ल—युद्ध, नृत्य संगीत, जुआ आदि।

## उत्तरवैदिक काल की धार्मिक व्यवस्था



उत्तरवैदिक काल — धार्मिक व्यवस्था

- **नवीन देवताओं का उदय –**

उत्तरवैदिक आर्य भी बहुवादी थे, किन्तु अब देवताओं में उच्च स्थान प्रजापति ने ले लिया (पूर्व—इंद्र) तथा इंद्र, वरुण, अग्नि आदि की प्रमुखता समाप्त हुई एवं उनका स्थान पर रुद्र (शिव) तथा विष्णु ने ले लिया।

- **यज्ञ और कर्मकाण्ड –**

उत्तरवैदिक काल में यज्ञों और कर्मकाण्डों पर अधिक बल दिया गया तथा देवताओं को प्रसन्न करने के लिए बड़े—बड़े यज्ञ किये जाने लगे, जिससे बड़े स्तर पर पशुओं की बलि दी जाने लगी तथा शुद्ध मंत्र उच्चारण पर बल दिया जाने लगा।

- पंच महायज्ञ –
  1. ब्रह्म यज्ञ – प्राचीन ऋषियों के प्रति कृतज्ञता।
  2. देव यज्ञ – देवताओं के प्रति कृतज्ञता।
  3. पितृ यज्ञ – पितृओं के प्रति कृतज्ञता।
  4. अतिथि यज्ञ – अतिथियों की सेवा, दान–दक्षिणा आदि।
  5. भूत यज्ञ – प्रत्येक परिवार, द्वारा पशु पक्षियों को दाना चुगाना, मछलियों को दाना चुगाना आदि।
- तीन ऋण –  
मनुष्य गृहस्थ आश्रम में तीन ऋणों से उऋण होना बताया है।
  1. पितृ ऋण –
  2. ऋषि ऋण –
  3. देव ऋण –
- सोलह संस्कार –
- दाशनिक धारा –  
इसे उपनिषदीय धारा भी कहते हैं। इसमें यज्ञ, पशुबलि, कर्मकाण्ड की निंदा की गई तथा ज्ञान मार्ग पर बल दिया गया, परिणाम स्वरूप नये धर्मों (बौद्ध, जैन आदि) का बीजारोपण हुआ।
- निष्कर्ष –  
ऋग्वैदिक काल से उत्तरवैदिक काल में धर्म में परिवर्तन हो चुका, ऋग्वैदिक उदार धर्म अब जटिलता की ओर अग्रसर था।

### उत्तरवैदिक काल की आर्थिक व्यवस्था



उत्तरवैदिक काल – आर्थिक व्यवस्था

- भूमिका –  
उत्तरवैदिक अर्थव्यवस्था पशुपालन पर आधारित न होकर कृषि पर आधारित थी, जिसका विवरण हमें उत्तरवैदिक ग्रंथों से निम्न प्रकार मिलता है।
- कृषि व्यवस्था –  
आर्यों के जीवन में स्थायित्व आने से कृषि का महत्व बढ़ गया उत्तरवैदिक ग्रंथों से गोंधूम (गेहू), ब्रीहि (चावल), यव (जौ) आदि का वर्णन मिलता है।  
काठक संहिता में 24 बैल वाले हल का उल्लेख मिलता है, इसके साथ ही शतपथ ब्राह्मण में जुताई, मड़ाई, बुआई/बुवाई एवं कटाई का उल्लेख है।
- पशुपालन –  
उत्तरवैदिक काल में पशुपालन द्वितीयक हो गया था, इसके बाद भी गाय, बैल, घोड़ों, भेड़–बकरी आदि का पालन किया जाता था। जिनका उपयोग कृषि, यातायात, दूध–दही के लिए किया जाता था।



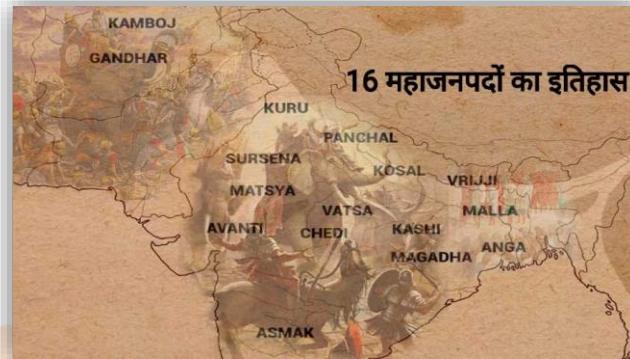
- उद्योग धंधे –  
यजुर्वेद में पेशों और व्यवसायों की सूची मिलती है। इस काल में रथकार, चर्मकार, कुम्हार के साथ धातु व्यवसाय प्रमुख था जिसमें सोना, चांदी, तांबा, लोहा (कृष्ण अयस्क) आदि का उल्लेख मिलता है।
- व्यापार –  
ऐतरेय ब्राह्मण में 'श्रेष्ठी' शब्द सम्भवतः व्यापारिक संघ के अध्यक्ष के लिए प्रयोग हुआ होगा। इस समय व्यापार उन्नत अवस्था में था। व्यापार आंतरिक रूप से प्रचलन में आ गया था जो देश के विभिन्न स्थानों पर नदी मार्ग या भूमि मार्ग के तहत होता था। साथ ही शतपथ ब्राह्मण से कुसीदि का उल्लेख मिलता है जो सूदखोरी का कार्य किया करते थे।
- विनियम का माध्यम –  
अभी भी गाय-घोड़े, निष्क तथा वस्तु विनियम आदि विनियम का माध्यम थे। इसके साथ ही तौल के रूप में शतमान, कृष्णल, पाद आदि का प्रयोग होने लगा था।
- निष्कर्ष –  
इस प्रकार उत्तरवैदिक आर्यों की अर्थव्यवस्था दर्शाता है, जो निर्वाह अर्थव्यवस्था से अधिशेष अर्थव्यवस्था की ओर जाती हुई दिखती है।

### कुछ प्रमुख वस्तुएँ तथा उनके आधुनिक नाम

- हिरण्य – सोना
- त्रपु – टिन
- तक्षा – बढ़ई
- कैवर्त – मछुआरे
- कौश – रेशम
- मुग्द – उड़द
- मृदंग – मूंग
- सभा – नरिष्ठा (वाद – विवाद) अर्थवेद
- शतपथ ब्राह्मण में कृषि की पूर्ण प्रक्रिया का वर्णन है – कटाई, बुआई, जुताई, मङ्गाई आदि।

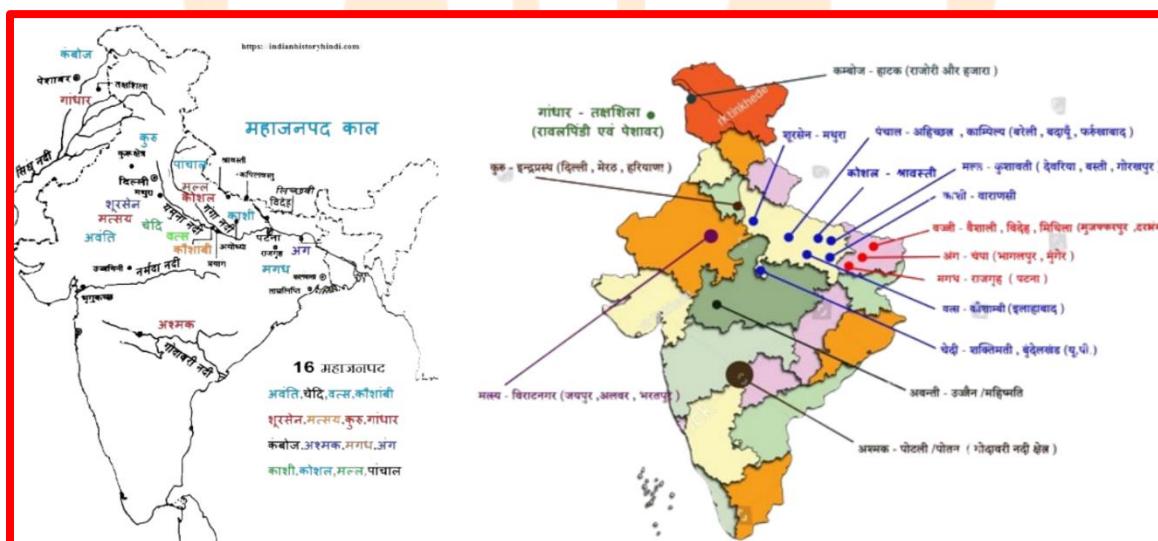


## महाजनपद काल



### महाजनपद काल

- ❖ महात्मा बुद्ध के जन्म के पूर्व 6 शताब्दी ई.पू. में भारत वर्ष 16 महाजनपदों एवं 10 गणतंत्र राज्यों में विभक्त था।
- ❖ यह महाजनपद 8 वैदिक जनपदों के भूमि विस्तार एवं नये महाजनपदों के निर्माण का परिणाम थे।
- ❖ बौद्ध ग्रन्थ अंगुत्तर निकाय एवं जैन ग्रन्थ भगवती सूत्र में 16 महाजनपदों का उल्लेख मिलता है।



### 6वीं शताब्दी ई.पू. की राजनीतिक स्थिति –

- छठी शताब्दी ई. पू. भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी समयखण्ड माना जाता है, इस दौरान महाजनपदों का उदय हुआ। इसे 'महाजनपद काल' भी कहा जाता है।
- इसकी जानकारी बौद्ध ग्रन्थ 'अंगुत्तर निकाय' एवं जैन ग्रन्थ 'भगवती सूत्र' 16 एवं पाणिनी की अष्टाध्यायी (व्याकरण-22) में मिलती है।
- यह काल आरंभिक राज्यों, लोहे के बढ़ते प्रयोग एवं मुद्राओं के विकास के साथ जुड़ा है जिन्होंने भौतिक, राजनीतिक जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन किये।

### महाजनपदकाल की विशेषताएं –

1. महाजनपदों का उदय— उत्तरवैदिक कालीन जनपद अब महाजनपदों में परिवर्तित होने लगे। उदा. – चेदि, अवंति, मगध, आदि।
2. सार्वभौम सत्ता का अभाव – सम्पूर्ण उत्तर व मध्य भारत में केन्द्रीय सत्ता का अभाव था। सम्पूर्ण देश छोटी-छोटी इकाईयों में विभक्त था।



3. शासन प्रणालियां – अधिकांशतयः महाजनपदों में राजतंत्रात्मक जबकि 10 राज्यों में गणतंत्रात्मक व्यवस्थाओं की जानकारी मिलती है। उदाहरण – कोलिय, लिच्छवी
4. राजा – राजा की शक्तियां बढ़ने से 'साम्राज्य' विस्तार की आकांक्षा में वृद्धि हुई। राजाओं द्वारा राज्य विस्तार के प्रयास किये गये।
5. राजस्व व्यवस्था – अब राजस्व व्यवस्था स्थाई हो गई। राजा के अधिकारी वर्ग कर वसूली का कार्य करते थे।
6. साम्राज्यवाद – साम्राज्य की अवधारणा ने मूर्त रूप लिया। उदाहरण – मगध का उत्कर्ष।
7. स्थायी प्रशासन एवं सैन्य व्यवस्था – राज्य के स्वरूपों में वृद्धि से प्रशासन एवं सेना की आवश्यकतानुरूप स्थापना की गई। सर्वप्रथम स्थायी सेना रखने की परंपरा विकसित होने लगी। उदा. – बिभिसार।
8. नये राजवंशों का उदय – विभिन्न क्षेत्रों में छोटे-बड़े अनेक नये राजवंशों की स्थापना हुई। उदा. – मगध में हर्यक वंश, कुरु वंश इंद्रप्रस्थ।
9. बाह्य आक्रमण – पश्चिमोत्तर भारत में केन्द्रीय सत्ता न होने का लाभ बाह्य आक्रमणकारियों ने उठाया। ईरानी एवं यूनानी आक्रमण प्रारंभ होने लगे, उदा. – डेरायस-I, सिकंदर।

छठी शताब्दी ई.पू. राज्य निर्माण का काल था, जिसमें राज्य एवं राजा को मान्यता मिली। साथ ही साम्राज्य विस्तार, प्रशासन, कूटनीतिक व राजनीतिक संबंधों की महत्ता स्थापित हुई।

### अंगुत्तर निकाय के अनुसार 16 महाजनपद एवं 10 गणतंत्र राज्य

1. काशी – राजधानी – वाराणसी
  - ❖ क्षेत्र – वाराणसी तथा उनके निकटवर्ती क्षेत्र।
  - ❖ अजातशत्रु द्वारा इसे मगध में मिला लिया गया।
2. कौशल – राजधानी – श्रावस्ती
  - ❖ वर्तमान फैजाबाद
  - ❖ अजातशत्रु द्वारा इसे मगध में मिला लिया गया।
  - ❖ इसके अंतर्गत शाक्यों का गणराज्य भी आता था।
  - ❖ कोसल नरेश बिदुधान ने इसका विनाश कर कोसल में मिलाया।
3. वज्जि संघ – राजधानी – वैशाली
  - ❖ इन्हें अष्टकुल राज्य भी कहा जाता था।
  - ❖ इनमें आठ गणराज्य शामिल थे।
  - ❖ इसे भी अजातशत्रु द्वारा मगध में मिला लिया गया।
4. मल्ल –
  - ❖ मल्ल महाजनपद दो गणराज्यों से मिलकर बना था।
  - कुशीनारा के मल्ल – राजधानी – कुशीनगर।
    - ❖ क्षेत्र – आधुनिक देवरिया तथा गोरखपुर क्षेत्र में।
  - ❖ वाल्मीकि रामायणनुसार – लक्ष्मण के पुत्र चन्द्रकेतुमल्ल के वंशज आगे चलकर मल्ल गणराज्य की स्थापना की।
  - पावा के मल्ल – राजधानी – पावापुरी।
    - ❖ पड़रैना नामक स्थान।

Note: - महात्मा बुद्ध को कुशीनगर में महारिनिर्वाण तथा महावीर स्वामी को पावा में निर्वाण की प्राप्ति हुई।

5. चेदि – राजधानी – शुक्तिमती
  - ❖ क्षेत्र – वर्तमान बुंदेलखण्ड का पूर्वी भाग।
  - ❖ महाभारत काल में चेदि नरेश शिशुपाल का उल्लेख मिलता है।
6. वत्स – राजधानी – कौशाम्बी



महाजनपद कालीन सिक्के



- ❖ क्षेत्र – वर्तमान इलाहाबाद एवं कौशाम्बी जिला।
  - ❖ कुरु वंश का अंतिम शासक निचक्षु ने राजधानी कौशाम्बी में स्थापित की।
  - ❖ शिशुनाग द्वारा मगध में विलय।
7. कुरु – राजधानी – इन्द्रप्रस्थ
- ❖ दिल्ली, हरियाणा का कुछ क्षेत्र।
  - ❖ बुद्ध के समय यहाँ राजा कोरव्य था।
  - ❖ महापदमनंद द्वारा मगध में कुरु का विलय।
8. अंग – राजधानी – चम्पा (प्राचीन नाम – मालिनी)
- ❖ क्षेत्र – आधुनिक भागलपुर तथा मुंगेर जिला (बिहार)
  - ❖ ब्रह्मदत्त को बिंबिसार द्वारा मारकर मगध में विलय
9. मगध – राजधानी – गिरिब्रज/राजगृह
- ❖ क्षेत्र – पटना, गया, शाहाबाद
10. पांचाल – अहिच्छत्र/कांपिल्य
- ❖ क्षेत्र – पश्चिमी उत्तरप्रदेश – बरेली – बदायूं एवं फरुखावाद
  - ❖ महापदमनंद द्वारा मगध में विलय
11. मत्स्य – राजधानी – विराटनगर
- ❖ क्षेत्र – जयपुर के समीपवर्ती क्षेत्र
12. शूरसेन – राजधानी – मथुरा
- ❖ आधुनिक मथुरा
  - ❖ बुद्ध के समय यहाँ का राजा अवन्ति पुत्र था।
  - ❖ शूरसेन का महापदमानंद द्वारा विलय किया गया।
13. अश्मक – राजधानी – पोटली/पाटन
- ❖ क्षेत्र – गोदावरी नदी के दक्षिण तट पर
  - ❖ बुद्ध के समय अवंति राज्य में अश्मक को जीतकर मिला लिया था।
  - ❖ दक्षिण भारत में स्थित एकमात्र महाजनपद
  - ❖ महापदमानंद द्वारा मगध में विलय
14. अवन्ति – राजधानी उज्जैन
- ❖ शिशुनाग द्वारा मगध साम्राज्य में मिलाया गया।
  - ❖ उत्तरी अवंति – उज्जयिनी
  - ❖ दक्षिणी अवंति – महिष्मती।
  - ❖ बुद्धकाल में चंडप्रद्योत शासक था।
15. गान्धार – तक्षशिला
- ❖ क्षेत्र – पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान का पूर्वी क्षेत्र।
16. कम्बोज – हाटक/राजपुर
- ❖ पाकिस्तान का आधुनिक हजारा जिला।
  - ❖ कौटिल्य ने कम्बोज राज्य को वार्ताशास्त्रोपजीवी कहा है।
- नोट –
- ❖ कलिंग तथा अंग – हाथी के लिए प्रसिद्ध
  - ❖ काशी – सूती वस्त्र के लिए प्रसिद्ध
  - ❖ कम्बोज – घोड़े के लिए प्रसिद्ध



- गणतंत्र राज्य –
  1. सुमसुमार पर्वत के भग्न
  2. कपिलवस्तु के शाक्य
  3. केसपुत के कलाम – (आचार्य आलार – कलाम)
  4. अलकप्प के बूलि –
  5. रामग्राम के कोलिय –
  6. पिष्पलिवन के मोरिय
  7. मिथिला के विदेह
  8. वैशाली के लिच्छवि
  9. कुशीनारा के मल्ल
  10. पावा के मल्ल – राजधानी – पावापुरी

### द्वितीय नगरीकरण के कारण

- ❖ लोहे के उपकरणों का कृषि हेतु प्रयोग –  
डी.डी. कौशाम्बी तथा आर.एस शर्मा के अनुसार लोहे के कृषि उपकरणों से कृषि क्षेत्र में विस्तार हुआ, परिणामस्वरूप कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई, जिससे अधिशेष बढ़ा, फलस्वरूप नगरों का उदय हुआ।
- राजनैतिक कारण – कुछ नगर जैसे – पाटलिपुत्र, चंपा, राजगृह आदि का उदय इसलिए हो पाया क्योंकि इन नगरों को तत्कालीन राजाओं ने राजधानी के रूप में विकसित किया। फलस्वरूप यहाँ आर्थिक क्रियाओं की वृद्धि हुई।
- धार्मिक कारण – नये धर्मों के उदय के कारण कुछ नगर जैसे – मथुरा, श्रावस्ती, वैशाली जो धार्मिक केन्द्र थे, यहाँ चढ़ावे के रूप में धन का संकेन्द्रण हुआ, फलस्वरूप आर्थिक गतिविधियाँ बढ़ी जिनसे नये नगरों का निर्माण हुआ।
- व्यापारिक कारण – कुछ नगर जैसे तक्षशिला, अवंती, बनारस आदि का विकास व्यापारिक केन्द्र की वजह से हुआ, जिनमें से तक्षशिला एवं बनारस की व्यापारिक मार्ग में स्थित होना एवं अवन्ति का सूती वस्त्र के उत्पादन के प्रमुखता के कारण उनका नगरों के रूप में विकास हुआ।
- ❖ मगध के उत्कर्ष के कारण –
  - भूमिका – 6वीं शताब्दी ईसा पूर्व में मगध 16 महाजनपदों में से केवल एक महाजनपद था, किन्तु कालान्तर में मगध में अन्य महाजनपदों को अपने में समाहित कर लिया। इसी को मगध का उत्कर्ष कहते हैं, जिसके निम्नलिखित कारण हैं–
  - भौगोलिक कारण –  
मगध की प्रारंभिक राजधानी गिरिव्रज 5 पहाड़ियों से घिरी हुई थी, जो गिरिदुर्ग के जैसी थी तथा मगध की दूसरी राजधानी पाटलीपुत्र तीन ओर से नदियों से घिरी थी (गंगा, सोन तथा गण्डक) जिससे पाटलीपुत्र नदी दुर्ग की भाँति थी, जो ब्राह्मा आक्रमण से सुरक्षित थी।
  - आर्थिक कारण – मगध गंगा नदी घाटी में बसा हुआ था जिस कारण वहाँ की मिट्टी जलोढ़ एवं उपजाऊ थी जिससे कृषि में अत्यधिक उत्पादन हुआ।  
मगधवासियों को धान की रोपाई का ज्ञान हुआ जिससे कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई। इसके अलावा पाटलीपुत्र व्यापारिक केन्द्र थी जिससे नगर में अर्थ की वृद्धि हुई, परिणामस्वरूप प्रजा आर्थिक रूप से सम्पन्न हुई तथा अपने राजा को अधिक कर अदायगी करने लगी।
  - सैन्य संगठन – मगध की भौगोलिक स्थिति में खनिजों तथा वनों की अधिक उपलब्धता थी, लौह जैसे खनिजों से सुदृढ़ शस्त्र बनाये गये एवं वनों से हाथी पकड़कर सेना में शामिल किए गये जिससे मगध का सैन्य संगठन मजबूत हुआ।
  - राजनीतिक कारण –  
मगध में योग्य राजाओं जैसे – बिष्वासार, अजातशत्रु, शिशुनाग, महापद्मानन्द, चन्द्रगुप्त मौर्य आदि की विस्तार नीतियों ने मगध के उत्कर्ष में अहम भूमिका निभायी साथ ही साथ मगध के उच्च कूटनीति विद्वान, वस्सकार, सुनिधि, चाणक्य आदि ने भी महत्वपूर्ण सहयोग दिया।
  - सामाजिक कारण – मगध का समाज अन्य महाजनपदों के समाज की तुलना में उदार था, जिससे मगधवासियों में परिवर्तन को सहज स्वीकार किया, तथा सूदखोरी एवं महाजनी कार्य करते रहे, जो ब्राह्मण ग्रंथों के अनुसार अधर्मीय थे।  
निष्कर्ष – उपरोक्त दिये सभी कारणों ने मगध के उत्कर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।



## हर्यक वंश / पितृहंता वंश

- बिम्बिसार – 544 B.C. – 492 B.C./ उपनाम – श्रेणिक, सेनिया
- हर्यक वंश का संस्थापक – बिम्बिसार
- राजगृह नामक नगर को बसाकर उसे अपनी राजधानी बनाया, वास्तुकार – (महागोविंद द्वारा)
- इसका राजवैद्य जीवक था, जिसे बिम्बिसार ने महात्मा बुद्ध तथा अवंति के शासक चण्डप्रद्योत के पास भेजा।
- बिम्बिसार ने महात्मा बुद्ध को वेणुवन दान में दिया।

### बिम्बिसार का राज्य विस्तार –

बिम्बिसार ने राज्य विस्तार के लिए त्रिसूत्रीय नीति को अपनाया

- वैवाहिक संबंधों की नीति –
- ✓ लिच्छवियों के साथ – लिच्छवि राजा चेटक की पुत्री चेलना (चेटक की वहन त्रिशाला महावीर की माँ)
- ✓ कोसल राज्य – कोसल राजा प्रसेनजीत की वहन महाकोशला
- ✓ मद्र देश – मद्र देश की राजकुमारी – क्षेमा
- मित्रता की नीति – बिम्बिसार ने अवंति राजा चण्डप्रद्योत के पास जीवक को भेज कर उससे मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किये, साथ ही साथ गांधार के शासक पुष्करसरीन से मित्रता स्थापित की।
- युद्ध एवं आक्रमण की नीति – बिम्बिसार में मगध के पड़ोसी राज्य अंग के शासक ब्रह्मदत्त को हराकर, अंग को मगध में मिलाया, तथा अंग की उपराजा अपने पुत्र अजातशत्रु को बनाया।



## हर्यक वंश

### ❖ अजातशत्रु (492 B.C. – 460 B.C.) –

- उपनाम – कुणिक (गले में उंगली धारण)
- माता – कोसला – बौद्ध मतानुसार
- चेलना – जैन मतों के अनुसार
- इसने प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन करवाया।
- अजातशत्रु ने अपने मंत्री वस्सकार तथा सुनिधि की सहायता से वज्जिसंघ में फूट डलवाकर महा शिलाकन्टक तथा रथमूसल जैसे हथियारों से वज्जिसंघ को जीत लिया।
- अजातशत्रु ने कोसल के शासक प्रसेनजीत पर आक्रमण कर काशी पर अधिकार कर लिया, संधि के परिणामस्वरूप प्रसेनजीत ने अपनी पुत्री बाजिरा का विवाह अजातशत्रु से किया एवं काशी को दहेज स्वरूप दिया।
- बौद्ध अनुयायी

### ❖ उदयिन – (460 B.C. – 444 B.C.) –

- पाटलीपुत्र की स्थापना कर राजधानी बनाया।
- जैन अनुयायी

### ❖ नागदशक –

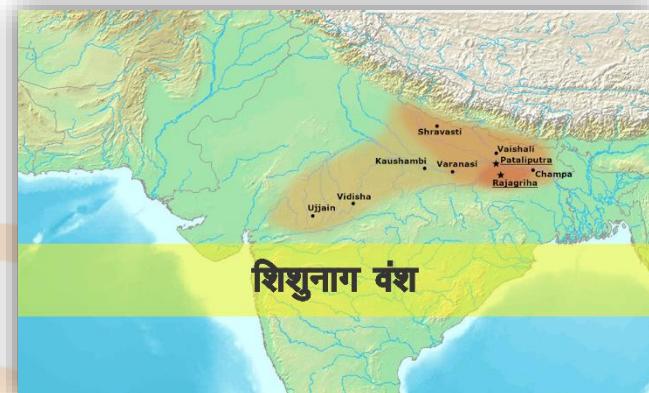
- अंतिम शासक
- हत्या – अमात्य शिशुनाग



- पुराणों में उसे दर्शक कहा गया

## शिशुनाग वंश

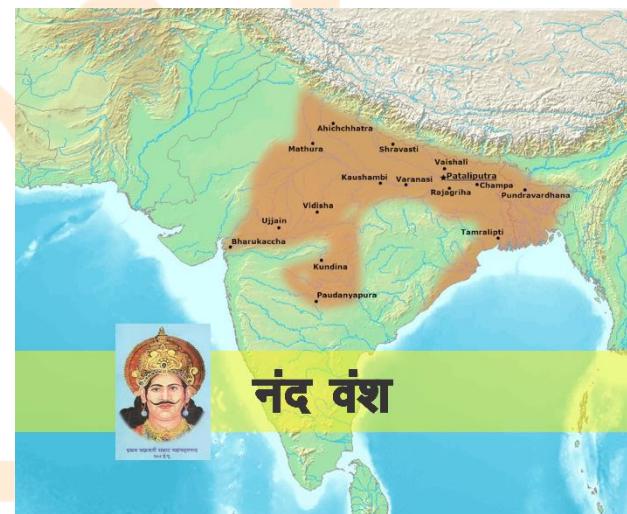
- ❖ शिशुनाग – 412 B.C. – 398 B.C.
- संस्थापक – शिशुनाग
- राजधानी – वैशाली
- इसने वत्स एवं अवंति महाजनपद को मगध में मिलाया
- ❖ कालाशोक – 398 B.C. – 366 B.C. / उपनाम – काकवर्ण
- इसने पुनः पाटलिपुत्र को मगध की राजधानी बनाया।
- द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन किया
- ❖ नन्दिवर्धन / महानन्दिन
- अन्तिम शासक
- महापदमनंद द्वारा हत्या



## नंद वंश / महाबोधिवंश

### ❖ महापदमनंद –

- अन्य नाम – नापितदास – (माता वेश्या तथा पिता नाई)
- ✓ उपाधि – सर्वक्षत्रांतक – क्षत्रियों का नाश करने वाला
- उग्रसेन – भयंकर सेना का स्वामी
- परशुराम-II
- अनुल्लंघित शासक – एकछत्र पृथ्वी का राजा
- एकराट
- ✓ प्रमुख कार्य – कलिंग को जीतकर मगध में मिलाया, तथा वहाँ पर एक तिनसुलि नामक नहर का निर्माण किया (जानकारी – हाथी गुफा अभिलेख) तथा कलिंग नरेश से जिनसेन की मूर्ति ले आया।
- ✓ अन्य विजय – इक्ष्वाकु, पांचाल, कैकेय (काशी), हैहय, कलिंग, अश्मक, कुरु, मैथिल, शूरसेन, वीतिहोत्र आदि।
- नंद वंश में कुल 9 राजा हुये, इसलिए इसे नवनंद वंश भी कहते हैं –



### ❖ धनानंद – अग्रमीज –

- सिकन्दर का आक्रमण
- पराजित – चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा।
- इसके समकालीन – स्थूलभद्र, वररुचि



## विदेशी आक्रमण



भारत पर विदेशी आक्रमण

### भारत पर विदेशी आक्रमण

- पर्शिया/ईरान साम्राज्य
- यूनानी/ ग्रीक
- हिन्द-यवन (इंडो – ग्रीक)
- शक शासन
- हिन्द-पार्थियन
- कुषाण

- हूणों का शासन
- अरब शासन
- गजनवी तुर्क शासन
- मोहम्मद गोरी
- मुगल और अफगान
- अहमद शाह अब्दाली

### ईरानी आक्रमण/ पारसीक या हखामनी

#### ❖ हखामनी वंश – संस्थापक – कुरुष –

हखामनी भारत पर आक्रमण करने वाला – साइरस – II – प्रथम विदेशी

#### ❖ डेरियस / दाराबहु – I

- भारत पर प्रथम सफल विदेशी आक्रमण
- इसने भारत के कम्बोज, गांधार और सिन्ध को जीतकर उसे फारस का 20वाँ प्रांत बनाया। जिससे उसे 360 टन सोना प्रतिवर्ष प्राप्त होता था – हेरोडोटस के अनुसार
- दाराबहु-I के इस अभियान का उल्लेख – बैहिस्तून, पर्सिपोलिस तथा नक्सेरस्तम अभिलेखों से होता है।



#### ❖ क्षयार्ष / जरक्सीज(जरसिस) –

- इसने अपने पिता द्वारा जीते भारतीय क्षेत्र पर अपना प्रभाव बनाए रखा।
- डेरियस-III – सिकन्दर द्वारा उर्लवेला के युद्ध (331 BC) में पराजित।

### भारत पर ईरानी आक्रमण का प्रभाव

- राजनीतिक प्रभाव –
  - ✓ भारत की पश्चिमी सीमा का खोखलापन उजागर हुआ, जिसमें आकर्षित होकर यूनानियों ने भारत पर आक्रमण किये।
  - ✓ ईरानी आक्रमण के फलस्वरूप ही भारत में क्षत्रप प्रणाली शुरू हुयी, जिसे कालान्तर में शकों एवं कुषाणों ने अपनाया।





- आर्थिक प्रभाव –
  - ✓ भारत तथा फारस के मध्य व्यापारिक मार्ग की खोज हुई, जिसके बाद दोनों राष्ट्रों के व्यापारी एक दूसरे के राष्ट्र में व्यापार करने लगे, जिसमें वाणिज्य-व्यापार को प्रोत्साहन मिला।
- सांस्कृतिक प्रभाव –
  - ✓ भारत के पश्चिमोत्तर सीमा पर ईरानी की आरमाइक लिपि का प्रचलन हुआ, जिससे आगे चलकर खरोष्ठी लिपि का विकास हुआ जो अरबी लिपि की तरह दाँए-बाँए लिखी जाती थी।
  - ✓ अशोक के स्तम्भ अभिलेखों पर भी ईरानी प्रभाव माना जाता है तथा मौर्यों के स्थापत्य पर ईरानी प्रभाव देखा जा सकता है।
  - ✓ अग्नि जलाने की प्रथा, स्त्री अंगरक्षकों को रखना।
  - ✓ Note – सम्भवतः अशोक ने अभिलेखों के प्रचलन की प्रेरणा ईरानी शासक डेरियस-I से ली थी।

### भौगोलिक खोजों को प्रोत्साहन –

- ✓ डेरियस-I ने स्काइलेक्स को भेजा, जिसने सिंधु मार्ग की खोज की।

### यूनानी आक्रमण

#### ❖ सिकन्दर – जन्म – 356 BC

- नाम – एलेक्जेण्डर
- पिता – फिलिप-II
- माता – ओलंपिया
- गुरु – अरस्तू
- राज्याभिषेक – 336 BC (मकदूनिया 20 वर्ष की उम्र में शासक)
- भारत पर आक्रमण – 326 BC
- भारत में रहने की अवधि – 19 महीने
- मृत्यु – 323 ई.पू. बेबीलोन (32वर्ष)
- 331 B.C फारस के शासक डेरियस – III को उरुवेला के युद्ध में पराजित किया (फारसी लोगों ने सिकन्दर की उपाधि दी)।
- ✓ सिकन्दर का भारत पर आक्रमण – सिकन्दर ने भारत पर 326 B.C. में आक्रमण किया। बैकिट्र्या और अफगानिस्तान पर अधिकार करते हुये तक्षशिला पहुँचा, तक्षशिला के शासक आम्बिने सिकन्दर के सम्मुख समर्पण कर दिया तथा उसके भारत विजय में पूर्ण साथ देने का वादा किया (भारत का पहला गद्दार – आम्बिने)।
- ✓ सिकन्दर का प्रबल विरोध पोरव/पुरु राष्ट्र के शासक पोरस ने किया सिकन्दर एवं पोरस के मध्य 326 BC में झेलम नदी के किनारे वितस्ता/हाइडेस्पास का युद्ध हुआ, जिसमें सम्भवतः सिकन्दर की जीत हुई, बाद में पोरस की वीरता से प्रसन्न होकर पोरस का राष्ट्र उसे वापस लौटा दिया।
- ✓ हाइडेस्पीज (हाइडेस्पास) युद्ध को जीतने के बाद सिकन्दर ने झेलम तथा व्यास नदी के मध्य अनेक गणराज्यों को जीता जिसमें मालव, मस्सग, क्षुड़क, शिवि एवं पाटल प्रमुख थे।
- ✓ मालव गणराज्य – इनसे युद्ध करते समय सिकन्दर घायल हो गया और उसने यहाँ के सभी महिला, पुरुष, बच्चों की हत्या करवा दी।
- ✓ मस्सग गणराज्य – इस गणराज्य के साथ युद्ध में महिलाओं ने भी सिकन्दर के साथ युद्ध किया।
- ✓ पाटल गणराज्य – यह व्यास नदी के टट पर स्थित था। यह सिकन्दर का अंतिम अभियान था इसके बाद सिकन्दर की सेना ने व्यास नदी पार करने से मना कर दिया।





**✓ बेबीलोन की संधि –**

- सिकन्दर की मृत्यु के बाद उसके साम्राज्य का बंटवारा –
- सिंधु नदी के उत्तरी एवं पश्चिमी क्षेत्र – फिलिप
- सेल्यूक्स को यूनान का साम्राज्य मिला।
- आम्भि को सिंधु व झेलम के मध्य का भाग मिला।
- झेलम तथा व्यास नदी के मध्य का भाग – पोरस को मिला
- सिकन्दर वापसी के समय – सिकन्दर की सेना सिंधु नदी के मुहाने पर दो भागों में विभक्त हो गई – जलमार्ग – नियार्क्स, स्थल मार्ग – क्रेटेरस
- दो नगर बनाये – ब्यूसेफला – घोड़े की याद में
- नैसिया (विजय नगर) – पोरस की विजय के उपलक्ष्य में
- सिकंदरिया – (काबुल)
- हेरोडोटस – हिस्टोरिका – इतिहास के पिता
- ✓ सिकन्दर के साथ भारत आये यूनानी लेखक –
  - अरिस्टोबुलस
  - ओनोस्क्रेटस
  - निर्याक्स
- ✓ सिकंदर के बाद यूनानी लेखक –
  - मेगास्थनीज – इण्डिका
  - प्लिनी – नेचुरल हिस्ट्री
  - एरियन – सिकंदर का आक्रमण (युद्धकला में भारतवासी तत्कालीन अन्य शासकों से श्रेष्ठ थे।
  - टालमी – ज्योग्राफी

## हिन्द-यवन-शासक (यवन आक्रमण)



### सिकंदर के आक्रमण का भारत पर प्रभाव

भूमिका – सिकन्दर का आक्रमण पश्चिमोत्तर भारत के लिए मात्र एक झंझावत के समान था, फिर भी सिकन्दर के आक्रमण से काफी हद तक अप्रत्यक्ष एवं दीर्घकालिक प्रभाव अवश्य उत्पन्न हुआ, जिन्हें निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर समझा जा सकता है

- भारत की पश्चिमोत्तर सीमा का एकीकरण –
  - सिकन्दर के आक्रमण के परिणामस्वरूप भारतीयों में राजनैतिक एकता का संचार हुआ, यह कार्य आगे चलकर चन्द्रगुप्त मौर्य ने किया।
- यूनान तथा भारत के व्यापारिक द्वार खुले –
  - आक्रमण के परिणामस्वरूप भारतीय तथा यूनानी एक दूसरे के समीप आ गये, जिससे दोनों देशों के मध्य स्थल एवं जलमार्गों के द्वारा व्यापार सम्पन्न हुआ तथा भारत पश्चिम के साथ व्यापार करने में सफल हुआ।
- भौगोलिक खोज –
  - सिकन्दर ने अपने सेनापति निर्याक्स के अधीन एक जलबेड़ा सिंधु नदी से फरात नदी के मुहाने तक एवं जलमार्ग व बन्दरगाहों का पता लगाने के लिए भेजा।
  - जिससे भारत तथा पश्चिम एशिया के व्यापार में वृद्धि हुई।
- भारतीय इतिहास का तिथिक्रम ब्योरा –
  - सिकन्दर के आक्रमण के पश्चात् भारतीय इतिहास की तिथिक्रम ब्योरा प्रारंभ हुआ, जिसका प्रचलन यूनानी इतिहासकारों ने किया।
- सांस्कृतिक प्रभाव –
  - भारतीय तथा यूनानी संस्कृतियों में विचारों का आदान-प्रदान हुआ। यूनानी ज्योतिष तथा कला का भारत में आगमन हुआ।
  - पश्चिमोत्तर भारत में यूनान की हेलेनिस्टिक आर्ट का प्रचलन हुआ जो आगे चलकर गांधार कला शैली में दिखाई देता है।
  - यूनानी मुद्राओं के समान ही भारत में उलूक शैली के सिक्के बनने लगे।





- नये शहरों की स्थापना –
  - सिकन्दर के भारत प्रवास के दौरान अनेक नये नगरों की स्थापना की तथा यूनानी बस्तियों को बसाया उदाहरण के तौर पर निकैया, बूकेफाला, सिकन्दरिया आदि।
- निष्कर्ष – कुल-मिलाकर सिकन्दर के अधीन यूनानी आक्रमण से भारत तथा यूनान के मध्य सांस्कृतिक आदन-प्रदान का वह सिलसिला प्रारंभ हुआ, जिसकी चरम परिणति हिन्द-यूनानी शासकों के काल में देखी जा सकती है।

### जैन धर्म और बौद्ध धर्म के उद्भव के कारण



#### भूमिका –

- इस काल में भारत ही नहीं अपितु समस्त संसार में नये-नये धर्मों का उदय हुआ, जैसे— चीन में कन्फ्यूशियस, ईरान में जुरथ्रुस्ट तथा युनान में पाइथागोरस भारत में ब्राह्मण कर्मकाण्ड के विरुद्ध कई नवीन धर्मों का उदय हआ जिनकी संख्या बौद्ध ग्रंथों के अनुसार 62 एवं जैन ग्रंथों के अनुसार 368 बताई गई। नवीन धर्मों की उत्पत्ति के निम्नलिखित कारण हैं –
- क्षत्रिय वर्ण का असंतोष –
  - आर्थिक एवं राजनीतिक रूप से प्रथम स्थान होने के बाद भी क्षत्रियों का समाज की वर्णव्यवस्था में द्वितीय स्थान था।
  - परिणामस्वरूप क्षत्रियों के समय अन्य ब्राह्मण धर्मों का उदय हुआ, जो क्षत्रियों द्वारा संचालित थे।
- वैश्यों का असंतोष –
  - 6वीं शताब्दी ई.पू. में कृषि तथा व्यापार में वृद्धि के साथ वैश्यों की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई, लेकिन समाज की वर्ण व्यवस्था में अभी भी वैश्यों का स्थान द्वितीय था।
  - इसके साथ ही सूदखोरी तथा महाजनी व्यवस्था को ब्राह्मण धर्म ने अधर्मी बताया फलस्वरूप वैश्यों में असंतोष बढ़ा एवं बौद्ध तथा जैन धर्म को आर्थिक रूप से सहायता की।
- शूद्रों में असंतोष –
  - ब्राह्मणवादी व्यवस्था में सबसे निम्न स्थिति शूद्रों की थी, उन्हें न तो शिक्षा का अधिकार था और न ही यज्ञ करने का, सामान्यतः शूद्रों को अछूत माना जाता था, कालांतर में शूद्रों में क्रोध प्रकट हुआ एवं शूद्रों ने जैन तथा बौद्ध धर्म को अपनाने के साथ-साथ समर्थन भी दिया।
- महिलाओं में असंतोष –
  - ऋग्वैदिक काल के महिलाओं के सकारात्मक अधिकार उत्तरवैदिक काल के आते-आते छीन लिए गए, अब न तो महिलाओं को शिक्षा का अधिकार था, और न ही पतियों के साथ यज्ञ में बैठने का। वहीं दूसरी तरफ बौद्ध तथा जैन धर्मों ने महिलाओं को सकारात्मक अधिकार दिये एवं संघ में प्रवेश की अनुमति भी दी।
- ✓ बौद्ध एवं जैन धर्म के उदय के कारण –
  - छठी शताब्दी ई.पू. की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक परिस्थितियों ने नवीन धर्मों की स्थापना के लिए पृष्ठभूमि का निर्माण किया जिसके फलस्वरूप बौद्ध एवं जैन धर्मों का उदय हुआ।

**उदय के प्रमुख कारण –****1. सामाजिक कारण –**

- वर्ण व्यवस्था की जटिलताएं एवं भेदभाव।
- शूद्र एवं महिलाओं की अधिकारविहीन स्थिति।
- क्षत्रिय वर्ग का ब्राह्मणों के वर्चस्व को चुनौती देना।
- समतामूलक समाज एवं सादे जीवन की अवधारणा देना।

**2. आर्थिक कारण –**

- कृषि आधारित अर्थव्यवस्था एवं उसमें पशुधन की आवश्यकता।
- समुद्र पार व्यापार पर वैदिक धर्म में प्रतिबंध।
- वैश्य (व्यापारी) वर्ग का वैदिक धर्म में असंतुष्ट होना।
- कर्मकाण्डीय फिजूल खर्चों से निर्धन वर्ग असंतुष्ट।

**3. धार्मिक कारण –**

- वैदिक धर्म की जटिलताएं
- कर्मकाण्डों की अधिकता
- ब्राह्मणवाद—एक धर्म की मनचाही व्यवस्था
- वैदिक धर्म ग्रन्थों का संस्कृत में रचित होना, जो सामान्य जन के लिए समझने में कठिन था।
- बौद्ध एवं जैन धर्म की शिक्षाएं—सत्य, अहिंसा आदि।

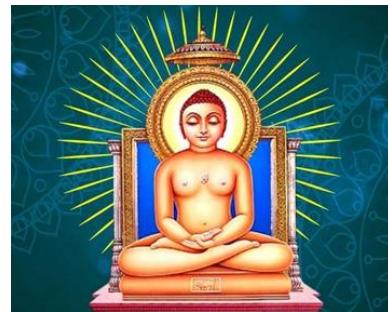
**4. अन्य कारण –**

- महावीर गौतम बुद्ध का व्यक्तित्व
- संवाद के लिए आमजन की भाषा (प्राकृत एवं पालि) प्रमुख
- 'उपनिषद्' दर्शन का प्रभाव





# जैन धर्म



## जैन धर्म

- जैन शब्द 'जिन' से बना है, जिसका अर्थ विजेता है।
- ऋग्वेद में ऋषभदेव और अरिष्टनेमि दो तीर्थकारों की चर्चा हुई है। इनके प्रतीक चिन्ह सांड एवं शंख है।
- भागवत पुराण में ऋषभदेव को विष्णु का अवतार माना।
- अरिष्टनेमि को वासुदेव कृष्ण का भाई बताया गया।
- तीर्थकर – का अर्थ संसार सागर से पार कराने वाला मोक्ष का मार्ग बताने वाला है।
- ऐतिहासिक तीर्थकर – पार्श्वनाथ (23वें) तथा महावीर (24वें)।
- 19वें तीर्थकर मल्लिनाथ स्त्री वेश में रहते थे (चिन्ह – कलश)।

### ❖ सांड – ऋषभदेव – संस्थापक – जैन धर्म

- जन्म – अयोध्या
- मृत्यु – कैलाश पर्वत

### ❖ सर्प – पार्श्वनाथ 23वें तीर्थकर –

- पिता – काशी नरेश अश्वसेन
- माता – वामा
- 30 वर्ष की अवस्था में गृह त्याग, तपस्या सम्मेद पर्वत पर 84वें दिन में कैवल्य की प्राप्ति।
- पत्नी – प्रभावती
- निर्वाण – सम्मेद पर्वत (झारखण्ड–गिरीडीह जिला) पर 100 वर्ष की आयु में।
- प्रथम शिष्य – माता वामा तथा पत्नी प्रभावती।
- पार्श्वनाथ के भिक्षुणी संघ की अध्यक्षा – पुष्पचूला
- पार्श्वनाथ ने 4 महाव्रतों का प्रतिपादन किया था – अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह एवं अस्तेय।

### 24 तीर्थकर के नाम और चिन्ह

1. ऋषभदेव (वैतानिक नाम)	वैतानिक नाम	9. पुष्पदंत (सुविधिनाथ)	मगर / Crocodile	17. कुन्थुनाथ (वकरा / He-goat)
2. अजितनाथ (हाथी / Elephant)	हाथी / Elephant	10. शीतलनाथ (कल्पव्रक्ष / Kalpavriksha)	कल्पव्रक्ष / Kalpavriksha	18. अरनाथ (मछली / Fish)
3. संभवनाथ (अश्व / पोङ्डी) / Horse	अश्व (पोङ्डी) / Horse	11. ब्रेयनाथ (गेंडा / Rhinoceros)	Rhinoceros	19. मल्लिनाथ (कलश / Kalasha, the holy pitcher)
4. अभिनन्दन (बंदर / Monkey)	बंदर / Monkey	12. वासुपूज्य (भैसा / Buffalo)	भैसा / Buffalo	20. मुनिसुवत (कछुआ / Tortoise)
5. सुमतिनाथ (कौच पक्षी / Curlew)	कौच पक्षी / Curlew	13. विमलनाथ (शूकर / Pig)	शूकर / Pig	21. नमिनाथ (नीलकमल / Blue lotus)
6. पद्मप्रभ (कमल / Lotus)	कमल / Lotus	14. अनंतनाथ (सेही / Porcupine)	सेही / Porcupine	22. नेमिनाथ (शंख / Conch)
7. सुपार्श्वनाथ (स्वस्तिक / Swatika)	स्वस्तिक / Swatika	15. धर्मनाथ (वज्रदंड / Vajra (Diamond))	वज्रदंड / Vajra (Diamond)	23. पार्श्वनाथ (सर्प / Serpent/Snake)
8. चन्द्रप्रभ (चन्द्रमा / Moon)	चन्द्रमा / Moon	16. शान्तिनाथ (मूग (हिरण्य) / Deer)	मूग (हिरण्य) / Deer	24. वर्द्धमान (महावीर) (सिंह / Lion)



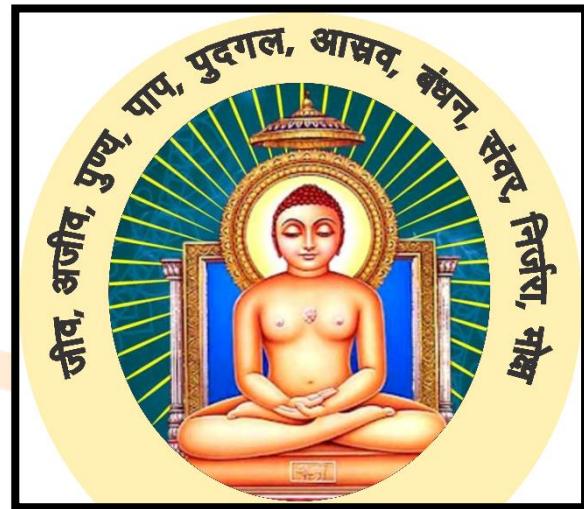


❖ महावीर स्वामी – 24वें – तीर्थकर

- वास्तविक संस्थापक
- जन्म— 540 ई.पू. वैशाली के निकट कुण्डग्राम में।
- बचपन का नाम— वर्धमान
- पिता— सिद्धार्थ (ज्ञातृक कुल)
- माता— त्रिशाला / बिदेहदत्ता—चेटक की बहन
- विवाह— यशोदा (कुण्डन्य गोत्र)
- पुत्री— अनोज्जा / प्रियदर्शना
- दामाद— जमालि
- भाई— नंदिवर्धन
- 30 वर्ष की आयु में गृह त्याग, 13 महीने के उपरान्त वे पूर्णतः नग्न रहने लगे।
- नालंदा में मक्खलिपुत्र गोसाल से भेट हुई, गोसाल ने 6 वर्ष तक महावीर के साथ तपस्या की तथा बाद में आजीवक सम्प्रदाय की स्थापना की।
- 12 वर्ष तक कठोर तपस्या के पश्चात 42 वर्ष की अवस्था में कैवल्य की प्राप्ति जृम्भिक ग्राम ऋजुपालिका नदी, साल के वृक्ष के नीचे।  
नोट :- प्रथम जैन भिक्षुणी चंपा के शासक राधा दधिवाहन की पुत्री चंदना थी।
- महावीर स्वामी के भिक्षुणी संघ की प्रधान चन्दना थी।
- कैवल्य की प्राप्ति के पश्चात महावीर 'जिन' (विजेता), 'अर्ह' (योग्य), 'निर्ग्रथ' (बन्धन रहित), 'अर्हत' (पूज्य)
- महावीर स्वामी को निगण्ठ नाथ पुत्र— बौद्ध साहित्य में कहा गया।  
नोट— आचरांग सूत्र—महावीर की तपस्या तथा कायाक्लेश का वर्णन मिलता है।
- महावीर स्वामी ने अपना प्रथम उपदेश, राजगृह के वितुलाचल पर्वत (राजगृह) पर दिया।
- महावीर स्वामी के कैवल्य प्राप्ति के 14 वर्ष में एक विद्रोह हुआ जिसका नेतृत्व जमालि ने किया।
- कैवल्य प्राप्ति के 16वें वर्ष में एक और विद्रोह हुआ जिसका नेतृत्व तीस्तगुप्त ने किया।
- 72 वर्ष की आयु में 486 ई.पू. पावा नामक स्थान पर मल्लराजा सस्तिपाल के राजप्रसाद में महावीर स्वामी को निर्वाण प्राप्त हुआ था।
- इन्होनें 5वाँ महाव्रत ब्रह्मचर्य जोड़ा।
- इन्होनें अपने उपदेश प्राकृत भाषा में दिये।
- महावीर स्वामी के 11 गणधरों में से, उनकी मृत्यु के बाद केवल एक गणधर सुधर्मन जीवित बचा—जो संघ का प्रथम अध्यक्ष था।

**जैन संगीतियाँ –**

- ✓ प्रथम जैन संगीति –
- स्थान – पाटलिपुत्र
- अध्यक्ष – स्थूलभद्र
- समय – 300 ई.पू.
- शासनकाल – चन्द्रगुप्त मौर्य
- कार्य – 12 अंगों का संपादन हुआ।
- जैन धर्म दिगंबर तथा श्वेताम्बर दो भागों में बट गया।
  
- ✓ द्वितीय जैन संगीति
- स्थान – वल्लभी
- अध्यक्ष – देवर्धि-क्षेमाश्रमण
- समय – 512 ई.
- कार्य – धर्मग्रंथों को अन्तिम रूप से संकलित कर अर्धमागधी में लिपिबद्ध किया गया तथा 84 आगमों की संख्या नियत की गयी।





- जैन साहित्य को आगम कहा जाता है, जिसमें 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण, 6 छेदसूत्र, 4 मूलसूत्र आते हैं।
- नोट – कर्नाटक के जैनमठों को बसदिस कहा है।

## जैन दर्शन

### त्रिरत्न –

- त्रिरत्न – जैन धर्म में पूर्व जन्म के कर्मफल को समाप्त करने एवं इस जन्म के कर्म फल से बचने के लिए त्रिरत्नों के पालन की बात की गई है।
  - ✓ सम्यक श्रद्धा / दर्शन – सत् में विश्वास
  - ✓ सम्यक ज्ञान – सत् का ज्ञान
  - ✓ सम्यक आचरण – सच्चरित्रता तथा सदाचरण का पालन करते हुए बाह्य जगत के विषयों के प्रति सम दुःख–सुख भाव से उदासीनता ही सम्यक आचरण हैं
- भिक्षु – जैन अनुयायी जो सन्यासी है।
- श्रावक – जैन अनुयायी जो गृहस्थ है।
- त्रिरत्न का पालन करने से कर्मों का जीव की ओर बहाव रुक जाता है। इसे संवर कहते हैं।
- जब जीव में पहले से किये कर्म का प्रभाव समाप्त होने लगता है, उसे निर्जरा कहते हैं।
- जब जीव से कर्म की प्राप्ति का अवशेष बिल्कुल समाप्त हो जाता है तब उसे मोक्ष कहते हैं।
- जीव का कर्म की ओर आकर्षित होने को आश्रव कहते हैं।



### अनन्त चतुष्टय –

- मोक्ष या निर्वाण के उपरान्त जीव जीवन–मरण के चक्र से मुक्त होकर अनन्त ज्ञान 'अनन्त दर्शन, अनन्त वीर्य तथा अनन्त सुख को प्राप्त हो जाता हैं।

### ज्ञान –

जैन धर्म से ज्ञान – 5 प्रकार के ज्ञान का उल्लेख।

- मति–इन्द्रियों द्वारा प्राप्त होने वाला ज्ञान।
- श्रुति –श्रवण द्वारा प्राप्त होने वाला ज्ञान।
- अवधि– दिव्य ज्ञान।
- मनः पर्याय– अन्य व्यक्तियों के मन–मस्तिष्क की बातों को जान लेने वाला ज्ञान।
- कैवल्य– निग्रन्थों एवं जिनेन्द्रियों को प्राप्त होने वाला पूर्ण ज्ञान।

### स्यादवाद / अनेकांतवाद / सप्तभंगीनमय सिद्धांत –

- यह मूल रूप से ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धांत है। इसमें सांसारिक वस्तुओं के विषय में हमारे सभी निर्णय न तो पूर्णतया स्वीकार किए जा सकते हैं और न ही पूर्णतः अस्वीकार
  - है
  - नहीं है
  - है और नहीं है
  - कहा नहीं जा सकता
  - है किन्तु कहा नहीं जा सकता है
  - नहीं है और कहा नहीं जा सकता
  - है, नहीं है और कहा नहीं जा सकता है।
- पंचमहाव्रत – सत्य, अंहिसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य – भिक्षुक द्वारा पालन।
- अणुव्रत – सत्य, अंहिसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य – श्रावक द्वारा पालन।

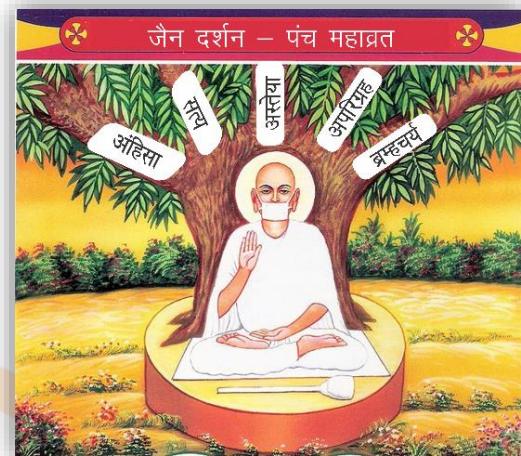




## जैन धर्म में 18 पाप –

- 1. प्राणनियता हिंसा 2. मैथुन 3. परिग्रह 4. मान 5. लोभ 6. द्वेष 7. दोषारोपण  
8. असंयमित रति 9. कपटपूर्ण झूठ 10. असत्य 11. चोरी 12. क्रोध 13. माया  
14. राग 15. कलह 16. चुगली 17. निश 18. मिथ्या दर्शन रूपी सत्य।

- कर्मवाद—
- जैन धर्म में कर्मफल में विश्वास प्रकट किया गया है। कर्मफल ही जन्म तथा मृत्यु का कारण है तथा इससे छुटकारा पाकर ही व्यक्ति कैवल्य की ओर अग्रसर हो सकता है।
- आत्मवाद—
- जैन धर्म में आत्मा (चेतना) के अस्तित्व में विश्वास रखा गया है।
- पुनर्जन्म — जैन धर्म में पुनर्जन्म को स्वीकार किया गया।
- अनीश्वरवाद — जैन धर्म में किसी सर्वव्यापी, सर्वशक्तिशाली तथा अनन्त ईश्वर में आस्था नहीं रखी गयी। वे ईश्वर की सत्ता खण्डन करते हैं।
- जगत की व्याख्या — जैन दर्शन के अनुसार यह सृष्टि जीव तथा अजीव (पुदगल, भौतिक तत्त्व, आकाश, धर्म, अधर्म, काल) से निर्मित है तथा जगत अनादि काल से शास्वत है।



## दिगम्बर और श्वेताम्बर में अन्तर

- श्वेताम्बर मोक्ष प्राप्ति हेतु वस्त्र त्याग आवश्यक नहीं मानते जबकि दिगम्बर मानते हैं।
- श्वेताम्बर इसी जीवन में स्त्रियों को निर्वाण का अधिकारी मानते थे, जबकि दिगम्बर इसका निषेध करते थे।
- श्वेताम्बर महावीर को विवाहित मानते हैं, जबकि दिगम्बर उन्हें अविवाहित मानते हैं।
- श्वेताम्बर 19वें तीर्थकर (मल्लिनाथ) को स्त्री मानते हैं, जबकि दिगम्बर उन्हें पुरुष मानते हैं।
- श्वेताम्बर मतानुसार कैवल्य प्राप्ति के पश्चात् भी लोगों की भोजन की आवश्यकता पड़ती है। लेकिन दिगम्बर निराहार की वकालत करते हैं।
- ✓ जैन धर्म को मानने वाले प्रमुख शासक –
- उदयिन, खारवेल, चन्द्रगुप्त मौर्य, राष्ट्रकूट नरेश अमोघवर्ष
- भारत में जैन धर्म का अन्तिम आश्रम – गुजरात के चालुक्य

## जैन धर्म की सफलता के कारण –

- महावीर के जीवनकाल में ही और उनकी मृत्यु के पश्चात् भी जैनधर्म का भारत में प्रचार-प्रसार हुआ। जैन धर्मों की सफलता या विकास में अनेक कारणों ने योगदान दिया। जो निम्न है
- तत्कालीन राजवंशों का समर्थन –  
जैन धर्म के सफलता में राजवंशों की महत्वपूर्ण भूमिका रही, महावीर स्वामी स्वयं एक राजवंशी थे, तथा उदयिन, खारवेल, चन्द्रगुप्त मौर्य जैसे राजाओं ने जैन धर्म को दान दक्षिणा दी, जिससे जैन धर्म की सफलता सुनिश्चित हुयी।
- वैश्यों का समर्थन –  
ब्राह्मण धर्म के विरुद्ध जैन धर्म में बलि उन्नादि की निंदा की, जिससे पशुधन सुरक्षित हुआ तथा कृषि का प्रसार हुआ, जो वैश्यों के हित में थी, इसके साथ-साथ सूदखोरी, समुद्री व्यापार को जैन धर्म में समर्थन दिया जिससे वैश्य वर्ग ने भी जैन धर्म को समर्थन दिया।
- सरल प्रचार माध्यम –  
जैनियों ने अपने धर्म का प्रचार सरल सुबोध भाषा प्राकृत में किया, जो तत्कालिक जनसाधारण की भाषा थी, बजाय संस्कृत जैसी किलस्ट भाषा के, फलस्वरूप जनता आसानी से जैन धर्म से जुड़ गयी।
- भेद-भाव की नीति का परित्याग –  
जैनधर्म की सफलता का एक प्रधान कारण यह था कि इसने ब्राह्मण धर्म की विभेदपूर्ण नीति का त्याग किया तथा सभी वर्णों के लोगों को एक पायदान पर लाकर खड़ा कर दिया जैन धर्म में सभी वर्ण निर्वाण प्राप्ति कर सकते थे।
- जैनधर्म का साधारण स्वरूप –  
महावीर का धर्म बाह्यण धर्म की तरह आडम्बरपूर्ण नहीं था, न ही मोक्ष प्राप्ति हेतु किसी पुरोहित की आवश्यकता थी। त्रिरत्न तथा पंचमहाव्रत का पालन करने से प्रत्येक वर्ण के व्यक्ति को मोक्ष प्राप्ति हो सकती थी।
- ✓ सल्लेखना –  
जैन धर्म में सल्लेखना प्रक्रिया की बात की गई है, जिसमें उपवास द्वारा शरीर का त्याग किया जाता है – चंद्रगुप्त मौर्य ने भी किया।



### जैन धर्म के पतन के कारण –

- ब्राह्मण धर्म से संबंध बनाए रखना –  
जैन धर्म में भी ब्राह्मण धर्म की ही तरह भक्तिवाद, देवताओं का अस्तित्व इत्यादि इस धर्म में भी था। फलस्वरूप जनता को इस धर्म में कोई ऐसी नई बात नहीं दिखी, जिससे प्रभावित होकर वे इसकी तरफ आकृष्ट हो सके।
- अत्यधिक कायाकलेश –  
जैन धर्म ने कठिन तपस्या और आत्मपीड़न पर अत्यधिक बल दिया। वस्त्र न पहनना, धूप में शरीर को तपाना, बाल उखड़वाना इत्यादि ऐसे नियम थे, जिनका पालन सबके लिए संभव नहीं था।
- अत्यधिक अहिंसा –  
अत्यधिक अहिंसा का स्वरूप अव्यवहारिक सावित हुआ, क्षत्रिय का बिना युद्ध के रहना तथा कृषक को बिना खेती के जीवन सम्भव नहीं था।  
इसी प्रकार जनसाधारण भी रास्ता साफ करके चले, पानी छान के पिये तथा श्वास लेते समय मुख पर कपड़ा ढके यह सब अव्यवहारिक था।
- जातिप्रथा का बना रहना –  
जैन धर्म जातिप्रथा को पूर्णतः नहीं नकार सके, महावीर स्वामी का मानना था कि किसी जाति में जन्म व्यक्ति के पूर्व जन्म के कर्म के कारण होता था।
- उचित राजाश्रय का अभाव –  
प्रारम्भ में तो जैनियों को राजाश्रय मिला लेकिन कालांतर में चालुक्यों के पश्चात् जैनियों को राज संरक्षण नहीं मिला।
- अन्य कारण –  
बौद्ध धर्म का उदय, ब्राह्मण धर्म का पुनरुत्थान जैन धर्म में विभाजन आदि।

### जैन धर्म की देन –

1. इसने सर्वप्रथम ब्राह्मण धर्म को चुनौती दी, जाति प्रथा का विरोध किया स्त्रियों को धार्मिक स्वतंत्रता दी।
2. नये व्यापारिक वर्गों की बढ़ोतरी हुयी एवं नये नगरों का निर्माण हुआ।
3. जैन धर्म – स्यादवाद जैसे दार्शनिक व्यवस्था की एक अमूल्य निधि मानी जा सकती है।
4. जैनियों ने लोकभाषाओं की रचना की तथा प्राकृत, अर्द्धमार्गधी जैसी भाषाओं का विकास किया।



## बौद्ध धर्म

### गौतम बुद्ध –

- जन्म – 563 ई.पू. कपिलवस्तु के लुम्बिनी गांव में
- मृत्यु – 483 ई.पू.
- पिता – शुद्धोधन जो शाक्यगण का मुखिया था
- माता – महामाया – जो कौलिय वंश की राजकुमारी थी
- मौसी – प्रजापति गौतमी – पालन पोषण किया।
- पत्नी – यशोधरा (बिम्बा, गोपा, भद्रकच्छना भी कहते हैं)
- पुत्र – राहुल (अर्थ बंधन)
- सारथी – चन्ना (छन्दक)
- घोड़ा – कन्थक (केतक)
- सौतेला भाई – आनंद
- चचेरा भाई – देवदत्त
- एशिया का प्रकाशपुंज – गौतम बुद्ध

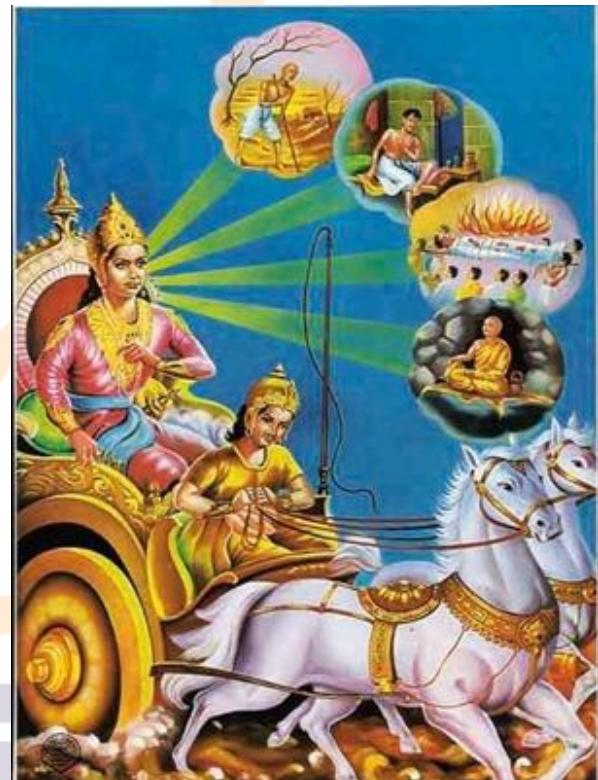
### गौतम बुद्ध के जीवन संबंधी चार दृश्य –

जिन्हें देखकर उनके मन में वैराग्य की भावना उठी –

1. वृद्ध व्यक्ति
2. बीमार व्यक्ति
3. मृत व्यक्ति
4. संन्यासी

### बुद्ध के जीवन की प्रमुख घटनायें –

1. महाभिनिष्ठमण – बुद्ध द्वारा त्याग की घटना।
  2. सम्बोधि – ज्ञान प्राप्ति की घटना।
  3. धर्मचक्रप्रवर्तन – बुद्ध द्वारा प्रथम उपदेश की घटना।
  4. महापरिनिर्वाण – बुद्ध की मृत्यु
- गृहत्याग के बाद बुद्ध वैशाली गए अनोमा नदी से चन्ना को लौटा दिया जहां उन्होंने अलारकलाम को अपना गुरु बनाया। (सांख्य दर्शन) के अनुसार तत्पश्चात् राजगृह के रामपुत्र के आश्रम गये थे।
  - राजगृह के पश्चात् गौतम बुद्ध गया के निकट उरुवेला गये जहां उन्हें कोडिन्य सहित पांच साधक ब्राह्मण मिले, उनके साथ मिलकर गौतम बुद्ध ने कठोर तपस्या प्रारम्भ कर दी पर बाद में बुद्ध ने सुजाता नामक कन्या के हाथों से खीर खाकर तपस्या भंग कर दी परिणामस्वरूप उनके ब्राह्मण साथी उन्हें छोड़कर चल दिये।
  - उरुवेला से सिद्धार्थ गया चले गये तब गृहत्याग के 6 वें वर्ष 35 वर्ष की आयु में पीपल वृक्ष के नीचे निरंजना/पुनपुन नदी के किनारे सिद्धार्थ की प्राप्ति हुई, तत्पश्चात् गौतम, बुद्ध कहलाये, इन्हें तथागत अर्थात् "सत्य हो ज्ञान जिसका" भी कहा गया।



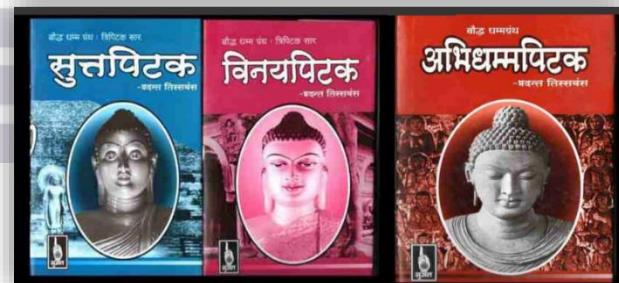


- अपनी समाधि के 49वें दिन उन्हें सर्वोच्च ज्ञान की प्राप्ति हुई।
- बुद्ध ने सर्वप्रथम बोधगया में दो बंजारे तपस्सु तथा मलिलक को अपना शिष्य बनाया।
- उसके बाद बुद्ध सारनाथ आये यहां पर उन्होंने पाँच ब्राह्मणों को प्रथम उपदेश दिया – जिसे बौद्ध धर्म में धर्मचक्रप्रवर्तन कहा जाता है।
- सारनाथ के बाद बुद्ध उरुवेला गये, जहां उन्होंने तीन भाई मुख्य कश्यप, नदी कश्यप तथा गया कश्यप को अपना शिष्य बनाया।
- इसके बाद बुद्ध राजगृह पहुंचे जहां सम्राट विष्वसार ने उनका स्वागत किया तथा वेणुवन दान में दिया। राजग्रह में ही काशी के दो विद्वान सारिपुत्र तथा महामौद्गलायन उनके शिष्य बने।
- भ्रमण करते हुए बुद्ध कपिलवस्तु पहुंचे जहां गौतमी ने बौद्ध बनने की ईच्छा जाहिर की, लेकिन बुद्ध ने मना कर दिया, लेकिन गौतमी प्रजापति के पुत्र आनंद को अपना शिष्य बना लिया।
- बाद में वैशाली पहुंचने पर आनंद के कहने पर बुद्ध ने प्रजापति गौतमी को संघ में प्रवेश की आज्ञा दे दी, इस प्रकार यह संघ में प्रथम नारी प्रवेश हुआ।
- वैशाली में ही लिच्छवियों ने महावन में प्रसिद्ध कुटाग्रशाल का निर्माण करवाया तथा वैशाली की प्रमुख नगरवधु आम्रपाली उनकी शिष्या बनी, जिसने आम्रवाटिका दान दी।
- वैशाली के पश्चात् बुद्ध भग्गों की राजधानी सुमसुमारगिरि गये यहां पर उन्होंने अपना आठवां वर्षकाल व्यतीत किया तथा बोधि कुमार को अपना शिष्य बनाया।
- सुमसुमारगिरि के बाद बुद्ध कौशाम्बी गये, जहां पिण्डोला नामक बौद्ध भिक्षु से प्रभावित होकर उदयन ने बौद्ध धर्म अपना लिया तथा घोषिताराम विहार प्रदान किया।
- महात्मा बुद्ध ने अपने सर्वाधिक उपदेश को सल देश की राजधानी श्रावस्ती में दिये (21 बार) सर्वाधिक अनुयायी भी बने।
- इसके पश्चात् गौतम बुद्ध मल्लों की राजधानी कुशीनारा पहुंचे जहां चुन्द नामक सुनार के यहाँ भोजन करते समय उदरविकार हो गया जिससे 486 ई.पू. 80 वर्ष की आयु में गौतम बुद्ध की मृत्यु हो गयी।
- गौतम बुद्ध ने अपना अंतिम उपदेश सुभद्रा नामक व्यक्ति को दिया।  
**Note** – देवदत्त ने सर्वप्रथम बुद्ध संघ में फूट डालने का प्रयास किया।
- महात्मा बुद्ध ने अपने उपदेश पालि भाषा तथा महावीर स्वामी ने प्राकृत भाषा में दिये।

### बौद्ध सम्मेलन

#### प्रथम बौद्ध संगीति – 483 ई.पू. –

- स्थान – राजगृह सप्तपर्णी गुफा
- शासक – अजातशत्रु
- अध्यक्ष – महाकस्सप
- कार्य – सुत्तपिटक का संकलन – बुद्ध के उपदेश (आनंद द्वारा संकलन)
- विनयपिटक – बौद्ध भिक्षुओं के अनुशासन संबंधी (उपाला द्वारा संकलन)



#### द्वितीय बौद्ध संगीति – 383 ई.पू. –

- स्थान – वैशाली
- शासक – कालाशोक
- अध्यक्ष – सुबुकामी
- कार्य – इसमें बौद्ध संघ स्थाविर तथा महासंघिक में विभाजित

#### तृतीय बौद्ध संगीति – 251 ई.पू. –

- स्थान – पाटलिपुत्र
- शासक – अशोक
- अध्यक्ष – मोगलीपुत्तिस्स
- कार्य – इसमें तीसरे पिटक अभिधम्मपिटक (बौद्ध दर्शन) का संकलन हुआ।



## चतुर्थ बौद्ध संगीति – 1 ई.वी. –

- स्थान – कुण्डलवन (कश्मीर)
- शासक – कनिष्ठ
- अध्यक्ष – वसुमित्र
- उपाध्यक्ष – अश्वघोष
- कार्य – बौद्धधर्म दो सम्प्रदाय – हीनयान तथा महायान में विभाजित

## ✓ बौद्ध के जीवन से संबंधित 5 महाचिन्ह अथवा प्रतीक –

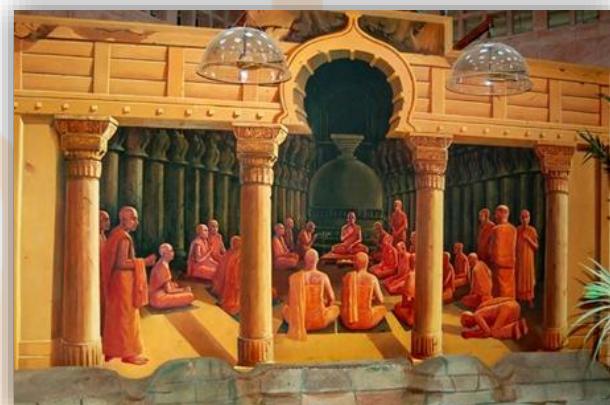
घटना	प्रतीक
● जन्म	— कमल व सांड
● गृहत्याग	— घोड़ा
● ज्ञान	— फीपल (बोधिवृक्ष)
● महापरि निर्वाण	— स्तूप
● धर्म चक्रप्रवर्तन	— चक्र

## बौद्ध संघ –

बौद्ध संघ में प्रवेश के लिए न्यूनतम आयु 15 वर्ष थी।

- अनुसावन – संघ की सभा में प्रस्ताव पाठ को अनुसावन कहते
- उपसम्पदा – संघ में प्रवेश पाने को
- आसन प्रज्ञापक – संघ की सभा में बैठने वाले पदाधिकारी
- राप्ति – प्रस्ताव से पहले दी गई सूचना की।
- छन्द – मत को छंद कहा जाता था।
- निस्साध – भिक्षुओं को संघ में प्रवेश करने के पश्चात् कुछ समय तक आचार्य के निरीक्षण में रहकर अध्यापन करना पड़ता था।
- कन्थिन – भिक्षुओं को वस्त्र देने के लिए एक समारोह का आयोजन किया जाता था।
- पतिमोक्ख – बौद्ध भिक्षुओं के लिए विधि निषेधों का संग्रह है।
- उपोसथ – किसी पवित्र अवसर पर भिक्षुओं के एकत्र होकर चर्चा करने को उपोसथ कहा जाता था।
- मानन्त – सीमित काल तक संघ का बहिष्कार।
- परिवास – सदैव के लिए संघ का बहिष्कार।
- सन्निविनय – अपराधी को अपील करने की सुविधा।

Note – बौद्ध संघ गणतंत्र प्रणाली पर आधारित था संघ में अल्पायु, चोर, हत्यारों, ऋणी व्यक्तियों, राजा के सेवक, दास तथा रोगी व्यक्ति का प्रवेश वर्जित था।



## पवरन –

बौद्ध मठों में पवरन नामक समारोह आयोजित किया जाता था। इस प्रकार समारोह किसी नये व्यक्ति को बौद्ध संघ में प्रवेश देने के लिए होता था जिसमें उसका सिर मुंडवा दिया जाता था और पीले वस्त्र दिये जाते थे।

## बौद्ध के आठ अवशेष –

- पावा तथा कुशीनगर
- शाक्य
- लिच्छवि
- अलकप्प के बुली
- रामग्राम के कोलिय





- मोरिय
- वेठद्वीप के ब्राह्मण
- अजातशत्रु

#### वज्रयान –

- 7वीं शताब्दी के करीब बौद्ध धर्म में तंत्र-मंत्र का प्रभाव बढ़ने लगा, जिसके परिणामस्वरूप वज्रयान सम्प्रदाय का उदय हुआ।
- इसकी जानकारी आर्य मंजूश्रीमूलकल्प एवं गुह्या समाज नामक पुस्तक से मिलती है। इसमें पंचमकारों – मद्य, मांस, मैथुन, मत्स्य, मुद्रा के सेवन का समर्थन किया।
- इसकी एक उपशाखा – कालचक्रयान।

#### बोधिसत्त्व की अवधारणा –

- कोई भी व्यक्ति जो बोधिचित्त का विकास कर ज्ञान प्राप्त कर चुका हो लेकिन वह निर्वाण न करके, अन्य लोगों को ज्ञान प्राप्ति में मदद करे।

✓ प्रमुख बोधिसत्त्व –

- a) अवलोकितेश्वर / पद्मपाणि
  - विशेष गुण – दया
  - अजन्ता गुफा में चित्र है।
- b) मंजूश्री
  - कार्य-बुद्धि को निखारना
  - इन्हें हाथ में खड़ग लिए दिखाया गया है जो कि अज्ञानता का नाश करता है।
  - दूसरे हाथ में किताब जिसमें 10 शील हैं।
- c) वज्रपाणि
  - कठोर बोधिसत्त्व
  - इनके हाथ में बज्र है।

- d) मैत्रेय

- भावी बोधिसत्त्व

- e) क्षितिगृह –

- इन्हे नर्क का नियामत माना जाता है।
- मैत्रेय के बाद बोधिसत्त्व।
- तृष्णा के क्षीण हो जाने की अवस्था को ही बुद्ध ने निर्वाण कहा है।
- “विश्व दुखों से भरा है” – यह सिद्धांत बुद्ध ने उपनिषद से लिया है।

#### भारत के महत्वपूर्ण बौद्ध मठ –

- a. यबो मठ – हिमाचल प्रदेश
- b. नामग्याल मठ – हिमाचल प्रदेश
- c. हेमिस मठ – लद्दाख
- d. थिक्से मठ – लद्दाख
- e. शासुट मठ – हिमाचल प्रदेश
- f. मिंड्रालिंग मठ – देहरादून
- g. रूमटेक मठ – गंगटोक
- h. त्वांग मठ – अरुणाचलप्रदेश
- i. नामझालिंग मठ – मैसूर
- j. बोधिमंडा मठ – बिहार (गया)

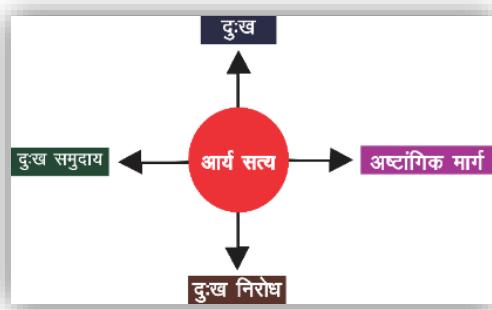


## बौद्ध धर्म का दर्शन

✓ आर्यसत्य –

बुद्ध ने सांसारिक दुःखों के संबंध में चार आर्य सत्यों का उपदेश दिया है, ये हैं –

1. दुःख
2. दुःख समुदाय (कारण)
3. दुःख निरोध (उपाय)
4. दुःख निरोधगामीनी प्रतिपदा (आष्टांगिक मार्ग )



✓ आष्टांगिक मार्ग –

मानव जीवन के दुःखों का अंत आष्टांगिक मार्ग द्वारा हो सकता है –

1. सम्यक् दृष्टि – सत्य और असत्य को पहचानने की शक्ति
2. सम्यक् संकल्प – इच्छा एवं हिंसारहित संकल्प
3. सम्यक् वाणी – सत्य एवं मृदु वाणी
4. सम्यक् कर्म – सत्कर्म, दान, दया, सदाचार, अहिंसा
5. सम्यक् आजीव – सादा जीवन–यापन
6. सम्यक् व्यायाम – विवेकपूर्ण प्रयत्न
7. सम्यक् स्मृति – अपने कर्मों के प्रति विवेकपूर्ण ढंग से सजग रहना
8. सम्यक् समाधि – चित्त की एकाग्रता



✓ प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धांत –

- प्रतीत्य (किसी वस्तु के होने पर) समुत्पाद (किसी अन्य वस्तु की उत्पत्ति) इसे कार्य–कारण का सिद्धांत भी कहते हैं, जिससे यह माना जाता है कि प्रत्येक कार्य की उत्पत्ति कारण पर निर्भर होती है, और जब तक कारण है, तब तक कार्य होगा। जब कारण समाप्त होता है तब कार्य भी समाप्त होता है।

✓ अनीश्वरवाद –

- बौद्ध दर्शन में किसी सर्वशक्तिमान ईश्वर की संकल्पना नहीं की गयी।

✓ अनात्मवाद –

- बौद्ध दर्शन में आत्मा की अमरता को स्वीकार नहीं किया है। आत्मा पंचस्कन्धों के मेल के अन्यथा कुछ भी नहीं है।

✓ जगत की यांत्रिक व्याख्या –

- बौद्ध मत के अनुसार सृष्टि भौतिक नियमों अनुसार यंत्रवत् चल रही है।

✓ वैदिक कर्मकाण्डों का विरोध –

- बौद्ध धर्म दर्शन में वैदिक कर्मकाण्डों का विरोध किया है

✓ पुनर्जन्म –

- बौद्ध में पुनर्जन्म को माना गया है।

✓ द्वादश निदान –

- संसार में व्याप्त हर दुःख का सामूहिक नाम

1. जाति

2. भव

3. उपादान

4. तृष्णा

5. वेदना

6. स्पर्श

7. षडायतन

8. नामरूप

9. विज्ञान
10. संस्कार
11. अविद्या
12. जरामरण

- जरामरण का मूलभूत कारण अविद्या है
- इसे द्वादश निदान चक्र भी कहते हैं।
- ✓ **क्षणिकवाद—**
- बौद्ध धर्म में सृष्टि की प्रत्येक वस्तु को क्षणिक। क्षणभंगुर माना गया है और कहा गया है कि ये प्रतिफल परिवर्तनशील है।
- ✓ **मध्यमवर्ग / मध्यम प्रतिपदा—**
- कौड़िन्य, भृदीय, महानाम, अश्वजित, बप्प को उपदेश देते कहा हमेशा अतिथों से बचो, जीवन में अत्यधिक दुःख भी नहीं तो अत्यधिक सुख भी नहीं होना चाहिए।
- ✓ **दस शील—**
- सदाचारी एवं नैतिक जीवन के लिए मनुष्य दस शीलों का पालन करे –

  1. सत्य
  2. अहिंसा
  3. अस्तेय
  4. अपरिग्रह
  5. ब्रह्मचर्य
  6. व्यभिचार से बचना
  7. नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करना
  8. असमय भोजन नहीं करना
  9. सुखमय विस्तर का त्याग
  10. नाच—गान से बचना

### बौद्ध धर्म के शीघ्र उत्थान एवं प्रसार के कारण

1. **व्यवहारिक दृष्टिकोण –**  
बौद्ध धर्म ने तत्कालीन भौतिक व्यवस्था की प्रगति को बनाये रखने व समस्याओं के समाधान हेतु व्यवहारिक सिद्धांत दिये।
2. **बुद्ध का व्यक्तित्व –**  
स्वयं बुद्ध का व्यक्तित्व आकर्षक व प्रभावशाली था। उन्होंने स्वयं सिद्धांतों को अपने जीवन में उतारा था जिससे आम जनता प्रभावित हुयी।
3. **सरल उपदेश –**  
बुद्ध ने दार्शनिक वाद—विवादों से दूर रहकर इहलोक में समस्याओं के समाधान हेतु सरल संदेश दिये। तथा उनकी संदेश भाषा पालि थी, जो तत्कालिक जनसाधारण की भाषा थी, जिससे लोगों ने संदेशों को सरलता से समझा एवं स्वीकार किया।
4. **राजकीय संरक्षण –**  
बौद्ध धर्म को प्रारम्भ से ही बड़े—बड़े राजाओं का संरक्षण मिला जिनमें बिष्णुसार, अजातशत्रु, अशोक, कनिष्ठ तथा हर्षवर्धन प्रमुख थे।
5. **बौद्ध संघ की भूमिका –**  
संघ के माध्यम से बौद्ध धर्म का व्यवस्थित प्रचार—प्रसार हुआ।
6. **बौद्ध संगीतियां –**  
समय—समय पर आयोजित बौद्ध संगीतियों ने भी बौद्ध धर्म को फैलाने का कार्य किया।
7. **बौद्ध शिक्षण संस्थान –**  
तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, सोमपुर जैसे महाविद्यालयों ने भी बौद्ध धर्म दर्शन को फैलाने में योगदान दिया।
8. **सामाजिक समानता का विचार –**  
बौद्ध धर्म में वैदिक धर्म के विपरीत सामाजिक समानता की बात कही गयी जिससे समाज के कई वर्ग बौद्ध धर्म की ओर आकर्षित हुये।
9. **नई आर्थिक व्यवस्था को समर्थन –**  
वैदिक धर्म 6 वीं शताब्दी ई.पू. में आर्थिक परिवर्तनों का विरोधी था, वह बलि द्वारा पशुधन का संहार कर रहा था, जो नई कृषि के लिए प्रतिकूल था। ब्राह्मण धर्म शहरीकरण तथा सूदखोरी का भी विरोधी था।
- ✓ **निष्कर्ष –**



इस प्रकार इन उपर्युक्त कारणों से बौद्ध धर्म एक वैशिक धर्म बन गया। अब वह गंगा घाटी से निकलकर सुदूर देशों तक फैल चुका था।

### बौद्ध धर्म के पतन का कारण

**भूमिका –**

बौद्ध धर्म दीर्घकाल तक भारत का ही नहीं अपितु एशिया का महत्वपूर्ण धर्म बना रहा किन्तु कालांतर में यह लुप्त हो गया जिसके प्रमुख कारण निम्न थे –

**1. बौद्ध धर्म में प्रविष्ट बुराईयां –**

जिन ब्राह्मण रीति रिवाजों का विरोध कर बौद्ध धर्म का प्रसार हुआ था कालांतर में वही कर्मकाण्ड बौद्धों ने अपना लिये उदाहरणतः – मूर्ति पूजा, ब्राह्मण देवताओं को अपनाना, तंत्रमंत्र को मानना आदि, इस सबके चलते बौद्ध धर्म का पतन हो गया।

**2. बौद्ध संघों में भ्रष्टाचार –**

बौद्ध संघ में व्यापक भ्रष्टाचार समाहित हो गया, जिससे बौद्ध भिक्षुओं का नैतिक पतन हुआ।

**3. संरक्षण का अभाव –**

कनिष्ठ तथा हर्षवर्धन के बाद पाल ही अंतिम बौद्ध संरक्षक थे।

**4. वैदिक प्रचारकों द्वारा हमला –**

कुमारिल भट्ट तथा शंकराचार्य जैसे वैदिक धर्म प्रचारकों ने भी तर्क के आधार पर बौद्ध विद्वानों को परास्त किया।

**5. संस्कृत का सहारा लेना –**

आरम्भ में बौद्ध धर्म की अपार सफलता का एक कारण यह भी था कि बौद्धों ने प्रचार हेतु जनसाधारण की भाषा पालि को चुना, लेकिन कालांतर में बौद्धों ने प्रचार-प्रसार हेतु संस्कृत का प्रयोग किया, जिससे वह आम जनता से दूर हो गये।

**6. बाह्य आक्रमण –**

हूणों एवं मुसलमानों के आक्रमण से भी बौद्ध मत नकारात्मक रूप से प्रभावित हुआ।

**अन्य कारण –**

बौद्ध धर्म में विभाजन, आंतरिक दोष, मजबूत सामाजिक व्यवस्था का अभाव।

### बौद्ध धर्म का भारतीय समाज व संस्कृति पर प्रभाव / योगदान

**भूमिका –**

बौद्ध धर्म ने भारतीय संस्कृति के प्रत्येक पहलू को गहरे स्तर तक प्रभावित किया तथा भारत के वैभव में वृद्धि की तथा भारतीय संस्कृति के हर आयाम पर अपनी अमिट छाप छोड़ते हुए अमूल्य योगदान दिया।

- समतामूलक समाज –**बौद्ध धर्म ने जाति प्रथा, भेद-भाव, छुआछूत का तीव्र विरोध किया तथा सम्पूर्ण समाज को एक सूत्र में पिरो दिया।
- बौद्ध धर्म** ने पालि तथा संस्कृत साहित्य के विकास में अमूल्य योगदान दिया तथा अनेक साहित्यों की रचना की, जिसमें त्रिपिटक, अंगुत्तर निकाय, बुद्धचरित, मिलिन्दपन्हो आदि हैं।
- बौद्ध धर्म** ने स्थापत्य कला, मूर्तिकला एवं चित्रकला का विकास कर उसे पराकाष्ठा पर लाया। उदाहरण – गांधार व मथुरा कला शैली।
- शैक्षणिक क्षेत्रों** में नालंदा, विक्रमशिला, सोमपुर जैसे महाविद्यालय दिये।
- बौद्ध धर्म** ने महिलाओं तथा शूद्रों के लिए मोक्ष के भी द्वार खोल दिये तथा उन्हें समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त कराया।
- बौद्ध धर्म** ने 10 शील के माध्यम से समाज में नैतिकता व सदाचार को बढ़ाया।
- भारतीय समाज** में विरोध की एक प्रखर परम्परा को स्थापित किया परवर्ती काल के चिन्तकों जैसे कबीर तथा नानक से लेकर पेरियार नायकर तथा नारायण गुरु तक को प्रेरित किया।

**✓ निष्कर्ष –**

बौद्ध धर्म ने भारत को सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक क्षेत्रों में अपना अमूल्य योगदान दिया है।

### बौद्ध व जैन धर्म में तुलनात्मक अध्ययन –

**• समानता –**

- दोनों धर्म ही वेदों का विरोध करते हैं तथा जाति व्यवस्था एवं छुआछूत का विरोध करते हैं।
- दोनों धर्मों ने उपदेश हेतु जनसाधारण की भाषा प्राकृत एवं पालि का उपयोग किया।
- दोनों दर्शन पुनर्जन्म की अवधारणा को मानते हैं।
- दोनों दर्शन कर्मवाद पर बल देते हैं।

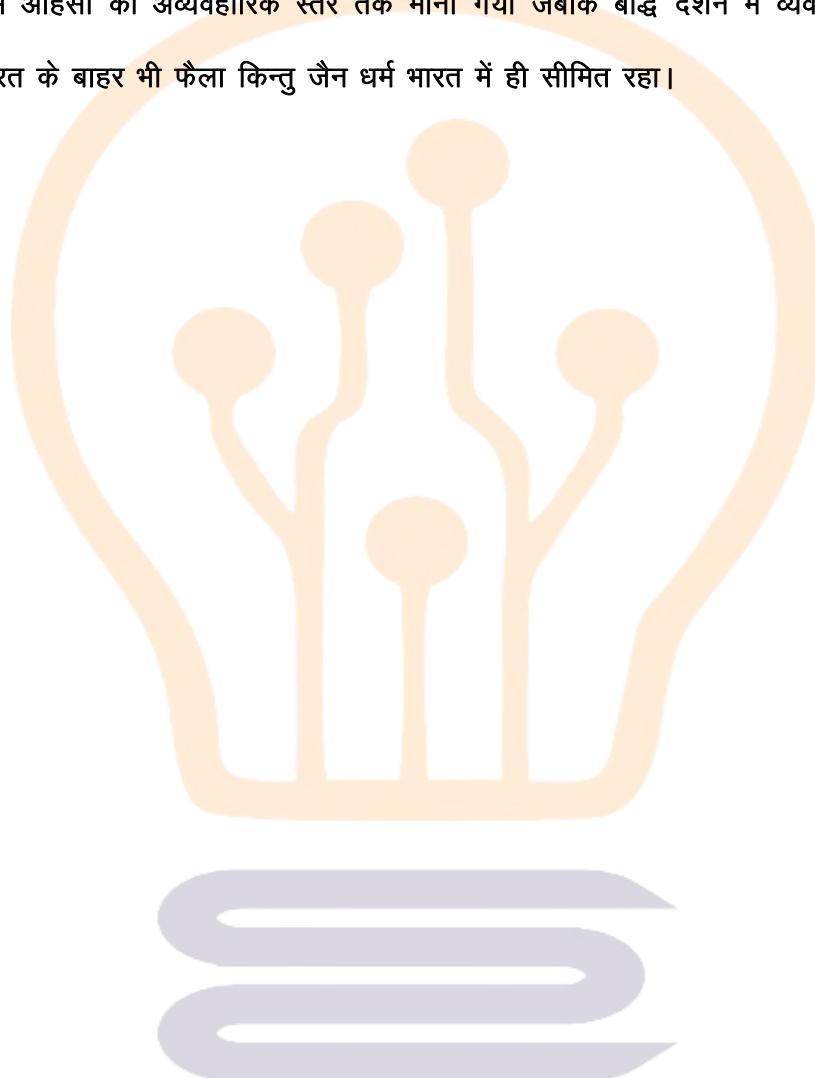


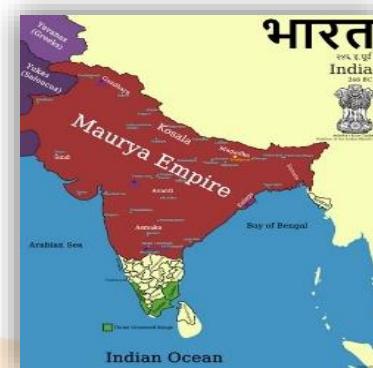


5. दोनों दर्शन जगत की यांत्रिक व्याख्या करते हैं, उनके अनुसार यह सृष्टि यंत्रवत् चल रही है।
6. दोनों धर्म के प्रवर्तक क्षत्रिय कुल के थे।

- असमानता –

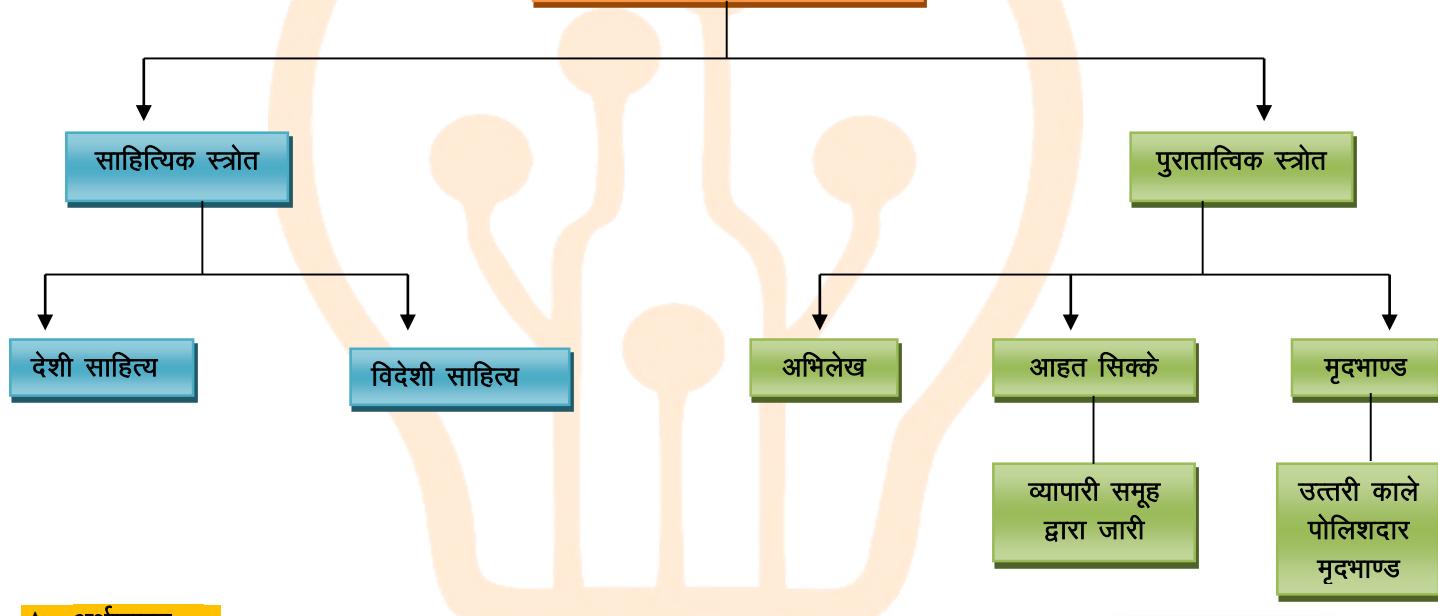
1. दोनों धर्मों के त्रिलोगों में अंतर है। जहां जैन धर्म में सम्यक् दर्शन, ज्ञान तथा आचरण है वहीं बौद्ध धर्म में बुद्ध, धम्म तथा संघ है।
2. जैन धर्म में निर्वाण प्राप्ति हेतु शरीर त्यागना आवश्यक है, परंतु बौद्ध धर्म में निर्वाण हेतु शरीर त्यागना आवश्यक नहीं है।
3. जैन धर्म अत्यधिक कायाकलेश पर बल देता है, परंतु बौद्ध धर्म मध्य मार्ग पर बल देता है।
4. जैन धर्म में आत्मा के अस्तित्व को मान्यता है, किन्तु बौद्ध धर्म ने आत्मा को नकारा है।
5. जैन दर्शन में अहिंसा को अव्यवहारिक स्तर तक माना गया जबकि बौद्ध दर्शन में व्यवहारिक अहिंसा की बात की गयी।
6. बौद्ध धर्म भारत के बाहर भी फैला किन्तु जैन धर्म भारत में ही सीमित रहा।





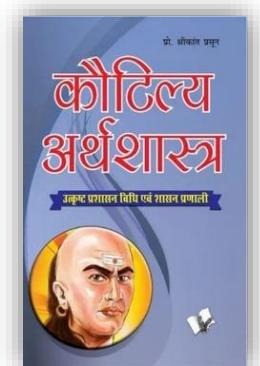
## मौर्य साम्राज्य

### मौर्य इतिहास के स्रोत



#### A. अर्थशास्त्र –

- इसमें कुल 15 अधिकरण, 180 प्रकरण तथा 6000 श्लोक हैं। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में न तो इसके लेखक न किसी मौर्य शासक और न ही मौर्यों की राजधानी पाटलिपुत्र का उल्लेख है।
- चूँकि कौटिल्य का अर्थशास्त्र यथार्थवादी राजनीति पर लिखा गया है इसलिए इसकी तुलना मैकियावेली के 'द प्रिंस' से की गयी है तथा कौटिल्य को भारत का मैकियावेली कहा जाता है।
- ✓ अर्थशास्त्र से प्राप्त जानकारी –
- सप्तांग सिद्धांत –  
कौटिल्य ने सप्तांग सिद्धांत के अंतर्गत राज्य के 7 अंग माने हैं – राजा (स्वामी), अमात्य (मंत्री), जनपद, दुर्ग, कोष, सेना, मित्र
- तीर्थ –



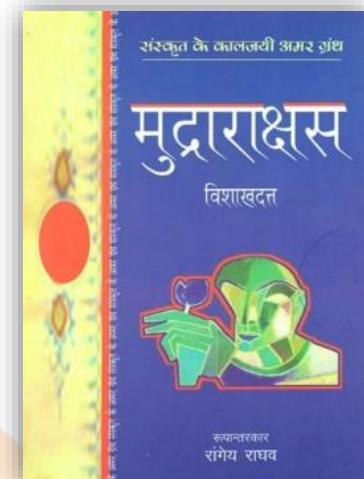


कौटिल्य ने राज्य के सर्वोच्च अधिकारियों को तीर्थ कहा है, इनकी कुल संख्या 18 बताई गई।

- **गुप्तचर व्यवस्था** – अर्थशास्त्र में गुप्तचर प्रणाली का वर्णन है, जिसमें गुप्तचर को गूढ़ पुरुष कहा गया।
- **शूद्र वर्ण की जानकारी** – कौटिल्य ने प्रथम बार शूद्र को भी आर्य कहा। अर्थशास्त्र के अनुसार शूद्रों को भी अन्य तीनों वर्णों के साथ सेना में भर्ती होने की छूट मिल गई।
- **दास प्रथा** – कौटिल्य ने 9 प्रकार के दासों का वर्णन किया है।
- **भू-राजस्व** – अर्थशास्त्र के अनुसार भूराजस्व 1/6 भाग था।

#### **मुद्राराक्षस – रचना – विशाखदत्त –**

- इससे चाणक्य के षडयंत्रों की जानकारी मिलती है।
- यह संस्कृत साहित्य का प्रथम जासूसी नाटक है।
- इससे मौर्यकालीन समाज एवं संस्कृति का भी वर्णन मिलता है।



#### **B. पुराण –**

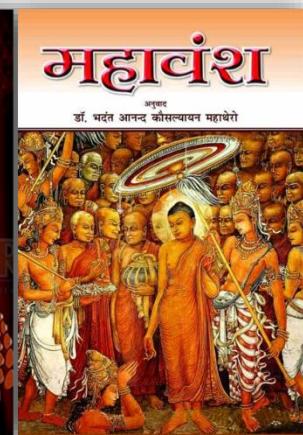
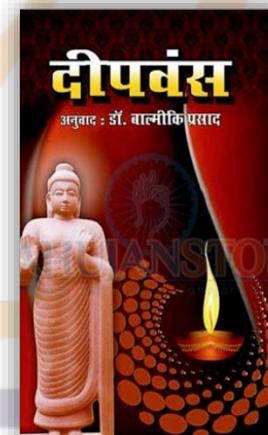
- विष्णु पुराण से पता चलता है चन्द्रगुप्त का जन्म नंद राजा की पत्नि मुरा नाम की स्त्री से हुआ।

#### **C. अन्य संस्कृत ग्रंथ –**

- अष्टाध्यायी, महाभाष्य, कथासरित्सागर – सोमदेव,  
वृहत्कथामंजरी – क्षेमेन्द्र

#### **D. बौद्ध साहित्य –**

- तिब्बती लामा ताराणी का विवरण
- दीपवंश – वाचिस्सक, महावंश, दिव्यावदान, अशोकवदान, मंजू श्रीमूलकल्प
- महायान शाखा तथा हर्षवर्धन का वर्णन मिलिन्दपन्थो इत्यादि
- महावंश –
  - चाणक्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य को जम्बूद्वीप का सप्राट बनाया
  - चन्द्रगुप्त की प्रथम असफलता का उल्लेख, चन्द्रगुप्त की चपाती की कहानी जो चपाती को किनारे से ना खाकर बीच से खाना प्रारम्भ कर देता है।



#### **मिलिन्दपन्थो –**

- मगध की सेना के विनाश का विस्तृत वर्णन।

#### **दिव्यावदान –**

- बिन्दुसार को मूर्धन्यभिषिक्त क्षत्रिय बताया गया।

#### **जैन साहित्य –**

- परिशिष्टपर्वन – हेमचन्द्र, भद्रबाहु का कल्पसूत्र, भद्रबाहुचरित – भद्रबाहु, स्थविरावलिचरित – हेमचन्द्र।

#### **तमिल साहित्य –**

- ममुलनाए तथा परणार के विवरणों से ज्ञात होता है कि चन्द्रगुप्त मौर्य ने दक्षिण में त्रिचनापल्ली जिले के पोदियिल पहाड़ी तक आक्रमण किया था।



## विदेशी साहित्य

### A. यूनानी तथा रोमन वृत्तांत

#### इंडिका –

- मेगस्थनीज – सेल्युक्स निकेटर
- यह चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार मे 305 ई.पू. मे आया तथा 299 ई.पू. तक रहा, यह कुल 6 वर्ष रुका
- इससे प्राप्त महत्वपूर्ण वर्णन –

  1. शासक का वर्णन –  
मेगस्थनीज ने चन्द्रगुप्त को सेन्ड्रोकोट्स कहा है तथा इसके अंग रक्षको के बारे मे जानकारी दी गयी है।
  2. पाटलीपुत्र नगर का वर्णन –  
चन्द्रगुप्त की राजधानी पोलिब्रोथा (पाटलीपुत्र) गंगा तथा सोन नदियो के संगम पर स्थित पूर्वी भारत का सबसे बड़ा नगर था, पाटलीपुत्र का राजभवन भव्यता तथा सुन्दरता मे अन्य नगरो से कही आगे था।
  3. नगर प्रशासन का वर्णन –  
इंडिका मे पाटलीपुत्र के नगर प्रशासन का उल्लेख किया है, उसके अनुसार 6 समितियों द्वारा नगर का प्रशासन चलाया जाता था।
  4. सैन्य प्रशासन का वर्णन –  
मेगस्थनीज ने सैन्य प्रशासन का वर्णन करते हुए बताया कि इसका संचालन 30 अधिकारियों की परिषद करती है, जिसमे 6 समितियाँ थीं।
  5. राजस्व प्रशासन का वर्णन –  
भूराजस्व 1/4
  6. उत्तरापथ का वर्णन –  
इंडिका मे बंगाल से लेकर पश्चिमोत्तर तक जाने वाले उत्तरापथ का विस्तार से वर्णन किया।
  7. सात वर्णों की व्यवस्था –  
दार्शनिक, कृषक, पशुपालक, व्यापारी, योद्धा, निरीक्षक, मन्त्री / परामर्शदाता
  8. दास प्रथा का न होना –  
भारत मे दास प्रथा का आभाव
  9. अकाल न पड़ने का वर्णन –  
लेकिन सौहगोरा तथा महास्थान अभिलेख से अकाल का वर्णन मिलता है।
  10. लेखन कला का आभाव – मेगस्थनीज के अनुसार भारतीयों को लेखनकला का ज्ञान नहीं था।

### B. अन्य स्त्रोत –

डायोनीसस का वर्णन, स्ट्रेबो, डियोडोरस, एरियन आदि।

### C. चीनी वृत्तांत –

#### फ़ाहियान – फा-ओ-की –

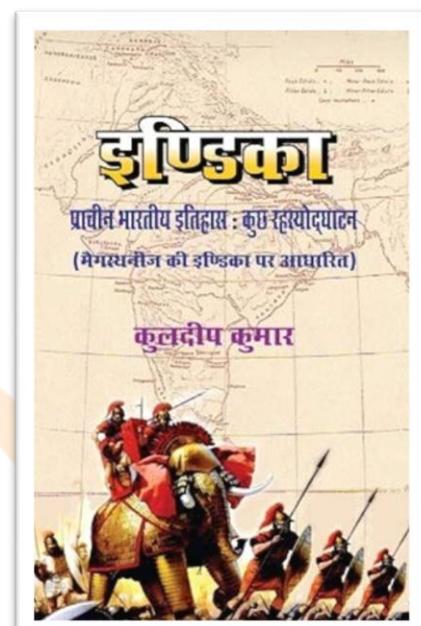
- अशोक ने पाटलीपुत्र के पास एक 'नरक' की स्थापना की है। जिससे वह निर्दोष लोगों को सताता है।

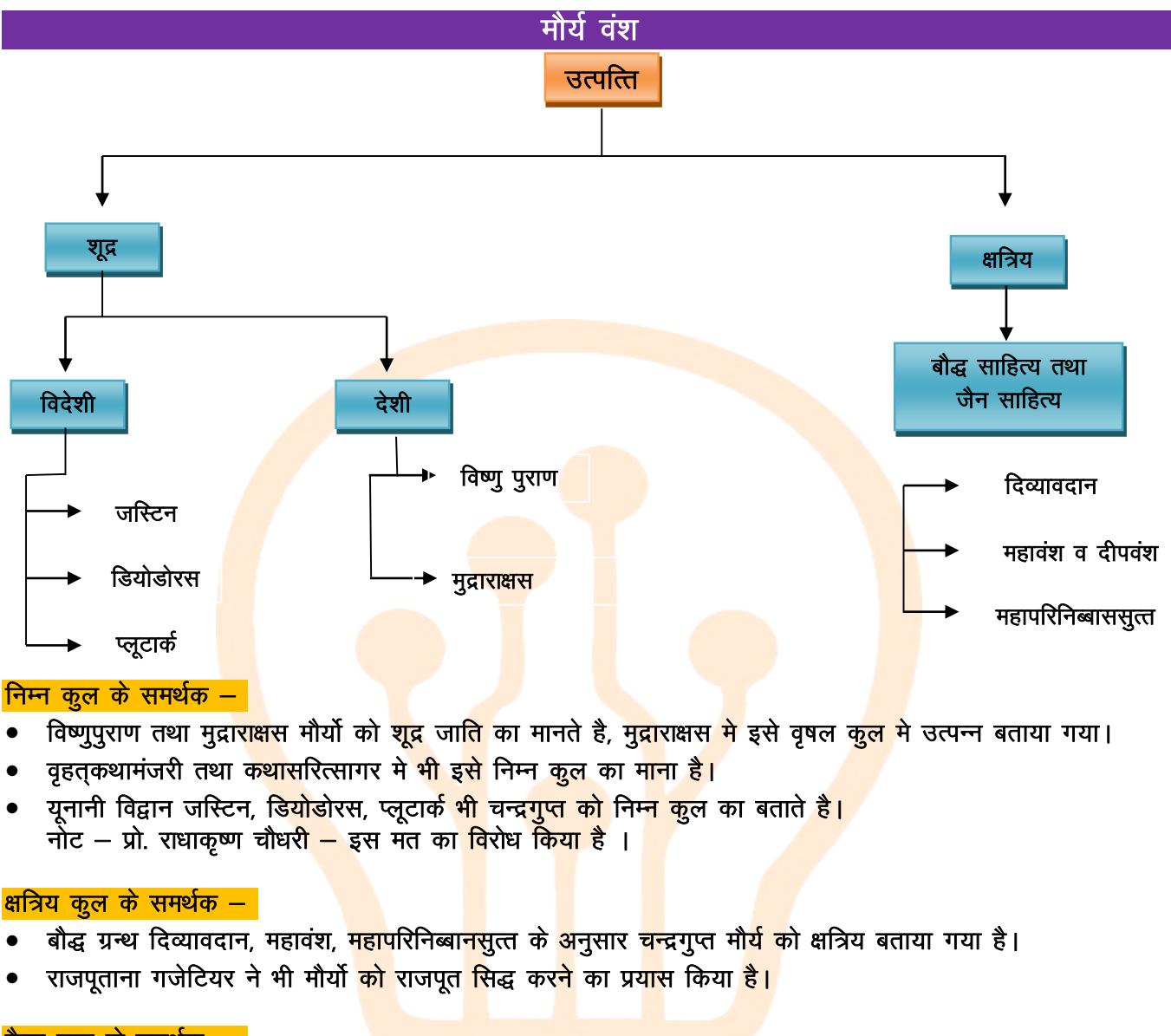
#### द्वेष सांग –

- नरक की दीवार अपनी आँखों से देखी।
- अशोक द्वारा बनाए गए स्तूपों का वर्णन।
- दोनों चीनी यात्रियों ने अशोक के बुद्ध बनने से पहले उसके क्रूर स्वभाव पर प्रकाश डाला है।

#### पुरातात्त्विक स्त्रोत –

- A. अभिलेख – अशोक तथा रुद्रदामन का अभिलेख
- B. मृदभाण्ड – उत्तरी ओपदार काले मृदभाण्ड (NBPW)
- C. आहत सिक्के – ताँबे तथा चाँदी के





**वैश्य कुल के समर्थक –**

- रोमिला थापर ने चन्द्रगुप्त को वैश्य जाति का माना है।

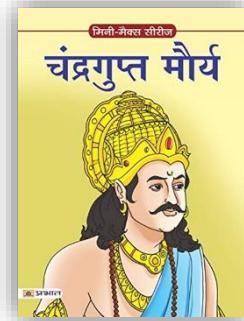
**निष्कर्ष –**

- उपर्युक्त साक्ष्यों से स्पष्ट होता है, मौर्य क्षत्रिय थे, ब्राह्मण ग्रन्थों का ऐसा रूख सम्भवतः इसलिए था क्योंकि मौर्यों ने ब्राह्मण धर्म को प्रश्रय नहीं दिया, इनके साथ ही बौद्ध साहित्य भी मौर्यों को क्षत्रिय मानते हैं। साथ-साथ चाणक्य की अर्थशास्त्र में राजत्व के लिए उच्च कुल में उत्पन्न क्षत्रिय को ही राजत्व का अधिकारी माना है, तभी चाणक्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य को सम्राट बनने में मदद की, यदि चन्द्रगुप्त क्षत्रिय न होता तो संभवतः चाणक्य कभी चन्द्रगुप्त को राज्य निर्माण में सहायता न देता।



## चन्द्रगुप्त मौर्य

- सेन्ड्रोकोट्स यूनानी नाम
- माता—मुरा
- गुरु – तक्षशिला का आचार्य चाणक्य – चाणक्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य को राजकीलम खेल के दौरान देखा तथा उसकी प्रतिभा से प्रभावित होकर अपने साथ तक्षशिला ले गया।



### चन्द्रगुप्त मौर्य के अभियान

- ✓ चन्द्रगुप्त की विजय योजना –
- नंदों का शासन खत्म
- यूनानियों को भारत से खदेड़ना
  
- ✓ जस्टिन के अनुसार –
- चन्द्रगुप्त ने नंदों के अंत के लिए सिकंदर से भेंट कर उससे सहायता माँगी, लेकिन चन्द्रगुप्त की उदंडता से क्रोधित होकर उसे मार डालने की आज्ञा दी लेकिन चन्द्रगुप्त वहाँ से भाग आया।
  
- ✓ मगध पर प्रथम आक्रमण –
- सर्वप्रथम चन्द्रगुप्त मौर्य ने नंद वंश के नाश हेतु मगध की राजधानी पाटलीपुत्र पर आक्रमण किया। किंतु नंदों की विशाल सेना के समक्ष चन्द्रगुप्त मौर्य की पराजय हुई।
  
- ✓ पंजाब तथा सिंध विजय –
- जस्टिन के अनुसार चन्द्रगुप्त ने सिकंदर के क्षत्रपी फिलिप की हत्या कर पंजाब तथा सिंध पर कब्जा कर लिया।
- इसी अभियान के तहत उसने अपनी फौज में यवन सिपाहियों को भर्ती किया।
  
- ✓ मगध की विजय –
- महावंशठीका, मिलिन्दपन्हो, परशिष्टपर्वन से ज्ञात होता है कि सर्वप्रथम चन्द्रगुप्त ने पाटलिपुत्र पर आक्रमण किया तथा इसमें वह असफल हुआ।
- इसके पश्चात् उसने सीमावर्ती प्रांतों को विजित कर पुनः पाटलिपुत्र पर आक्रमण किया, तथा धनानंद को मार कर नंद वंश का अंत किया, इस युद्ध में धनानंद का सेनापति भद्रसाल तथा अमात्य राक्षस था।
  
- ✓ सौराष्ट्र विजय –
- रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख से मौर्यों की पश्चिम में सौराष्ट्र पर अधिकार की जानकारी मिलती है, चन्द्रगुप्त मौर्य का सौराष्ट्र में पुष्टगुप्त नामक प्रांतपति था, जिसने सुदर्शन झील का निर्माण कराया।
  
- ✓ दक्षिण विजय –
- तमिलग्रंथ मामुलनार के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य ने दक्षिण में त्रिचनापल्ली तक का क्षेत्र विजित किया था।
  
- ✓ चन्द्रगुप्त तथा सेल्यूक्स संघर्ष –
- सिकन्दर की मृत्यु के पश्चात् 312–311 ई.पू तक सेल्यूक्स अपने सभी प्रतिद्वंद्वियों को पराजित कर बेबीलोन तथा बैकिट्रिया को रौंदता हुआ भारत की तरफ बढ़ा।
- एपियानस के अनुसार 305 B.C. में सेल्यूक्स सिंधु नदी पार कर चन्द्रगुप्त से युद्ध हुआ, बाद में संधि कर दोनों ने वैवाहिक रिश्ते स्थापित कर लिये।



✓ परिणाम –

- अपनी पुत्री हेलेना का विवाह चन्द्रगुप्त से किया।
- चन्द्रगुप्त द्वारा 500 हाथी उपहारस्वरूप सेल्यूक्स को दिये गए।
- सेल्यूक्स ने मेगास्थनीज को चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा।
- एशिया (हेरात), अराकोशिया (कन्दहार), जेझोशिया (बलूचिस्तान) और पेरीपेमिसदाई (काबुल)

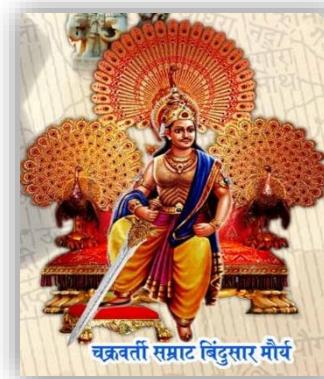
**चन्द्रगुप्त मौर्य का अंत –**

- जीवन के अन्तिम समय में चन्द्रगुप्त मौर्य ने जैन धर्म अपना लिया (दीक्षा—भद्रबाहु) तथा मगध में पड़ने वाले 12 वर्ष के दुर्भिक्ष से दुःखी होकर वह राज्य त्यागकर आचार्य भद्रबाहु के साथ मैसूर चला गया वही श्रवणबेलगोला में सल्लेखना विधि द्वारा प्राण त्याग दिये।

**कथन –**

- **प्लूटोर्क** – चन्द्रगुप्त ने 6 लाख की सेना लेकर समूचे भारत को रौंद डाला।
- **जस्टिन** – चन्द्रगुप्त की सेना डाकुओं की सेना है तथा इसका पूरे भारत पर कब्जा है।
- **एरियन** – पाटलिपुत्र के वैभव और गरिमा की बराबरी सूसा और एकबतना भी नहीं कर सकते हैं।
- **स्ट्रैबॉ** – राजा स्त्री अंगरक्षकों से घिरे हुये महल में रहता था, वह सिर्फ युद्ध, यज्ञ, न्याय तथा आखेट के अवसर पर ही महल से बाहर आता था।



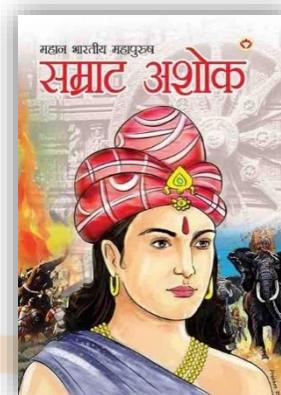


## बिन्दुसार

- माता – दुर्वरा
- वायुपुराण में नाम – भद्रसार
- जैनग्रंथों में नाम – सिहंसेन
- फ्लीट – अमित्रघात
- ✓ तारानाथ के अनुसार –
- चाणक्य ने 16 राज्यों के राजाओं और सामंतों के नाश में मदद की और बिन्दुसार को पूर्वी समुद्र से पश्चिमी समुद्रपर्यंत भू-भाग का शासक बनाया
- ✓ दिव्यावदान के अनुसार –
- बिन्दुसार के समय तक्षशिला में दो बार विद्रोह हुआ जिसे क्रमशः सुसीम एवं अशोक ने दबाया।  
नोट – तक्षशिला की जनता का कहना था, कि “हम शासक के खिलाफ नहीं हैं लेकिन दुष्ट अमात्य हमारा शोषण करते हैं”

### विदेशी शासकों से सम्बन्ध –

- ✓ स्ट्रैबो के अनुसार –
- सीरिया के राजा एंटिओकस ने डाइमेक्स को बिन्दुसार के दरबार में भेजा, जिससे बिन्दुसार ने मदिरा, अंजीर एवं दार्शनिक की मांग की।
- मिस्त्र के राजा फिलाडेल्फस ने डायनोसियस नामक राजदूत बिन्दुसार के दरबार में भेजा।
- बिन्दुसार का प्रधानमंत्री खल्लाटक था, इसके साथ-साथ चाणक्य एवं राधागुप्त भी थे।
- राधागुप्त को चाणक्य का उत्तराधिकारी माना जाता है।
- मेगास्थनीज का उत्तराधिकारी डाइमेक्स को माना जाता है।
- बिन्दुसार आजीवक सम्प्रदाय से जुड़ा था।
- पिंगलवत्स नामक आजीवक बिन्दुसार के दरबार में रहता था।
- बिन्दुसार की सभा में 500 सदस्यों वाली एक मंत्रिपरिषद थी जिसका प्रधान खल्लाटक था।



## अशोक

- माता – सुभद्रांगी या धम्मा – चंपा के एक ब्राह्मण के पुत्र उपगुप्त ने अशोक को बौद्ध धर्म से दीक्षित किया।
- पुराण – अशोक को अशोकवर्द्धन कहा है।
- अशोक के अन्य नाम – बुद्धशाक्य, उज्जैनी करमोली
- दिव्यावदान, महावंश, दीपवंश, महाबोधिवंश – के अनुसार अशोक ने अपने 99 भाईयों की हत्या कर राजगद्दी प्राप्त की।
- राजा बनने से पहले अशोक अवंति का राज्यपाल था, राज्यपाल रहते हुए अशोक ने नेपाल, खस एवं तक्षशिला के विद्रोह दबाए थे।
- अभिलेखों में अशोक का नाम देवनामपियदासी मिलता है, लेकिन – गुर्जरा, मास्की (कर्नाटक) तथा नेतूर (A.P) में अशोक का नाम अशोक मिला है।
- नोट – विगतअशोक, अशोक का सगा भाई था।

### विवाह –

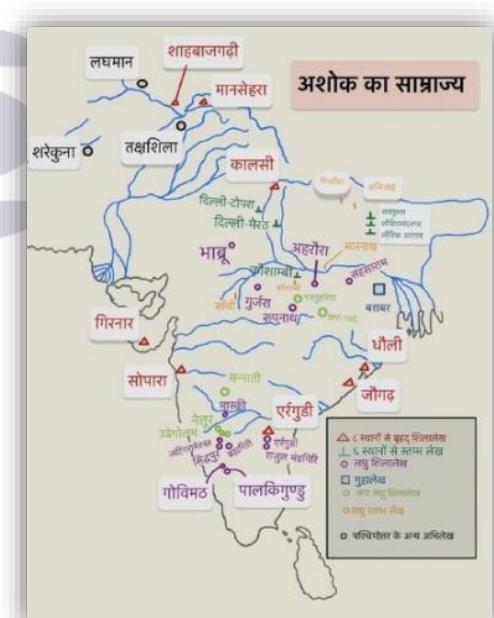
- अशोक ने विदिशा की श्रेष्ठी की पुत्री देवी से विवाह किया, इनसे इन्हें महेन्द्र एवं संघमित्रा नामक संतान प्राप्त हुयी।
  - कारुवाकी – पुत्र – तीवर – दोनों का उल्लेख अशोक के अभिलेख में मिलता है।
  - पदमावती – कुणाल – अशोक का उत्तराधिकारी
  - तिष्ठरक्षिता – बोधि वृक्ष कटवाया एवं कुणाल को अंधा करवाया
  - असंघमित्रा – पुत्री – चारूमती
  - अशोक के पुत्र – महेन्द्र, जालोक, तीवर, कुणाल
- नोट – अशोक के समय कश्मीर पर जालोक का शासन था।

### अशोक का शासन काल –

अशोक के 37 वर्षों के शासनकाल को मुख्यतः तीन भागों में बाँटा गया है।

- अभिषेक के पश्चात् शासन प्राप्ति से सातवें वर्ष तक का शासन
- आठवें से सत्ताइसवें वर्ष का शासन
- अठ्ठाइसवें से सैतीसवें वर्ष तक का शासन
- अभिषेक के पश्चात् शासन प्राप्ति से सातवें वर्ष तक का राज्यकाल –
- इस अवधि के दौरान अशोक चण्डाशोक के रूप में विख्यात था।  
“कहा जाता है कि एक बार जब उसके अंतः पुर की स्त्रियों ने उसकी कुरुपता का मजाक उड़ा दिया तो उसने अंतः पुर की 500 स्त्रियों की हत्या करवा दी”।

- फाहियान के अनुसार –





अशोक ने पाटलीपुत्र में नरक की स्थापना की जिसमे वह व्यक्तियों को नई—नई सजा देता था।

- हृवेन सांग —

- फ़ाहियान के कथन को प्रमाणित करते हुए कहा कि जब वह भारत आया तो उसने स्वयं अपनी ओँखों से नरक की दीवार देखी।
- अशोक ने राज्यभिषेक के सातवें वर्ष कश्मीर तथा खेतान को विजित किया एवं कल्हण की राजतरंगिणी के अनुसार अशोक ने वितस्ता नदी के किनारे श्री नगर नामक नगर की स्थापना की।

➤ आठवें से सत्ताइसवें वर्ष का शासन —

**कलिंग युद्ध — 261 ई.पू. —**

- अशोक ने अपने राज्यभिषेक के आठवें वर्ष कलिंग विजय की जानकारी — 13 वे शिलालेख से मिली — कलिंग के पास — 60,000 पैदल सैनिक, 1000 घुड़सवार, 7000 हाथी थे।

- राजा — नंदराज, राजधानी — तोस्सिली

- ✓ कलिंग युद्ध के कारण —

1. अशोक की साम्राज्यवादी नीति — अशोक एक महत्वाकांक्षी शासक था, वह कभी अपने पड़ोस से एक स्वतंत्र एवं शक्तिशाली राज्य बर्दाशत नहीं करता।
2. अशोक कलिंग विजित कर दक्षिण भारत से सीधा सम्पर्क साधना चाहता था।
3. कलिंग राज्य में कई बंदरगाह थे, जिनसे दक्षिण एशियाई देशों से व्यापार होता था, अतः अशोक कलिंग विजय कर अपना व्यापार वाणिज्य बढ़ाना चाहता था।
4. कलिंग हाथियों के लिए भी प्रसिद्ध था, अतः अशोक कब्जा कर अपनी सैन्य शक्ति में वृद्धि चाहता था।
5. आर. सी भण्डारकर के अनुसार, विन्दुसार के समय में कलिंग राज्य ने पांड्य तथा चोल राजाओं की सहायता की थी जो मगध के शत्रु थे।
6. तारानाथ के अनुसार — अशोक के मणिमुक्ताओं को चर्चित नागा लुटेरो ने लूट लिया था, जिसे पुनः प्राप्त करने के लिए अशोक ने कलिंग पर आक्रमण किया।

- परिणाम —

1. 13 वे शिलालेख के अनुसार कलिंग युद्ध में 1 लाख लोग मारे गए, 1.5 लाख बंदी बना लिए गए।
2. इस युद्ध के पश्चात् अशोक चण्ड — अशोक से धर्म — शोक बन गया।
3. इस युद्ध के पश्चात् अशोक ने व्यक्तिगत तौर पर बौद्ध धर्म को ग्रहण कर लिया (भाबु अभिलेख)

➤ अठाइसवें से सैतीसवें वर्ष तक का शासन

- अशोक की धार्मिक यात्रा —

12वें वर्ष निगाली सागर की यात्रा।

- बोधगया —

अशोक ने बौद्ध धर्म अपनाने के पश्चात् सर्वप्रथम (अपने राज्याभिषेक के 10वें वर्ष) बोधगया की यात्रा की।

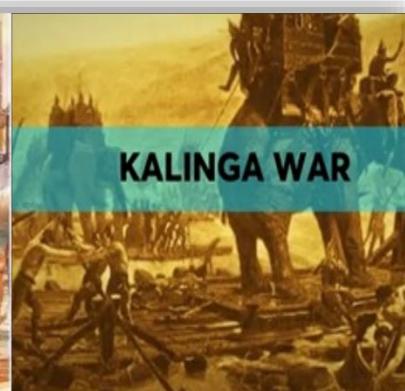
- लुम्बिनी —

उपगुप्त भी साथ मे था।

अशोक ने अपने राज्याभिषेक के 20 वें वर्ष लुम्बिनी की यात्रा की, जहाँ उसने महात्मा बुद्ध के सम्मान में कर को  $1/6$  से  $1/8$  कर दिया। जिसकी जानकारी रुम्मिनदेई अभिलेख से मिलती है — यह अशोक का सर्वाधिक छोटा अभिलेख है।

- कुशीनगर —

यह अशोक की अन्तिम धार्मिक यात्रा थी।





1. प्रशासनिक नीति –
  - अशोक के काल में लोक कल्याण के उद्देश्य से प्रशासनिक नीति बनाई। इस समय प्रशासन में उच्च पदों पर बिना किसी भेदभाव के सभी को समान अवसर प्रदान किए – जैसे – स्त्रियों व यूनानियों को भी स्थान मिला।
  - अधिकारियों को प्रजा की देखभाल हेतु स्पष्ट निर्देश अशोक द्वारा दिए गए तथा न्यायिक कार्यों के लिए रज्जुक नामक अधिकारियों की नियुक्ति की गयी।
2. सामाजिक नीति –
  - अशोक द्वारा अलग-अलग जाति, वर्ग, भाषा, समुदाय के एकीकरण हेतु अशोक ने अपने धर्म एवं अभिलेखों के माध्यम से सद्व्यवहार अपनाने की प्रेरणा दी तथा कई प्रकार के कार्य किए –
  - माता, पिता व गुरुजनों की सेवा व सम्मान की बात कही
  - दासों के प्रति नरम व्यवहार अपनाने की सीख दी।
  - जिओं और जीने दो जैसा व्यवहार अपनाने के लिए समाज को प्रेरित किया।
  - समाज में सहिष्णुता को स्थापित करने का प्रयास किया
3. धार्मिक नीति –
  - सर्वधर्म सम्भाव व सहिष्णुता के साथ प्रत्येक धर्म को सम्मान दिया गया तथा ब्राह्मण, बौद्ध, जैन आदि भिक्षुओं को दान दिए। स्वयं अशोक ने आजीवक सम्प्रदाय को बराबर की पहाड़ियों में गुफाए बनवाकर दान में दी।
  - इसके अलावा अशोक ने व्यक्तिगत रूप से बौद्ध धर्म को अपनाया, किन्तु उसे अपनी प्रजा पर थोपा नहीं।
4. विदेश नीति –
  - कलिंग युद्ध के पश्चात् अशोक की विदेश नीति शांति व सह-अस्तित्व के सिद्धांत पर आधारित हो गयी। तेरहवें दीर्घ शिलालेख से इसके अलग-अलग विदेशी संबंधों की जानकारी मिलती है।
  - श्रीलंका के शासक तिरस्स के शासन काल में अपने पुत्र महेन्द्र एवं पुत्री संघमित्रा को धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु भेजा। इसी प्रकार उसने अन्य देशों में भी अपने धर्म प्रचारक भेजे।
5. आर्थिक नीति –
  - अशोक ने अपनी आर्थिक नीति के अन्तर्गत मौर्य अर्थव्यवस्था को समृद्धि देने का प्रयास किया। अपने प्रशासन के बल पर उद्योग-धंधों, वाणिज्य-व्यापार को बढ़ावा दिया।

### अशोक एवं बौद्ध धर्म

#### ✓ भूमिका –

- कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने बौद्ध धर्म ग्रहण किया और एक निष्ठावान बौद्ध अनुयायी के रूप में बौद्ध सिद्धांतों में विश्वास प्रकट करते हुए बौद्ध मत के प्रचार-प्रसार के लिए कई कार्य किए।
- बौद्ध धर्म ग्रहण कर निष्ठावान बौद्ध बन गया। त्रिरत्न (बुद्ध, धर्म, संघ) पर विश्वास प्रकट किया (भाब्नु अभिलेख)
  - बौद्ध विद्वानों को संरक्षण व दान दिया।
  - बौद्ध तीर्थ स्थलों की धर्म यात्रा की।
  - राज्याभिषेक के 10 वें वर्ष – बोधगया की यात्रा।
  - राज्याभिषेक के 12 वें वर्ष – निगाली सागर की यात्रा
  - राज्याभिषेक के 20 वें वर्ष – रुम्मिनदेई की यात्रा
  - निगालीसागर यात्रा के दौरान कनकमुनि के स्तूप को बड़ा करवाया।
  - रुम्मिनदेई यात्रा के दौरान युद्ध के सम्मान में बलि नामक कर समाप्त कर दिया तथा भाग नामक कर घटाकर  $1/6$  से  $1/8$  कर दिया।
  - राजकीय पदाधिकारियों की नियुक्ति की, जिन्होंने बौद्ध सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार किया। जैसे धर्म महामात्र तथा स्त्री महामात्र (पाँचवा तथा 12 वा दीर्घ अभिलेख)
  - अभिलेखों पर बौद्ध सिद्धांत लिखवाकर उन्हें प्रचारित किया।
  - अशोक ने अपने शासनकाल में पाटलिपुत्र में तीसरी बौद्ध संगीति का आयोजन करवाया तथा कई ग्रंथों का संकलन किया गया।
  - अशोक ने कला एवं स्थापत्य के क्षेत्र में भी बौद्ध धर्म को संरक्षण दिया तथा 84 हजार बौद्ध स्तूपों का निर्माण करवाया।
  - अशोक ने अपने प्रचारकों के माध्यम से विदेशों में भी बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार करवाया।



## अशोक एक महान सम्राट

1. उच्च राजनीतिक आदर्श –
- अशोक ने राजा का कर्तव्य प्रजा की सेवा करना माना। वह स्वयं को प्रजा का ऋणी मानता था। इतनें स्पष्ट शब्दों में उसने एक उच्च राजनीतिक आदर्श की स्थापना की।
2. प्रजा पालक –
- अपनी प्रजा के साथ वह पिता-पुत्र संबंधों की स्थापना करता है और उनके कल्याण के लिए उसी प्रकार प्रयास करता है। जैसे एक पिता अपने बच्चों के लिए करना चाहता है। प्रजा को पुत्र के रूप में देखने की यह दृष्टि एकदम नवीन थी।
3. सर्वलोकहित का आदर्श –
- अशोक सिर्फ अपनी प्रजा को ही नहीं बल्कि अविजित पड़ोसियों के कल्याण को भी महत्वपूर्ण मानता है और उनके लिए भी कार्य करता है।
4. प्रशासनिक सुधार –
- अशोक ने अपनी प्रशासनिक नीति लोक कल्याण के उद्देश्य से बनायी। प्रजा के लिए न्याय व्यवस्था में भी सुधार किया तथा प्रशासन को एक मानवीय चेहरा दिया है।
5. धर्म नीति –
- प्रजा के नैतिक उत्थान एवं राज्य के एकीकरण के लिए अशोक ने धर्म नीति का प्रतिपादन किया। इसके तहत समाज में सहिष्णुता, अहिंसा, बंधुत्व की भावना को बढ़ाया तथा क्रोध, हिंसा, घमण्ड जैसे मानवीय दुर्गुणों को दूर करने की बात कही।
6. लोक कल्याणकारी शासक –
- अशोक ने बताया कि राजा का कार्य निर्माण व प्रशासन चलाना नहीं, बल्कि लोक कल्याणकारी कार्य करना भी बताया।
7. अभिलेख –
- अशोक पहला ऐसा भारतीय शासक था जिसने अभिलेखों के माध्यम से राज्य की नीति को स्पष्ट किया, उसके अभिलेखों की तुलना वर्तमान सिटीजन चार्टर से की जाती है।
8. पर्यावरण सुरक्षा के प्रति जागरूक –
- अशोक पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति भी चिंतनशील था। उसने वृक्षारोपण पर विशेष बल दिया। वह जैव विविधता को महत्वपूर्ण मानता था। पशुबलि को हतोत्साहित करने के पीछे उसका यही दृष्टिकोण रहा होगा।
9. लोकभाषा का प्रयोग –
- अपने विशाल साम्राज्य में आम जनता से जुड़ने के लिए वह प्राकृत भाषा का इस्तेमाल करता था।
10. कला तथा स्थापत्य –
- 84 हजार स्तूपों, बराबर की पहाड़ियों की गुफा (सुदामा, कर्ण, चोपाल, विश्व झोपड़ी) का निर्माण करवाया गया।

### अशोक का धर्म

अर्थ व  
उद्देश्य

विशेषताएं

स्वरूप

धर्म का  
प्रसार

महत्व

**अर्थ एवं उद्देश्य** – संस्कृत भाषा के धर्म को ही प्राकृत में धर्म कहा।

अशोक ने अपनी प्रजा के नैतिक उत्थान तथा विभिन्न भाषा-भाषी धर्म सम्प्रदाय के लोगों को जोड़कर मौर्य साम्राज्य की एकता व अखण्डता को बनाए रखने के उद्देश्य से जिन नियमों की आचार संहिता प्रस्तुत की उसे अशोक के अभिलेखों में धर्म की संज्ञा दी गयी है।

#### धर्म की विशेषता –

- सार्वभौमिकता – अशोक के धर्म का स्वरूप ऐसा था, जिसे विश्व के किसी भी सभ्यता, संस्कृति या धर्म का पालन करने वाली जनता अपना सकती थी।





- सभी धर्मों का सार – अशोक का धर्म विभिन्न धर्मों में विद्यमान सुविचारों का संग्रह था। अशोक ने बौद्ध धर्म से नैतिकता व आचार–विचार ब्राह्मण धर्म से दण्डविधान व अनुशासन तथा आजीवकों से ऐन्द्रियजालिक पद्धति ली थी।
- अहिंसा पर बल – अशोक का धर्म अहिंसात्मक अवधारणा पर आधारित है। अशोक ने अपने प्रथम बृहद् शिलालेख में पशु–हत्या पर प्रतिबंध लगाने सम्बन्धी आदेश दिए थे।
- लोक कल्याणकारी अवधारणा –  
अशोक के दूसरे बृहद् शिलालेख से उसके लोकल्याणकारी कार्यों की जानकारी प्राप्त होती है।
- धर्म की सरलता – धर्म की सहज–सरल उपासना पद्धति थी।
- धर्म प्रचार के साधन –
  - धर्म यात्राओं का प्रारंभ – अशोक ने धर्म के प्रचार–प्रसार हेतु 10वें वर्ष बोधगया, 14वें वर्ष निगालीसागर एवं 23वें वर्ष लुम्बिनी की यात्रा की थी।
  - राजकीय पदाधिकारियों की नियुक्ति –  
अशोक ने धर्म के प्रचार–प्रसार हेतु रज्जुक, प्रादेशिक धर्म महामात्र (पाँचवा शिलालेख) की नियुक्ति की।
  - जन साधारण भाषा का प्रयोग –  
अशोक ने धर्म के प्रचार–प्रसार हेतु जनसाधारण की भाषा प्राकृत तथा स्थानीय लिपियों (ब्राह्मी, खरोष्ठी, अरमाइक एवं यूनानी) में अभिलेख अंकित करवाये।
- स्वर्गीय सुखों का प्रदर्शन – अशोक ने धर्म को लोकप्रिय बनाने के लिए स्वर्गीय सुखों का प्रदर्शन करवाया, इन प्रदर्शनों से जहाँ एक ओर जनता का मनोरंजन होता था वही दूसरी ओर पारलौकिक सुखों की लालसा से वह धर्म की ओर आकृष्ट होती थी।
- लोक कल्याणकारी कार्य – अशोक ने धर्म को लोकप्रिय बनाने के लिये मानव तथा पशु जाति के कल्याणार्थ अनेक कार्य किये पशु–पक्षियों की हत्या पर रोक तथा अपने एवं पड़ोसी राज्यों में भी मनुष्यों तथा पशुओं के चिकित्सा की अलग–अलग व्यवस्था करवाई।
- विदेशों में धर्म–प्रचारकों को भेजना – अशोक ने धर्म के प्रचारार्थ विदेशों में प्रचारक भेजे जैसे – महेन्द्र तथा संघमित्रा – लंका, सोन तथा उत्तर–सुवर्ण भूमि में।

**स्वरूप –** अशोक के धर्म के सम्बन्ध में अलग–अलग विद्वानों के अलग–अलग मत है।

- धार्मिक स्वरूप – पश्चिमी विद्वानों के अनुसार अशोक का धर्म ‘धार्मिक’ था, उन्होंने अशोक को नवीन धर्म का संस्थापक माना है, किंतु किसी भी नये धर्म की कुछ अनिवार्य विशेषताएँ होती हैं, जैसे विशेष देवता की पूजा, पूजा स्थल, या धर्मग्रन्थ किन्तु अशोक के अभिलेखों से धर्म के सम्बन्ध में ऐसी कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती।
- अशोक का धर्म बौद्ध धर्म के रूप में – D.D. कौशाम्बी के अनुसार अशोक के धर्म की कुछ बातें जैसे माता–पिता की सेवा, गुरुओं का सम्मान, मित्रों, सम्बन्धियों, परिचितों तथा ब्राह्मण–श्रमण–साधुओं के साथ उदारता तथा दास–भूत्यों के साथ उचित व्यवहार आदि बातों का उल्लेख दीर्घनिकाय के सिगालोवादसुत्त में मिलता है।
- तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन
- अशोक ने भाबू लघु शिलालेख में बौद्ध धर्म के त्रिरत्न–बुद्ध, धर्म तथा संघ के प्रति आस्था प्रकट की है। किन्तु अशोक ने अपने धर्म में बौद्ध धर्म के मूल सिद्धांत जैसे – चार आर्यसत्य या अष्टांगिक मार्ग आदि का उल्लेख नहीं किया, अतः अशोक का धर्म पूर्णतः बौद्ध धर्म है, यह कहना तार्किक नहीं होगा।

**● धर्म का वास्तविक स्वरूप –**

- अशोक के धर्म के वास्तविक जानकारी स्वयं अशोक के अभिलेख से प्राप्त होती है, अशोक दूसरे स्तम्भलेख में स्वयं प्रश्न करता है कि “कियं चु धर्मे” अर्थात् धर्म क्या है।
- अशोक अपने इस प्रश्न का उत्तर दूसरे तथा सातवें अभिलेख में स्वयं देता है कि –
  - ✓ अल्प पाप करना।
  - ✓ अत्यधिक कल्याण
  - ✓ दया
  - ✓ दान
  - ✓ सत्यवादिता
  - ✓ पवित्रता
  - ✓ मृदुता



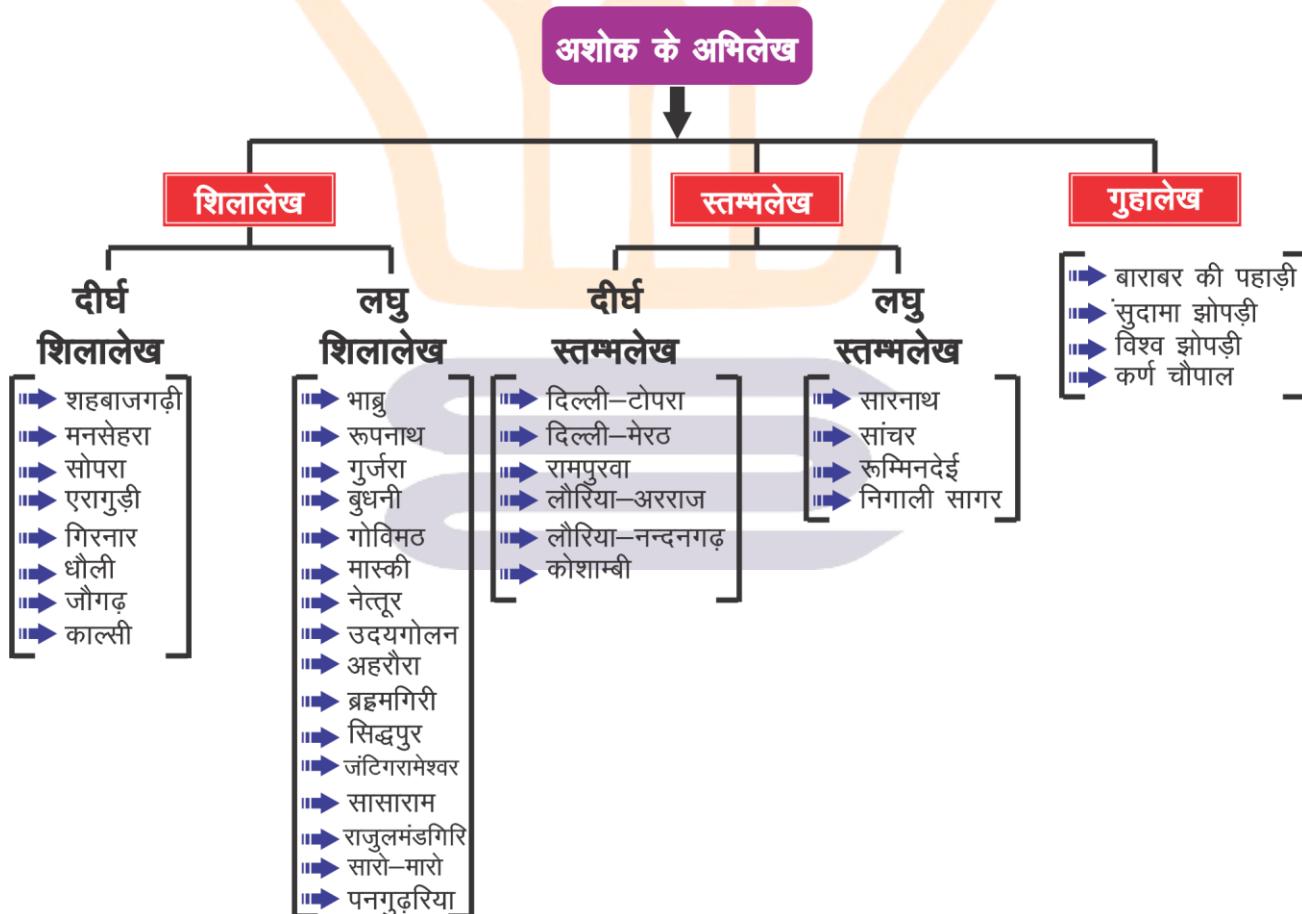


- ✓ साधुता
- ✓ प्राणियों की हत्या न करना
- ✓ माता-पिता की सेवा करना
- ✓ गुरुजनों का सम्मान
- ✓ अतप व्यय आदि

**निष्कर्षतः** – यद्यपि अशोक को व्यक्तिगत रूप से बौद्ध धर्म का अनुयायी कहा जा सकता है, किन्तु वास्तव में अशोक का धर्म लोककल्याण नैतिकता, धार्मिक सहिष्णुता, "जियो और जीने दो" विश्व बन्धुत्व की भावना पर आधारित था।

**महत्व** – यद्यपि अशोक के धर्म की क्रियाविधि में कुछ कमिया थी। इसीलिए अशोक की मृत्यु के बाद वह कुछ ही समय में बिखर गया, लेकिन फिर भी इसकी महत्वपूर्ण सफलताएं रही हैं।

1. अशोक अपने धर्म के माध्यम से एक विशाल साम्राज्य को बनाए रखने में सफल रहा। साथ ही उसने साम्राज्य का सुदृढ़ीकरण भी किया।
2. हमें अभिलेखों से प्रमाण मिलता है, कि धर्म से प्रभावित होकर कुछ बहेलियों (शिकारी) तथा मछुआरों ने जीव हिंसा त्याग कर कृषक जीवन अपनाया।
3. अशोक ने अपने धर्म के बल पर पशु धन को बचाया, जिससे वाणिज्य व्यापार भी बढ़ता गया।
4. धर्म के कारण साम्राज्य में शांति व्यवस्था कायम रही, जिससे वाणिज्य व्यापार भी बढ़ता गया।
5. अशोक के धर्म के कारण सामाजिक स्थिरता बनी रही, जिससे उसके समय कोई बड़ा विद्रोह नहीं हुआ।
6. धर्म शक्ति के माध्यम से विदेशी राज्यों पर भी प्रभाव बनाया जा सका।
7. अशोक के धर्म के प्रगतिशील विचारों ने परवर्ती शासकों को भी प्रभावित किया। जैसे— अकबर का दीन—ए—इलाही अशोक के धर्म से प्रभावित था।





- 1837 ई. में जेम्स प्रिंसेप ने अशोक के दिल्ली-टोपरा अभिलेख में उत्कीर्ण ब्राह्मी लिपि को सर्वप्रथम पढ़ने में सफलता हासिल की।
- जेम्स प्रिंसेप ने राजा प्रियदर्शी का सम्बन्ध श्रीलंका के राजा तिस्स से स्थापित किया, कालांतर में हर्नर महोदय ने प्रियदर्शी को अशोक बताया।
- निर्माण – लाल बलुआ पत्थर – उ.प्र. के मिर्जापुर

अन्य बिन्दु –

- अशोक के अभिलेखों का लेखक – चापाण
- लिपि – ब्राह्मी/ग्रीक/खरोष्ठी/अरामाइक
- खोजकर्ता ई. वी. टी. फैथेलर – दिल्ली – मेरठ
- अशोक के अभिलेखों में, अशोक नाम आता है – मास्की, गुर्जरा, नेतृत्व एवं उदगोलन
- मास्की में अशोक का नाम बुद्ध शाक्य प्राप्त होता है।
- भाष्व अभिलेख में अशोक को मगधाधिराज कहा गया है, तथा बुद्ध धर्म के तीन रत्न – बुद्ध, धम्म, संघ का उल्लेख।
- अशोक का इतिहास उनके अभिलेखों के आधार पर डी.आर. भंडारकर ने लिखा है।
- शाहबाजगढ़ी + मानसेहरा – खरोष्ठी लिपि का प्रयोग
- शास्त्र-ए-कुना – द्विलिपिक – अरामाइक तथा ग्रीक
- तक्षशिला + लघमान – आरामाइक लिपि में
- महास्थान अभिलेख – बंगाल – अकाल पड़ने पर अन्न वितरण की जानकारी
- सोहगौरा – उ.प्र. (गोरखपुर) – ताम्रपत्र – एकमात्र अन्नागार का चित्र भी उत्कीर्ण है।
- पनगुढ़रिया – अशोक को महाराजकुमार कहा गया।
- कंगनहल्ली – अशोक का चित्र तथा उसके लिए 'राज्यो-अशोक' उल्लेखित है।
- धौली + जौगढ़ – सभी मनुष्य मेरी संतना है।
- गिरनार लेख – मनुष्य + पशुओं – चिकित्सालयों की स्थापना कराई।

✓ अशोक के वृहद शिलालेखों पर निम्नलिखित 14 लेख खुदे हुए हैं –

1. प्रथम लेख – इस लेख में पशु हत्या पर निषेध के बारे में लिखा गया है। अशोक कहता है कि इस लेख के लिखे जाने के समय केवल तीन पशु प्रतिदिन मारे जाते हैं – 02 मोर एवं 01 मृग। लेकिन भविष्य में ये तीनों भी नहीं मारे जाएंगे।
2. द्वितीय लेख – इस लेख में उल्लेख है कि प्रियदर्शी राजा ने सीमांत राज्यों जैसे – चोल, पाण्ड्य, सतियपुत्त, केरलपुत्त (चेर) एवं ताम्रपर्णी (श्रीलंका) तथा विदेशी राज्यों जैसे – यवन राजा एन्टियोकस एवं चार अन्य के यहाँ मनुष्य एवं पशुओं की चिकित्सा का प्रबंधन किया था। साथ ही प्रियदर्शी राजा ने मार्गों के किनारे छायादार वृक्ष लगवाए थे तथा पानी की व्यवस्था के लिए कुएं खुदवाए थे।
3. तृतीय लेख – इसमें अशोक कहता है, कि मेरे साम्राज्य में सभी जगह प्रादेशिक, रज्जुक और युक्त प्रति पांचवें वर्ष (उज्जैन तथा तक्षशिला में प्रति तीसरे वर्ष) प्रांतों का दौरा करें, ताकि वे प्रजा को धर्मकार्यों की शिक्षा दें सकें। इसी लेख में उल्लेखित है कि माता-पिता की आज्ञा मानना, मित्रों, सम्बन्धियों, ब्राह्मणों एवं श्रमणों के प्रति उदार भाव रखना, जीवों की हत्या न करना, अल्प संचय और अल्प व्यय करना अच्छी बात है।
4. चतुर्थ लेख – इस लेख में उल्लेखित है कि प्रियदर्शी राजा के धर्म आचरण से भेरीघोष धम्म घोष में बदल गया। इसी लेख में उल्लेखित है कि प्रजा में धम्म की शिक्षा द्वारा जीवित प्राणियों की हत्या का त्याग, सम्बन्धियों, ब्राह्मणों एवं श्रमणों का आदर, माता-पिता की आज्ञा पालन इतना बढ़ गया है, जितना पहले कई सौ वर्षों तक नहीं था।
5. पंचम लेख – इस लेख में उल्लेखित है कि प्रियदर्शी ने अपने राज्याभिषेक के 13वें वर्ष धम्म-महामात्र नामक अधिकारियों की नियुक्ति की, जो धम्म के प्रचार तथा जनता के कल्याण एवं सुख के लिए कार्य करते थे।
6. छठा लेख – इस लेख में अशोक कहता है कि हर समय, चाहे मैं भोजन करता रहूँ या अन्तः पुर में रहूँ या शयनकक्ष में, चाहे बाग में रहूँ या सवारी पर। सब जगह प्रतिवेदक (गुप्तचर) मुझे प्रजा के हाल से परिचित रखें। इस तरह इस लेख से चुस्त प्रशासन की जानकारी प्राप्त होती है।
7. सातवां लेख – इसमें अशोक कहता है कि सभी सम्प्रदाय के लोग सब जगह निवास करें। सभी धर्म संयम तथा चित्त की शुद्धि चाहते हैं। यह लेख सबसे लंबा है।
8. आठवां लेख – इसमें उल्लेखित है कि अशोक ने अपने राज्याभिषेक के 10वें वर्ष आखेटक यात्राओं की जगह धम्म यात्रा का प्रारंभ बोधगया से किया।
9. नवां लेख – इसमें अशोक कहता है कि लोग विविध मंगलाचार जैसे – विवाह, जन्मोत्सव आदि करते हैं, लेकिन उनका फल अल्प होता है, जबकि धम्म रूपी मंगलाचार अधिक महत्वपूर्ण है। साथ ही इस लेख में अशोक कहता है कि दासों एवं सेवकों के प्रति शिष्ट व्यवहार करें तथा गुरुजनों, ब्राह्मणों एवं श्रमणों का आदर करें।





10. दसवां लेख – इसमें अशोक ने यश और कीर्ति की जगह धम्म का पालन करने पर बल दिया है।
11. ग्यारहवां लेख – इसमें अशोक कहता है कि धम्म जैसा कोई दान नहीं, धम्म जैसी कोई प्रशंसा नहीं, धम्म जैसा कोई बंटवारा नहीं और धम्म जैसी कोई मित्रता नहीं।
12. बारहवां लेख – इसमें अशोक धार्मिक सहिष्णुता एवं धम्म सार पर बल देते हुए कहता है कि सभी धम्मों का सार संयम है। लोग अपने सम्प्रदाय की प्रशंसा और दूसरे सम्प्रदाय की निन्दा न करें। इसी लेख में स्त्री महामात्रों की नियुक्ति का उल्लेख है।
13. तेरहवां लेख – इसमें उल्लेखित है कि देवनाम प्रियदर्शी ने अपने राज्याभिषेक के 09वें वर्ष कलिंग पर विजय प्राप्त की, क्योंकि व्यापारिक दृष्टिकोण से दक्षिण की ओर जाने वाले सभी मार्ग यहीं से होकर जाते थे। किन्तु यहाँ हुई हिंसा से उसका मन द्रवित हो उठा तथा उसने भेरीघोष (युद्ध विजय) की जगह धम्मघोष (धम्म विजय) की नीति अपनाई। इसी लेख में उल्लेखित है कि अशोक ने अपने राज्य में तथा 600 योजन दूर तक अन्य सीमांत राज्यों में धम्म का प्रचार किया। धम्म का प्रचार निम्नालिखित क्षेत्रों में किया गया।
  - दक्षिण सीमांत अर्थात् पड़ोसी राज्य :
    - i. चोल
    - ii. पाण्ड्य
    - iii. सतियपुत्र
    - iv. केरलपुत्र (चेर)
    - v. ताम्रपर्णी (श्रीलंका)  - विदेशी राज्य :
    - i. यवन (सीरिया) के राजा अन्तियोक (एण्टियोकस)
    - ii. मिस्र के राजा तुलामाया (टॉलेमी द्वितीय फिलाडेल्फस)
    - iii. मकदुनिया (यूनान) के राजा अंतेकिन (एण्टिगोनस गोनेट्स)
    - iv. साइरीन (लीबिया) के राजा मक (मगस)
    - v. एपिरस (यूनान तथा अल्बानिया के मध्य स्थित क्षेत्र) के राजा आलिक्य सुंदर (अलेकजेण्डर) के यहाँ। इसी लेख में उल्लेखित है कि अशोक के राज्य में यवनों (ग्रीक), कम्बोजों, नाभकों, नाभपवित्रों, भोजों, पितनिकों, आच्छाओं एवं पारिन्दों में सब जगह लोग धम्म का पालन करते थे।
14. चौदहवां लेख – इसमें उल्लेखित है कि कई बार लापरवाही या लिपिकार की भूल से लेखों में कुछ गलतियां हो जाती हैं।

**नोट :** अशोक के अभिलेखों में केवल एक लेखक चापड़ का नाम ब्रह्मगिरि, जतिंग रामेश्वर तथा सिद्धपुर (सभी कर्नाटक) से प्राप्त अभिलेख में मिलता है। धौली तथा जौगढ़ के शिलालेखों पर 11वां, 12वां तथा 13वां लेख उत्कीर्ण नहीं हैं। उनके स्थान पर 02 अन्य लेख उत्कीर्ण हैं, जिन्हें पृथक कलिंग लेख कहा गया है।

- ✓ प्रथम पृथक कलिंग लेख – इसमें अशोक कहता है कि सारी प्रजा मेरी संतान है। अशोक ने कलिंग के महामात्रों तथा न्यायिक अधिकारियों को निष्पक्ष न्याय करने को कहा है। अशोक कहता है कि मनुष्यों को कभी भी अकारण कैद या यातना न दी जाए। मैं निष्पक्ष न्याय हेतु सभी प्रांतों में प्रति पांचवें वर्ष (उज्जैन) व (तक्षशिला में प्रति तीसरे वर्ष) महामात्र नामक अधिकारी भेजूंगा।
- ✓ द्वितीय पृथक कलिंग लेख – इसमें भी अशोक कहता है कि सारी प्रजा मेरी संतान है।

### अशोक के उत्तराधिकारी

#### ❖ कुणाल –

- अन्य नाम – धर्मविवर्धन / सुयशस
- विमाता-तिष्ठरक्षिता ने अंधा करवा दिया।

#### ✓ राजतरंगिणी के अनुसार –

इसके शासन काल में पश्चिमोत्तर सीमा पर यवनों ने आक्रमण किया, जिसे रोकने के लिए इसका भाई जालौक गया परन्तु जालौक ने जम्मू कश्मीर में खुद को स्वतंत्र घोषित कर दिया। तथा इसी के शासनकाल में आंध्र काव्यों या सातवाहनों ने सिमुक के नेतृत्व में स्वतंत्र राजवंश की स्थापना की।

#### दशरथ –

- इसने नागार्जुनी पहाड़ियों (बराबर की पहाड़ी, गया, बिहार) में आजीवकों को गुफा दान की।





- इसने अपने पितामह अशोक के समान देवानामप्रिय की उपाधि ली।
  - इसके शासनकाल में साम्राज्य दो भागों में बट गया – राज्य का पूर्वी भाग दशरथ के अधिकार में तथा पश्चिमी भाग संप्रति के अधिकार दो राजधानी – पाटलिपुत्र तथा उज्जयिनी
  - हाथी गुम्फा अभिलेख के अनुसार कलिंग दशरथ के समय स्वतंत्र हो गया।
- ❖ संप्रति –
- अशोक के बाद योग्य उत्तराधिकारी जैनमतावलम्बी, संल्लेखना विधि द्वारा मृत्यु
- ❖ वृहद्रथ –
- अंतिम शासक
  - हत्या – पुष्टमित्र शुंग

## मौर्य कालीन सामाजिक जीवन



### मौर्यकालीन सामाजिक दिथिति

मौर्यकालीन समाज का अध्ययन तीन भिन्न प्रकार के स्त्रोतों के आधार पर किया जा सकता है, बौद्ध ग्रंथ, इंडिका एवं अर्थशास्त्र

- वर्ण व्यवस्था – मौर्यकालीन समाज चार वर्णों में विभाजित था ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र चारों वर्णों में शूद्र की स्थिति कमज़ोर थी, इसके पश्चात् भी शूद्र को पर्याप्त अधिकार थे, जैसे अर्थशास्त्र में शूद्रों को आर्य कहा गया, अर्थशास्त्र से ही शूद्रों के लिए वार्ता शब्द का उल्लेख मिलता था, अर्थात् कृषि, पशुपालन, शिल्प तथा वाणिज्य कार्य शूद्र का धर्म बताया गया।
  - सेना में भर्ती होना, सम्पत्ति रखना कृषि योग्य भूमि खरीदना आदि कार्य भी शूद्र कर सकते थे।
- जाति प्रथा – मेगास्थनीज के अनुसार भारतीय समाज 7 जातियों में विभाजित था –
  1. दार्शनिक
  2. कृषक
  3. योद्धा
  4. पशुपालक
  5. कारीगर
  6. निरीक्षक
  7. मंत्री
  - कोई भी व्यक्ति अपनी जाति से अलग विवाह नहीं कर सकता था और ही अलग पेशा अपना सकता था। परन्तु दार्शनिक इसके अपवाद थे, और वे किसी भी वर्ग के हो सकते थे।
  - किन्तु भारतीय समाज का यह विभाजन अतार्किक प्रतीत होता है, क्योंकि मेगास्थनीज हैराडोट्स की हिस्टोरिका से प्रभावित था, जिसने समाज का विभाजन 7 वर्ग में किया था।
- महिलाओं की स्थिति – मौर्य कालीन समाज में महिलाओं की स्थिति में तुलनात्मक रूप से गिरावट आयी।
  - महिलाएं सम्राट की अंगरक्षिकाएं होती थी, जिन्हे समरांगणियाँ कहा गया, स्त्रियों को पुनर्विवाह, विधवा विवाह तथा नियोग प्रथा का अधिकार था।
  - अर्थशास्त्र के अनुसार जो विधवाएं आजीवन विवाह नहीं करती थी, उन्हें 'छन्दवासिनी' कहा जाता था।

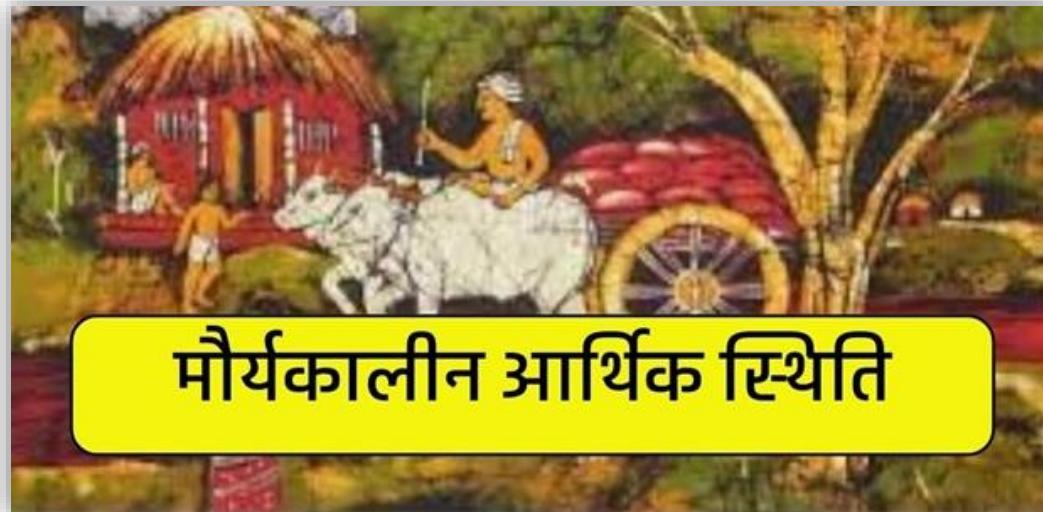




- सम्प्रांत घर की स्त्रियां प्रायः घर के अन्दर ही रहती थीं, ऐसी महिलाओं को अनिष्टासिनी कहा है।
- मौर्य समाज में वैश्यवृत्ति का भी चलन था, जिनकी देखरेख के लिए गणिकाध्यक्ष नामक अधिकारी होता था।
- विवाहिता स्त्री के उपहार तथा आभूषण उसकी अपनी संपत्ति होती थी। पति के अत्याचारों के विरुद्ध पत्नी न्यायालय में जा सकती थी।
- **विवाह –**
  - लड़कों के लिए विवाह की आयु 16 वर्ष तथा कन्याओं के लिए 12 वर्ष होती थी, स्मृतियों में वर्णित आठे प्रकार के विवाह इस समय समाज में प्रचलित थे।
  - तलाक की प्रथा थी, तलाक पति–पत्नी की सहमती से सम्भव था, पति बहुत समय तक विदेश में रहने या उसके शरीर में दोष होने पर पत्नी उसका त्याग कर सकती थी। इस प्रकार पत्नी के व्यभिचारिणी या बंध्या होने जैसी दशाओं में पति उसका त्याग कर सकता था।
  - कुलीन परिवारों में बहुविवाह का प्रचलन था।
- **दासों की स्थिति –**
  - मौर्य समाज में दासों की स्थिति संतोषजनक थी, कौटिल्य ने 9 प्रकार के दासों का उल्लेख किया है। दासों को सम्पत्ति रखने तथा बेचने का अधिकार था।
    - दासों के साथ अनुसूचित व्यवहार करने वाले स्वामी अर्थशास्त्र में दण्डनीय बताये गये हैं।
    - युद्ध में बन्दी बनाये गये तथा स्लेच्छ लोग ही दास के रूप में रखे जाते थे।
    - अशोक के अभिलेखों में भी दासों तथा भूत्यों के साथ अच्छा व्यवहार करने की सलाह दी गयी है।
    - मेगास्थनीज ने भारतीय समाज में दास प्रथा के प्रचलन का इंकार किया गया है।
- **शिक्षा –**
  - मौर्य काल में शिक्षा वर्ण व्यवस्था के आधार पर दी जाती थी। इस काल में शिक्षा के प्रमुख केन्द्र थे – तक्षशिला, उज्जैन एवं वाराणसी।
- **खान–पान –**
  - मेगास्थनीज के अनुसार भारतीयों के भोजन में अन्न, फल, दूध तथा माँस सम्मिलित था, अन्नों में गेहूँ, चावल तथा जौ का प्रयोग करते थे।
- **वेशभूषा –**
  - मौर्यकालीन भारतीय अच्छे वस्त्र तथा आभूषण के शौकीन थे, उनके कपड़े सोने एवं बहुमूल्य पत्थरों से जड़े हुए होते थे।
- **मनोरंजन के साधन –**
  - रथ दौड़, सांडयुद्ध, हस्ति युद्ध के साथ–साथ नट, नर्तक, गायक, आदि समाज में लोगों का मनोरंजन करते थे।
  - इस प्रकार मौर्य कालीन समाज में पूर्व काल की तुलना में गतिशीलता बाधित हुई। स्त्रियों एवं दासों की स्थिति में गिरावट आई यह परम्परा आगे के कालों में भी बनी रही।



## आर्थिक जीवन



### मौर्यकालीन आर्थिक द्वितीया

मौर्य कालीन अर्थव्यवस्था में कृषि, पशुपालन व्यापार वाणिज्य आदि आर्थिक गतिविधियाँ सम्मिलित थीं, जिसकी जानकारी अर्थशास्त्र, इण्डिका तथा अन्य तत्कालिक साहित्य से प्राप्त होती है।

- **कृषि—**
  - मौर्य काल की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था, इस काल में कृषि के क्षेत्र में लोहे का प्रचलन बढ़ा, मेगस्थनीज के अनुसार भारत की मिट्ठी उपजाऊ थी। फसलों के रूप में हमें गेहूँ जौ, चावल, कपास तथा गन्ने आदि का साक्ष्य प्राप्त होता है,
  - इस काल में राज्य द्वारा कृषि विस्तार का प्रयत्न किया, अर्थशास्त्र में जनपद निवेश का उल्लेख मिलता है, जिसका अर्थ नये क्षेत्र को आबाद करना।
  - राज्य की भूमि सीता भूमि कहलाती थी जिसमें युद्ध बंदी दासों तथा शूद्रों को भी लगाया गया।
  - मौर्य शासक सिंचार्झ हेतु प्रबंधन भी करते थे उदाहरणतः चन्द्रगुप्त मौर्य तथा अशोक ने क्रमशः सुदर्शन झील का निर्माण तथा जीर्णोद्धार करवाया
  - कृषि को क्षति पहुँचाने वाले कीड़े-मकोड़े तथा पशु-पक्षियों को नष्ट करने के लिए राज्य की ओर से गोपालक तथा शिकारी नियुक्त किये गए।
- **पशुपालन**
  - पशुपालन के लिए गाय-बैल, भेड़-बकरी, भैस, गधे, ऊँट, सुअर, कुत्ते आदि प्रमुख रूप से पाले जाते थे।
  - राज्य की ओर से चारागाहों की भी व्यवस्था की गई थी। पशुओं की देखभाल, चिकित्सा हेतु प्रबंधन गो-अध्यक्ष के अधीन होता था।
- **उद्योग—धंधे**
  - ✓ वस्त्र उद्योग
  - मौर्य काल में कपड़ा बुनना प्रमुख उद्योग था। अर्थशास्त्र के अनुसार मथुरा, कलिंग, काशी, बंग, वत्स, महिष में सर्वोत्कृष्ट प्रकार के सूती वस्त्र तैयार होते थे। अन्य वस्त्रों में दुकुल (श्वेत तथा चिकना वस्त्र) तथा क्षौम (रेशमी वस्त्र) तथा चीनी भूमि के कौशेय (रेशमी वस्त्र) आदि का उल्लेख मिलता है।
  - ✓ चर्म उद्योग
  - एरियन ने भारतीयों द्वारा श्वेत चमड़े के जूते पहने जाने का उल्लेख किया है, जो काफी सुन्दर होते थे।
  - ✓ काष्ठ उद्योग
  - इस काल में बढ़ीगिरी भी एक प्रमुख उद्योग था। बढ़ी लकड़ियों द्वारा विविध प्रकार के उपकरण बनाते थे। कुम्रहार की खुदाई में सात बड़े एवं आश्चर्यजनक ढंग से निर्मित चबूतरे प्राप्त हुए।
  - ✓ धातुकारी
  - सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, शीशा, टिन पीतल, कांसा आदि धातुओं से विविध प्रकार के अस्त्र-शस्त्र, बर्तन, आभूषण तथा उपकरण बनाये जाते हैं।



- तक्षशिला तथा हस्तिनापुर से नाना प्रकार के बहुमूल्य आभूषण प्राप्त हुए।
- अर्थशास्त्र में समुद्री तथा भूमिगत दोनों ही प्रकार की खानों का वर्णन मिलता है, समुद्री खानों से प्राप्त वस्तुओं में हीरे, मोती, मँगा, शंख बहुमूल्य पत्थर आदि का संग्रहण था, जिसके लिए एक अधीक्षक नियुक्त किया गया था।
- भूमिगत खानों के अधीक्षक नयी खानों की खोज करते तथा पुरानी खानों के रख-रखाव की व्यवस्था करते थे।
- खानों का प्रबंधन राज्य आकराध्यक्ष के माध्यम से सीधे या पट्टे पर देकर करता था।
- ✓ प्रस्तर उद्योग
  - अशोक के एकाशम स्तम्भ पाषाण उद्योग के उत्कृष्ट साक्ष्य है।
  - इसके अतिरिक्त शराब, नमक, खान, हथियार, जहाजरानी उद्योग का उल्लेख मिलता है, जो राज्य के नियंत्रण में थे।
- श्रेणी व्यवस्था
  - विभिन्न उद्योग-धन्धों की संस्थाओं को 'श्रेणी' कहा जाता था, जातक ग्रन्थों में 18 प्रकार की श्रेणियों का उल्लेख मिलता है। जैसे—लुहारों की श्रेणी, चर्मकारों की श्रेणी, चित्रकारों आदि, श्रेणियों के अपने न्यायालय होते थे, जो व्यापार-व्यवसाय सम्बन्धी झगड़ों का निपटारा किया करते थे। श्रेणी न्यायालय का प्रधान 'महाश्रेष्ठ' कहलाता था।
  - शिल्पकारों के सुरक्षा की समुचित व्यवस्था थी, शिल्पी के हाथ अथवा आँख को क्षति पहुँचाने वाले को मृत्यु-दण्ड दिया जाता था, जो उनका सामान चुराते थे, उन्हें 100 पण का जुर्माना देना होता था।
- व्यापार-व्यवसाय
  - मौर्य काल में व्यापार की उन्नति हुई। मौर्य सम्राटों ने सड़कों के निर्माण तथा एकात्मक शासन व्यवस्था की स्थापना करके भारतीय उपमहाद्वीप में व्यापार को प्रोत्साहन दिया।
  - इस काल में आंतरिक तथा बाह्य दोनों ही व्यापार प्रगति पर थे, इस समय भारत का बाह्य व्यापार सीरिया मिस्त्र तथा अन्य पश्चिमी देशों के साथ होता था। यह व्यापार पश्चिमी भारत में भृगुकछ तथा पूर्वी भारत में ताम्रलिपि के बन्दरगाहों द्वारा किया जाता था। बारबैरिकम नामक बन्दरगाह सिन्धु के मुहाने पर स्थित था।
  - एरियन हमे बताता है कि भारतीय व्यापारी मुक्ता बेचने के लिए यूनान के बजारों में जाते थे।
  - नवाध्यक्ष नामक पदाधिकारी व्यापारिक जहाजों का नियंत्रण करता था, राज्य व्यापारियों को किराये पर जहाज देते थे।
  - समुद्री मार्ग से आने वाली वस्तुएं यदि क्षतिग्रस्त हो जाती थी, तो राज्य उन पर शुल्क नहीं लेता था या क्षति के अनुपात से उसे घटा देता था।
  - अर्थशास्त्र में व्यापारी काफिलों का उल्लेख मिलता है, जिन्हें सार्थवाह कहा जाता था।
  - आन्तरिक व्यापार कौसिलों का उल्लेख मिलता है, जिन्हें सार्थवाह कहा जाता था।
  - देश के विभिन्न नगरों के मध्य व्यापार होता था।
  - पण्याध्यक्ष बिक्री की वस्तुओं का सुक्ष्मता से निरीक्षण करता था, वह वस्तुओं का मूल्य निर्धारित करता था ताकि व्यापारी जनता से अनुचित लाभ न कमा सके, व्यापारियों के लाभ की दरे भी निश्चित की गयी थी, व्यापारी स्थानीय वस्तुओं पर 5% तथा विदेशी वस्तुओं पर 10% का मुनाफा ही कमा सकते थे।
- यातायात—
  - मौर्यकाल में पश्चिमी तट पर भड़ौच/बेरीगाजा, पूर्वी तट पर ताम्रलिपि (तामलुक) मुख्य बन्दरगाह थे
- ✓ प्रमुख व्यापारिक मार्ग—
  - ताम्रलिपि—पुष्कलावती (पाकिस्तान)—उत्तरापथ
  - श्रावस्ती—प्रतिष्ठान—दक्षिणापथ
  - भड़ौच—मथुरा
  - पाटन—कौशाम्बी
- विनियम का माध्यम—
  - मौर्य काल में विनियम का माध्यम मुद्रा थी, जिन्हें आहत मुद्रा कहते थे, जिन्हें श्रेणियाँ जारी करती थी।
    1. सोने की मुद्राएँ— निष्क तथा सुवर्ण
    2. चाँदी की मुद्राएँ— पण, कार्षपण, शतमान, धरण, रूप्यरूप
    3. ताँबे की मुद्राएँ— माषक (बड़े सिक्के), काकणी (छोटे)
- आयात—निर्यात—



- मौर्यकाल में चीन से रेशम, ताम्रलिप्ति से मोती, नेपाल से चमड़ा व कम्बल, सीरिया से मदिरा तथा पश्चिम एशिया से घोड़ों का आयात होता था, जबकि भारत से विदेशों में हाथी दाँत, कछुएँ, सीप, मोती, नील, बहुमूल्य लकड़ी आदि का निर्यात किया करते थे।
- आयात-निर्यात की वस्तुओं पर बिक्री कर लिया जाता था, अर्थशास्त्र के अनुसार बिक्री कर न देने वाले को मृत्युदण्ड दिया जाता था।

#### निष्कर्ष-

इस प्रकार हम देखते हैं कि मौर्य काल में अर्थव्यवस्था के प्रत्येक स्तर पर अभूतपूर्व विकास हुआ। वास्तव में इस काल की आर्थिक संवृद्धि की वजह से ही मौर्य कालीन शासक न केवल लोक कल्याणकारी कामों को लागू कर सके, बल्कि एक मजबूत एवं स्थायी सेना पर गठन कर साम्राज्य का विस्तार किया।

### मौर्य काल की प्रशासनिक व्यवस्था

## मौर्य प्रशासन



मौर्य प्रशासन की केन्द्रीय व्यवस्था राजतंत्रात्मक थी। कौटिल्य के अर्थशास्त्र तथा अशोक के अभिलेखों तथा मेगस्थनीज के विवरण से मौर्य प्रशासनिक व्यवस्था की जानकारी मिलती है –

- राजा – राजा का पद प्रायः वंशानुगत होता था तथा सामान्यतः ज्येष्ठ पुत्र के उत्तराधिकार के नियम का पालन किया जाता था, फिर भी इस काल में राजगद्दी पर अधिकार को लेकर राजकुमारों के मध्य युद्ध हुये।
  - राजा कार्यपालिका, व्यवस्थापिका एवं न्यायपालिका का प्रमुख था, यद्यपि राजा के दैवीय उत्पत्ति का सिद्धांत नहीं था, तथापि वह ईश्वर का प्रिय पात्र समझा जाता था। जैसा कि अशोक ने 'देवानामंप्रिय' की उपाधि धारण की।
- मंत्रिण तथा मंत्रिपरिषद –
  - अर्थशास्त्र के अनुसार राज्य को चलाने के लिये दो पहिये की आवश्यकता होती है, तो उसमें एक पहिया राज्य तथा दूसरा मंत्रिपरिषद होता है।
  - मंत्रिपरिषद का वेतन 12,000 पण था, तथा इनकी संख्या निश्चित नहीं थी। इनका कार्य राजा को सलाह देना था।
  - मंत्रिपरिषद के कुछ प्रमुख मंत्रियों को (संख्या 3–4 होती थी), जिन्हें मंत्रिण कहा जाता था, इनकी नियुक्ति अमात्यों में से उपदा परिक्षण (चरित्र जाँच हेतु) के माध्यम से होती थी।
  - मंत्रिण का वेतन सर्वाधिक 48 हजार पण होता था, इनके अधीन मंत्रिपरिषद कार्य किया करती थी।
- तीर्थ – अर्थशास्त्र के विस्तृत नौकरशाही का वर्णन मिलता है, मौर्य प्रशासन में सबसे ऊँचे स्तर के पदाधिकारी को तीर्थ महामार्य अथवा अमात्य कहा जाता था।
  - अर्थशास्त्र में 18 तीर्थों का उल्लेख मिलता है, जो निम्नलिखित है –
    1. पुरोहित – प्रधानमंत्री
    2. युवराज – राजा का उत्तराधिकारी पुत्र
    3. सेनापति – युद्ध विभाग के मंत्री
    4. प्रधानमंत्री – मंत्रिपरिषाध्यक्ष
    5. समाहर्ता – राजस्व विभाग का प्रमुख
    6. सन्निधाता – कोषाध्यक्ष
    7. प्रदेष्टा – फौजदारी न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश





- 8. व्यवहारिक – दीवानी न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश
  - 9. दण्डपाल – पुलिस का प्रधान
  - 10. दुर्गपाल – दुर्ग का प्रमुख
  - 11. अंतपाल – सीमांत दुर्गों का प्रमुख
  - 12. कर्मान्तिक – उद्योग – धन्यों का प्रधान निरीक्षक
  - 13. पौर/नागरक – नगर प्रशासन का प्रमुख अधिकारी
  - 14. आटविक – वन विभाग का प्रधान
  - 15. प्रशास्ता – राजकीय आज्ञाओं का अभिलेख रखने वाला
  - 16. दौवारिक – राजमहलों की देखरेख करने वाला
  - 17. आन्तर्वेशिक – अन्तः पुर का अध्यक्ष
  - 18. नायक – सैन्य संचालन करने वाला
- अध्यक्ष – कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार 27 अध्यक्षों का उल्लेख मिलता है, अध्यक्ष विभिन्न विभागों के प्रमुख होते थे, और मंत्रिपरिषद के अधीन कार्य करते थे।
    - मेगास्थनीज तथा स्ट्रैबो ने अध्यक्षों को "मजिस्ट्रेट" कहा है।
  - 1. पण्याध्यक्ष – वाणिज्य विभाग का अध्यक्ष
  - 2. सूनाध्यक्ष – बूचड़खाने का अध्यक्ष
  - 3. सीताध्यक्ष – राजकीय कृषि विभाग का अध्यक्ष
  - 4. लोहाध्यक्ष – धातु विभाग का अध्यक्ष
  - 5. कोष्ठगाराध्यक्ष – कोष्ठगार का अध्यक्ष
  - 6. आयुधगाराध्यक्ष – शस्त्रगार का अध्यक्ष
  - 7. सूत्राध्यक्ष – कटाई-बुनाई विभाग का अध्यक्ष
  - 8. सुराध्यक्ष – आबकारी विभाग का अध्यक्ष
  - 9. गणिकाध्यक्ष – गणिकाओं का अध्यक्ष
  - 10. अकराध्यक्ष – खान विभाग का अध्यक्ष
  - 11. स्वर्णाध्यक्ष – सोने का अध्यक्ष
  - 12. कुप्याध्यक्ष – वनों का अध्यक्ष
  - 13. शुल्काध्यक्ष – व्यापारिक कर बसूल करने वालों का अध्यक्ष, सीमा शुल्क, टोल संग्रह
  - 14. लक्षणाध्यक्ष – छापेखाने (mint house)
  - 15. विविताध्यक्ष – चारागाहों का अध्यक्ष
  - 16. रूपदर्शक – मुद्राओं की जाँच करने वाला अधिकारी
  - 17. गो – अध्यक्ष – पशुधन विभाग का अध्यक्ष
  - 18. मुद्राध्यक्ष – पासपोर्ट विभाग का अध्यक्ष
  - 19. नवाध्यक्ष – जहाजरानी विभाग का अध्यक्ष (बंदरगाहों का अधीक्षक)
  - 20. संस्थाध्यक्ष – व्यापारिक मार्गों का अध्यक्ष
  - 21. अश्वाध्यक्ष – घोड़ों का अध्यक्ष
  - 22. हस्त्याध्यक्ष – हाथियों का अध्यक्ष
  - 23. अक्षपटलाध्यक्ष – महालेखाकार
  - 24. पत्तनाध्यक्ष – बन्दरगाहों का अध्यक्ष
  - 25. पौतवाध्यक्ष – माप-तौल का अध्यक्ष
  - 26. लवणाध्यक्ष – नमक विभाग का अध्यक्ष
  - 27. देवताध्यक्ष – धार्मिक संस्थाओं का अध्यक्ष
- प्रांतीय प्रशासन
    - मौर्य काल में केन्द्र का विभाजन प्रान्तों में था। प्रान्तों को 'चक्र' कहा जाता था, जिसका प्रमुख कुमार या आर्यपुत्र होता था, जो राजवंश से सम्बन्धित होते थे। दिव्यावदान के अनुसार केन्द्रीय प्रशासन के समान ही प्रान्तीय प्रशासन में भी मंत्रिपरिषद होती थी, जिसके सदस्य किसी महत्वपूर्ण मामले की जानकारी प्रान्तीय प्रशासक को बताए बिना सीधे सप्राट को बता सकते थे।
  - मण्डल प्रशासन –
    - इसका प्रमुख प्रादेशिक/प्रदेष्टा होता था, जो केन्द्रीय समाहर्ता के अधीन था, जिसका कार्य मण्डल के अधीन विभिन्न विभागों का निरीक्षण करना था।



- विषय (जिला) या आहार प्रशासन –
  - इसके प्रमुख को आहारपति कहा जाता था। मेगस्थनीज ने इसे 'एग्रोनोमोर्झ' (सङ्क निर्माण अधिकारी) कहा है।
- स्थानीय – 800 ग्राम –
  - स्थानिक – ग्रामों में राजस्व इकट्ठा करते थे, स्थानीय के अन्तर्गत दो द्रोणमुख, प्रत्येक में 400–400 ग्राम द्रोण मुख के नीचे खार्वटिक (200 ग्राम) खार्वटिक के नीचे संग्रहण (10 ग्राम), संग्रहण – ग्राम
- ग्राम प्रशासन –
  - मौर्य प्रशासन की सबसे छोटी ईकाई इसका अध्यक्ष ग्रामणी जो ग्रामवासियों द्वारा निर्वाचित होता था।
  - ग्रामणी के ग्राम शासन में सहायता हेतु ग्रामवृद्ध परिषद का गठन किया जाता था, जिसमें ग्राम के प्रमुख व्यक्ति होते थे।
  - ग्रामवृद्ध परिषद का कार्य, ग्राम में न्याय करना था।
  - राज्य सामान्यतः ग्राम प्रशासन में हस्तक्षेप नहीं करता था।
- नगर प्रशासन –
  - मेगस्थनीज की इण्डिका से पाटलिपुत्र के नगर प्रशासन की जानकारी प्राप्त होती है। मेगस्थनीज ने नगर के प्रमुख अधिकारी 'नगर' का 'एग्रोनोमोर्झ' कहा है। मेगस्थनीज के अनुसार पाटलिपुत्र नगर का प्रशासन कुल 06 समितियों के द्वारा संचालित होता था। प्रत्येक समिति में 05 सदस्य होते थे। मेगस्थनीज के अनुसार नगरीय प्रशासन हेतु उत्तरदायी 06 समितियां निम्नलिखित थीं –
    1. शिल्प कला समिति
    2. विदेश समिति
    3. जनसंख्या समिति
    4. उद्योग व्यापार समिति
    5. वस्तु निरीक्षक समिति
    6. कर निरीक्षक समिति
- गुप्तचर व्यवस्था –
  - मौर्य कालीन प्रशासन में गुप्तचरों का महत्वपूर्ण स्थान था। अर्थशास्त्र में गुप्तचरों को 'गूढ़पुरुष' तथा गुप्तचर विभाग के प्रमुख को 'सर्पमहामात्य' कहा गया। अर्थशास्त्र में दो प्रकार के गुप्तचरों का वर्णन मिलता है –
    1. संस्था – स्थायी गुप्तचर
    2. संचरा – भ्रमणशील गुप्तचर
  - मौर्य काल में कुछ ऐसे गुप्तचर भी होते थे, जो अन्य देशों में नौकरी कर लेते थे और सूचनाएं भेजते थे, उन्हें 'उभयवेतन' कहा जाता था।
- न्याय प्रशासन –
  - मौर्य काल में सर्वोच्च न्यायालय राजा का न्यायालय था, जबकि सबसे छोटा न्यायालय ग्राम न्यायालय था। ग्राम न्यायालय में 'ग्रामणी' ग्राम के वृद्धजनों के साथ मिलकर न्याय करता था। मौर्य काल में कठोर दण्ड व्यवस्था थी। मेगस्थनीज के अनुसार बिक्री कर न देने वालों को मृत्युदण्ड दिया जाता था। हालांकि मृत्युदण्ड से पूर्व 03 दिन की मोहलत दी जाती थी। कौटिल्य के अनुसार मौर्य काल में मुख्यतः 02 प्रकार के न्यायालय थे –
    1. धर्मस्थीय (दीवानी) न्यायालय – इसके न्यायाधीश को 'धर्मस्थ' या 'व्यवहारिक' कहा जाता था।
    2. कण्टकशोधन (फौजदारी) न्यायालय – इसके न्यायाधीश को 'प्रदेष्टा' कहा जाता था।
- सैन्य प्रशासन –
  - प्लूटार्क तथा जस्टिन के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य ने 06 लाख सेना की सहायता से सम्पूर्ण जम्बू दीप (भारत) को रौद्र डाला था। जस्टिन ने चन्द्रगुप्त मौर्य की सेना को 'डाकुओं का गिरोह' कहा। मेगस्थनीज के अनुसार मौर्य कालीन सैन्य प्रशासन 06 समितियां के माध्यम से संचालित होता था। प्रत्येक समिति में 05 सदस्य होते थे। मेगस्थनीज द्वारा उल्लेखित सैन्य प्रशासन हेतु उत्तरदायी 06 समितियां निम्नलिखित थीं –
    1. प्रथम समिति – जल सेना की व्यवस्था करती थी।
    2. दूसरी समिति – सामग्री, यातायात एवं रसद की व्यवस्था करती थी।



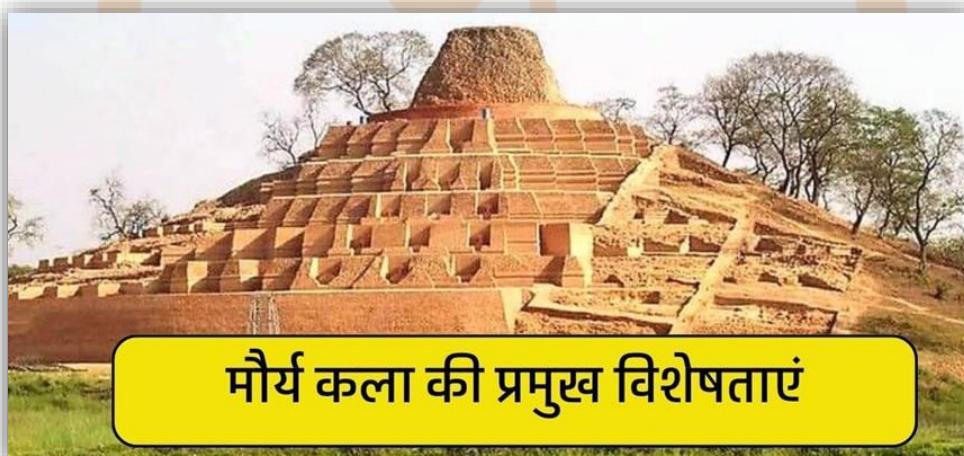


3. तीसरी समिति – पैदल सैनिकों की व्यवस्था करती थी।
  4. चौथी समिति – अश्वारोही सेना की व्यवस्था करती थी।
  5. पांचवीं समिति – गज सेना की व्यवस्था करती थी।
  6. छठी समिति – रथ सेना की व्यवस्था करती थी।
- मौर्य काल में 'सेनापति' युद्ध विभाग का प्रधान अधिकारी होता था, जिसे 48,000 पण वार्षिक वेतन मिलता था। मौर्य काल में युद्ध क्षेत्र में सेना का संचालन करने वाले अधिकारी को 'नायक' कहा जाता था। 'नवाध्यक्ष' नामक अधिकारी युद्ध पोतों के अतिरिक्त व्यापारिक पोतों का भी अध्यक्ष होता था। 'आयुधगाराध्यक्ष' नामक अधिकारी अस्त्र-शस्त्र, उनके रथ-रथाव एवं सुरक्षा का प्रबन्ध करता था।

### निष्कर्ष एवं महत्व

इस प्रकार हम देखते हैं कि मौर्य कालीन राजनीतिक या प्रशासनिक व्यवस्था व्यापक नौकरशाही एवं केन्द्रीकृत पद्धति पर आधारित थी। इसमें यद्यपि सामान्य जनता के शोषण की संभावनाएं निहित थीं, किन्तु शासक वर्ग का झुकाव लोकल्याणकारी उपायों के माध्यम से शासन करना था।

### मौर्य कालीन कला



### स्तम्भ अभिलेख –

मौर्य कला के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण अशोक द्वारा निर्मित स्तम्भ अभिलेख हैं। मौर्य कालीन स्तम्भ मथुरा तथा चुनार की पहाड़ियों से लाल बलुआ पत्थर लाकर बनाए गए थे। ये स्तम्भ एकाशम पत्थरों से बने थे, जिन पर चमकदार पॉलिश की गई थी। स्तम्भों का शैफट शुंडाकार है। स्तम्भों के शीर्ष पर पशुओं की आकृति बनाई जाती थी। उदाहरणार्थ—

#### स्तम्भ

संकिशा (उ.प्र.)

रामपुरवा (बिहार)

लौरिया नन्दनगढ़ (बिहार), रामपुरवा (बिहार) तथा सांची (म.प्र.)

सारनाथ (उ.प्र.)

पशु आकृति

हाथी

वृषभ

सिंह

चार सिंह

सारनाथ स्तम्भ अभिलेख के शीर्ष पर 04 सिंह बने हुए हैं तथा नीचे की ओर 04 पशु – बैल, घोड़ा, हाथी दौड़ती हुई मुद्रा में दर्शाएं गए हैं। बीच-बीच में 04 चक्र बने हुए हैं। प्रत्येक चक्र में 24 आरे (रेखायें) हैं। सारनाथ के स्तम्भ अभिलेख के शीर्ष पर 32 आरे वाला एक चक्र बना है, जो खण्डित अवस्था में है। इसे 'धर्मचक्रप्रवर्तन' का प्रतीक माना जाता है।

### ❖ स्तूप –

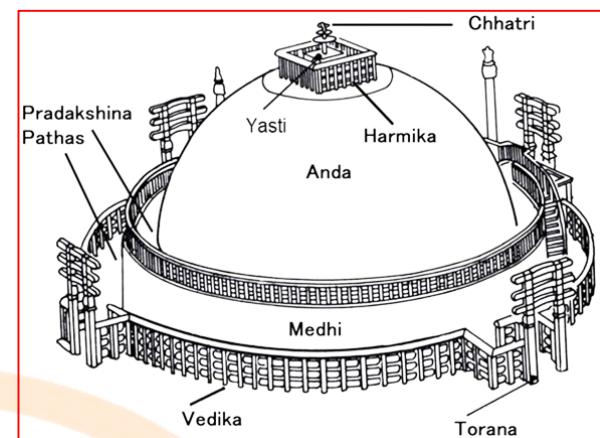
स्तूप का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है— ढेर / बौद्ध साहित्य में स्तूप शब्द का प्रयोग मृतदेह के भस्मावशेषों के ऊपर निर्मित समाधि के अर्थ में हुआ है।

स्तूप के निम्नलिखित महत्वपूर्ण भाग होते थे –

1. मेधि – स्तूप का आधार (चबूतरा) मेधि कहलाता था तथा उससे लगा हुआ प्रदक्षिणा पथ होता था।



2. अण्ड – स्तूपों का आकार अर्द्ध-गोलाकार या घण्टाकार होता है। इस संरचना को अण्ड कहा जाता है।
3. हर्मिका – स्तूप में सर्वाधिक पूज्यनीय भाग हर्मिका होती थी, जो स्तूप की चोटी पर स्थित होता है।
4. छत्र – हर्मिका पर धातु पात्र रखा जाता था तथा इसके ऊपर एक छत्र लगाया जाता था।
5. वेदिका – स्तूप को चारों ओर से पाषाण वेदिका से घेरा जाता था।
6. तोरण – स्तूप के चारों ओर निर्मित वेदिकाओं में लगभग 80 स्तम्भ एवं 4 तोरण द्वारा होते थे। प्रायः वेदिका एवं तोरण द्वारा की दीवारों में बुद्ध के जीवन की घटनाओं, जातक कथाओं, यक्ष, यक्षणी, वृक्ष, पुष्प, लता आदि की आकृतियों को उकेरा जाता था।



बौद्ध ग्रंथ दिव्यावदान के अनुसार अशोक ने 84,000 स्तूपों का निर्माण करवाया था, जिनमें से प्रमुख थे –

1. पिपरहवा स्तूप (सिद्धार्थ नगर, उ.प्र.) – यह सर्वाधिक प्राचीन स्तूप है।
2. साँची स्तूप (रायसेन, म.प्र.) – साँची (काकनादबोट या श्रीपर्वत) स्थित बौद्ध स्तूपों की खोज 1818 ई. में जनरल टायलर ने की थी। साँची से 03 स्तूप प्राप्त होते हैं –
  - i. स्तूप संख्या 01: यह स्तूप आकार में सबसे बड़ा है, इसीलिए इसे 'महास्तूप' भी कहा जाता है। इसमें भगवान बुद्ध के अवशेष रखे हुए हैं। महास्तूप का निर्माण अशोक के समय ईटों से किया गया। अशोक के समय महास्तूप की वेदिका लकड़ी की बनी हुई थी, जो शुंग काल में पत्थर की बना दी गई।
  - ii. स्तूप संख्या 02 : इसे 'काला स्तूप' भी कहा जाता है। इसमें अशोक कालीन धर्म प्रचारकों के अवशेष रखे हुए हैं।
  - iii. स्तूप संख्या 03: इसमें बुद्ध के दो शिष्यों सारिपुत्र तथा महामोदगलायन के धातु अवशेष रखे हुए हैं।
3. भरहुत स्तूप (सतना, म.प्र.) – इसकी खोज 1873 ई. में एलेकजेन्डर कनिंघम ने की थी भरहुत स्तूप की नींव अशोक ने रखी थी, किन्तु इसका पूर्णतः निर्माण पुष्पमित्र शुंग ने करवाया था।
4. धर्मराजिका स्तूप (सारनाथ तथा तक्षशिला) – इन स्तूपों का निर्माण अशोक ने करवाया था। सारनाथ स्तूप को 'धमेख स्तूप' भी कहा जाता है।
5. बोध गया स्तूप (बिहार) – इस स्तूप की नींव अशोक ने रखी थी, किन्तु इसका पूर्णतः निर्माण मौर्योत्तर काल में हुआ था।
6. नालन्दा स्तूप (बिहार) – इस स्तूप का निर्माण अशोक के द्वारा करवाया गया था।

### ❖ बौद्ध विहार

मौर्य काल में बौद्ध भिक्षुओं के निवास हेतु कई बौद्ध विहारों का भी निर्माण करवाया गया।

### ❖ चन्द्रगुप्त मौर्य का राजप्रसाद

चन्द्रगुप्त मौर्य के राजप्रसाद के अवशेष स्पूनर महोदय को बिहार में पाटलीपुत्र के समीप बुलंदीबाग एवं कुम्रहार में की गई खुदाई से प्राप्त हुए हैं। यह राजप्रसाद पूर्णतः लकड़ी से निर्मित था। गुप्त काल में भारत आए चीनी यात्री फाह्यान ने लिखा है कि पाटलीपुत्र का राजप्रसाद देवताओं द्वारा निर्मित था।

## मौर्य साम्राज्य का पतन

चन्द्रगुप्त मौर्य एवं अशोक ने जिस विस्तृत साम्राज्य की स्थापना की थी, उस साम्राज्य का अशोक की मृत्यु के पश्चात् केवल 52 वर्षों में पतन हो गया। मौर्य साम्राज्य के पतन हेतु निम्नलिखित कारण उत्तरदायी थे –

1. ब्राह्मणों की प्रतिक्रिया – हरप्रसाद शास्त्री के अनुसार अशोक द्वारा बौद्ध मतों पर आधारित धर्म-नीति को लागू करने से ब्राह्मणों के हित प्रभावित हुए। अशोक की धर्म-नीति में यज्ञों एवं पशु बलि को हतोत्साहित किया गया था, जबकि इन्हीं के माध्यम से ही ब्राह्मणों को धन एवं सम्मान प्राप्त होता था। इसकी प्रतिक्रियास्वरूप उपजे ब्राह्मणवादी असंतोष में मौर्य वंश के अंतिम शासक वृहद्रथ की हत्या उसके ब्राह्मण सैनिक पुष्पमित्र शुंग द्वारा कर दी गई थी। इस प्रकार वृहद्रथ की हत्या के साथ मौर्य साम्राज्य का अंत हो गया।
2. अशोक की शांतिवादी एवं अहिंसावादी नीति – हेमचन्द्र रायचौधरी के अनुसार अशोक ने कलिंग युद्ध के बाद भेरीघोष (युद्ध विजय) की नीति का त्याग कर धर्मघोष (धर्म विजय) की नीति अपनाई थी। साथ ही अशोक ने अहिंसा पर अत्यधिक बल देते हुए पशुहत्या पर भी प्रतिबंध लगा दिया था। अशोक की इस शांतिवादी एवं अहिंसावादी नीति के कारण मौर्य राज्य की सैनिक शक्ति कमज़ोर होती गई। इसके परिणामस्वरूप मौर्य साम्राज्य, आंतरिक व बाह्य खतरों का सफलतापूर्वक सम्मना नहीं कर सका तथा उसका पतन हो गया।



3. वित्तीय संकट – डी. डी. कौसाम्बी के अनुसार विस्तृत नौकरशाही एवं लोक कल्याणकारी कार्यों की वजह से मौर्य साम्राज्य का राजकीय खजाना खाली होता गया। निरन्तर कमजोर होती आर्थिक स्थिति के कारण परवर्ती मौर्य शासकों के द्वारा विस्तृत साम्राज्य पर प्रभावी नियंत्रण बनाए रखना मुश्किल हो गया था, परिणामस्वरूप मौर्य साम्राज्य का पतन हो गया।
4. अतिकेन्द्रीकृत शासन व्यवस्था – रोमिला थापर के अनुसार मौर्य प्रशासन का स्वरूप अत्यधिक केन्द्रीकृत था। अतिकेन्द्रीकृत व्यवस्था में कर्मचारियों की निष्ठा राज्य के प्रति नहीं, बल्कि राजा के प्रति होती थी। साथ ही अतिकेन्द्रीकृत व्यवस्था के संचालन हेतु राजा का योग्य होना आवश्यक था, परन्तु अशोक के उत्तराधिकारी दुर्बल एवं अयोग्य थे, जो न तो अतिकेन्द्रीकृत प्रशासनिक व्यवस्था का संचालन कर सके और न ही साम्राज्य के विघटन की प्रक्रिया को रोक सके। परिणामस्वरूप मौर्य साम्राज्य का पतन हो गया।
5. अयोग्य उत्तराधिकारी – कठिनाई इतिहासकारों के अनुसार मौर्य साम्राज्य के पतन हेतु उत्तरदायी प्रमुख कारण कमजोर एवं अयोग्य उत्तराधिकारी थे, जो मौर्य साम्राज्य की एकता को नहीं बनाए रख सके।
6. उत्तर-पश्चिमी सीमा की उपेक्षा – मौर्य वंश के शासकों ने भारत की उत्तर-पश्चिम सीमा की सुरक्षा हेतु कोई प्रबंध नहीं किया था। इसके विपरीत इसी समय चीन के राजा शीह हुआंग ती ने शकों (सीथियों) के हमले से अपने साम्राज्य की सुरक्षा हेतु 210 ई. पू. में चीन की महादीवार बनवाई थी।
7. सीमावर्ती क्षेत्रों का विकास – मौर्य काल में लोहे के ज्ञान एवं वाणिज्य-व्यापार के विकास के परिणामस्वरूप मौर्य साम्राज्य में शामिल दूरस्थ क्षेत्रों – मध्य-भारत, दक्कन, कलिंग आदि की सैनिक एवं आर्थिक शक्ति में बढ़ोत्तरी हुई थी। इन दूरस्थ राज्यों ने परवर्ती मौर्य शासकों की कमजोरी का लाभ उठाते हुए अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित कर ली थी। इसके प्रमाण के रूप में यह देखा जा सकता है कि मौर्य साम्राज्य के पतन के उपरान्त मध्य-भारत, दक्कन एवं कलिंग में क्रमशः शुंग व कण्व, सातवाहन एवं चैदि वंश के राज्यों की स्थापना हुई थी।

निष्कर्ष – मौर्य साम्राज्य के पतन हेतु ऊपर उल्लेखित समस्त कारण सम्मिलित रूप से उत्तरदायी थे। वस्तुतः अशोक की धर्म नीति, शांतिवादी नीति, लोककल्याणकारी नीति एवं विस्तृत व केन्द्रीकृत नौकरशाही व्यवस्था से उपर्युक्त आर्थिक संकट के कारण मौर्य वंश के शासकों की स्थिति कमजोर हो गई थी। इसी दौरान उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत से विदेशी आक्रमण प्रारंभ हुए, जिनका सामना परवर्ती कमजोर एवं अयोग्य मौर्य शासक नहीं कर सके। परिणामस्वरूप मौर्य साम्राज्य का पतन हो गया।

## मौर्योत्तर काल



### मौर्योत्तर काल

#### देशी राज्य

1. शुंग वंश
2. कण्व वंश
3. आन्ध्र सातवाहन वंश
4. वाकाटक
5. कलिंग नरेश खारवेल

#### विदेशी राज्य

1. यवन
2. पहलव
3. शक
4. कुषाण



## शुंग वंश

- जानकारी के स्रोत –

साहित्यिक स्रोत	अभिलेख
1. महाभाष्य	1. हाथी गुफा अभिलेख
2. मत्स्य पुराण	2. धनदेव का अयोध्या अभिलेख – दो अश्वमेध यज्ञ
3. मालविकाग्निमित्रम्	
4. हर्षचरित	
5. दिव्यावदान	
6. तारानाथ – बौद्ध धर्म का इतिहास	



- शुंगों की उत्पत्ति संबंधी मत
  - पं. हरप्रसाद शास्त्री – पारसीक (मित्र–सूर्य के उपासक)
  - हर्ष चरित – अनार्य
  - पाणिनी – भारद्वाज गोत्र का ब्राह्मण
  - मालविकाग्निमित्र – बैम्बिक कुल
  - मूल निवास – उज्जैन
  - द्वितीय राजधानी विदिशा को बनाया

### ❖ पुष्यमित्रशुंग –

- यूनानियों से संघर्ष
  - गार्गी संहिता – यवन आक्रमणकारी डेमेट्रियस
  - मालविकाग्निमित्रम् – यवन आक्रमणकारी मिनाण्डर VS वसुमित्र
- विदर्भ से युद्ध – यज्ञसेन की पराजय तथा विदर्भ का बटवारा यज्ञसेन एवं माधवसेन के मध्य हुआ
  - इसी के शासनकाल में पतंजलि ने अष्टाध्यायी पर एक टीका महाभाष्य लिखा।
  - मनुस्मृति की रचना भी शुंगकाल में हुई।
  - भरहुत स्तूप का निर्माण और साँची स्तूप की वेदिकाएँ (रेलिंग) बनवाई

उत्तराधिकारी –

अग्निमित्र – मालविकाग्निमित्रम् – कालिदास



- नवाँ शासक भागभद्र के शासनकाल में तक्षशिला के यूनानी शासक एन्टियालकीड़स ने अपने राजदूत हेलियोडोरस को भेजा, उसने भागवत धर्म ग्रहण कर लिया तथा बेसनगर में गरुड़ स्तम्भ की स्थापना करवाई।
- अंतिम शासक देवभूति जिसकी हत्या उसके अमात्य वासुदेव कण्व ने कर दी।





## कण्व राजवंश

- संस्थापक – वासुदेव कण्व
- राजधानी – पाटलीपुत्र
- अन्य शासक –
  - ✓ भूमिमित्र कण्व
  - ✓ नारायण कण्व
- अंतिम शासक – सुशर्मा – हत्या – सिमुक



## सातवाहन वंश

- राजधानी – प्रतिष्ठान
- पुराणों में सातवाहनों को आंध्र भृत्य कहा गया है।
- संस्थापक – सिमुक

↓  
 कृष्ण  
 ↓  
 शातकर्णी – I

### ❖ शातकर्णी – I

- दविखनाथपथपति, अप्रतिहत चक्र –
- उपाधि – एल्डरसेरागोनस – पेरिल्स ऑफ इरिंग्रियन सी
- पत्नी – नागनिका जिसका अभिलेख नानाघाट
- इसने कलिंग नरेश खारवेल को पराजित किया।
- इसने दो अश्वमेघ एवं एक राजसूय यज्ञ करवाया।



### ❖ हाल – 17वाँ राजा

- रचना – गाथा सप्तशती
- इसके दरबार में वृहत्कथा का रचयिता गुणाढय रहता था
- वृहत्कथा पर आधारित रचनाएँ – वृहत्कथा मंजरी (क्षेमेन्द्र), कथासरितसागर (सोमदेव)
- इसके दरबार में कातंत्र व्याकरणम् के लेखक सर्ववर्मन निवास करते थे।
- इसके सेनापति विजयानंद ने लंका पर विजय की तथा लंका की राजकुमारी लीलावती से हाल का विवाह हुआ।

### ❖ गौतमीपुत्र शातकर्णी – 23 वाँ

- माता – गौतमी बलश्री – नासिक अभिलेख
- उपाधियाँ –
  - वेणकटक स्वामी
  - खतियदपमानमदनस
  - शक–यवन–पहलव–किसूदनस
  - क्षहरात निसूदरस
  - एकमात्र ब्राह्मण एवं अद्वितीय ब्राह्मण
  - वेदों का आश्रयदाता
  - वर्णव्यवस्था का संरक्षक



- इसने क्षहरात वंश के शासक नेहपान को पराजित किया जिसकी जानकारी जोगलथम्पी से प्राप्त 8000 चाँदी के सिक्कों से होती है, जिसमें एक तरफ नेहपान तथा दूसरी तरफ गौतमीपुत्र शातकर्णी खुदा हुआ है।
- ❖ **विशिष्टी पुत्र पुलुमावी** – 24 वाँ
- उपाधियाँ –
  - दक्षिणापथेश्वर
  - नवनगर स्वामी
  - सिरो पोलोमैओस – टॉलमी द्वारा
- विवाह शक राजा रुद्रदामन की पुत्री से हुआ था, इसके पश्चात भी पुलुमावी तथा रुद्रदामन में युद्ध हुआ, जिसमें पुलुमावी की पराजय हुई।
- इसने अमरावती बौद्ध स्तूप का संवर्द्धन करवाया था।
- ❖ **यज्ञ श्री शातकर्णी** – 27 वाँ
- सातवाहन वंश का अंतिम महान शासक।
- जहाज वाली मुद्राएँ चलवायी
- सातवाहन वंश का अंतिम शासक पुलुमावी-III था।
- ✓ बन्दरगांह –
  1. बेरीगाजा – भड़ौच
  2. सोपारा – महाराष्ट्र
  3. कल्याण – महाराष्ट्र
- राजकीय भाषा – प्राकृत
- सातवाहनों ने सर्वप्रथम भूमि दान देने की परम्परा प्रारम्भ की।
- सातवाहनों ने पोटीन नामक सिक्के चलवाए।
- सातवाहन शासकों ने भारत में सर्वप्रथम लेड के सिक्कों को चलवाया

### कलिंग का चेदि वंश

- संस्थापक – महामेघवाहन
- ❖ **खारवेल** – इसने उत्तरापथ पर आक्रमण किया तथा मगधराज वृहस्पतिमित्र को पराजित किया, तथा जिनसेन की प्रतिभा पुनः प्राप्त की।
- खारवेल की सेना ने दक्षिण भारत का अभियान करते समय पिथुंड नगर को ध्वस्त किया तथा चोल, चेर एवं पांड्य के संघ को पराजित किया।



विदेशी  
उत्तराधिकारी

### विदेशी उत्तराधिकारी

हिन्द-यवन / इंडो-ग्रीक / इंडो-बैविट्रियन

1. **यूथिडेमस वंश** – राजधानी – साकल (स्यालकोट)

#### ❖ डिमेट्रियस –

- सिकन्दर के बाद पहला शासक जिसने भारतीय सीमा में प्रवेश किया।





- इसने भारतीयों के राजा की उपाधि धारण कर यूनानी तथा खरोष्ठी लिपि में सिक्के चलवाएं।

#### ❖ मिनांडर —

- इसने अपने सिक्कों पर धर्म-चक्र के चिन्ह अंकित करवाये जिससे सावित होता है कि वह एक धर्मनिष्ठ बौद्ध था।
- मिनांडर तथा नागसेन के मध्य संवाद मिलिन्दपन्हों में संकलित है।
- इसके भस्मावशेषों के ऊपर स्तूप बनवाये गये।

## 2. युक्रेटाइड्स वंश —

- स्थापना — युक्रेटाइड्स
- राजधानी — तक्षशिला
- युक्रेटाइड्स की हत्या उसके पुत्र हेलियोकलीज ने कर दी और शासक बन बैठा।
- हेलियोकलीज के बाद उसका पुत्र एण्टियालकीड्स शासक बना।
- एण्टियालकीड्स ने शुंग शासक भागभद्र के दरबार में अपना राजदूत भेजा, जिसने गरुड़ स्थाम्भ की स्थापना की।
- इस वंश का अंतिम शासक हर्मियस हुआ इसके बाद पार्थियनों ने इसके राज्य पर अधिकार कर लिया।

### शक / सीथियन

- भारत में प्रथम ज्ञात शक शासक मॉएस या मोगा था
- कालांतर में शक दो शाखाओं में उत्तरी क्षत्रप (तक्षशिला तथा मथुरा) तथा पश्चिमी क्षत्रप (नासिक तथा उज्जैन के शक) में विभाजित हो गया

### नासिक के क्षत्रप

#### क्षहरात वंश —

- संस्थापक — भूमक
- भूमक के बाद नहपान शासक बना, जिसका युद्ध सातवाहन शासक गौतमी शातकर्णी से हुआ।

### उज्जैन के क्षत्रप

#### कार्दमक वंश —

- संस्थापक — चष्टन
- कहा जाता है कि उज्जैन के एक राजा ने शकों को हराया था। वह अपने को विक्रमादित्य कहता था। शकों पर अपनी विजय के उपलक्ष्य में उसने 58 ई.पू. में विक्रम संवत् चलाया था।

#### ❖ रुद्रदामन (130—152 ई) —

- इसने जूनागढ़ अभिलेख का निर्माण करवाया।
- इसने वशिष्ठी पुत्र पुलमावी को हराया।
- जूनागढ़ अभिलेख में इसे भ्रष्ट-राज-प्रतिष्ठापक कहा गया।
- इसने सुदर्शनझील के पुनर्निर्माण में भारी धन व्यय किया।
- इसके शासनकाल में संस्कृत का महत्व बढ़ा।

### पहलव या पार्थियन

- प्रथम ज्ञात शासक — माउस
- वास्तविक संस्थापक — मिथ्रेडेट्स-II था
- इनका सर्वप्रमुख राजा गोंदोफर्निस था, इसी के शासन काल में प्रथम ईसाई धर्म प्रचारक सेंट थामस भारत आया, सेंट थामस की हत्या मद्रास के समीप म्यालपुर में कर दी गई।
- इसके अभिलेख तख्तेबाही में इसे गुदण्हर कहा है।

## कुषाण

- कुषाण यू-ची कबीले के कुई-शुंग शाखा से संबंधित थे।
- ❖ कुजुल कडफिसेस (कडफिसेस - I) –
- इसने अपनी सत्ता काबुल तथा कश्मीर में स्थापित की।
- इसके सिक्कों के एक तरफ यूनानी शासक हर्मियस का नाम यूनानी लिपि में तथा दूसरी कुजुल कडफिसेस का नाम खरोष्ठी लिपि में लिखा मिला।
- इसने सोने के सिक्के प्रसारित नहीं किए, ताँबे के सिक्के ही प्रसारित किए।
- इसने 'महाराजाधिराज' तथा 'धर्मधिदस' नामक उपाधि ली।

## ❖ विम कडफिसेस –

- इसने तक्षशिला एवं पंजाब को विजित किया।
- यह पहला कुषाण शासक था, जिसने सोने के सिक्के चलवाएँ।
- इसने राजाधिराज तथा महाराज एवं महेश्वर की उपाधि ली।
- इसके सिक्कों पर शिव, नंदी, त्रिशूल आदि के चित्र उत्कीर्ण हैं।
- इसके समय रोम तथा चीन से व्यापारिक संबंध थे।

## ❖ कनिष्ठ –

- रबातक अभिलेख
- इसने राज्या रोहण होते समय 78 ई. में शक संबंत चलाया।
- रबातक अभिलेख में इसे मुक्तिदाता, धर्मात्मा, न्यायप्रिय, अधिनायक, पूज्यनीय देवता, राजाओं का राजा एवं देवपुत्र कहा गया है।

## &gt; कनिष्ठ की विजय –

- पूर्वी भारत की विजय – इस अभियान के तहत कनिष्ठ ने पाटलिपुत्र पर आक्रमण कर विजय प्राप्त की एवं वह पाटलिपुत्र से अश्वघोष बुद्ध का भिक्षापत्र एवं एक अद्भुत मुर्गा अपने साथ ले आया।
- चीन से युद्ध –  
प्रथम युद्ध – कनिष्ठ-पराजित, पान-चाओ – विजय  
द्वितीय युद्ध – कनिष्ठ – विजय, पान-यांग – पराजित
- कश्मीर विजय – कश्मीर को विजित कर कनिष्ठपुर नामक शहर बसाया।
- मालवा विजय – उज्जैन के क्षत्रियों को हराया।
- इसकी दो राजधानी पुरुषपुर तथा मथुरा थी।
- इसने देवकुल प्रथा प्रारम्भ की जिसमें इसने विम कडफिसेस तथा अपनी आदमकद मूर्तिया बनवायी, इन मूर्तियों को रोमन चोला, टोपा तथा नुकीले जूते पहने हुए दिखाया गया है।
- इसके शासनकाल में चौथी बौद्ध संगीति आयोजित हुई।
- पहला भारतीय शासक जिसने चीन के रेशम मार्ग पर नियंत्रण स्थापित किया।

## &gt; कनिष्ठ के दरबार के विद्वान –

- अश्वघोष – चतुर्थ बौद्ध संगीति के उपाध्यक्ष रचनाएँ –
  - ✓ बुद्ध चरित्र – बौद्धों की रामायण
  - ✓ सारिपुत्र प्रकरण
  - ✓ सौंदरानन्द
- वसुमित्र –  
रचनाएँ –
  - ✓ महाविभाष सूत्र – बौद्ध धर्म का विश्वकोष
  - ✓ चतुर्थ बौद्ध संगीति का अध्यक्ष
- चरक – राजवैद्य, रचना – चरकसंहिता, प्रज्ञावारमितासूत्र

## कनिष्ठ





- संघरक्ष – यह कनिष्ठ का राजपुरोहित था।
- पाश्वर्व – बौद्ध भिक्षु
- नागार्जुन – भारत का आइन्सटीन।
  - ✓ रचना – माध्यमिका सूत्र – सापेक्षता का सिद्धांत
  - ✓ शून्यवाद के प्रवर्तक।
- कनिष्ठ के शासनकाल में गांधार कला व मथुरा कला शैलियों का विकास हुआ।
- मौर्योत्तर काल के अरिकमेडू से रोमन बस्तियों के साक्ष्य मिले हैं, जहां से रोमन सप्राट औगस्टस के सिक्के मिले।

#### ➤ कनिष्ठ के उत्तराधिकारी

वासिष्ठ – हुविष्ठ – वासुदेव-II (अंतिम शासक)

- कनिष्ठ –
- ✓ कश्मीर – कनिष्ठपुर
- ✓ तक्षशिला – सिरकप
- कनिष्ठ – पुरुषपुर – 400 फीट ऊँचा (13 मंजिल) टावर बनाया।
- पुरुषपुर में एक विशाल संघाराम निर्मित करवाया जिसे कनिष्ठ चैत्य भी कहा जाता है। इसका निर्माण यवन वास्तुकार अगिलस द्वारा किया।
- मथुरा – देवकुल

#### ➤ राजनीतिक जीवन –

मौर्योत्तर काल में भारत के विभिन्न क्षेत्रों में कई विदेशी एवं देशी राज्यों की स्थापना हुई थी। इस काल में प्रायः प्रशासन का स्वरूप राजतंत्रात्मक था, जिसमें राजा ही सत्ता का प्रधान होता था, किन्तु प्रशासन के विभिन्न स्तरों में अलग-अलग राज्यों के अन्तर्गत प्रशासन के स्वरूप में व्यापक अंतर भी दिखाई देता है। फिर भी इस काल के राजनीतिक क्षेत्र में हुए कुछ नवीन परिवर्तनों को निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत देखा जा सकता है –

- विकेन्द्रीकृत राजनीतिक व्यवस्था –  
इस काल की राजनीतिक व्यवस्था का स्वरूप विकेन्द्रीकृत था। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में कई विदेशी एवं देशी राजाओं ने अपने-अपने राज्य स्थापित कर लिये थे। विदेशी राज्यों के अन्तर्गत इण्डोग्रीक शासकों ने साकल एवं तक्षशिला में शक शासकों ने तक्षशिला, मथुरा, नासिक एवं उज्जैन में पहलव शासकों ने तथा कुषाण शासकों ने पेशावर एवं मथुरा में अपने राज्य स्थापित किए थे। वहीं देशी राज्यों में शुंग व कण्व वंश के शासकों ने पाटलिपुत्र में तथा सातवाहन व वाकाटक वंश के शासकों ने महाराष्ट्र में अपने राज्य की स्थापना की थी।
- राजत्व का दैवीकरण –  
इस काल में विकेन्द्रीकरण की प्रवृत्ति को नियंत्रित करने हेतु अर्थात् प्रजा तथा अधिनस्थ शासकों पर अपना प्रभाव बनाए रखने हेतु राजा के पद का दैवीकरण किया गया। सातवाहन शासकों ने अपनी तुलना राम, भीम, केशव, अर्जुन इत्यादि देवताओं से की थी, जबकि कुषाण शासकों ने चीनी परंपरा के अनुसार 'देवपुत्र' की उपाधि धारण की थी। यहाँ तक कि कुषाण राज्य में रोमन परंपरा के समान मृत राजाओं की मूर्तियां देवकुल में स्थापित कर उनकी पूजा की जाती थी।

#### ● द्वैध शासन प्रणाली –

इस काल में कुषाण एवं शक शासकों के अन्तर्गत हमें द्वैध शासन प्रणाली के साक्ष्य भी प्राप्त होते हैं। इस पद्धति के अन्तर्गत संयुक्त शासन व्यवस्था को अपनाया गया था, जिसमें राजा के साथ-साथ प्रायः युवराज को भी बराबर का सहभागी माना जाता था।

#### ● क्षत्रप प्रणाली –

मौर्योत्तर काल में कुषाण एवं शक शासकों के द्वारा क्षत्रप प्रणाली को अपनाया गया था। इस प्रणाली के अन्तर्गत प्रांतों में क्षत्रपों (गर्वनरों) की नियुक्ति की जाती थी। प्रायः क्षत्रप के पद पर किसी विदेशी व्यक्ति को ही नियुक्त किया जाता था।

#### ● सैन्य शासन प्रणाली





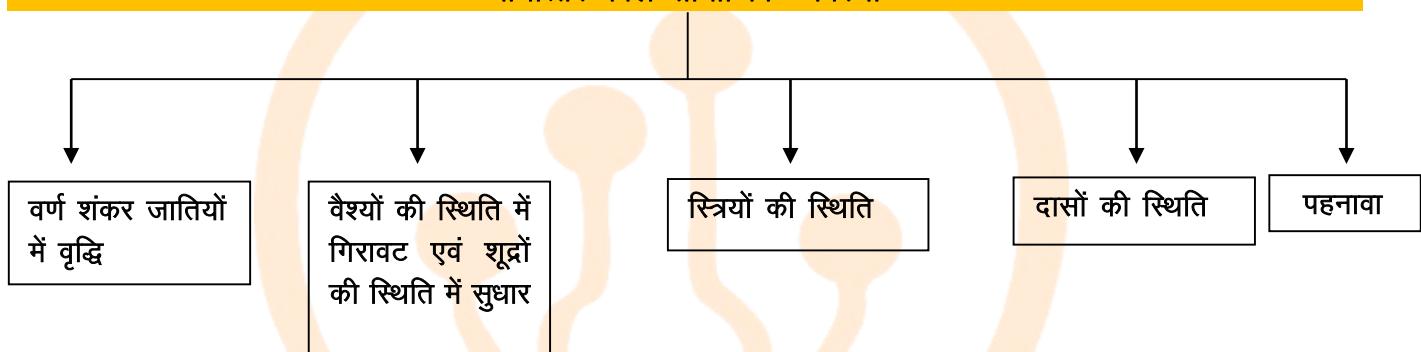
इस काल में सातवाहन शासकों के द्वारा प्रान्तों में सैन्य शासन प्रणाली स्थापित की गई। वस्तुतः सातवाहन राजाओं के द्वारा प्रारंभ की गई भूमि अनुदान पद्धति से दूरस्थ क्षेत्रों में भी केन्द्रीय सत्ता स्थापित हुई। चूंकि दूरस्थ क्षेत्रों पर भी प्रभावी नियंत्रण बनाए रखना था, यही कारण है कि सातवाहन शासकों ने प्रान्तों में सेनापति (गौलिमिक) को ही शासनाध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया।

#### • मातृसत्तात्मक प्रभाव

मौर्योत्तर काल में सातवाहन शासकों के प्रशासन में मातृसत्तात्मक प्रभाव दिखाई देता है। सातवाहन राजा अपने नाम के साथ अपनी माता का नाम भी जोड़ते थे, जैसे गौतमीपुत्र शातकर्णी, वशिष्ठीपुत्र पुलुमावी आदि उसी प्रकार वाकाटक प्रशासन में रानियों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती थी। उदाहरणार्थ— वाकाटक नरेश रुद्रसेन द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् उसकी पत्नी प्रभावती गुप्त ने राज्य का संचालन किया था।

इस प्रकार मौर्योत्तर काल के राजनीतिक क्षेत्र में विभिन्न राजवंशों के अन्तर्गत कई नवीन परिवर्तन हुए तथा उनमें से परवर्ती काल के राजनीतिक जीवन की भी अनिवार्य विशेषताएं बन गई।

#### मौर्योत्तर काल सामाजिक व्यवस्था



#### 1. वर्ण शंकर जनजातियों की संख्या में वृद्धि –

- बौद्ध युग में जहां वर्णशंकरों की संख्या 12 थी, वहीं मनु संहिता में इसकी संख्या बढ़कर 61 हो गई।
- वर्णशंकर जातियों की संख्या में वृद्धि के मुख्यतः दो कारण थे। प्रथम इस काल में जंगलों आदि की भूमि को भी दान में दी गयी तथा विदेशी आक्रमणकारी ने भी आक्रमण किये।
- जिससे दूरस्थ क्षेत्रों के निवासियों को भी जाति व्यवस्था में शमिल किया गया तथा विदेशी आक्रमणकारियों को भी बहुत दिनों तक मलेच्छ कहकर उनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती थी, अतः इन्हें निम्न स्तर के क्षत्रिय का दर्जा दिया गया।

#### 2. वैश्यों की स्थिति में गिरावट एवं शूद्रों की स्थिति में सुधार –

- इस समय राजनीतिक, विकेन्द्रीकरण के कारण आंतरिक व्यापार में कमी आई, जिससे वैश्यों की स्थिति में गिरावट आई।
- इस काल में भूमि अनुदान पद्धति के कारण भूमि के क्षेत्रों में कमी आई, चूंकि छोटे-छोटे भू-भागों पर अधिक दासों की आवश्यकता नहीं थी अतः शूद्रों को दासता से मुक्त कर दिया गया, अतः अब शूद्र व्यापारिक वाणिज्यिक कार्यों में संलग्न होने लगे जिससे उनकी स्थिति में सुधार आया।

#### 3. स्त्रियों की स्थिति –

- इस समाज में वर्ण की शुद्धता को बनाये रखने के लिए मनु ने एक जटिल सामाजिक व्यवस्था को स्थापित किया, जो वर्ण की शुद्धता को बनाये रखने के लिए आवश्यक था, महिलाओं को पुरुषों के अधीन किया जाये, परिणामस्वरूप विवाह पर पाबंदी लगा दी गयी, बाल विवाह को प्रोत्साहित किया गया, महिलाओं से संपत्ति का अधिकार छीन लिया गया तथा सती प्रथा आदि का समर्थन किया गया।
- हालांकि सातवाहनों तथा वाकाटकों के राज्य में महिलाओं को प्रशासन का अधिकार था।

#### 4. दासों की स्थिति –

- मनु स्मृति में 7 प्रकार के दासों का उल्लेख मिलता है। चूंकि इस काल में कृषि क्षेत्र में कमी आई, फलस्वरूप दासों को कृषि कार्यों से निकाला गया। दासों ने व्यापार तथा वाणिज्य में हिस्सा लिया, अतः दासों की आर्थिक स्थिति तो सुधारी किन्तु उन्हें समाज में अभी भी घृणित दृष्टि से देखा जाता था।

#### 5. वस्त्र –

- कुषाणों ने भारत में पगड़ी, कुर्ता पजामा आदि का प्रचलन किया तथा साथ ही में रोमन सम्राटों से प्रभावित होकर भारी लंबे कोट, टोपी, बूट आदि का प्रचलन प्रारंभ किया।



अतः मौर्योत्तर काल में वर्णव्यवस्था में जटिलता आयी, वर्णसंकर जातियों में वृद्धि हुई स्त्री तथा दासों की स्थिति में गिरावट आयी, इसलिए इस युग को इतिहासकारों ने अंध युग की संज्ञा दी।

## मौर्योत्तर कालीन अर्थव्यवस्था

### ✓ भूमिका –

मौर्योत्तर काल आर्थिक क्षेत्र में चतुर्दिक विकास का काल था, यह वही काल है जहां एक तरफ कृषि अर्थव्यवस्था का प्रसार हुआ वहीं दूसरी तरफ शिल्प, वाणिज्य-व्यापार एवं नगरीकरण की प्रक्रिया को गति मिली।

### ✓ कृषि –

इस काल में कृषि अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित करने वाले निम्नलिखित कारक थे, प्रथम भूमि अनुदान के माध्यम से दूरवर्ती क्षेत्रों में कृषि का प्रसार हुआ। जैसा कि हम जानते हैं कि अनुदान के रूप में प्रदत्त भूमि का एक बड़ा भाग गैर-आबाद भूमि का होता था, जो दान ग्रहण करने वाले के निजी प्रयासों से विकसित किया जाता था।

मनु संहिता में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि ब्राह्मणों को गैर आबाद भूमि को स्वीकार करना चाहिये।

दूसरा – इस काल में कृषि के विस्तार में निजी व्यक्ति की भूमिका पर भी विशेष बल दिया गया उदाहरण के लिए मनु कहता है कि भूमि उसकी होती है, जो उसके घास-भूसे को साफ कर आबाद करता है। इसी तरह की बातों के वृतांत मिलिन्दपन्हो से भी प्राप्त होते हैं।

तीसरा – स्वयं राज्य की ओर से भी सिंचाई के प्रोत्साहन के लिए कदम उठाया जाता था, उदाहरण के लिए रुद्रदामन ने सुदर्शन झील की मरम्मत कराई, फिर खारवेल ने भी महापदमनंद द्वारा बनवाई तिनसुलि, नामक नहर का जीर्णोद्धार कराया।

इसके अतिरिक्त मनु ने कृषकों के हितों की सुरक्षा के लिए भी राजा को विधि निर्माण का सुझाव दिया है, मनु कहता है राजा को कृषि उपकरण चुराने वाले, खेतों की मेढ़ तोड़ने वाले तथा नकली बीज बेचने वाले लोगों को दण्डित करने के लिए कानून बनाने चाहिए।

### ✓ शिल्प उद्योग –

मौर्योत्तर काल में शिल्प विकास की प्रक्रिया को भी प्रोत्साहन मिला, जहां दीर्घनिकाय में 24 प्रकार के शिल्पों का उल्लेख है, वहीं मौर्यकालीन ग्रंथ महावस्तु में 36 प्रकार के शिल्पों का विवरण मिलता है, किन्तु मौर्योत्तर कालीन ग्रंथ मिलिन्दपन्हो में 75 प्रकार के व्यवसायों का विवरण दिया गया है, जिनमें 60 स्पष्ट रूप में शिल्पों से जुड़े हुये थे।

- इस काल में अलग-अलग प्रकार के उद्योगों का उल्लेख मिलता है उदाहरण के लिए उज्जैन मनका बनाने के कार्य हेतु प्रसिद्ध था, मथुरा एक विशेष प्रकार के वस्त्र शाटक के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध था। उसी प्रकार दक्षिण में अरिकामेडू और उरैयूर वस्त्रों की रंगाई के लिए जाना जाता था।
- आंध्रप्रदेश का करीमनगर तथा नालकेण्डा लोहा व इस्पात के लिए प्रसिद्ध थे।
- मालवा में विदिशा हस्तिदंत उद्योग के लिए प्रसिद्ध था विदेशी यात्रियों ने भी भारत में विभिन्न प्रकार के उत्पादन केन्द्रों का उल्लेख किया है उदाहरणार्थ 'प्लिनी' भारत को रत्नों की एक मात्र जननी कहता है, उसी प्रकार पेरीप्लस नामक ग्रंथ में कोलची (कोरकई) को मोती उत्पादन का केन्द्र बताया गया है।

### ✓ वाणिज्य व्यापार –

- कृषि अर्थव्यवस्था के प्रसार के परिणामस्वरूप आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न वर्ग अस्तित्व में आया और इस वर्ग ने विलासिता संबंधी सामग्रियों की मांग बढ़ा दी।
- भारत इस काल में मुख्यतः पश्चिमी रोमन साम्राज्य, हान साम्राज्य (चीन) तथा दक्षिणी एशियाई देशों के साथ व्यापार करता था।
- इस काल में रेशम मार्ग पर कुषाणों का अधिकार हुआ साथ ही पहली सदी में मानसून की खोज हुई तो स्थल व्यापार की जगह सामुद्रिक व्यापार को विशेष प्रोत्साहन मिला।
- भारत से रोमन साम्राज्य को निर्यात होने वाली वस्तुओं में मुख्यतः मसाले, लौह उपकरण, सूती एवं रेशमी वस्त्र, कीमती द्रव्य तथा औषधि आदि शामिल थी।
- भारत चीन से आयातित वस्तुओं को ऊंचे दाम पर रोमन साम्राज्य को बेचता था।
- भारत रोम से चांदी, अरेटाइन, मृदभाण्ड, शराब, हथेरे वाला कलश आदि आयात करता था।
- व्यापार संतुलन सम्भवतः भारत के पक्ष में था, क्योंकि एक रोमन लेखन 'प्लिनी' ने रोम से निकास हो रहे कीमती धातु पर अपना दुख व्यक्त किया।



✓ यातायात संचार व्यवस्था

- सड़क मार्ग –
- इस काल में उत्तरापथ जो कि सोनारगांव से पेशावर तक जाता था, इसका विस्तार बैकिट्रया तक हो गया एवं रेशम मार्ग से जुड़ गया।
- दक्षिणापथ का भी विकास हो चुका था, अब वह उज्जैन को अमरावती से जोड़ता था।

■ प्रमुख बंदरगाह –

- 'पेरिप्लस ऑफ द एरीशियन सी' में कुल 24 बंदरगाहों का वर्णन है, जिनमें प्रमुख बंदरगाह थे –
- बेरीगाजा या भड़ौच (गुजरात) – पश्चिमी तट स्थित सबसे प्राचीन तथा सबसे बड़ा बंदरगाह था।
  - बारबेरिकम (सिंध)
  - सोपारा तथा कल्याण (महाराष्ट्र)
  - अरिकमेडू (पाण्डुचेरी) – जहाज निर्माण तथा रोमन बस्ती का साक्ष्य
  - कोरकई (तमिलनाडू) – मोतियों के लिए प्रसिद्ध
  - मुजरिस (केरल)

✓ श्रेणी व्यवस्था –

विभिन्न शिल्पियों ने अपनी—अपनी श्रेणियां गठित कर ली थीं। श्रेणियों के अपने नियम—कानून होते थे, जिसे 'श्रेणीधर्म' कहा जाता था।

- प्रत्येक श्रेणी के पास अपने सदस्यों पर न्यायिक अधिकार भी होता था, श्रेणी न्यायालय के प्रमुख को महाश्रेष्ठी कहते थे।
- इन श्रेणियों ने कालांतर में श्रेणी बल (सेना) रखने का अधिकार प्राप्त कर लिया है।
- श्रेणियों को मापतौल के पैमाने तथा वस्तओं की कीमतें तय करने का अधिकार था।
- प्रत्येक श्रेणी की अपनी पताका तथा मुहर होती थी।

✓ मुद्रा व्यवस्था –

मौर्योत्तर काल मुद्रा अर्थव्यवस्था के विकास की दृष्टि से भी प्रगति का काल माना जाता है, इस काल में इण्डो-ग्रीक ने सोने, चांदी एवं तांबे के तथा कुषाणों ने शुद्ध सोने के सर्वाधिक सिक्के चलाये, साथ ही सातवाहनों ने भी सीसे के पोटीन नामक सिक्के चलाये।

✓ नगरीकरण –

कृषि, शिल्प—उद्योग, वाणिज्य—व्यापार, मुद्रा अर्थव्यवस्था के विकास ने नगरीकरण की प्रक्रिया को बल प्रदान किया। इस काल के ग्रन्थों में कई नगरों का उल्लेख मिलता है— जिनमें तक्षशिला, साकल, पेशावर, मथुरा, पाटलिपुत्र, उज्जैन, अरिकामेडू, मुजरिस आदि प्रमुख थे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि मौर्योत्तर काल में अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति हुई। विदेशी व्यापारिक संबंधों में प्रगाढ़ता आई, परिणामस्वरूप विदेशी संबंध भी मजबूत हुये।

### मौर्योत्तर कालीन धार्मिक जीवन

मौर्योत्तर काल में धार्मिक क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए, जिन्हे निम्नलिखित बिन्दु बिन्दुओं के अन्तर्गत देखा जा सकता है।

✓ विभिन्न धर्मों के स्वरूप में परिवर्तन

➤ ब्राह्मण धर्म के स्वरूप में परिवर्तन –

1. इस काल में भूमिदान अनुदान पद्धति से दूरस्थ जनजाति प्रदेश भी राज्य के प्रभावी नियंत्रण में आ गए। इससे इन जनजाति क्षेत्रों की जनता भी समाज में समिलित हुई, परिणामस्वरूप वैदिक धर्म में जनजाति लोगों में प्रचलित देवी—देवताओं को शामिल कर लिया गया— जैसे— शिव पूजा, गणेश पूजा, वृक्ष पूजा, नाग पूजा आदि।
2. मौर्योत्तर काल में वैदिक धर्म में अवतार वाद की अवधारणा का विकास हुआ। तत्कालीन साहित्य में विष्णु के 10 एवं शिव के 28 अवतारों का उल्लेख मिलता है। इस काल में व्याप्त असंतोष को अवतारवाद के माध्यम से दूर करने का प्रयास



किया गया, यही कारण है कि विष्णु या शिव के विभिन्न अवतारों को भिन्न-भिन्न वर्णों का माना गया है – उदाहरणार्थ – वामन अवतार (ब्राह्मण), राम अवतार (क्षत्रिय), कृष्ण अवतार (निम्न कुल के यादव वंश) आदि।

3. मौर्योत्तर काल में गैर आर्य पंथ में यज्ञ का महत्व कम हुआ तथा भक्ति की अवधारणा को विशेष बल मिला। मौर्योत्तर कालीन ग्रंथ श्वेताश्वर उपनिषद् में शिव भक्ति का प्रारम्भिक साक्ष्य मिलता है।
4. मौर्योत्तर काल में ही कुषाण राजवंश के अन्तर्गत मूर्ति पूजा प्रचलित हुई, साथ ही ब्राह्मण धर्म में अध्यात्मिकता की जगह भौतिकवादी स्वरूप को अधिक महत्व दिया जाने लगा। इसका प्रमाण गांधार कला शैली में निर्मित विभिन्न धर्मों के देवी-देवताओं की मूर्तियों में देखा जा सकता है।

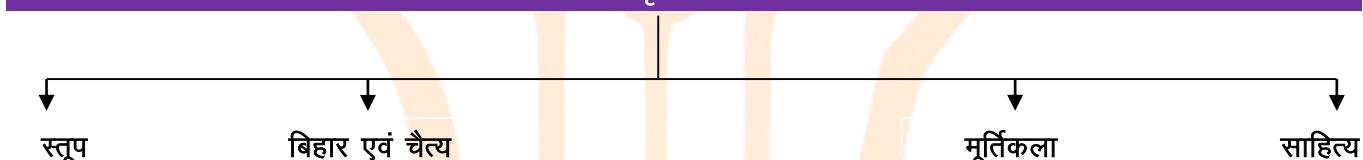
➤ बौद्ध धर्म के स्वरूप में परिवर्तन –

1. कनिष्ठ के शासनकाल में आयोजित चौथी बौद्ध संगीति के परिणामस्वरूप, बौद्ध धर्म महायान तथा हीनयान सम्प्रदाय में विभाजित हुआ, तथा महायान सम्प्रदाय में बोधिसत्त्व की परिकल्पना का विकास हुआ। बोधिसत्त्व से तात्पर्य था, जो निर्माण प्राप्ति की योग्यता रखता हो, किन्तु जिसने निर्वाण प्राप्त नहीं किया हो, बल्कि वह संसार के सभी प्राणियों के निर्वाण के लिए प्रयासरत हो।
2. महायान बौद्ध सम्प्रदाय के अन्तर्गत बुद्ध एवं बोधिसत्त्व की मूर्ति पूजा प्रारंभ हुई।
3. महायान बौद्ध सम्प्रदाय के द्वारा बौद्ध सम्प्रदाय के प्रचार प्रसार हेतु सामान्य लोगों की भाषा पाली के स्थान पर संस्कृत भाषा का प्रयोग किया जाने लगा।
4. महायान बौद्ध सम्प्रदाय के अन्तर्गत बौद्ध धर्म का स्वरूप अधिक आशावादी हो गया, महायान शाखा ने निर्वाण का दरवाजा सभी लोगों के लिए खोल दिया।

➤ जैन धर्म के स्वरूप में परिवर्तन –

- जैन धर्म में बहुत ज्यादा परिवर्तन देखने को नहीं मिलते, किन्तु मौर्योत्तर काल में दिग्म्बर जैन पंथ के अन्तर्गत जैन तीर्थकरों की मूर्ति पूजा प्रारंभ हो गई।

सांस्कृतिक जीवन



**स्तूप –**

- स्तूप निर्माण मौर्यकाल में से ही आरंभ हो गया था, किन्तु मौर्योत्तर काल में स्तूपों का न केवल परिवर्धन हुआ, बल्कि कलात्मक दृष्टि से भी उनकी शोभा में वृद्धि हुई।
- मौर्योत्तर काल में शुंग वंश के शासकों ने मौर्य काल में निर्मित भरहुत (सतना), साँची (रायसेन) एवं गया (बिहार) आदि स्तूपों का परिवर्धन करवाया।
- उसी प्रकार सातवाहन एवं इक्षवाकु वंश के शासकों ने भी अनेक स्तूपों का निर्माण करवाया, जिनमें अमरावती, नागार्जुनकोण्डा, घण्टशाला के स्तूप प्रमुख थे।

➤ बिहार एवं चैत्य –

- बिहार बौद्ध भिक्षुओं के निवास स्थान होते थे। बौद्ध भिक्षु वर्षा ऋतु के चार महीने बिहारों में ही रहते हुए पूजा इत्यादि करते थे।
- मौर्योत्तर काल में मुख्यतः सातवाहन इक्षवाकु एवं वाकाटक वंश के राजाओं के द्वारा अनेक बिहारों का निर्माण कराया।
- चैत्य बौद्धों का पूजा ग्रह था अधिकांश चैत्य पहाड़ों को काट कर निर्मित किये जाते थे, तथा सामान्यतः चैत्य आयताकार होते थे। उसका अंतिम किनारा अर्द्धवृत्ताकार होता था। इसके केन्द्र में एक स्तूप का भी निर्माण किया जाता था, इसका उद्देश्य उपासना था, स्तूप के छत को घोड़े के नाल के आकार में काट दिया जाता था ताकि उससे रोशनी स्तूप के ऊपर पड़े।
- उदाहरण – पीतलखोरा, भज, कार्ले, कन्हेरी, अजन्ता आदि



➤ मूर्तिकला –

- मौर्यकाल में पशुओं की जीवंत आकृतिया बनाई गई, किन्तु मौर्यों के पश्चात वह शैली छूट गई तथा फिर वैसी जीवंत पशु आकृतियां देखने को नहीं मिलती। परंतु दूसरी तरफ उसकी क्षतिपूर्ति मानव मूर्तियों के विकास के रूप में की गई। इस काल में मूर्तिकला की तीन भिन्न शैली विकसित हुईं—

◆ गांधार शैली –

- मूर्ति निर्माण की यह शैली गांधार के आस-पास विकसित हुई, इसका विकास हेलेनिस्टिक कला (यूनानी) तथा भारतीय तत्त्वों के मिश्रण के परिणाम स्वरूप हुआ।
- मौलिक रूप से इस शैली का विकास यूनान में हुआ तथा देवताओं का प्रतिनिधित्व मानवीय रूप में होने लगा। यूनान में सौन्दर्य के देवता अपोलो को एक सुंदर मानव मूर्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया।
- फिर इस पर रोमन कला का प्रभाव भारी साज-सज्जा, राजमुकुट तथा आभूषण के रूप में देखा जा सकता। इसीलिए इसे यूनानी-रोमन कला के नाम से भी जाना जाता है।
- गांधार कला के अंतर्गत मूर्ति के निर्माण में गहरे नीले अथवा काले स्लेटी पत्थर का प्रयोग किया गया है।
- गांधार शैली का दृष्टिकोण यथार्थवादी है तथा इसमें शरीर की यथार्थ बनावट मांसपेशियां कपड़ों की सलवटें, सभी का सजीव एवं यथार्थ चित्रण मिलता है।
- इसका मुख्य विषय बौद्ध धर्म से संबंधित है तथा इसमें बड़ी संख्या में बोधिसत्त्वों का चित्रण हुआ है।

◆ मथुरा कला शैली –

- यह मूर्तिकला की शैली मथुरा के आस-पास के क्षेत्र में विकसित हुई।
- मथुरा कला का दृष्टिकोण आदर्शवादी है, इसमें मूर्तिया के शारीरिक अंकन पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया। पारदर्शी कपड़े शरीर से चिपके दिखाए गए किंतु इसमें मुख्य बल मूर्ति के चेहरे पर आध्यात्मिकता दिखाने पर दिया।
- प्रायः मूर्तियों की आंखें आधी खुली होती तथा उसका चेहरा ध्यानमग्न दिखता है।
- मथुरा कला में मूर्तियों के निर्माण में लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग किया जाता था।
- इस कला के अंतर्गत बौद्ध, जैन एवं ब्राह्म देवताओं की मूर्तिया भी निर्मित की गई।

◆ अमरावती शैली:-

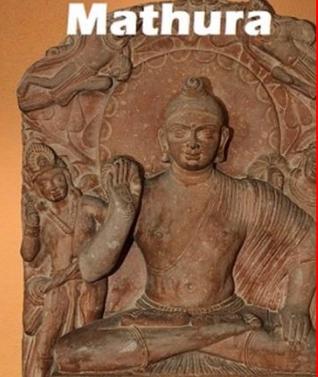
- दक्षिण भारत में अमरावती नागार्जुन कोंडा, घंटशाला, जग्गपेट तथा आस-पास के क्षेत्र में मूर्तिकला की अमरावती शैली का विकास हुआ।
- इस शैली के अन्तर्गत मूर्ति के निर्माण में कच्चे माल के रूप में संगमरमर का प्रयोग हुआ।

## गांधार शैली



Gaandhar

Mathura



अमरावती



- इस शैली का दृष्टिकोण ऊपर की दोनों शैलियों से पुथक है, इसका स्वरूप धार्मिक विषयों पर कम इन्द्रिय सुखों पर अधिक था।

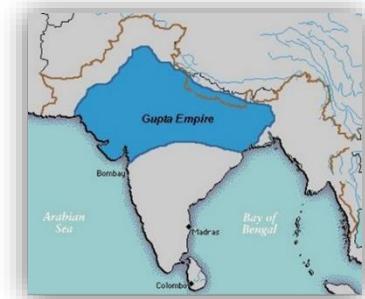
➤ चित्रकला –

- मौर्योत्तर काल से हमें चित्रकला के विकास का साक्ष्य मिलने लगता है, जैसाकि हम जानते हैं कि अजंता चित्रकला का एक लम्बा इतिहास रहा है फिर जैसाकि हमें ज्ञात होता है कि अजंता के आरंभिक चित्र सातवाहनों से जुड़े हुए थे।

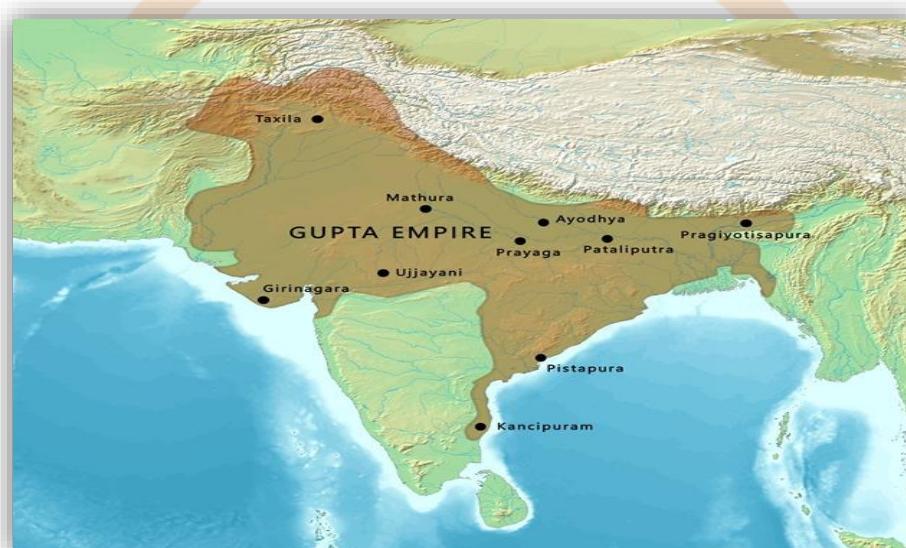
➤ साहित्य –

- मौर्योत्तर काल में सातवाहन शासक हाल तथा उसका दरबारी सर्वर्वर्मन ने क्रमशः गाथासप्तशती एवं कातंत्र व्याकरणम् की रचना की।
- इसी काल में भरत मुनि का नाट्यशास्त्र, चरक ने चरक संहिता की रचना की थी।
- इसी समय अश्वघोष ने बुद्धचरित, सौन्दरानन्द एवं सारिपुत्र प्रकरण की रचना की थी।





## गुप्त वंश



### ❖ श्री गुप्त – धारण गोत्र का बताया।

- समुद्र की प्रयाग प्रशस्ति, कुमारगुप्त का भिलसङ्ग स्तम्भलेख, स्कन्दगुप्त के भीतरी स्तम्भलेख में श्रीगुप्त को गुप्त वंश का अधिराज कहा गया है।
- इत्सिंग ने श्रीगुप्त को “चे—ली—को” कहा, इत्सिंग के अनुसार श्री गुप्त ने मगध में बौद्ध यात्रियों के ठहरने के लिए एक मन्दिर बनवाया तथा मन्दिर के खर्चे के लिए 24 गाँव दान किए।
- उपाधि – महाराज

### ❖ घटोत्कच – उपाधि – महाराज

- प्रभावती गुप्त के पूना ताम्र पत्र – अभिलेख तथा स्कन्द के सूपिया अभिलेख में घटोत्कच को गुप्त वंश का अधिराज कहा गया।
- घटोत्कच ने अपने पुत्र चन्द्रगुप्त – I का विवाह लिच्छवि राजकुमारी कुमार देवी से किया।

### ❖ चन्द्रगुप्त प्रथम – उपाधि – महाराजाधिराज

- इसने राजसिंहासन धारण करते समय 319–20 में गुप्त संवत् चलाया।
- इसने कुमारदेवी से विवाह के पश्चात् चन्द्रगुप्त – कुमारदेवी लिच्छवि प्रकार, राजारानी प्रकार, विवाह प्रकार के सिक्के चलवाए।

### ❖ समुद्रगुप्त –

- ✓ उपाधिया –
- अश्वमेघ पराक्रम
  - कविराज – सिक्कों पर वीणा–वादन करते हुए।



- लिच्छविदौहित्र
- व्याघ्र और क्रमांक
- कविराज
- परमभट्टारक
- वी.एन स्मिथ द्वारा 'भारत का नेपोलियन'
- 6 प्रकार की स्वर्ण मुद्राएँ – गरुड़, धनुधर, परशु, अश्वमेघ, व्याघ्रहन्ता तथा वीणासरण
- सिंहासन पर बैठने के पश्चात समुद्रगुप्त ने "धरणिबन्ध" को अपना वास्तविक लक्ष्य बनाया।

(a) आर्यावर्त की विजय / उत्तर भारत

- नीति – अनेकार्यावर्त–राज – प्रसभोदधारण, –हिंसात्मक ढंग से नाश इसके तहत समुद्रगुप्त ने 12 शासकों को पराजित किया।

(b) आटविक की विजय –

- नीति – परिचारकीकृत सर्वाट विकराज्यस्य

(c) दक्षिणापथ विजय –

- नीति – ग्रहणमोक्षानुग्रह – (ग्रहण – मोक्ष – अनुग्रह, राज्य लौटाना)

Note – समुद्रगुप्त के दक्षिणी अभियान के समय कांची का पल्लव शासक विष्णुगोप था।

(d) सीमावर्ती राज्यों के विरुद्ध अभियान –

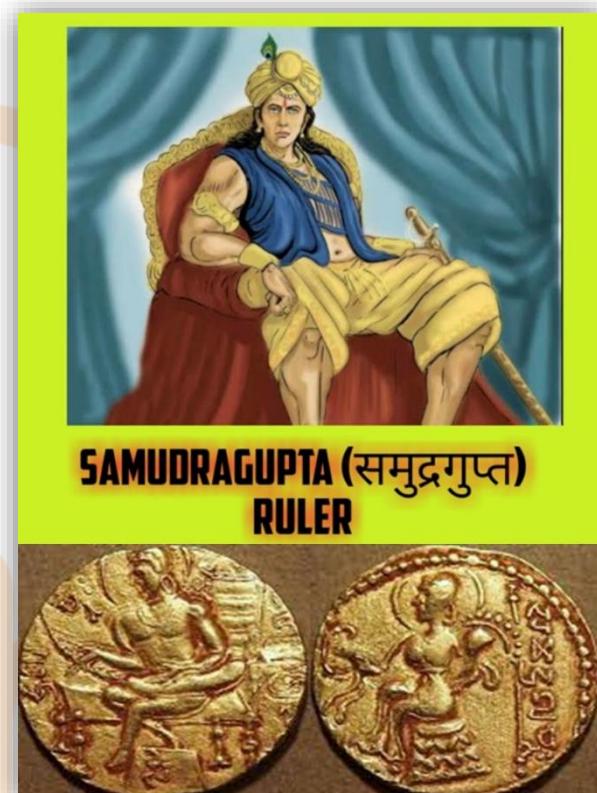
- नीति – सर्वकरदानाज्ञाकरणप्राणामागमन (सर्वकरदान, आज्ञाकरण, प्राणामागमन)
- समतट (बांग्लादेश), डवाक् (ढाका एवं चटगाँव), कामरूप (असम) कृतपुर (हरियाणा नेपाल) 5 राजतंत्र तथा 9 गणतंत्र राज्य थे

(e) विदेशी शक्तियों से सम्बन्ध

- नीति – आत्मनिवेदन कन्योपायनगरुत्मंदक स्वविषय भुक्तिशासन याचना – (आत्म निवेदन, कन्योपायन, गरुत्मंदक – स्वविषयक – भुक्ति – शासन – याचना)
- एरण समुद्र गुप्त का स्वभोग नगर था, एरण से मिले समुद्रगुप्त के अभिलेख में उसकी पत्नी का नाम दत्तदेवी है।

❖ रामगुप्त

- इसके तांबे के सिक्के विदिशा व उदयगिरि से मिले हैं।
- शक शासक रुद्रसिंह – III ने इसे अपनी पत्नी ध्रुवदेवी को देने पर मजबूर कर दिया था।
- इसके छोटे भाई चन्द्रगुप्त – II ने रुद्रसिंह तथा रामगुप्त की हत्या कर, ध्रुवदेवी से विवाह किया।





## ❖ चन्द्रगुप्त – II विक्रमादित्य –

- ✓ उपाधिया –
  - देवराज, देवगुप्त, देवश्री
  - उज्जैन पुरवाराधीश्वर, पाटलिपुत्र पुरवाधीश्वर

## वैवाहिक सम्बन्ध –

1. नाग वंश – कुबेरनागा से विवाह
2. पुत्री प्रभावती गुप्त का विवाह वाकाटक वंश के रूद्रसेन – II
3. कदम्ब वंशी – पुत्र कुमारगुप्त का विवाह काकुत्स्वर्मन की पुत्री से हुआ

## विजय अभियान –

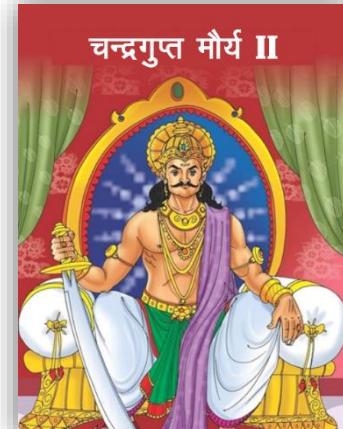
- a. शको का उन्मूलन –
  - उदयगिरि अभिलेख – (संधिविग्रहिक – वीरसेन साब कृत)
  - उदय गिरि अभिलेख – (सामंत सनकानीक महाराज कृत )
  - साँची स्तूप प्राचीर – (सेना पति आम्रकार्दव कृत )
- b. बाह्लीक एवं बंग विजय –  
जानकारी – मेहरौली लौह स्तंभ

## ➤ नवरत्न –

1. कालिदास – नाटककार व कवि  
काव्य – ऋतुसंहार, मेघदूतम्, कुमारसंभवम्, रघुवंशम्  
नाटक – मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोवर्शीयम्, अभिज्ञानशाकुंतलम्
2. अमरसिंह – अमरकोश
3. धनवन्तरि – राजवैद्य
4. वराहभिहिर – ज्योतिषाचार्य – (पंचसिद्धान्तिका)
5. वररुचि – व्याकरणाचार्य – (वर्तिका, संस्कृत व्याकरण)
6. घटकर्पर – कवि
7. क्षपणक – ज्योतिषाचार्य – (ज्योतिष शास्त्र)
8. बेतालभट्ट – जादूगर – (सिंहासन बत्तीसी)
9. शंकु – शिल्पकार – (शिल्पशास्त्र)

## ➤ मुद्रा – स्वर्ण, चांदी, ताम्र – सर्वप्रथम चाँदी के सिक्के जारी किये।

- ध्वजधारी प्रकार, सिंहनिहन्ता प्रकार, अश्वारोही प्रकार, छत्रधारी प्रकार, चक्र-विक्रम प्रकार
- इसके शासनकाल में फ़ाहियान भारत यात्रा पर आया।



## 9 रत्नों से दमकता था विक्रम दरबार

विक्रमादित्य विद्या और संस्कृति के संरक्षक थे। उनके दरबार में नौ विद्वान थे जिन्हें नौ रत्न भी कहा गया।



देताल भट्ट



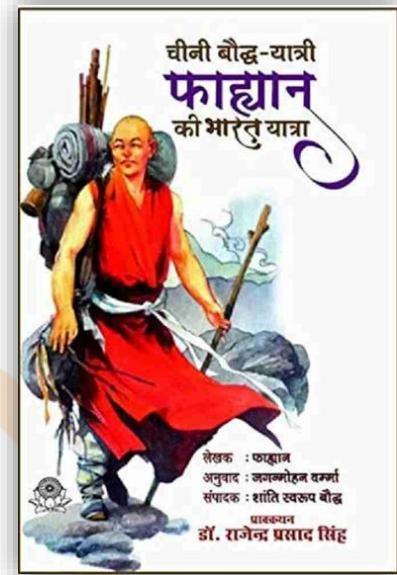


## फाहियान का यात्रा विवरण – (399 ई.वी. – 414 ई.वी.)

- ✓ पुस्तक – फा–ओ–की
- 399 ई. मे भारत आया।
- फाहियान 3 वर्षों तक पाटलिपुत्र में रहा।
- पाटलिपुत्र मे चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा बनवाए राजप्रसाद को देवताओं द्वारा निर्मित बताया।
- म.प्र. को ब्राह्मणों का देश बताया, म.प्र. के लोग सुखी एवं समृद्ध थे, मृत्यु दण्ड का निषेध, म.प्र. के लोग मांस, मछली, प्याज, लहसुन, मंदिरा का सेवन नहीं करते थे।
- लेन–देन में कौड़ी का प्रयोग होता था।
- जलमार्ग होते हुए चीन लौटा।

### ✓ धार्मिक नीति –

चन्द्रगुप्त – II वैष्णव धर्म का अनुयायी था, उसने 'परमभागवत' की उपाधि धारण की, किन्तु उसने अन्य धर्मों के प्रति भी सहिष्णुता की नीति अपनाई। चन्द्रगुप्त – II के संधिविग्रहिक वीरसेन साब तथा सेनापति आग्रकार्द्धव क्रमशः शैव एवं बौद्ध थे, चीनी यात्री फाहियान ने भी इसी के शासनकाल मे भारत की यात्रा की।



### ❖ कुमारगुप्त (महेन्द्रादित्य) –

- ✓ उपाधि – शक्रादित्य, परमभट्टारक, परमभागवत, अश्वमेधमहेन्द्र, महेन्द्रादित्य
- नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना।
- इसके शासनकाल मे हूणों ने आक्रमण किया।
- ✓ अभिलेख
  1. बिलसङ्घ अभिलेख – एटा (उ.प्र.)
  2. मन्दसौर अभिलेख – म.प्र. – (रचनाकार – वत्सभट्टी)
  - मालवा राज्यपाल – बंधुर्वर्मा द्वारा सूर्य मंदिर के निर्माण का उल्लेख
  3. करमदण्डा अभिलेख – उ.प्र. – फैजाबाद
  4. गढ़वा अभिलेख – इलाहाबाद – उ.प्र.
  5. तुमैन अभिलेख – अशोकनगर – शरद कालीन सूर्य की भाँति, शासक को बताया।
  - ह्वेनसांग ने कुमारगुप्त को शक्रादित्य कहा है।
- ✓ मुद्राए – खड्गधारी प्रकार, गजाराही प्रकार, रवंग प्रकार कार्तिकेय प्रकार
- गुप्त शासको मे सर्वाधिक अभिलेख कुमारगुप्त ने बनवाये, इसके कुल 18 अभिलेख प्राप्त हुए।
- कुमारगुप्त के अंतिम समय के पुष्पमित्र नामक जाति ने आक्रमण किया, जिसका प्रतिरोध सफलता पूर्वक स्कन्दगुप्त ने किया, इस बात की जानकारी 'स्कन्द गुप्त' के भीतरी अभिलेख से मिलती है।

### ❖ स्कंदगुप्त / शक्रोपम –

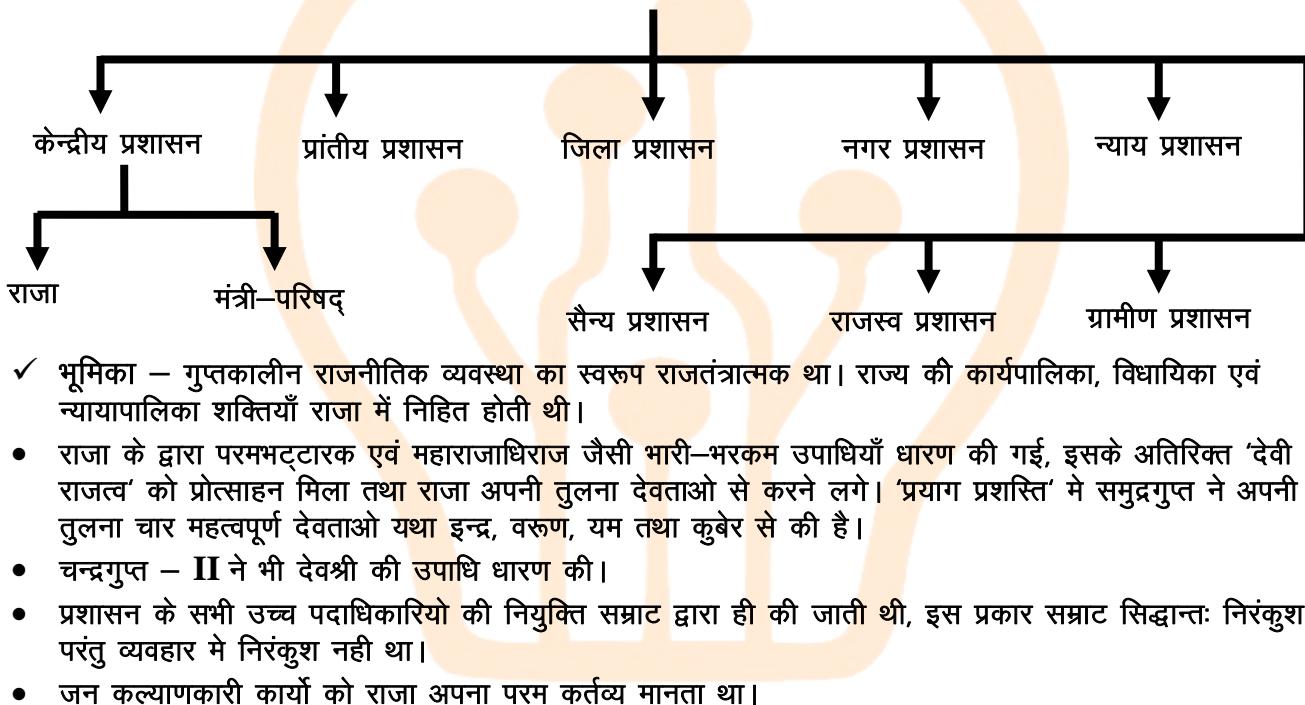
- इसके सौराष्ट्र प्रान्त के राज्यपाल पर्णदत्त के पुत्र चक्रपालिक ने सुदर्शन झील के बांध का जोरोद्धार करवाया।
- अभिलेख –
  - भीतरी स्तम्भलेख – गाजीपुर – उ.प्र. – (हूण आक्रमण की जानकारी)
  - कहोम स्तम्भलेख – स्कन्दगुप्त और हूणों का युद्ध गोरखपुर – उ.प्र.
  - सुपिया – रीवा – गुप्तवंश को घटोत्कच वंश कहा
  - पुरुगुप्त – बौद्ध मतानुयायी, स्कन्दगुप्त का भाई
  - कुमारगुप्त – II
  - बुद्धगुप्त – श्री विक्रम, बौद्ध मतानुयायी
  - नरसिंह गुप्त – 'बालादित्य' (मिहिरकुल हूण को पराजित)
  - भानुगुप्त – एरण अभिलेख – (सतीप्रथा का प्रथम साक्ष्य – गोपराज की पत्नी के सती होने का वर्णन)
  - विष्णुगुप्त – अंतिम शासक



✓ नालन्दा बौद्ध विहार –

- स्थापना – कुमारगुप्त – I
- हवेनसांग के अनुसार हर्षवर्धन प्रतिवर्ष 100 गाँवों की आमदनी नालन्दा बौद्ध विहार को दान में देता था।
- पाल वंश के शासक देवपाल ने भी नालन्दा को 5 गाँव दान में दिए थे।
- नालन्दा बौद्ध विहार में मुख्यतः महायान बौद्ध सम्प्रदाय की शिक्षा दी जाती थी, यहाँ कोरिया, जापान, तिब्बत, इण्डोनेशिया, फारस एवं तुर्की से भी विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थे।
- यह विश्व का प्रथम आवासीय विश्वविद्यालय था, यहाँ तकरीबन 10 हजार विद्यार्थी और 2 हजार अचार्य रहते थे।
- जब हवेनसांग ने नालंदा में शिक्षा ग्रहण की, तब यहाँ के प्रसिद्ध आचार्य शीलभद्र थे।
- 1203 में बख्तियार खिलजी ने नालंदा विश्वविद्यालय पर आक्रमण कर उसे पूर्णतः नष्ट कर दिया था।
- कालान्तर में नालंदा की खोज अलेक्जेंडर कनिंघम ने की।

## गुप्तकालीन प्रशासनिक व्यवस्था



- भूमिका – गुप्तकालीन राजनीतिक व्यवस्था का स्वरूप राजतंत्रात्मक था। राज्य की कार्यपालिका, विधायिका एवं न्यायापालिका शक्तियाँ राजा में निहित होती थी।
- राजा के द्वारा परमभट्टारक एवं महाराजाधिराज जैसी भारी-भरकम उपाधियाँ धारण की गई, इसके अतिरिक्त 'देवी राजत्व' को प्रोत्साहन मिला तथा राजा अपनी तुलना देवताओं से करने लगे। 'प्रयाग प्रस्तिति' में समुद्रगुप्त ने अपनी तुलना चार महत्वपूर्ण देवताओं यथा इन्द्र, वरुण, यम तथा कुबेर से की है।
- चन्द्रगुप्त – II ने भी देवश्री की उपाधि धारण की।
- प्रशासन के सभी उच्च पदाधिकारियों की नियुक्ति सम्राट द्वारा ही की जाती थी, इस प्रकार सम्राट सिद्धान्तः निरंकुश परंतु व्यवहार में निरंकुश नहीं था।
- जन कल्याणकारी कार्यों को राजा अपना परम कर्तव्य मानता था।

✓ मंत्रिपरिषद –

- गुप्तों के अधीन एक मंत्रिपरिषद अथवा सभा होती थी, इसका उल्लेख 'इलाहाबाद' अभिलेख में मिलता है।
- गुप्त युग में मंत्रियों के पद वंशानुगत होने लगे थे तथा एक मंत्री एक से अधिक पदों को धारण कर सकते थे। उदाहरण के लिए हरिषेण जो स्वयं ही एक अधिकारी था, महादण्डनायक ध्रुवसेन का पुत्र था, फिर हमें यह भी सूचना मिलती है कि हरिषेण एक ही साथ महादण्डनायक, संधिविग्रहक एवं कुमारामात्य के पद को सुशोभित कर रहा था।
- मंत्रियों को वेतन नकद तथा भू-राजस्व दोनों रूप में दिया जाता था।
- गुप्त कालीन अभिलेखों में निम्नलिखित मंत्रियों का उल्लेख मिलता है।
  - कुमारामात्य – सर्वोच्च प्रशासनिक अधिकारी
  - महादण्डनायक – न्याय का सर्वोच्च अधिकारी
  - दण्डपाशिक – सर्वोच्च पुलिस अधिकारी
  - महासंधिविग्रहिक – शांति एवं वैदेशिक नीति का सर्वोच्च अधिकारी।
  - महाबलाधिक्रत – सेना का सर्वोच्च अधिकारी
  - महाक्षपटलिक – राज्य के प्रमुख दस्तावेजों तथा राजाज्ञाओं को लिपिबद्ध करने वाला अधिकारी महाक्षपटलिक भूमि आलेखों को भी सुरक्षित रखता था, इसके अधीन 'कारणिक' नामक अधिकारी भी होता था।
  - विनयस्थिति स्थापक – धर्म सम्बन्धी मामलों का सर्वोच्च अधिकारी विनयस्थिति स्थापक सार्वजनिक मंदिरों की देख-रेख एवं लोगों के नैतिक आचरण पर दृष्टि रखता था।
  - अग्रहारिक – दान विभाग का सर्वोच्च अधिकारी।



- 9. ध्रुवाधिकरण – भू-राजस्व संग्रह करने वाला अधिकारी ।
- 10. न्यायाधिकरण – यह भूमि सम्बन्धी विवादों का निपटारा करता था ।
- ✓ प्रांतीय प्रशासन –
- प्रांत को देश, अवनी अथवा भुक्ति कहा जाता था, भुक्ति पर उपरिक अथवा 'उपरिक महाराज' नामक अधिकारी की नियुक्ति की जाती थी ।
- उपरिको के द्वारा महाराज की उपाधि धारण करना यह प्रतीत करता है कि पूर्वकाल की तुलना में इस काल में प्रांतीय अधिकारी अधिक शक्ति का उपभोग करते थे ।
- उपरिक के पद पर प्रायः राजकुमार अथवा राजकुल से सम्बन्धित व्यक्तियों की ही नियुक्ति की जाती थी । गुप्तों के प्रमुख प्रांत हैं – सौराष्ट्र, पश्चिमी मालवा (अवंति), पूर्वी मालवा (एरण), तीर भुक्ति (दरभंगा) पुण्ड्रवर्धन, मगध आदि ।
- ✓ जिला प्रशासन –
- प्रांतों का विभाजन जिला अथवा 'विषय' में था, विषय का प्रमुख विषयपति नामक अधिकारी होता था, जिसकी नियुक्ति अधिकतर उपरिक ही करता था ।
- जिला स्तर पर एक विषय अधिकरण नामक परिषद् होती थी ।
- इस परिषद में निम्नलिखित सदस्य होते थे –
  1. नगर श्रेष्ठी (नगर श्रेणियों का प्रधान)
  2. सार्थवाह (व्यापारियों का प्रधान)
  3. प्रथम कुलिक (प्रधान शिल्पी)
  4. प्रथम कायस्थ (मुख्य लेखक)
- जिले का विभाजन गाँवों के समूह में होता था, उसे वीथी अथवा पेठ कहा जाता था, वीथी का प्रमुख वीथी महात्मया नामक अधिकारी होता था ।
- प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी, जो महत्तर के अधीन होती थी ।
- ✓ नगर प्रशासन –
- प्रमुख नगरों का प्रबंध नगरपालिकाएं चलाती थी । नगर का प्रधान अधिकारी, पुरपाल कहा जाता था ।
- नगर प्रशासन में वंशानुगत तत्व देखने को मिलते हैं उदाहरण के लिए गिरनार नगर का पुरपाल चक्रपालिक था, जो सौराष्ट्र के राज्यपाल पर्णदत्त का पुत्र था ।
- ✓ ग्राम प्रशासन –
- प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी, जहां प्रशासन ग्रामसभा के द्वारा संचालित किया जाता था ।
- ग्राम सभा के प्रमुख अधिकारी
  1. ग्रामिक – ग्राम का मुखिया
  2. महत्तर – पंचायत के सदस्य
  3. अष्टकुलाधिकारी – भूमि सम्बन्धी क्रय-विक्रय का अधिकारी
  4. कुटुम्बि – कुटुम्ब का मुखिया
- ✓ न्याय प्रशासन –
- सप्राट देश का सर्वोच्च न्यायाधीश होता था, सप्राट के पश्चात् सबसे बड़ा न्यायिक अधिकारी महादण्डनायक होता था ।
- व्यापारियों तथा व्यवसायियों की श्रेणियों के अपने अलग-अलग न्यायालय होते थे ।
- 'पूण' नामक संस्था नगरों की अलग-अलग जातियों का न्यायालय था, तथा परिवार से संबंधित सभी न्याय प्रायः कुलप करता था ।
- ग्राम स्तर न्यायिक कार्य पंचायत द्वारा संचालित होता था ।
- फाहियान के अनुसार दण्डविधान अत्यन्त कोमल था, मृत्युदण्ड नहीं दिया जाता था ।
- अपराधों के बदले सामान्यतः आर्थिक जुर्माने लिये जाते थे । बार-बार राजद्रोह का अपराध करने वाले व्यक्ति का दाहिना हाथ काट लिया जाता था ।
- जहाँ कोई प्रमाण नहीं मिलता था वहाँ दिव्य परीक्षाएं ली जाती थी, न्याय सूतियों के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र की परीक्षा क्रमशः तुला, अग्नि, जल तथा विष से की जानी चाहिए ।



- नारद स्मृति के अनुसार चोरी करने पर ब्राह्मण का अपराध सबसे अधिक और शूद्र का सबसे कम माना जाएगा।

✓ सैन्य प्रशासन –

- गुप्त साम्राज्य की सेना विशाल एवं सुसंगठित थी। युद्ध के मौके पर सामंत एवं अधीनस्थ शासक उन्हें पूरक सैन्य सहायता उपलब्ध कराते थे।
- सेना का प्रधान अधिकारी "महाबलाधिकृत" था।
- हाथियों की सेना का प्रधान 'महापीलुपति' तथा घुड़सवारों की सेना के प्रधान को भटाश्वपति कहा जाता था।
- सेना में सामान का रखरखाव एवं देखभाल के लिए एक अन्य अधिकारी रणभण्डागारिक था।
- इस काल में रथ सेना का महत्व घट गया था, तथा उसके स्थान पर अश्वारोही सेना या तीरंदाज अश्वारोही सेना का महत्व बढ़ गया था।

✓ राजस्व प्रशासन –

- इस समय राज्य की आमदनी का मुख्य स्रोत भू-राजस्व था, इसे 'भाग-भोग', उपरिकर तथा हिरण्य के रूप में परिभाषित किया गया।
- राज्य सामान्यतः कुल उपज का 1/6 भाग पर अपनी दावेदारी जताता था।
- राजस्व नकद अथवा वस्तु दोनों रूपों में प्राप्त किया जाता था, कर को वसूलने वाला अधिकारी ध्रुवाणिकरण कहलाता था।
- व्यापारियों को वस्तुओं के आयात-निर्यात पर चुंगी देना पड़ती था।
- सीमा शुल्क शौलिक नामक अधिकारी द्वारा वसूला जाता था।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि गुप्त कालीन प्रशासन उच्च स्तर पर केन्द्रीकृत, किन्तु निम्न स्तर पर विकेन्द्रीकृत के तत्व प्रभावी थे।

इस काल के प्रशासन की कुछ विशेषताएँ थीं जो परवर्ती काल के प्रशासन को भी प्रभावित करती रही, उदाहरणार्थ – गुप्त काल में जिस सामंतवाद का उदय हुआ, उसमें निरंतर विकास हुआ तथा आगे गुप्तोत्तर काल में सामंतवाद के कारण ही एक केन्द्रीय राज्य की बजाय छोटे-छोटे राज्यों का उद्भव हुआ।

### गुप्तकालीन धार्मिक व्यवस्था

गुप्तकालीन धार्मिक व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अभिलक्षण है, जटिलता एवं विविधता अर्थात् एक और ब्राह्मणवादी पुनरुत्थान के कारण जहाँ यज्ञ की पद्धति पुनर्जीवित हो रही थी, वही जनजातीय तत्वों के प्रभाव स्वरूप भक्ति की अवधारणा को प्रोत्साहन मिल रहा था –

#### ► ब्राह्मण धर्म –

1. यज्ञों का प्रचलन –

ब्राह्मण धर्म के पुनरुत्थान के परिणाम स्वरूप यज्ञों का महत्व बढ़ गया, उदाहरणार्थ समुद्रगुप्त ने अश्वमेध पराक्रम की उपाधि धारण की तथा अश्वमेध प्रकार के सिक्के चलवाए, साथ ही कुमारगुप्त ने भी अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया।

2. भक्ति एवं अवतारवाद की अवधारणा का विकास –

वैदिक तथा गैर वैदिक तत्वों के मध्य सामंजस्य के परिणामस्वरूप भक्ति तथा शैव भक्ति का विकास हुआ।

• भक्ति के विकास के परिणामस्वरूप वैष्णव भक्ति तथा शैव भक्ति का विकास हुआ।

• फिर अवतारवाद के माध्यम से विभिन्न तत्वों के बीच सामंजस्य लाया गया एवं विष्णु के 10 अवतारों में ब्राह्मण एवं गैर ब्राह्मण सभी देवताओं को शामिल कर लिया गया।

3. मूर्तिपूजा का विकास –

सर्वप्रथम गुप्तकाल में हिन्दू देवी देवताओं की मूर्तियाँ मंदिरों में स्थापित की गई तथा मूर्ति पूजा की शुरूआत हुई। मंदिरों में मुख्य देवता की प्रतिमा के साथ-साथ गौण देवताओं की प्रतिमायें भी स्थापित की गईं।

#### ► धर्म में स्त्री तत्वों का बढ़ता महत्व –

- इस काल में इस अवधारणा का विकास हुआ कि पुरुषों की क्रियाशीलता को प्रोत्साहित करने के लिए स्त्रियों का साहचर्य आवश्यक है, उदाहरण के लिये, विष्णु के साथ लक्ष्मी तथा शिव के साथ पार्वती जुड़ गई।
- किन्तु इस काल में मातृदेवियाँ देवताओं से संबद्ध थीं किन्तु हड्डपा काल में स्त्री की पूजा कुमारी के रूप में होती थी।



## ➤ त्रिमूर्ति की अवधारण का पूर्ण विकास –

- गुप्तकाल में ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश की त्रिमूर्ति को पूजा जाने लगा।
- ब्रह्मा को सृष्टि का सर्जक, विष्णु को जगत का पालनहार और महेश को सृष्टि का विनाशक करार दिया गया।

*Note* – इस काल में षडदर्शन का अंतिम भाग वैशेषिक, न्याय, पूर्वमीमांसा एवं उत्तर मीमांसा संकलित किया।



## ➤ वैष्णव धर्म –

गुप्त शासकों का राजकीय धर्म वैष्णव था किन्तु वह पूर्ण रूप से सहिष्णु शासक थे –

- गुप्त शासकों ने परमभागवत उपाधि धारण की साथ ही इनका राजकीय चिन्ह गरुड़ था।
- इस काल में भगवान विष्णु का सबसे लोकप्रिय अवतार वराह अवतार था।
- गुप्तकाल में नववैष्णववाद का विकास हुआ, जिसका सम्बन्ध पांचरात्र मत से था।

## ➤ शैव धर्म

गुप्त काल में शैव धर्म का भी विकास हुआ। गुप्त शासकों में कुमारगुप्त प्रथम और स्कन्दगुप्त के नाम पर ही आधारित थे। चन्द्रगुप्त द्वितीय के संधिविग्रहिक वीरसेन के उदयगिरि अभिलेख (म.प्र.) से जानकारी प्राप्त होती है कि वीरसेन शैव था। इसी प्रकार कुमारगुप्त प्रथम कालीन पृथ्वीसेन के करमदण्डा अभिलेख (उ.प्र.) से जानकारी प्राप्त होती है कि वीरसेन शैव था। कुमारगुप्त प्रथम कालीन ध्रुवशर्मा के बिलसङ्ग अभिलेख (उ.प्र.) से जानकारी प्राप्त होती है कि ध्रुवशर्मा द्वारा स्वामी महासेन अर्थात् कार्तिकेय के मंदिर का निर्माण करवाया गया था।

गुप्तकाल में ही अर्धनारीश्वर के रूप में शिव तथा पार्वती की संयुक्त मूर्तियाँ बनाई जाने लगीं। यहाँ पार्वती शिव की शक्ति की प्रतीक हैं। गुप्त काल में हरिहर के रूप में शिव तथा विष्णु को एक साथ दर्शाया गया है।

वामन पुराण में शैव धर्म के 04 सम्प्रदायों – पाशुपत, शैव, कापालिक तथा कालामुख का उल्लेख है। पाशुपत सम्प्रदाय का संस्थापक लकुलीश को माना जाता है।

## ➤ शाक्त धर्म

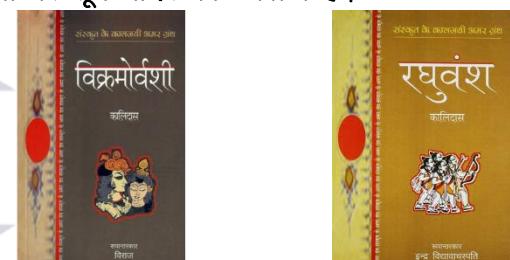
गुप्त काल में शाक्त धर्म का भी विकास हुआ। कुमारगुप्त प्रथम के गंगाधर अभिलेख में शाक्त पूजा का उल्लेख मिलता है। मार्कण्डेय पुराण में देवी की स्तुति है। द्वेषनसांग ने देवी को प्रसन्न करने हेतु बलि दिए जाने का उल्लेख किया है। गुर्जर-प्रतिहार वंश के शासक शाक्त धर्म के उपासक थे।

## ➤ सूर्य पूजा

गुप्त काल में सूर्य पूजा का भी उल्लेख मिलता है। गुप्त काल में निम्नलिखित स्थानों पर सूर्य मंदिर का उल्लेख है। –

1. मंदसौर (म.प्र.)
2. ग्वालियर (म.प्र.)
3. माडास्यात (बुलन्दशहर, उ.प्र.)
4. अन्तर्वेदी (गंगा-यमुना दोआब)
5. मूलस्थानपुर (मुल्तान)

कुमारगुप्त प्रथम के दरबारी कवि वत्सभट्टि के मंदसौर अभिलेख (मंदसौर प्रशस्ति) से जानकारी प्राप्त होती है कि रेशम बुनकरों की तंतुवाय श्रेणी द्वारा मंदसौर (दशपुर) में सूर्य मंदिर का निर्माण किया गया था। स्कन्दगुप्त कालीन इंदौर ताप्रपत्र (उ.प्र.) में तेलियों की श्रेणी द्वारा सूर्य मंदिर को दान देने का उल्लेख मिलता है।



## ➤ बौद्ध धर्म –

- गुप्तकाल में बौद्ध धर्म का भी विकास हुआ, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का सेनापति आम्रकार्द्धव बौद्ध था, साँची अभिलेख के अनुसार आम्रकार्द्धव ने साँची महाविहार को 25 दीनार दान में दिए।
- इसी प्रकार कुमारगुप्त-I ने नालंदा बौद्ध विश्वविद्यालय का निर्माण कराया।
- गुप्तकाल में बोधिसत्त्वों की मूर्तियों का विकास देखा जा सकता है।
- गुप्तकाल में अनेक बौद्ध विद्वान हुए, जिसमें – असंग, वसुबंधु, दिङ्गनाथ एवं असंग प्रमुख हैं।





### ➤ जैन धर्म –

गुप्त काल मे जैन तीर्थकरों की मूर्ति पूजा का विकास हुआ।

- कुमारगुप्त-I के उदयगिरि गुहालेख से जानकारी प्राप्त होती है कि शंकर नामक व्यक्ति द्वारा पाश्वनाथ की मूर्ति स्थापित की गई थी।
- कुमारगुप्त के मथुरा अभिलेख में हरिस्वामिनी नामक महिला द्वारा जैन मंदिरों को दान दिये जाने का उल्लेख मिलता है।
- गुप्त काल मे दक्षिण मे कदम्ब तथा गंग शासकों ने जैन धर्म को संरक्षण दिया, गंग मंत्री चामुण्डराय ने श्रवणबेलगोला मे बाहुबली की गोमतेश्वर मूर्ति का निर्माण कराया।
- साथ ही इस काल मे मुनि सर्वनन्दी ने लोक विभंग तथा आचार्य सिद्धसेन ने न्यायवार्ता नामक ग्रंथ लिखा।

### निष्कर्ष –

गुप्तकालीन धार्मिक व्यवस्था विविधताओं से परिपूर्ण था तथा इन विविधताओं का सीधा संबंध तत्कालिक आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तनों से था।

## गुप्तकाल में साहित्य और वैज्ञानिक साहित्य

### ➤ गुप्तकालीन साहित्य –

ब्राह्मण धर्म के पुर्नरूप्त्वान के साथ ही, इस काल मे संस्कृत साहित्य का पुर्नरूप्त्वान हुआ, हालांकि संस्कृत का पुर्नरूप्त्वान मौर्य काल मे प्रारंभ हो गया था, किन्तु संस्कृत को दरबारी भाषा का दर्जा गुप्तकाल मे मिला।

- गुप्तकाल संस्कृत भाषा का स्वर्णकाल था – इसी काल मे कुछ प्रमुख संस्कृत साहित्य की रचना हुई जिनमे प्रमुख है –
- ✓ विशाखदत्त – मुद्रा राक्षस तथा देवी चन्द्रगुप्तम्
- ✓ वात्स्यायन – कामसूत्र
- ✓ शूद्रक – मृच्छकटिकम्
- ✓ अमरसिंह – अमरकोश
- ✓ चन्द्रगोमिन – चन्द्रत्याकरण
- ✓ विष्णु शर्मा – पंचतंत्र
- ✓ कामन्दक – नीतिसार
- ✓ नारायण भट्ट – हितोपदेश
- ✓ भास – स्वप्नवासवदत्ता

### ➤ कालीदास की प्रमुख रचनाएँ –

नाटक –

- ✓ मालविकाग्निमित्रम्
- ✓ विक्रमोर्वशीयम्
- ✓ अभिज्ञान शाकुन्तलम्

महाकाव्य –

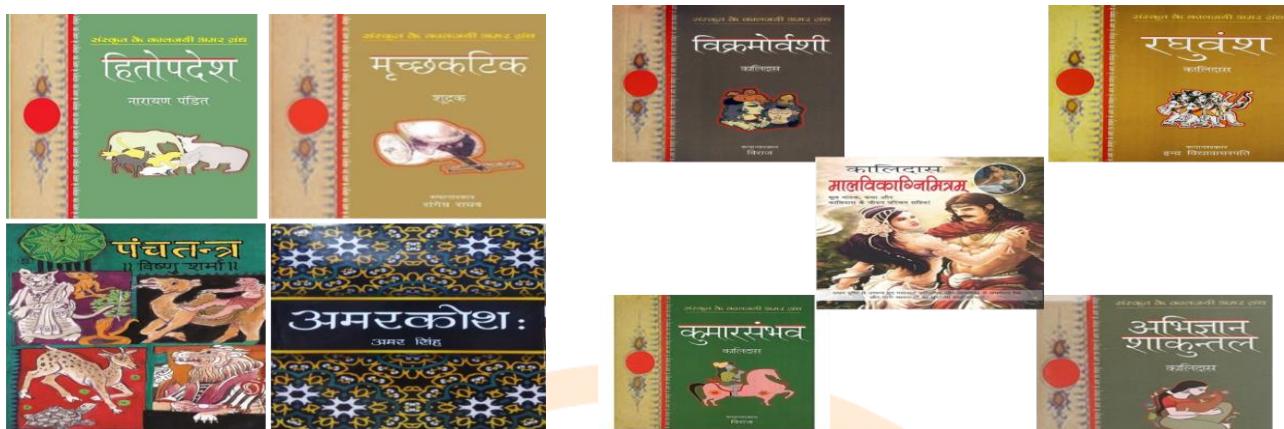
- ✓ रघुवंश
- ✓ कुमार सम्बव

खण्डकाव्य –

- ✓ मेघदूत
- ✓ ऋतुसंहार

- यद्यपि इस काल मे संस्कृत को दरबारी भाषा के रूप मे संरक्षण मिला, किन्तु प्राकृत भाषा का महत्व जन सामान्य की भाषा के रूप मे बना रहा, उदाहरण के रूप मे गुप्तकालीन नाटकों मे उच्च पात्रों को संस्कृत तथा महिलाओं एवं शूद्रों को प्राकृत भाषा बोलते दिखाया गया।





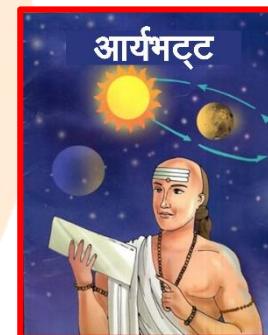
## गुप्तकाल में वैज्ञानिक साहित्य

गुप्तकाल के साहित्य का एक भाग वैज्ञानिक साहित्य से भी जुड़ा हुआ है, जो दर्शाता है कि गुप्तकाल में विज्ञान विकसित अवस्था में था।

### ➤ आर्यभट्ट –

जन्म – पाटलिपुत्र

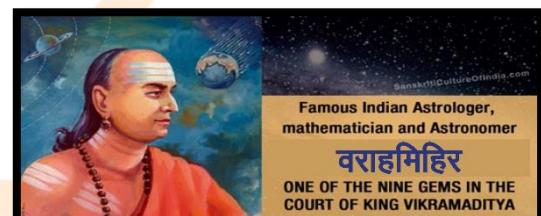
- आर्यभट्ट ने आर्यभट्टीय नामक कृति में खगोल विज्ञान से संबंधित अपने कुछ महत्वपूर्ण शोध प्रकाशित किए हैं। उसने सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण का पता लगाया।
- आर्यभट्ट ने उस काल में पृथ्वी की परिधि का जो मान निकाला वह कमोबेस आज भी सही माना जाता है।
- आर्यभट्ट की एक दूसरी कृति आर्यभट्ट सिद्धांत मानी जाती है, जो वर्तमान में उपलब्ध तो नहीं है, वरन् अन्य लेखकों के उद्धरण से हम उसके विषय में सूचना प्राप्त करते हैं।



### ➤ वराहमिहिर –

जन्म – कायथा (उज्जैन)

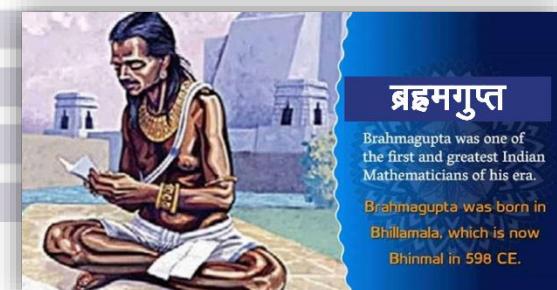
- गुप्तकाल के महत्वपूर्ण प्रसिद्ध ज्योतिषी थे।
- वराहमिहिर ने अपने ग्रन्थ वृहतसंहिता में खगोल विज्ञान से संबंधित महत्वपूर्ण सूचनाओं को संकलित किया।
- वराहमिहिर ने बताया कि चन्द्रमा पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाता है।
- इनकी अन्य रचनाओं में पंचसिद्धांतिका, वृहज्जातक तथा लघुज्जातक प्रमुख है।



### ➤ ब्रह्मगुप्त –

जन्म – उज्जैन

- खगोलशास्त्री एवं गणितज्ञ थे।
- इन्होंने ब्रह्मसिद्धांत तथा खण्डखण्डका की रचना की।
- ब्रह्मगुप्त ने न्यूटन से बहुत पहले ही गुरुत्वाकर्षण का पता लगाया।



### ➤ भास्कर –

- इन्होंने आर्यभट्ट के सिद्धांत पर टीकायें लिखी। गुप्तकाल में औषधि – शास्त्र पर भी महत्वपूर्ण ग्रन्थ मिलते हैं।
- वाभट्ट ने औषधी शास्त्र पर दो ग्रन्थ लिखे आष्टांगहृदय तथा आष्टांगसंग्रह।
- गुप्तकाल में धन्वंतरी जैसे चिकित्सक थे, जो चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के नवरत्नों में शामिल थे।
- इसी काल में पालकाप्य ने हस्त्यायुर्वेद की रचना की जो हाथियों की चिकित्सा से संबंधित था।
- औषधि – शास्त्र की प्रमुख पुस्तक 'नवनीतकम्' की रचना तथा चिकित्सक कश्यप ने महिलाओं तथा बच्चों की चिकित्सा से संबंधित ग्रन्थ की रचना की।
- इस प्रकार गुप्त वंश के शासकों की सांस्कृतिक उपलब्धियां व्यापक थीं। वस्तुतः गुप्त काल की सांस्कृतिक उपलब्धियों के कारण ही उसे सम्पूर्ण प्राचीन भारतीय इतिहास का स्वर्ण काल कहा जाता था।





## गुप्तकालीन आर्थिक व्यवस्था

गुप्त राजाओं का काल आर्थिक दृष्टि से समृद्धि एवं सम्पन्नता का काल माना जाता रहा है, गुप्त काल में कृषि के साथ-साथ वाणिज्य व्यापार, मुद्रा व्यवस्था तथा नगरीय तत्व दिखाई देते हैं, जिन्हें हम निम्नलिखित बिंदुओं के अन्तर्गत समझ सकते हैं।

### ➤ कृषि –

- भूमि अनुदान के माध्यम से अभी तक अछूते क्षेत्रों में भी कृषि का प्रसार हुआ, क्योंकि दानग्रहिता ने छोटे किसानों की सहायता से गैर आबाद भूमि को आबाद किया।
- आर्थिक उपयोगिता के आधार पर भूमि का वर्गीकरण किया गया, गुप्तकाल के प्रसिद्ध ग्रन्थ अमरकोष में 12 प्रकार की भूमियों का उल्लेख मिलता है।
- अब जमीन का विस्तृत ब्यौरा तैयार किया जाता था तथा इसकी नाप करवा कर इसकी सीमा रेखा निश्चित कर दी जाती थी।
- सिंचाई के लिए कृषक वर्षा पर निर्भर होते थे तथापि राज्य द्वारा कृत्रिम सिंचाई की व्यवस्था की जाती। सुदर्शन झील की मरम्मत की जानकारी मिलती है इसके अतिरिक्त सिंचाई की नवीन तकनीकी के रूप में संभवतः अवघट्ट क्योंकि बाणभट्ट एक छटीयंत्र (रहट) की सूचना देते हैं।
- किसान अनाज के अतिरिक्त दलहन, तिलहन, फल, सब्जी, कपास, नील तथा मसाले उपजाते थे।

### ➤ उद्योग धन्ये –

- गुप्तकाल के पूर्वाद्ध में उद्योग – धन्ये बेहतर स्थिति में थे, इस काल में बहुत से उद्योग रोजानामचे (Day to Day) के व्यवहार में आने वाली वस्तुओं से संबंध थे। उदाहरण के लिए टोकरियां बनाना, फर्नीचर का निर्माण मृणमूर्तिया तथा पत्थर एवं धातु कर्म।
- इस काल में सूती वस्त्र, रेशमी वस्त्र तथा ऊनी वस्त्र के निर्माण को विशेष प्रोत्साहन मिला।
- अजन्ता की गुफाओं में बने चित्रों में बेहतर किस्म के वस्त्र प्रयोग का साक्ष्य मिलता है।
- इस काल में दासपुरा, कामरूप, मथुरा तथा बनारस आदि शहर वस्त्र निर्माण के महत्वपूर्ण केन्द्र थे।
- गुप्तकाल चमड़े तथा आभूषण निर्माण के कार्य भी विकसित अवस्था में थे।
- दिल्ली स्थिति मेहरौली का लौह स्तंभ तथा गुप्तकालीन कलात्मक सिक्के उन्नत गुप्तकालीन धातुकला को दर्शाता है।

### ➤ वाणिज्य-व्यापार –

- गुप्तकाल के पूर्वाद्ध में आंतरिक एवं बाह्य व्यापार उन्नत अवस्था में था।
- व्यवसाय एवं उद्योग का संचालन श्रेणियां करती थीं। मंदसौर लेख में पट्टवाय श्रेणी (रेशम श्रेणी) तथा इंदौर लेख में तैलिक श्रेणी का उल्लेख मिलता है।
- इस समय विदेश व्यापार में भारत के सहयोगी देश थे – विजेन्टियन साम्राज्य, चीन, ईरान, श्रीलंका तथा दक्षिण पूर्व एशिया के देश।
- भारत चीन एवं विजेन्टाइन साम्राज्य के मध्य मध्यस्थ की भूमिका निभाता था।
- गुप्तकाल में प्रमुख निर्यात की मदे थी – रेशम, मसाले, विभिन्न प्रकार के वस्त्र तथा कीमती द्रव्य एवं आयात की प्रमुख आयतित वस्तुओं में चीन से रेशम, चीनाशुंका, इथोपिया से हाथी दाँत तथा अरब, ईरान तथा बैकिर्द्या से घोड़ों का आयात किया जाता था।
- 364 ई.वी. में रोमन साम्राज्य के विभाजन एवं गुप्तकाल के अंतिम चरण में हूण आक्रमण के कारण विदेशी व्यापार में भी गिरावट आई थी, उदाहरण के लिए कुमारगुप्त प्रथम कालीन मंदसौर के राज्यपाल बंधु वर्मा के मंदसौर अभिलेख से ज्ञात होता है कि दासपुरा में गुजरात के लाट क्षेत्र में रेशमबुनकरों की श्रेणी अपना कार्य छोड़ कर आयी। साथ ही आपदधर्म के माध्यम से बड़ी संख्या में वैश्यों ने अपना कार्य छोड़कर कृषक या सैनिक कार्यों को अपनाया।

### ➤ यातायात एवं संचार –

- इस काल में प्रमुख शहरों को आपस में जोड़े जाने की जानकारी के साथ-साथ कुछ बन्दरगाहों की जानकारी मिलती है जैसे – पूर्वी तट पर ताम्रलिप्ति तथा पश्चिमी तट पर भड़ौच प्रमुख बन्दरगाह थे। पश्चिमी देशों के साथ व्यापार भड़ौच तथा पूर्वी एवं दक्षिण एशियाई देशों के साथ ताम्रलिप्ति बन्दरगाह से व्यापार होता था।

### ➤ मुद्रा व्यवस्था –

- उन्नत शिल्प उत्पादन एवं विकसित वाणिज्य व्यापार के कारण गुप्तकाल में मुद्रा अर्थ व्यवस्था बेहतर बेहतर स्थिति बनी रही।
- गुप्त शासकों ने सर्वाधिक संख्या में सोने के सिक्के जारी किये तथा चाँदी एवं तांबे के सिक्कों की भी जानकारी मिलती है।
- गुप्तों के सोने, चाँदी तथा तांबे के सिक्कों को क्रमशः दीनार, रूपक तथा माषक कहा जाता था।





- गुप्त शासकों में सर्वप्रथम सोने, चाँदी तथा तांबे के सिक्के क्रमशः चन्द्रगुप्त-I, चन्द्रगुप्त-II तथा रामगुप्त ने चलाए।
- गुप्तकाल की सामान्य जनता लेन-देन में कौड़ी का उपयोग करती थी।
- गुप्तकालीन मुद्राओं का सबसे बड़ा मुद्रा भण्डार बयाना (राजस्थान) से प्राप्त हुआ।

#### ➤ नगरीकरण –

- गुप्तकाल के पूर्वाञ्चल में उन्नत उद्योग एवं वाणिज्य व्यापार के चलते नगरीकरण को प्रोत्साहन मिला, इस काल के प्रमुख नगरों के पाटलिपुत्र, उज्जैन, वैशाली आदि नगरों का विकास हुआ।
- गुप्तकाल के प्रारंभिक चरण में अभूतपूर्व प्रगति हुई किंतु अंतिम चरण में व्यापार वाणिज्य की समृद्धि का क्रम बरकरार नहीं रह सका। जिसके निम्नलिखित कारण हैं –
- रोमन साम्राज्य का विभाजन तथा बेजेन्टाइन साम्राज्य द्वारा चीन से रेशम बनाने की कला सीख लेना जिससे भारत की मध्यस्थी की भूमिका समाप्त हो गई।
- साथ ही आन्तरिक व्यापार का सामंतीकरण हो गया, जिससे वाणिज्य व्यापार, मुद्रा व्यवस्था एवं नगरीकरण को धक्का लगा।

### गुप्तकालीन कला एवं संस्कृति

कला के क्षेत्र में गुप्त काल ने क्लासिकल मानदंड ग्रहण किया, गुप्तकाल में कला का केन्द्र ब्राह्मणवादी तत्त्व बन गये, जिन्हे निम्नलिखित बिन्दुओं के अनुसार समझा सकते हैं।

#### ➤ स्थापत्य कला – मंदिर

- गुप्तकाल स्थापत्य कला का सर्वोत्तम काल है, वस्तुतः मंदिर के अवशेष हमें इसी काल से मिलने लगे हैं।
- गुप्तकालीन मंदिर नागर शैली में निर्मित थे जिनकी निम्नलिखित विशेषताएँ थीं।
  - 1. इस काल में मंदिर को ईट तथा पत्थर से बनाया जाता था।
  - 2. मंदिरों का निर्माण सामान्यतः एक ऊँचे चबूतरे पर करते थे, जिस पर चढ़ने के लिए चारों ओर से सीढ़ियाँ बनाई जाती थीं।
  - 3. प्रारंभिक मंदिरों की छते चपटी होती थी, किन्तु आगे चलकर शिखर भी बनाये जाने लगे।
  - 4. मंदिर के भीतर एक चौकोर कक्ष में मूर्ति रखी जाती थी, जिसे गर्भगृह कहते थे।
  - 5. गर्भगृह तीन ओर दीवारों से घिरा होता था, जबकि एक ओर से प्रवेश द्वार होता था।
  - 6. प्रवेश द्वार पर बनी चौखट पर मकरवाहिनी गंगा और कूर्मवाहिनी यमुना की आकृतियाँ उत्कीर्ण मिलती हैं, साथ ही अन्य मंगल चिन्ह अलंकृत रहते थे।
  - 7. प्रवेश द्वार एक सभा भवन की ओर खुलता था, जिसे मंडप कहा जाता था।
  - 8. गर्भगृह के चारों ओर प्रदक्षिणा पथ बना होता था।
  - 9. मंदिर का भीतरी भाग सादा तथा बाहरी भाग अलंकृत होता था।

#### ➤ गुप्तकालीन प्रमुख मंदिर – स्वतंत्र मंदिर

- देवगढ़ का दशावतार मंदिर – झांसी (उ.प्र.)
- इस मंदिर का निर्माण ईटो से हुआ है, जिसमें शिखर का निर्माण भी किया गया।
- इसमें भगवान विष्णु को शेषनाग की शैल्या पर विराजमान दर्शाया गया है।
- भीतरगांव का शिव व विष्णु मंदिर – कानपुर (उ.प्र.)
- इसका भी निर्माण ईटो से हुआ है, जिसमें शिखर का भी निर्माण किया गया।
- तिगवां का विष्णु मंदिर – कटनी (म.प्र.)
- भूमरा का शिव मंदिर – सतना (नागौद) म.प्र.
- सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर (छत्तीसगढ़) – ईटो द्वारा निर्मित
- खोह का शिव मंदिर – उचेहरा (सतना) म.प्र.



- g. नचना कुठार का पार्वती मंदिर – (पन्ना) म.प्र.
- h. उदयगिरि का विष्णु मंदिर (विदिशा) म.प्र.

### ➤ गुप्तकालीन गुफा मंदिर –

पहाड़ों से काट कर बनाये गए मंदिरों को गुहा मंदिर कहा गया।

#### A. ब्राह्मण मंदिर –

उदयगिरि का वराह मंदिर, जिसका निर्माण चन्द्रगुप्त द्वितीय के संधिविग्रहिक वीरसेन ने करवाया।

#### B. बौद्ध मंदिर –

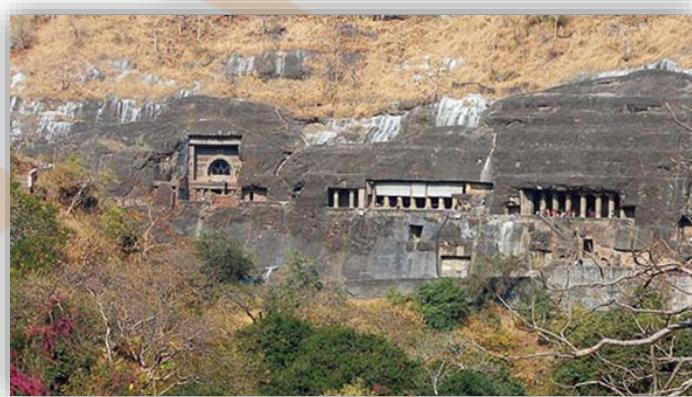
अजन्ता का गुहा मंदिर



### ➤ मूर्तिकला –

गुप्तकालीन मूर्तिकला की विशेषता –

- a. गुप्तकाल की मूर्तियां अधिक शालीन एवं नैतिक प्रतीत होती हैं।
- b. कुषाणकालीन मूर्तियों में जहां नग्नता प्रदर्शित हुई थी, वही गुप्तकालीन मूर्तियों को वस्त्रों से ढका गया था।
- c. गुप्तकालीन मूर्तियों सुसज्जित प्रभा मण्डल बनाये गए, जबकि कुषाणकालीन मूर्तियों के प्रभामण्डल सादे थे।
- d. गुप्तकालीन मूर्तियों में आभूषण के स्थान पर केशसज्जा पर विशेष बल दिया गया है।



### ➤ गुप्तकालीन प्रमुख मूर्तियां –

#### a. सारनाथ में बैठे हुए बुद्ध की मूर्ति –

- यह धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा में है।
- b. मथुरा में खड़े बुद्ध की मूर्ति –

- यह एकमात्र ऐसी मूर्ति है, जो कुषाण कला से प्रभावित है।

#### c. मनकुंवर (इलाहाबाद) की बुद्ध मूर्ति –

- अभयमुद्रा में, ऊपरी भाग नग्न तथा मांसल

#### d. सुल्तानगंज (बिहार) की बुद्ध मूर्ति –

- अभयमुद्रा

### ➤ चित्रकला –

गुप्तकाल में चित्रकला का भी विकास हुआ, इस काल की चित्रकला का उदाहरण, अजन्ता तथा बाघ की गुफाओं से मिलता है।

#### a. अजन्ता चित्रकला –

- अजन्ता की गुफाए महाराष्ट्र के औरंगाबाद में स्थित है।
- इसकी खोज 1819 ई. में जॉन स्मिथ ने की थी।
- अजंता में कुल 29 गुफा थी, जो ब्राह्मण तथा बौद्ध धर्म से संबंधित थी, परन्तु 7 गुफाए मुख्य हैं – 1, 2, 9, 10, 16, 17, 19
- इसमें गुफा संख्या 09 तथा 10, 1 एवं 2 ई.वी. की है, जो सातवाहनों के शासन काल में निर्मित हुई।
- गुफा संख्या 01 एवं 02 7वीं शताब्दी (वातापी के चालुक्य) की है।
- चित्रों को बनाने में लाल, हरा, नीला, सफेद, काला तथा भूरे रंग का प्रयोग हुआ है, अजन्ता के चित्रों से पूर्व कहीं भी चित्रण में नीले रंग का प्रयोग नहीं मिलता है।
- इन चित्रों को बनाने में फ्रैंस्को तथा टेम्परा दोनों विधियों का प्रयोग किया गया है।

### ✓ गुफा संख्या सौलह –

मरणासन्न राजकुमारी (dying Princess) का चित्र तथा बुद्ध के गृहत्याग का चित्रण, सुजाता का खीर खिलाना, महामाया का स्वप्न, बुद्ध के जीवन के चार दृश्य आदि का चित्रण किया गया है।





✓ गुफा संख्या सत्रह –

- इसे चित्रशाला कहते हैं।
- इसमें माता तथा शिशु का चित्र अंकित है।

✓ पहली एवं दूसरी गुफा –

- इसमें चालुक्य नरेश पुलकेशिन-II, फारसी राजदूत का स्वागत करते हुये दिखाया गया है।
- साथ ही बुद्ध की मार विजय को भी चित्रित किया गया है।

✓ बाघ की चित्रकला –

- स्थान – म.प्र. के धार जिले में।
- खोज – 1818 डेंगर फील्ड
- गुफाओं की कुल संख्या 09 है।
- किंतु चित्रों के साक्ष्य केवल पाँच गुफाओं में मिलते हैं, इन्हें पंचपांडव गुफा कहते हैं।
- इस गुफा का सबसे प्रसिद्ध चित्र संगीत एवं नृत्य का एक दृश्य है।

### गुप्तकाल भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग

भूमिका – किसी काल को स्वर्णयुग कहने का कारण उस काल की चतुर्दिक् समृद्धि एवं सफलता से है, जैसे यूनान में पैशाक्लीज के काल को तथा इंग्लैण्ड में 16वीं सदी के एलिजाबेथ के काल को स्वर्ण युग माना गया है।

गुप्तकाल को स्वर्णयुग कहने के निम्नलिखित कारण हैं –

➤ राजनैतिक एकता का काल –

मौर्यों के बाद गुप्तसाम्राटों ने एक लंबे समय अंतराल के पश्चात् साम्राज्यवाद की परंपरा को पुनर्जीवित किया तथा कुषाण साम्राज्य के पतनोपरांत छोटे-छोटे राज्यों में बिखरे भारत को शासन के एक सूत्र में बांध दिया, उदाहरण के लिए। गुप्त साम्राज्य उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में विंध्य क्षेत्र तक तथा पूर्व में बंगाल से लेकर पश्चिम में सौराष्ट्र तक फैला हुआ था।

➤ महान सम्राटों का काल –

गुप्तकाल में अनेक महान सम्राटों का उदय हुआ, जिन्होंने अपनी विजयों से उत्तर भारत को बांध दिया।

- समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय, कुमारगुप्त, स्कन्दगुप्त आदि इस काल के योग्य तथा प्रतापी सम्राट थे।
- समुद्रगुप्त का आदर्श सम्पूर्ण पृथ्वी को बाँधना (धरणीबंध) था। उसने न केवल आर्यवर्त्त का उन्मूलन किया, अपितु सुदूर दक्षिण तक अपनी विजय यात्रा की।
- इसी प्रकार चन्द्रगुप्त-II ने कृत्स्नपृथ्वीजयार्थन (समस्त पृथ्वी को जीतना) को आदर्श बनाया, शकों का उन्मूलन किया।
- स्कन्दगुप्त ने बर्बर हूणों को रोक कर भारत को सुरक्षित किया।

➤ धार्मिक सहिष्णुता का काल –

यद्यपि गुप्तसम्राट वैष्णव थे, परन्तु अन्य धर्मों के प्रति वे पूर्णरूपेण उदार एवं सहिष्णु बने रहे, उन्होंने न तो अपने धर्म को बालात् किसी के ऊपर लादने का प्रयास किया और न ही अन्य धर्मावलम्बियों के प्रति किसी प्रकार का अत्याचार किया।

- गुप्त सम्राटों ने बिना किसी भेद-भाव के उच्च प्रशासनिक पदों पर विभिन्न धर्मानुयायियों की नियुक्तियाँ की थी, जैसे चन्द्रगुप्त-II का संधिविग्रहिक वीरसेन साब शैव था वही चन्द्रगुप्त-II का सेनापति आप्रकार्द्धव बौद्ध था।
- कुमारगुप्त ने बौद्ध विश्वविद्यालय नालंदा का निर्माण कराया तथा फ़ाहियान भारतीय शासकों की सहिष्णुता की प्रशंसा करता है।

➤ उच्च प्रशासनिक व्यवस्था का काल –

- महान गुप्त नरेशों ने उदार एवं लोकोपकारी शासन व्यवस्था का निर्माण किया।
- सम्पूर्ण गुप्त साम्राज्य में भौतिक एवं नैतिक समृद्धि का वातावरण व्याप्त था।
- गुप्त साम्राज्य में आवागमन पूर्णतः सुरक्षित था, फ़ाहियान जैसे चीनी यात्री को भी इस संबंध में शिकायत का मौका नहीं मिला।
- गुप्त शासकों ने प्राचीन भारतीय दण्ड व्यवस्था के कड़े नियमों को उदार तथा मृदु बना दिया और मृत्युदण्ड को पूर्णतया समाप्त कर दिया। इसके बावजूद अपराध नहीं होते थे।



- इस काल की शान्ति व्यवस्था का उल्लेख करते हुए कालिदास लिखते कि 'उपवनो मे सोती हुई मदिरामत्त सुन्दरियों के वस्त्रों को वायु तक स्पर्श नहीं कर सकती थी, तो भला उनके आभूषणों को चुराने का साहस किसमें था।

### ➤ आर्थिक समृद्धि का काल –

- प्रारम्भिक गुप्तकाल आर्थिक समृद्धि का काल था। भूमिदान अनुदान के माध्यम से कृषि योग्य भूमि का विस्तार हुआ था।
- शिल्प उद्योग एवं वाणिज्य व्यापार को भी प्रोत्साहन मिला था। गुप्त शासकों के अन्तर्गत भारत व्यापारिक सम्बन्ध पश्चिम में अरब, ईरान, रोम एवं इथोपिया, जबकि पूर्व में चीन एवं दक्षिणी-पूर्वी एशियाई देशों के साथ मजबूत हुए थे।
  - समुद्रगुप्त द्वारा बंगाल विजय एवं चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य द्वारा गुजरात विजय के उपरान्त क्रमशः ताप्रलिप्ति एवं भड़ौच के बंदरगाहों पर गुप्तों का अधिकार हो गया था।
  - गुप्त काल में सबसे अधिक सोने की मुद्रा का प्रचलन हुआ।

### ➤ साहित्य एवं कला के विकास का काल –

साहित्य एवं कला के विकास की दृष्टि से इस युग को क्लासिकल युग माना जाता है अर्थात् साहित्य और कला ने वे मानदंड धारण किये जिन्होंने परवर्ती काल के मॉडल को भी प्रभावित करना प्रारंभ किया। कालिदास, विशाखदत्त एवं अमरसिंह की रचनायें इस काल की विशिष्ट उपलब्धियाँ हैं। फिर इसी काल में वत्सभट्टी एवं हरिषण जैसे महान् कवि हुए। इसी प्रकार देवगढ़, अजंता तथा भीतरगांव के मंदिर, अजन्ता तथा बाघ के जीवंत गुफा, चित्र तथा उदयगिरी का गुहा मंदिर गुप्तकाल की विशिष्ट कलात्मक उपलब्धियाँ हैं। इस काल में ही स्थापत्य के क्षेत्र में नागर शैली का आधार निर्मित हुआ।

### ➤ गणित एवं खगोलशास्त्र के विकास का काल –

गणित एवं खगोलशास्त्र के क्षेत्र में आर्यभट्ट तथा वराहमिहिर की उपलब्धियाँ स्मरणीय हैं। इस काल में धातुकला का भी बेहतर विकास दिखता है। दिल्ली स्थित मेहरौली लौह स्तंभ उन्नत धातु कला का उदाहरण है। चिकित्सा के क्षेत्र में धनवंतरी जैसे विद्वानों का उदय इसी काल में देखा जा सकता है।

## गुप्त साम्राज्य का पतन

दो शताब्दियों के निरंतर उत्थान के पश्चात् शक्तिशाली गुप्त साम्राज्य, इस वंश के अंतिम महान् शासक स्कन्दगुप्त की मृत्यु के पश्चात्, गुप्त साम्राज्य पतन की ओर अग्रसर हुआ, जिसके निम्नलिखित कारण हैं –

### ➤ अयोग्य उत्तराधिकारी –

- गुप्त साम्राज्य के पतन का तात्कालिक कारण यह था, कि स्कन्दगुप्त के बाद शासन करने वाले राजाओं में योग्यता एवं कुशलता का अभाव था। उनमें न तो साम्राज्य विस्तार की भूख थी, और न ही विदेशी शत्रुओं से लड़ने की शक्ति।

### ➤ विदेशी आक्रमण –

- मध्य एशिया की पुष्टिमित्र जाति तथा हूणों के निरंतर आक्रमण से गुप्तों की शक्ति में हास हुआ, परिणामस्वरूप विघटन की प्रक्रिया प्रारंभ हो गई।

### ➤ उच्च पदों का आनुवांशिक होना –

गुप्तकाल में उच्च पद आनुवांशिक हो गये, जिसे अयोग्य लोग पदों पर आसीन होने लगे।

- साथ ही एक ही व्यक्ति एक से अधिक पदों पर आसीन होने लगे।

### ➤ सामंतवाद –

भूमि अनुदान के परिणामस्वरूप सामंती व्यवस्था का उदय हुआ। यह सामंत अपने क्षेत्र में सैना रखते थे तथा अपने क्षेत्र से भूराजस्व वसूलते थे।

- इस कारण केन्द्र को प्राप्त होने वाली आय अब सामंतों को प्राप्त होने लगी।
- अब केन्द्रीय सत्ता की सेना पर आश्रित हो गयी, परिणामस्वरूप केन्द्र की सैन्य कुशलता भी प्रभावित हुई।
- जब केन्द्र कमजोर होता, सामंत अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर देता, परिणामस्वरूप साम्राज्य का पतन हो गया।

### ➤ वाणिज्य – व्यापार में गिरावट –

- गुप्त शासन के अंतिम समय में हूणों के निरंतर आक्रमण से बाह्य व्यापार का हास हुआ साथ ही आंतरिक व्यापार का भी सामंतीकरण हो गया जिससे वाणिज्य-व्यापार में गिरावट आयी।

### ➤ बौद्ध धर्म का प्रभाव –

- प्रारंभिक गुप्त शासक ब्राह्मण धर्मानुयायी थे। वे चक्रवर्ती सम्राट बनने की अकांक्षा रखते थे। समुद्रगुप्त का आदर्श "धरणिबन्ध" तथा उसके पुत्र चन्द्रगुप्त-II का आदर्श "कृत्स्नपृथ्वीजयर्थन" था।





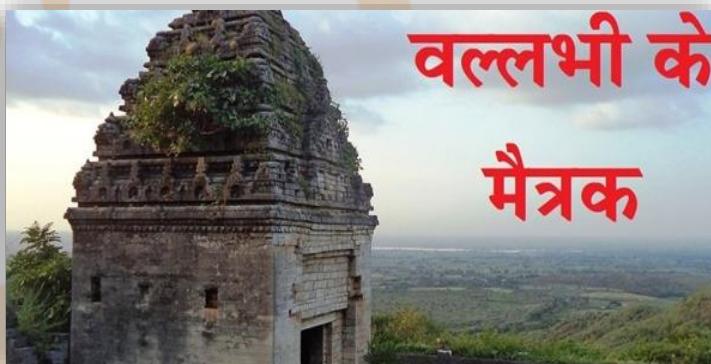
- परंतु कुमारगुप्त-I के समय में गुप्त शासकों पर बौद्ध धर्म की छाप पड़ने लगी। परिणाम स्वरूप अब गुप्त शासक पृथ्वी-विजय के स्थान पर पुण्यार्जन की चिन्ता में लग गये। इन्होंने अपने राज्य को चैत्यों और बिहारों के सजाने में ही गौरव माना इससे उनकी युद्धप्रियता जाती रही।
- बृद्धगुप्त तथा नरसिंहगुप्त जैसे शासक बौद्धधर्म में डूबे रहे तथा हूणों का सफलता पूर्वक सामना नहीं कर सके।

### गुप्तों के पतन के पश्चात उत्तर भारतीय राज्य

- वल्लभी के मैत्रक
- पंजाब के हूण
- मालवा का यशोधर्मन
- मगध और मालवा के उत्तरगुप्त
- कन्नौज के मौखिये
- थानेश्वर का वर्धन राजवंश

### वल्लभी का मैत्रक वंश

- सामंत – गुप्तों के
- स्थान – गुजरात
- संस्थापक – भट्टार्क प्रथम (475–510 ई.) – गुप्तों के समय सैनिक पदाधिकारी



- ❖ धर्मदित्य / शिलादित्य / विक्रमादित्य –
- इसने मालवा तक के क्षेत्र को विजित किया, इसका उल्लेख चीनी यात्री ह्वेनसांग मो—ला—पो (मालवा) के राजा शिलादित्य का उल्लेख करता है, जो एक बौद्ध था।
- ह्वेनसांग के अनुसार वह एक योग्य एवं उदार शासक था।
- ❖ ध्रुवसेन-II / बलादित्य –
- यह हर्षवर्धन के समकालीन था, इसी के शासनकाल ह्वेनसांग भारत में आया था।
- ह्वेनसांग के अनुसार 'वह उतावले स्वभाव तथा संकुचित विचार' का व्यक्ति था।
- ह्वेनसांग के अनुसार ध्रुवसेन-II हर्षवर्धन का दामाद था।
- ❖ धरसेन चतुर्थ – यह मैत्रक वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक था।
- इसने 'परमभट्टारक, महाराजाधिराज, परमेश्वर, चक्रवर्तिन' जैसी सार्वभौम नरेश की उपाधियाँ धारण की थी।
- ❖ शिलादित्य सप्तम् – अन्तिम ज्ञात शासक
- मैत्रकों का अन्त अरबों ने किया, तथा वल्लभी को पूर्णतया नष्ट—भ्रष्ट कर दिया।
- वल्लभी शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था, जिसे अरबों ने नष्ट कर दिया।

### पंजाब के हूण

- हूण मध्य एशिया में निवास करने वाली एक खानाबदोश और बर्बर जाति थी।
- जनसंख्या वृद्धि तथा पारस्परिक कलह के कारण अपना मूल निवास स्थान छोड़ने पर बाध्य हुए।
- सर्वप्रथम चीन की पश्चिमी सीमा पर निवास करने वाली यू—ची जाति को परास्त कर उन्होंने यू—ची लोगों को अपना मूल निवास स्थान छोड़ने के लिये विवश किया। तत्पश्चात वे स्वयं – मंगोलिया से पश्चिम की ओर चल पड़े कालान्तर में उनकी दो शाखायें हो गयी।
  - पश्चिमी शाखा
  - पूर्वी शाखा
- पश्चिमी शाखा के हूण यूराल पर्वत पार करते हुए रोम पहुँचे जिन्होंने शक्तिशाली रोमन साम्राज्य को नष्ट कर दिया।
- हूणों की पूर्वी शाखा दक्षिण की ओर बढ़ी तथा आक्सस नदी—घाटी में बस गयी।



- पूर्वी शाखा के हूण एफथलाइट अथवा श्वेत हूण के नामों से जाने जाते हैं।
- इसी पूर्वी शाखा के हूणों ने खुशनवाज के नेतृत्व में स्कन्दगुप्त के शासनकाल में आक्रमण किया, इसके स्कन्दगुप्त ने हूणों को बुरी तरह पराजित किया।

### ❖ तोरमाण –

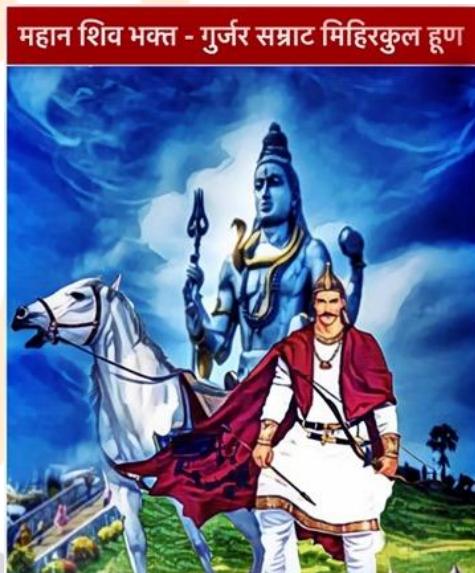
- स्कन्दगुप्त की मृत्यु के बाद हूणों ने गंगाधाटी पर पुनः आक्रमण किया, इसके दूसरे आक्रमण का नेता तोरमाण था।
- तोरमाण ने बुधगुप्त को पराजित किया तथा एरण पर अधिकार कर लिया, मध्यभारत के एरण नामक स्थान से वराह प्रतिमा पर खुदा हुआ लेख मिलता है, जिससे पता चलता है कि धन्यविष्णु उसके शासन काल में मालवा में तोरमाण का सामन्त था।
  - धन्यविष्णु के पहले, इसका बड़ा भाई मातृ विष्णु मालवा में बुद्धगुप्त का सामन्त था।
  - तोरमाण का युद्ध भी प्रसिद्ध गुप्त शासक भानुगुप्त से हुआ था, इसी से युद्ध करते हुए, भानुगुप्त के सेनापति गोपराज की मृत्यु हो गयी थी।
  - जैन ग्रन्थ कुवलयमाला से पता चलता है कि इसकी राजधानी चन्द्रभागा (चिनाब नदी) के तट पर स्थित पवैया में थी।
  - ह्वेनसांग के अनुसार तोरमाण की अधीनता गुप्त शासक नरसिंह बलादित्य भी स्वीकार करता था।
  - तोरमाण प्रथम शासक था, जिसने मध्यभारत तक अपना राज्य फैलाया।

### ❖ मिहिरकुल –

- तोरमाण का पुत्र मिहिरकुल अत्यन्त क्रूर और अत्याचारी हूण शासक हुआ।
- ह्वेनसांग तथा सुंग-युंग ने मिहिरकुल की राजधानी क्रमशः शाकल तथा गांधार बताई है।
- जब मगध के शासक बालादित्य ने उसके अत्याचारों के विषय में सुना तो उसने अपने राज्य की सीमाओं की कड़ी निगरानी रखी तथा मिहिरकुल को कर देना बन्द कर दिया, परिणामस्वरूप मिहिरकुल ने मगधनरेश बालादित्य पर आक्रमण कर दिया, परन्तु बालादित्य ने मिहिरकुल को पराजित कर बन्दी बना लिया लेकिन अपनी माता के कहने पर उसे मुक्त कर दिया।
- मिहिरकुल ने कश्मीर में शरण ली, किन्तु उसने कश्मीर के शासक की हत्या कर दी एवं सिन्ध के राजा को भी मार डाला।
- मिहिरकुल ने ग्वालियर को विजित किया, जिसकी जानकारी मिहिरकुल के ग्वालियर अभिलेख से प्राप्त होती है।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार कालान्तर में मिहिरकुल को मालवा शासक यशोधर्मन ने भी पराजित किया था।
- कल्याण में मिहिरकुल को विनाश का देवता एवं जैन लेखक इसे 'दुष्टोः में प्रथम' कहते हैं।

Note – हूणों ने गधैया या गधिया नामक सिक्के चलवाए।

महान शिव भक्त - गुर्जर सम्राट मिहिरकुल हूण





## थानेश्वर का वर्द्धन राजवंश



**पुष्यभूति वंश या वर्द्धन वंश**

- प्रभाकरवर्द्धन
- राज्यवर्द्धन
- हर्षवर्द्धन

हर्षवर्द्धन

## वर्द्धन वंश की जानकारी का स्रोत

- |  |   |  |
|--|---|--|
| <p>↓</p> <p>साहित्य</p> <ul style="list-style-type: none"> <li>• हर्षचरित</li> <li>• कादम्बरी</li> <li>• आर्यमंजूश्री मूलकल्प</li> <li>• प्रियदर्शिका</li> <li>• रत्नावली</li> <li>• नागानन्द</li> </ul> | <p>पुरातत्व</p> <ul style="list-style-type: none"> <li>• बांसखेड़ा अभिलेख</li> <li>• मधुवन लेख</li> <li>• मुहरे</li> <li>• एहोल का लेख</li> </ul> | <p>विदेशी यात्रियों का विवरण</p> <ul style="list-style-type: none"> <li>• ह्वेनसांग—सि यू – की</li> <li>• इत्सिंग</li> </ul> |
|--|---|--|
- ✓ वर्द्धन वंश को पुष्यभूति वंश भी कहा जाता था, सम्भवतः इस वंश का संस्थापक पुष्यभूति रहा होगा।
- ✓ परन्तु हर्ष के लेखों में वर्द्धन वंश का संस्थापक नरवर्धन को माना गया है।
- ✓ ह्वेनसांग ने हर्षवर्द्धन को फी—शो जाति का माना है, जिसका तात्पर्य वैश्य जाति से था।

## ❖ प्रभाकर वर्द्धन —

- चौथा राजा था, जिसने परमभट्टारक तथा महाराजाधिराज जैसी सम्मान जनक उपाधियाँ धारण की।
- अन्य उपाधियाँ —
  - हूण हरिकेसरी —
  - प्रभाकर वर्द्धन ने हूण, गुर्जर, गंधार तथा सिन्धु के राजा एवं लाट तथा मालवा के राजाओं पर विजयी पाई।
  - प्रभाकर वर्द्धन के दो पुत्र राजवर्धन तथा हर्षवर्द्धन एवं एक पुत्री राज्य श्री थी।
  - कालान्तर में राज्यश्री का विवाह कन्नौज के मौखरि शासक ग्रहवर्मा के साथ हुआ।
  - प्रभाकरवर्द्धन के शासनकाल के अन्त में हूणों ने उस पर आक्रमण किया, प्रभाकर वर्द्धन ने अपने पुत्र राज वर्द्धन को हूणों के विनाश हेतु भेजा।
  - प्रभाकर वर्द्धन की मृत्यु के उपरान्त राज्यवर्धन ने थानेश्वर की राजगद्दी संभाली थी।
  - इसके समय मालवा के उत्तर गुप्त वंश के शासक देवगुप्त ने बंगाल के गौड़ वंश के शासक शंशाक के साथ मिलकर कन्नौज के शासक ग्रहवर्मन की हत्या कर दी थी तथा राजश्री को काराग्रह में डाल दिया।
  - राज्यवर्धन अपनी बहन का प्रतिशोध लेने कन्नौज गया, जहां उसने देवगुप्त की हत्या कर दी, किन्तु गौड़ नरेश शंशाक ने छलपूर्वक उसकी हत्या कर दी।





### ❖ हर्षवर्धन –

- राज्यवर्धन की मृत्यु के पश्चात हर्षवर्धन ने सिंहासन स्वीकार करने से मना कर दिया, किन्तु सेनापति सिंहनाद के कहने पर हर्ष ने राजगद्दी प्राप्त कर ली।
- राज्यरोहण के समय हर्ष के सामने दो तात्कालिक समस्याये थी –
  - शशांक को मार कर बड़े भाई राज्यवर्घ्न की हत्या का बदला लेना।
  - राज्यश्री को कन्नौज के कारगार से मुक्त कराना।
- इसके अतिरिक्त हर्ष उन सभी राजाओं एवं सामन्तों को भी दण्ड देना चाहता था जिन्होंने समय का लाभ उठाते हुए अपनी स्वतंत्रता घोषित कर दी थी। अतः उसने शीघ्र ही एक सेना एकत्र की तथा युद्ध के लिए प्रस्थान कर दिया।

### हर्षवर्घन की उपलब्धियाँ

#### ➤ सैन्य उपलब्धियाँ –

- a. कन्नौज पर अधिकार –
- हर्षवर्घन ने राज्यरोहण के पश्चात सर्वप्रथम काराग्रह से भागकर सती होने जा रही राज्यश्री को बचाया तथा उसे लेकर हर्ष कन्नौज वापिस आया।
- कन्नौज के मंत्रियों ने हर्ष से निवेदन किया कि वह कन्नौज राज्य का भार भी अपने ऊपर ले लिया, बहन की सहायता के लिए हर्षवर्घन ने थानेश्वर से अपनी राजधानी कन्नौज स्थानान्तरित कर ली।
- b. हर्ष का गौड़ अभियान –
- हर्ष ने गौड़ अभियान प्रारंभ करने में पहले गौड़ के पड़ोसी राज्य कामरूप के शासक भास्करवर्मा से मित्रता की।
- हर्षवर्घन एवं शशांक के मध्य हुए युद्ध का परिणाम अस्पष्ट है।
- c. वल्लभी का अभियान –
- वल्लभी राज्य आधुनिक गुजरात प्रांत में स्थित था।
- वहाँ के शासक ध्रुवसेन-II था, हर्ष ने उस पर आक्रमण किया ध्रुवसेन-II ने भागकर भड़ैच के गुर्जर शासक के दरबार में शरण ली।
- कालांतर में हर्ष ने ध्रुवसेन-II से अपनी पुत्री का विवाह कर वल्लभी के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किये।
- d. सिन्ध के साथ युद्ध –
- ह्वेनसांग के अनुसार सिन्धु नरेश साहसीराय जो कि एक शूद्र था हर्ष ने उसे आधीनता स्वीकार करने पर मजबूर कर दिया।
- e. पुलकेशिन-II के साथ युद्ध –
- हर्ष की विजयों के फलस्वरूप उसके राज्य की सीमा नर्मदा नदी तक पहुँच गयी। उधर पुलकेशिन भी उत्तर की ओर राज्य का विस्तार चाहता था।
- नर्मदा नदी के टट पर दोनों के मध्य युद्ध हुआ सम्भवतः इसमें हर्षवर्घन का प्रसार रोक दिया गया इस बात की जानकारी ऐहोल अभिलेख तथा ह्वेनसांग के विवरण से स्पष्ट होता था।
- f. गौड़ की द्वितीय विजय योजना –
- हर्षवर्घन ने पुनः शंशाक के राज्य को जीतने की योजना बनाई।
- शंशाक की मृत्यु के पश्चात हर्ष ने शंशाक द्वारा शासित राज्य-मगध, बंगाल तथा उड़ीसा पर अपना अधिकार कर लिया।
- g. नेपाल विजय –
- हर्षचरित से पता चलता है कि हर्ष ने हिमाच्छादित पर्वतों के दुर्गम प्रदेश से कर प्राप्त किया। नेपाल में हर्ष संवत् के प्रचलन के आधार पर कहा जा सकता है कि हर्ष ने नेपाल को पराजित किया हो।
- h. कश्मीर राज्य –
- हर्ष ने जब सुना कश्मीर में भगवान बुद्ध का एक दाँत है। वह स्वयं कश्मीर की सीमा पर आया तथा उसने दाँत के दर्शन और पूजा के निमित्त कश्मीर नरेश से आज्ञा माँगी। परंतु बौद्ध संघ ने इसे स्वीकार नहीं किया।
- किन्तु कश्मीर नरेश के कहने पर बौद्ध संघ दर्शन कराने हेतु तैयार हो गया।
- हर्ष ने जेसे ही बौद्ध के दाँत को देखा तो श्रद्धा- विहल हो उठा तथा अपना बल प्रयोग करके दाँत को अपने साथ उठा ले आया।
- इस प्रकार हर्षवर्घन के साम्राज्य में बंगाल, बिहार, उड़ीसा, मालवा आदि क्षेत्र शामिल थे तथा वल्लभी, सिन्ध, कश्मीर, नेपाल, कामरूप आदि क्षेत्रों पर भी उसका प्रभाव था।





- हर्ष ने संभवत 647 ई.वी. तक राज्य किया चूँकि उसका कोई उत्तराधिकारी नहीं था, अतः उसकी मृत्यु के बाद उत्तर भारत में पुनः अराजकता फैल गयी तथा कन्नौज पर अर्जुन नामक किसी स्थानीय शासक ने अधिकार कर लिया।

### ➤ धार्मिक उपलब्धियां –

- ह्वेनसांग एवं हर्षचरित के विवरण से ज्ञात होता है, कि हर्षवर्धन के पूर्वज शिव एवं सूर्य के उपासक थे। कल्हण की राजतरंगणी के अनुसार हर्षवर्धन प्रारंभ से शैव था। किन्तु आगे हर्ष ह्वेनसांग के प्रभाव में आकर हर्ष बौद्ध हो गया।
- हर्षवर्धन ने अनेक बौद्ध बिहारों एवं स्तूपों का निर्माण कराया साथ ही नालंदा विश्वविद्यालय को गांव दान में दिये।
- हर्षवर्धन प्रत्येक वर्ष कन्नौज में धर्मपरिषद का आयोजन करवाता था, जिसमें विभिन्न धर्मों एवं सम्प्रदाय के आचार्यों की एक विशाल सभा बुलवायी जाती थी।
- इसकी अध्यक्षता ह्वेनसांग ने की, यह समारोह 20 दिन तक चला तथा 21वें दिन बुद्ध की लगभग तीन फीट ऊँची स्वर्ण मूर्ति को हाथी पर रख एक भव्य जुलूस निकाला जाता था।
- हर्ष प्रत्येक पाँचवे वर्ष प्रयाग में महामोक्षपरिषद का आयोजन करवाता था।
- ह्वेनसांग स्वयं 6वें महामोक्षपरिषद में शामिल हुआ।
- यह समारोह 75 दिन तक चला तथा अन्त में हर्ष ने बारी-बारी से बुद्ध-सूर्य तथा शिव की प्रतिमाओं की पूजा की।
- प्रयाग के इस धार्मिक समारोह में हर्षवर्धन प्रभूत दान वितरित किया करता था।

### ➤ सांस्कृतिक उपलब्धियां –

- हर्षवर्धन स्वयं एक उच्चकोटि का विद्वान था, अतः अपने काल में उसने शिक्षा एवं साहित्य की उन्नति को पर्याप्त प्रोत्साहन दिया।
- ह्वेनसांग ने पंचविद्याओं की बात की शब्द विद्या (व्याकरण), शिल्प विद्या, चिकित्सा विद्या, हेतु विद्या (न्याय अथवा तर्क) तथा आध्यात्म विद्या का उल्लेख करता है।
- हर्ष ने स्वयं संस्कृत के तीन नाटक प्रियदर्शिका, रत्नावली तथा नागानन्द की रचना की।
- हर्ष के दरबार में अनेक विद्वान कवि एवं लेखक दरबारी कवि थे— इनमें बाणभट्ट, मयूर तथा मातांगदिवाकर के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। बाणभट्ट ने हर्षचरित तथा कादम्बरी की रचना की।
- मयूर ने सूर्य शतक नामक ग्रन्थ लिखा।
- कुछ विद्वान पूर्वमीमांसा के प्रकाण्ड विद्वान कुमारिलभट्ट को भी हर्षकालीन मानते हैं।

### संगम काल

#### ➤ जानकारी के स्रोत

- अशोक के अभिलेख
- महाभारत
- अष्टाध्यायी की पाणिनी
- हाथीगुंफा अभिलेख

#### ❖ संगम

संगम, तमिल प्रदेश के पाड्य शासकों के संरक्षण में हुआ।

#### ❖ प्रथम संगम –

- स्थान – मदुरा



- ◆ अध्यक्ष – अगस्तय ऋषि
- ◆ उपलब्ध ग्रन्थ – नहीं

#### ❖ द्वितीय संगम –

- ◆ स्थान – कपाट पुरम्
- ◆ अध्यक्ष अगस्तय ऋषि उनके शिष्य तोलकपियर
- ◆ उपलब्ध ग्रन्थ – तोल्कापियम्

(Note- तोल्कापियम् – तमिल व्याकरण की प्रथम पुस्तक)

#### ❖ तृतीय संगम –

- ◆ स्थान – मदुरा
- ◆ अध्यक्ष – नक्कीरर
- ◆ ग्रन्थ – एन्तुतोकै – (अहनानुरु तथा पुरनानुरु)
- ✓ अन्य – शिलप्पादिकारम् – (इलांगो – आदिकल)
- तमिल साहित्य का प्रथम महाकाव्य
- कोवलन कण्णगी की प्रेम कहानी
- तमिल काव्य का इलियड
- ✓ मणिमेकलै – (सीतलैसत्तनार)
- तमिल काव्य का ओडिसी ग्रन्थ
- ✓ जीवकचिन्तामणि – रचनाकार – तिरुन्वतदेवर / तिरुतक्वदेवर



## चेर राज्य

- सबसे प्राचीन राज्य
- राजधानी – करुयूर/वांजि
- राजकीय चिन्ह – धनुष एवं तीर
- बन्दरगाह – मुजरिस
- प्राचीन उल्लेख – (ऐतरेय ब्राह्मण में– चेरपाद का उल्लेख)
- चेर शब्द की उत्पत्ति तमिल शब्द चेरल/केरल से हुई है, जिसका अर्थ है – पर्वतीय देश।

#### ❖ उदियनजेरल –

- इसने महाभारत युद्ध में भाग लेने वाली सेनाओं को भरपेट भोजन कराया था।
- बड़ी पाकशाला थी जहां से वह जनता को उन्मुक्त रूप से भोजन का वितरण करता था।

#### ❖ नेडुनजेरल आदन –

- उपाधि – इमयवरम्बन
- यवन व्यापारियों को बंदी बना लिया।
- इसने दावा किया कि सारे भारत को जीत लिया तथा हिमालय पर चेर राज्यिन्ह उत्कीर्ण करवाया।
- इसका युद्ध चोल राजा से हुआ दोनों ही राजा मृत्यु को प्राप्त हुये तथा इनकी रानियों ने सती किया।

#### ❖ कुट्टुवन –

- शेनगुट्टुवन – लाल/भला चेर – महानतम् शासक
- उपाधि – कदाल पीराकोहिय / कदलपिरककोत्तिय जिसने समुद्र को मार भगाया हो)
- इसके समय पत्तिनी पूजा/कण्णगी पूजा प्रारंभ हुई।
- इसके भाई इलांगो आदिकल ने शिलप्पादिकारम की रचना की।



❖ पेरुनजरेल इरुम्पोरई –

- इसने आदिगङ्गामान को पराजित किया एवं (दक्षिण भारत में गन्ने की खेती प्रारंभ की)
- एक युद्ध में इसके पीठ पर घाव हो गया, इससे अपमानजनित होकर प्राण त्याग दिये।
- इस वंश का अन्तिम शासक गजमुख शेय (हाथी के आंख वाला) था, जिसे पाण्ड्य शासक नेहुजजेलियन ने उसे पराजित कर चेर राज्य की स्वाधीनता समाप्त की।

**चोल राज्य – अर्थ – नया देश –**

- राजधानी – उरैयूर
- राजकीय चिन्ह – बाघ
- बन्दरगाह – पुहर/कावेरीपट्टनम
- चोलों के उपनाम –
  - सेन्नई (सेनानायक)
  - सेम्बई (सिंही के वंशज)
  - बलावन (उपजाऊ भूमि के शासक)
  - किल्ली (प्रमुख)
  - चोलों के विषय में प्रथम जानकारी पाणिनी के अष्टाध्यायी से मिलती है।
- इलनजेत चेन्नी –
  - सुन्दर रथों के लिए प्रसिद्ध
- करिकाल –
  - वेणि का युद्ध – एक साथ 11 शासकों को पराजित किया।
  - वाहैप्परन्दलइ का युद्ध – एक साथ 9 शासकों को पराजित किया।
  - इसने अपनी शक्तिशाली नौसेना के दम पर श्रीलंका को विजित किया।
  - कावेरी नदी पर बांध बनवाया तथा कृषि के विकास के साथ-साथ तालाबों का निर्माण करवाया।
  - करिकाल वैदिक धर्मावलंबी था, इसने कई वैदिक यज्ञ करवाये।
  - इसे सात सुरों का ज्ञान था, तथा इसने हिमालय तक विजय की एवं ब्रज, मगध और अवंति को जीत लिया।
  - करिकाल के बाद उसके दोनों पुत्रों में युद्ध हुआ (नल गिल्ली एवं नेहुगिल्ली) जिससे चोल साम्राज्य कमज़ोर हुआ।

**पाण्ड्य राज्य**

- अर्थ – पुराना देश
- राजधानी – मदुरई
- राजकीय चिन्ह – मछली
- बन्दरगाह – कोर्कई (कोल्ची)
- ✓ उपनाम –
  - मिनावर – मछुआर
  - कबुरियार – कौरव से संबंधित
  - पंचावर – पांडव से संबंधित
  - कावर – अर्थशास्त्र
  - मावर – इंडिका
- ❖ नेडियोन –
  - सागर पूजा की परंपरा को आरंभ किया
  - ❖ पलशालै मुडुकुडमी –





- प्रथम पाड़य ऐतिहासिक शासक
- अनेक यज्ञशालाएं बनवाई
- ❖ नेझुनजेलियन –
- इसने तलैयालंगानम के युद्ध में चेरों तथा चोलों को पराजित किया तथा चेर शासक गजमुखशेय को बंदी बनाया।
- इसी के शासनकाल में कोवलन की दुखद घटना घटी।
  
- संगम कालीन अन्य तथ्य –
- संगमकालीन वंशों का प्रथम अभिलेखीय उल्लेख अशोक के अभिलेखों में मिलता है।
- सम्पूर्ण राज्यक्षेत्र को मंडलम कहा जाता था।
- राजा की न्याय सभा को नालवै/मनरम् कहा जाता था।
- सेनापति को एनाडि कहा जाता था।
- मण्डलम्–नाड–उर (नगर) – ग्राम
- युद्ध एवं गौ रक्षा हेतु शहीद वीरों के लिए बड़े–बड़े प्रस्तर खड़े किये जाते थे, जिसे वीरकल्ल / नाड़कुल कहा जाता था।
- उत्तर भारत से आने वाले ब्राह्मण वेदकुमार कहलाते थे।

### सामाजिक स्थिति

- संगम साहित्य के अध्ययन से हम तमिल देश की सामाजिक दशा के विषय में अच्छा ज्ञान प्राप्त होता है, इस समय तक दक्षिण भारत का आर्योकरण हो चुका था तथा उत्तर भारतीयों की परम्पराओं को इस काल के तमिलवासियों ने अपना लिया।

#### ➤ वर्ण व्यवस्था –

##### ✓ ब्राह्मण

- समाज में सर्वाधिक प्रतिष्ठित स्थान था।
- तमिल प्रदेश में ब्राह्मणों का उदय सर्वप्रथम संगम काल में ही हुआ।
- ब्राह्मणों का मुख्य कार्य अध्ययन–अध्यापन तथा यज्ञ–याज्ञन था।
- संगम युग के ब्राह्मण मांस भक्षण करते थे तथा मदिरा पीते थे। तत्कालीन समाज इन कार्यों को निन्दनीय नहीं समझता था।
- ब्राह्मण हत्या को सबसे बड़ा अपराध माना जाता था।

##### ✓ बेल्लार वर्ग

- संगम साहित्य के अनुसार उनका मुख्य उद्यम कृषि–कार्य था। इनमें कुछ धनी किसान थे। वे युद्ध में भाग लेते थे तथा उन्हें ही महत्वपूर्ण प्रशासनिक पदों पर नियुक्त किया जाता था।
- बड़े बेल्लारों के वैवाहिक सम्बन्ध राज धराने में स्थापित होता था।
- बेल्लारों का दूसरा वर्ग निर्धन किसानों का था, जिनके पास अपनी जमीन नहीं थी और वे धनी किसानों के खेतों पर मजदूरी करते थे।

##### ✓ वेनिगर

- इनकी सामाजिक प्रतिष्ठा अच्छी नहीं थी। उन्हें शूद्रों की कोटि में रखा गया था।
- यह व्यापारिक कार्यों से सम्बन्धित थे।

##### ✓ शूद्र

- 'पुलैयन' नामक दस्तकारों के एक वर्ग का उल्लेख मिलता है, जो रस्सी तथा पशुचर्म की सहायता से चारपाई एवं चटाई बनाने का कार्य करते थे।
- 'एनियर' नामक शिकारियों की एक जाति का उल्लेख मिलता है, साथ ही 'मलवट' नामक जाति का भी उल्लेख है जो लूट–पाट करती थी।
- समाज में अस्पृश्यता के साक्ष्य प्राप्त नहीं होते हैं।



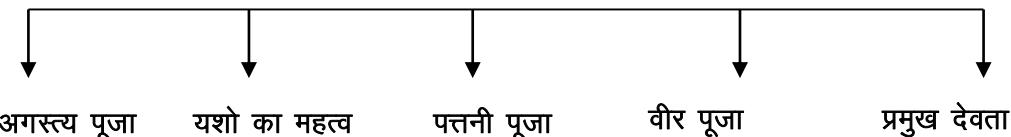


- ✓ स्त्रियों की स्थिति
- पितृसत्तात्मक समाज था, स्त्रियों की स्थिति निम्न थी
- समाज में वैश्यावृत्ति तथा सति प्रथा का प्रचलन था।
- संगम काल में विधवाओं की दशा अच्छी नहीं थी उनके लिए अनेक कड़े नियमों का विधान किया गया था। उनके बाल मुड़ा दिये जाते थे तथा उनके लिए बिस्तर का प्रयोग, आभूषण पहनना, अच्छा भोजन करना आदि वर्जित था।
- इसके पश्चात भी तमिल साहित्य में नच्चेलियर तथा ओवैयर जैसी कवयित्रियों की चर्चा हुई, जिससे स्पष्ट है कि इस काल में महिलाओं को शिक्षा का अधिकार था।
- ✓ दासों की स्थिति
- संगम काल में दास प्रथा का प्रचलन नहीं था।
  
- ✓ शिक्षा
- संगम काल में शिक्षा का अधिकार सभी वर्गों को प्राप्त था।
- साहित्य, विज्ञान, ज्योतिष, गणित, व्याकरण आदि विषयों की शिक्षा दी जाती थी।
- मंदिर शिक्षा के प्रमुख केन्द्र थे तथा गुरु दक्षिणा देने की प्रथा का प्रचलन था।
- ✓ खान—पान
- संगम युग के तमिल शाकाहारी तथा मांसाहारी दोनों प्रकार के भोजन करते थे, चावल उनका मुख्य खाद्यान्न था।
- मांसाहार का खूब प्रचलन था। यहाँ तक कि ब्राह्मण भी मांस खाते थे। भेड़, सुअर, मछलियों के खाये जाने का उल्लेख मिलता था।
- मदिरा तथा ताड़ी उनके प्रिय पेय था, लोग पान, सुपाड़ी के भी शैकीन थे।
- ✓ मनोरंजन के साधन
- संगीत, नृत्य तथा विविध प्रकार के वाद्यों द्वारा लोग मनोरंजन किया करते थे, नर्तक, नर्तकियों तथा गायकों के दल घूम—घूम कर लोगों का मनोरंजन करते थे, संगम साहित्य में इन्हें पाणर तथा विडेलियर कहा गया है।
- पासा खेलना एवं मुक्केबाजी, कुश्ती, कुत्तो, खरगोशों आदि का शिकार भी मनोरंजन का साधन था।
- अन्त्येष्टि संस्कार
- संगम काल में पूर्ण समाधिकरण, आंशिक समाधिकरण तथा अग्निदाह संस्कार का प्रचलन था।
- संगम साहित्य में शवदाह के बाद अस्थियों को कलश अथवा मंजूषा में रखकर समाधिस्थ भी करते थे।
- युद्ध आदि में वीरगति को प्राप्त योद्धाओं की समाधियों पर बड़े—बड़े प्रस्तर गाड़ने की प्रथा थी जिसे वीरकल्ल या नाडुकल कहते थे।
- संगम काल में अन्त्येष्टि सामग्रियों का भी साक्ष्य प्राप्त होता है।



## धार्मिक व्यवस्था

- संगम काल में प्रथमता' दक्षिण भारत में ब्राह्मण धर्म का प्रचलन दिखाई देता है। दक्षिण में प्रमुखता ब्राह्मण धर्म ही था। जिसे निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत समझ सकते हैं:-



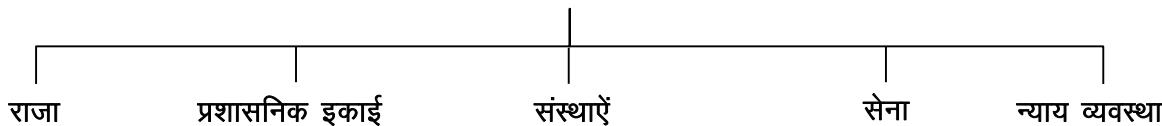
- अगस्त्य पूजा:-
- आगस्त्य पूजा दक्षिण में ले जाने का श्रेय अनुश्रुतियों में अगस्त्य ऋषि को दिया गया है।
- ऋषि अगस्त्य उनके 12 शिष्यों ने दक्षिण में बौद्धिक धर्म का प्रचार-प्रसार किया।
- कालान्तर में अगस्त्य पूजा, दक्षिण में प्रारंभ हुई, जो आज भी दक्षिण में व्यापक रूप से होती है।
- यशो का महत्व:-
- बौद्धिक धर्म के साथ ही दक्षिण में यशो का महत्व बढ़ा, विभिन्न शासकों ने बड़े-बड़े यशो का आयोजन करवाया।
- पाण्ड्य शासक पतशालै मुङ्कुड़मी यज्ञशाला बनवाने के लिए प्रसिद्ध था, साथ ही चोल शासक कटिकालन ने अश्वमेघ एवं राजसूय यज्ञ करवाएँ।
- पत्तनी पूजा:-
- चेर शासक शेनगुट्टवन ने दक्षिण में पत्तनीपूजा या कण्णगी पूजा प्रारम्भ की।
- पत्तनी सामान्यतः सुहागिन औरतों द्वारा अपने पति की आयु में वृद्धि हेतु किया जाता है।
- वीर पूजानाडुकल्ल पूजा:-
- ऐसे योद्धा, जो युद्ध में गयों की रक्षा करते हुए मृत्यु को प्राप्त होते हैं, उनके सम्मान में, बड़े-बड़े प्रस्तर लगाकर पूजने की परम्परा थी, ऐसे वृहद् प्रस्तरों का वीरकल्ल या नाडुकल्ल कहा जाता था।
- प्रमुख देवता:-
- संगम में बहुदेव वाद की परम्परा थी, दक्षिण भारतीय कई सारे देवता को पूजते थे, जो निम्न प्रकार हैं:-

  - मुरुगन:- संगम कालीन सर्वाधिक लोकप्रिय देवता, जिसे पहाड़ों पर क्रीड़ा करने वाला कहा जाता था।
    - ✓ प्रतीक चिह्न - मुर्गा
    - ✓ कालान्तर में इनका समारूपण कार्तिकेय के साथ कर दिया।
  - कुरवस:- मुरुगन की पत्नी
  - विष्णु पूजा
  - इन्द्र पूजा
  - कोरलै- विजय की देवी
  - मरियम्मा:- चेचक की देवी
  - येलम्मा- सीमा की देवी।



## संगमकालीन राजनैतिक व्यवस्था

- संगम कालीन राजनैतिक व्यवस्था कुल संघ पर आधारित थी, जिसकी जानकारी संगमकालीन साहित्य से प्राप्त होती है, जो निम्न प्रकार है –



- राजा –
  - राजा वंशानुगत के साथ–साथ, सभी प्रशासनिक शक्तियों का सर्वोच्च अधिकारी था।
  - राजपद सामान्यतः ज्येष्ठता पर आधारित था, किन्तु फिर भी उत्तराधिकार हेतु युद्ध के प्रमाण प्राप्त होते हैं, जैसे चोल राजकुमार नलगिल्ली तथा नेडुगिल्ली के मध्य युद्ध हुआ।
  - राजा के राज्याभिषेक की परम्परा नहीं थी, सिंहासनारोहण के समय एक उत्सव का आयोजन किया जाता था।
- प्रशासनिक इकाई
  - राष्ट्र को सामान्यतः मण्डल कहा जाता था, मण्डल को नाडू में विभाजित किया गया, तथा नाडू का निर्माण उर से मिलकर होता था, उर ग्राम में विभक्त थी।
- संस्थाएँ –
  - सबसे बड़ी प्रशासनिक संस्था नालवै थी, जो राजा की मुख्य राजसभा थी।
  - उर तथा ग्राम में भी अलग–अलग प्रशासनिक संस्थाएँ पाई जाती थी।
- सेना –
  - संगम शासक युद्ध प्रेमी थे, वे चक्रवर्ती सम्राट बनने की आंकड़ा रखते थे, जिसके लिये राजा शक्तिशाली सेना का निर्माण करते थे।
  - राजा की सेना चतुरंगिणी होती थी, जिसमें अश्व, गज, रथ तथा पैदल सेना शामिल थी।
  - वीरगति को प्राप्त सैनिकों के सम्मान में वृहद प्रस्तर लगाएं जाते थे, जिन्हे वीरकल्ल या नाडुकल्ल कहा जाता था।

नोट – करिकालन द्वारा जलसेना निर्माण का भी साक्ष्य प्राप्त होता है।

- कर व्यवस्था –
  - संगम कालीन कृषि तथा व्यापार वाणिज्य दोनों ही अत्यन्त विकसित में थे, अतः राज्य की आय का मुख्य आधार कर था।
  - भूमिकर – यह कुल का छठाँ भाग होता था, जो अनाज या नकद के रूप में लिया जाता था।
  - सीमा शुल्क एक अन्य कर की जानकारी प्राप्त होती थी।
- न्याय एवं दण्ड व्यवस्था –
  - राजा देश का प्रधान न्यायाधीश था, राजा के न्यायालय को मन्त्रम् कहा जाता था, जो सुनवाई का अंतिम न्यायालय होता था।
  - इस काल में दण्ड विधान अत्यन्त कठोर था, मृत्युदण्ड, कारावास तथा आर्थिक जुर्माना आदि विविध रूपों में दण्ड प्रदान किया जाता था।
  - भीषण यातनायों के साथ–साथ, चोरी तथा व्यभिचार पर मृत्युदण्ड तथा झूठी गवाही देने पर जीभ काट ली जाती थी।

## आर्थिक दशा

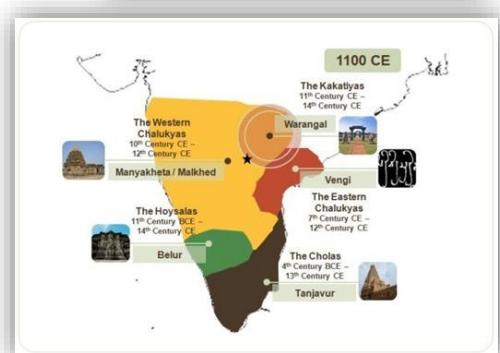
- संगम साहित्य से तत्कालीन आर्थिक दशा के विषय में जानकारी मिलती है। इस युग का तमिल देश आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध था इसकी समृद्धि का मुख्य आधार कृषि, उद्योग तथा व्यापार था।
- कृषि
  - दक्षिण भारत की भूमि अत्यन्त उपजाऊ थी, जिनमें अनाज की बड़ी अच्छी पैदावार होती थी, कावेरी नदी डेल्टा वाला प्रदेश अपनी उर्वरता के लिए प्रसिद्ध था।



- संगम साहित्य में धान, रागी तथा गन्ने की पैदावार का वर्णन मिलता है, साथ ही कटहल, गोल मिर्च, हल्दी आदि का उत्पादन होता है।
  - इस काल में किसानों को बेल्लार कहा जाता था। समाज की निम्न वर्ग की महिलायें ही मुख्यतः खेती का कार्य किया करती थीं इन्हें "कड़सिविर" कहा गया।
  - कृषि में लौह के उपकरणों का प्रयोग भी कृषि में वृद्धि का कारण बना।
  - सिंचाई हेतु राज्य कुँओ, तालाबों तथा नहरों का निर्माण करवाते थे।
- उद्योग
- वस्त्र उद्योग इस काल का एक मुख्य उद्यम था सूत रेशम आदि से वस्त्रों का निर्माण होता था।
  - उरैयूर तथा मदुरै सूती वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध थे।
  - सूत कातने का कार्य स्त्रियाँ करती थीं, इस काल में बेलबूटेदार रेशमी कपड़ों का निर्माण भी होता था।
  - सूती कपड़ों के विषय में कहा गया है कि वे सांप के केंचुल या भाप के बादल के समान महीन होते थे।
  - वस्त्र उद्योग के अतिरिक्त रस्सी बनाना, हाथी दाँत की वस्तुएँ बनाना, जहाज निर्माण तथा सोने के आभूषण बनाना तथा समुद्र से मोती निकालने का कार्य भी किया जाता था।
  - पाण्ड्यों का कोल्यू या कोर्कई बन्दरगाह मोती निकालने के लिए प्रसिद्ध था।
- व्यापार
- संगम काल में आन्तरिक तथा बाह्य-व्यापार का चलन था, आन्तरिक व्यापार मुख्यतः : वस्तु विनियम प्रणाली पर आधारित था, तथा बाह्य व्यापार मुख्यतः रोम, अरब, मिस्त्र तथा दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों के मध्य होता था।
  - संगम कालीन राज्य काली मिर्च, हाथी दाँत औषधियों, मोती तथा सूत्री वस्त्र का निर्यात तथा मदिरा, स्वर्ण आदि का आयात करते थे।
- मुद्रा व्यवस्था
- संगम काल में तांबे, चाँदी आदि के आहत मुद्राओं का चलन था।

## बादामी / वातापी के चालुक्य

- बादामी : बीजापुर (कर्नाटक)
- प्रारंभिक दो शासक जयसिंह तथा रणराज थे।
- ❖ **पुलकेशिन – I** – वास्तविक संस्थापक  
उपाधि – श्री पृथ्वीवल्लभ तथा श्री बल्लभ
- कीर्तिवर्मन
- मंगलेश
- **पुलकेशिन – II**  
उपाधि – सत्यश्रय श्री पृथ्वीवल्लभ महाराज
- इसने पल्लवनरेश महेन्द्रवर्मन को पराजित किया।
- इसका एक युद्ध नर्मदा नदी के किनारे हर्षवर्धन से हुआ तथा हर्षवर्धन को पराजित किया (एहोल अभिलेख), इस विजय के उपलक्ष्य दक्षिणापथेश्वर तथा परमेश्वर की उपाधि धारण की।
- इसका एक युद्ध पल्लव नरेश नरसिंहवर्मन से हुआ जिसमें पुलकेशिन-II बुरी तरह पराजित हुआ, इस विजय के उपलक्ष्य में नरसिंहवर्मन ने वातापीकोण्ड की उपाधि धारण की।
- पुलकेशिन – II ने ईरान के शासक खुसरो –II के पास अपना राजदूत भेजा।





- अजंता की गुफा नं. 1 के एक भित्ति-चित्र में ईरान के दूतमंडल को पुलकेशिन-II के समुख अपना परिचय-पत्र पस्तुत करते हुए दिखाया गया है।
- इसने शासनकाल में चीनी यात्री ह्वेनसांग ने इसके राज्य में भ्रमण किया।
- इसने अपने विशाल साम्राज्य का एक भाग अपने भाई विष्णुवर्धन को दे दिया था, जिसने कालांतर में एक स्वतंत्र राजवंश बैंगी के चालुक्यों की स्थापना की।

### ❖ विक्रमादित्य – I

- इसने वावामी को पल्लवों से पुनः वापस छीना।
- इसे तीन समुद्रों के बीच की भूमि का स्वामी कहा जाता था।

### ❖ विनयादित्य – उपाधि – भट्टारक, राजाश्रय, युद्धमल्ल

### ❖ विक्रमादित्य – II –

- इसने पल्लव नरेश नंदि वर्मन को पराजित किया और कांचिनकोड़ की उपाधि धारण की।
- इसी के शासनकाल में अरब आक्रमण को इसके भतीजे पुलकेशिन ने विफल किया। जिससे प्रसन्न होकर विक्रमादित्य-II ने पुलकेशिन को 'अवनिजनाश्रय' की उपाधि दी।

### ❖ कीर्तिवर्मन – II – अंतिम शासक

- इसके सामंत दंतिदुर्ग ने इसका अंत कर राष्ट्रकूट वंश की स्थापना की।
- वादामी के चालुक्यों के शासनकाल में मंदिर निर्माण की शैली वेसर की उत्पत्ति हुई।

## वेंगी चालुक्य

- राजधानी – पिष्टपुर या पीठपुरम (आंध्रप्रदेश)
  - द्वितीय राजधानी – वेंगी (आंध्रप्रदेश)
- ❖ संस्थापक – विष्णुवर्धन –**
- पुलकेशिन द्वितीय का भाई।
- पुलकेशिन-II की मृत्यु के पश्चात् विष्णुवर्धन ने स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया।

## राष्ट्रकूट वंश

- मान्य खेत – राजधानी

### ❖ संस्थापक

- दंतिदुर्ग –
- इसने उज्जैन हिरण्यगर्भ नामक महायज्ञ का आयोजन किया।



### ❖ कृष्ण प्रथम –

- ऐलोरा में सुप्रसिद्ध कैलाशनाथ मंदिर का निर्माण करवाया।
- उपाधि – राजाधिराज परमेश्वर

### ❖ ध्रुव –

- उपाधि – धारावर्ष
- त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लेकर प्रतिहार नरेश वत्सराज तथा पाल नरेश धर्मपाल को पराजित किया।

**प्राचीन भारतीय इतिहास : भाग - 23**

**राष्ट्रकूट वंश का इतिहास**

- दंतिदुर्ग
- कृष्ण प्रथम
- ध्रुव
- गोविंद तृतीय
- अमोघवर्ष
- कृष्ण तृतीय

मान्यखेत के राष्ट्रकूट साम्राज्य का क्षेत्र

Notes + Question Answer

NewFeatureBlog.com

**❖ गोविन्द – III –**

- इसने 'त्रिपक्षीय संघर्ष' में भाग लेकर चक्रायुध एवं उसके संरक्षक धर्मपाल तथा प्रतिहार शासक नागभट्ट द्वितीय को हराया।
- इसने पल्लव, पाण्ड्य, केरल एवं गंगो के संघ को नष्ट किया।
- गोविंद तृतीय ने पालो से मालवा छीनकर अपने एक अधिकारी परमार वंश के उपेन्द्रराज को दे दिया।

**❖ अमोघवर्ष –**

- जैन मतानुयायी
- इसने कविराज मार्ग तथा प्रश्नोत्तर मालिका की रचना कन्नड भाषा में की।
- इसके दरबार में अरबी यात्री सुलेमान आया था।

**❖ दरबारी विद्वान –**

- a. जिनसेन (जैन)– आदिपुराण, हरिवंश
- b. महावीरा चार्य – गणितसार संग्रह
- c. शाक्तायान – अमोघवृत्ति

**❖ कृष्ण – II**

- चोल शासको द्वारा परास्त
- प्रतिहारो द्वारा परास्त

**❖ इन्द्र – III**

- इसने पाल शासक देवपाल को पराजित किया तथा प्रतिहार शासक महिपाल को पराजित कर कन्नौज पर अधिकार कर लिया।
- इसने समय अरबी यात्री अल-मसूदी भारत आया था।

**❖ कृष्ण – III**

- चोल शासक परान्तक – I को पराजित तक्कोलम के युद्ध में
- उपाधि – कांचीयुम तंजेयमकोँड
- इसने गंगो की सहायता से चोलो से कांची तथा तंजाबुर छीन लिया था।

**❖ खोटिक –**

- इसके शासनकाल मे सीयक परमार ने राष्ट्रकूटो की राजधानी मान्यखेत को पूर्णतः ध्वस्त कर दिया।

**❖ कर्क (भतीजा – खोटिक) –**

- कल्याणी के चालुक्य नरेश तैलप-II ने इसे पराजित कर कल्याणी के चालुक्य की नीव डाली।

**अन्य तथ्य –**

- अरब लेखको ने राष्ट्रकूट वंश को बलहरा (बल्लराज) कह कर संबोधित किया है।



## कल्याणी के चालुक्य

### ❖ तैलप – II

- संस्थापक
- इसने राष्ट्रकृत वंश का अंतिम शासक कर्क की हत्या कर कल्याणी में चालुक्य वंश की स्थापना की।
- इसने गंग नरेश पंचालदेव को पराजित कर पांचलमर्दन—पंचानन की उपाधि धारण की।

### ❖ सत्याश्रय –

- इस पर चोल राजा राजराज – I ने आक्रमण कर इसे पराजित किया।
- इसने कन्नड़ कवि गदायुम्द्ध को संरक्षण प्रदान किया।

### ❖ विक्रमादित्य पंचम –

- इसकी बहन अकुकादेवी का अभिलेखो में उल्लेख मिलता है, जो किसुकांड राज्य की शासिका थी।?

### ❖ जयसिंह – II –

- इसके शासनकाल मे भोजपरमार, कल्युरि राजा गांगेयदेव तथा चोल शासक राजेन्द्र चोल ने संघ बनाकर आक्रमण किया किन्तु वे असफल रहे।
- राजेन्द्र चोल को तैलप वंश का उन्मूलक कहा गया है।

### ❖ सोमेश्वर – I –

- इस पर राजेन्द्र चोल के पुत्र राजाधिराज तथा पोत्र राजेंद्र – II ने आक्रमण कर पराजित किया जिससे कुपित होकर सोमेश्वर—I ने तुंगभद्रा नदी मे झूबकर आत्महत्या कर ली।

### ❖ विक्रमादित्य षष्ठ –

- इसने अपने राज्यरोहण के उपलक्ष्य में चालुक्य – विक्रम संवत चलाया।
- इसका राजकवि विल्हण ने विक्रमांकदेवचरित लिखा।
- इसके एक अन्य दरबारी विज्ञानेश्वर थे, जिन्होने याज्ञवलक्य स्मृति पर मिताक्षरा लिखी।
- सोमेश्वर – III ने मानसोल्लस नामक ग्रंथ लिखा।



## पल्लव वंश

- मूल क्षेत्र – टोण्डमण्डलम्
- पल्लव अभिलेखो में इन्हे भारद्वाजगोत्रीय तथा अश्वत्थामा का वंशज कहा गया।
- तालगुण्ड अभिलेख में इन्हें क्षत्रिय बताया गया।

### ❖ शिवसकन्द वर्मन –

विष्णुगोप – समुद्रगुप्त का दक्षिणापथ अभियान

### ❖ सिंहविष्णु – वास्तविक संस्थापक

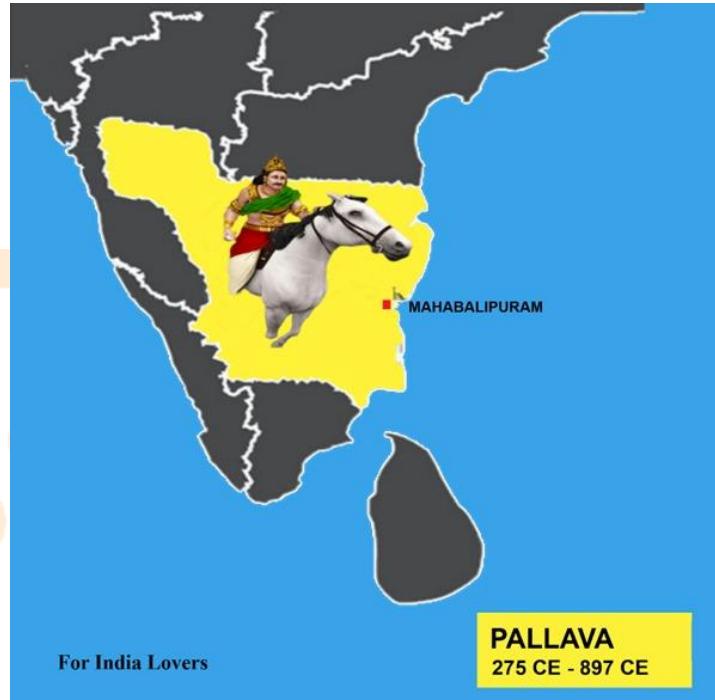
- उपाधि – अवनि सिंह

- माम्मलपुरम का आदिवराह गुहा मंदिर का निर्माण
- दरबारी –  
भारवि – किरातार्जुनीयम

### ❖ महेन्द्रवर्मन – I

उपाधि – विचित्रचित्त, मत्त विलास, गुणभर, शत्रुमल्ल

- इस पर पुलकेशिन – II ने आक्रमण कर इसे पराजित किया।
- इसने मत्तविलास प्रहसन नामक ग्रंथ की रचना की।
- भगवदज्ञुकीयम नामक ग्रंथ
- यह अप्पार नामक नयनार संत के प्रभाव में आकर शैव बन गया।
- इसने महेन्द्रवर्मन शैली का विकास किया।



### ❖ नरसिंहवर्मन प्रथम

- उपाधि – महामल्ल
- महामल्लपुरम (महाबलीपुरम) नामक नगर की स्थापना।
- महाबलीपुरम के रथ मंदिरों का निर्माण करवाया, जिनकी संख्या 7 है, इन्हे सप्तरथ मंदिर या सप्तपैगोड़ा भी कहते हैं।
- इन मंदिरों में सबसे बड़ा धर्मराज मंदिर एवं सबसे छोटा द्रौपदी मंदिर था।
- इसने मंदिर निर्माण की नवीन शैली मामल्ल शैली को प्रारंभ किया।
- इसने चालुक्य नरेश पुलकेशिन – II को हराया।
- इसके राज्यकाल में व्वेनसांग ने काँची की यात्रा की, व्वेनसांग ने पल्लव प्रदेश को रत्नों का आकार कहा है।

### ❖ महेन्द्रवर्मन – II

- चालुक्य शासक विक्रमादित्य से पराजित होकर मृत्यु को प्राप्त।

### ❖ परमेश्वर वर्मन – II

- चालुक्य शासक विक्रमादित्य से पराजित।
- महाबलीपुरम का प्रसिद्ध गणेश मंदिर बनवाया।
- उपाधि – विधाविनोद पल्लव महेश्वर

### ❖ नरसिंहवर्मन – II (राजसिंह)

- उपाधि – आगमनप्रिय, बाधविधाधर, वीणानारद
- इसने कैलाशनाथ मंदिर (राजसिंदेश्वर) का निर्माण



- ऐरावतेश्वर मंदिर का निर्माण
- दशकुमारचरित का लेखक दण्डन इसी के दरबार में था।
- इसने मंदिर निर्माण की नयी शैली राजसिंह शैली का प्रारंभ की।



परमेश्वर – II – विक्रमादित्य – II ने पराजित किया।



नंदीवर्मन – II

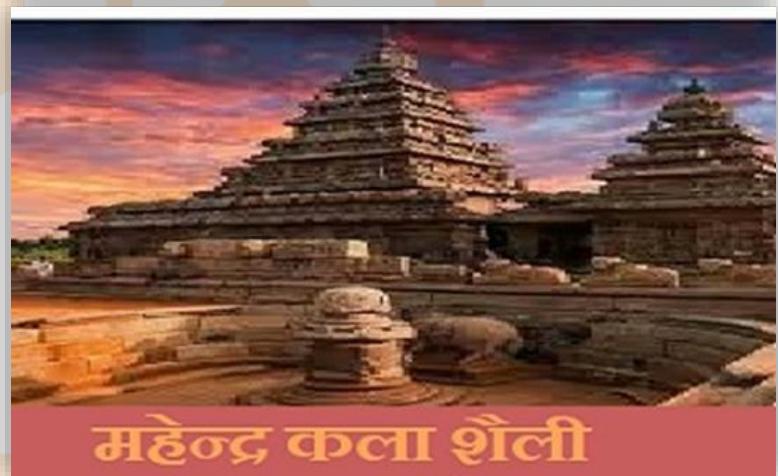
- इसके शासनकाल में पल्लव-राष्ट्रकूट संघर्ष प्रारंभ हुआ।

### नंदीवर्मन – III

- इसके राजाश्रय में तमिल कवि परेन्द्रवनार रहते थे जिन्होने महाभारत का तमिल अनुवाद 'भारत वेणवा' नाम से किया।
- इस वंश का अंतिम शासक अपराजित वर्मन जिसकी हत्या चोल शासक आदित्य–I ने कर दी।

### पल्लवकालीन कला एवं स्थापत्य

- पल्लव शासकों को श्रेय दिया जाता है कि उन्होंने स्थापत्य कला को कन्द्रा एवं काष्ठ कला से मुक्त किया।
- पल्लव शासकों के अंतर्गत स्थापत्य की चार शैलियाँ विकसित हुईं।
- प्रथम दो शैलियाँ महेन्द्रवर्मन एवं महामल्ल शैली में मन्दिर पहाड़ों को काटकर बनाए गये।
- राजसिंह एवं अपराजित शैली के मन्दिर इमारती मन्दिर अथवा स्वतंत्र रूप से बनाए गए मंदिर थे।



**महेन्द्र कला शैली**

#### ➤ महेन्द्रवर्मन शैली –

- इस शैली का विकास पल्लव नरेश महेन्द्रवर्मन के शासन काल में हुआ
- इस शैली में पहाड़ों को काटकर मण्डपों का निर्माण किया जाता था। ये मण्डप मंदिर साधारण स्तम्भयुक्त बरामदे थे, जिनकी पिछली दीवार में एक या अधिक कक्ष बनाए गये थे।
- उनके पार्श्व में गर्भगृह होता था। शैव मण्डप के गर्भगृह में लिंग तथा वैष्णव मण्डप के गर्भगृह में विष्णु की प्रतिमा स्थापित रहती थी।
- मण्डप मन्दिरों के बाहर बने मुख्य द्वार पर द्वारपालों की मूर्तियाँ मिलती हैं।
- उदाहरण पल्लवरम् का पंचपाण्डव मंदिर, मण्डगपट्टु का त्रिमूर्ति मण्डप मंदिर, वराह मंदिर, महेन्द्रवाड़ी का महेन्द्रविष्णु गृहमण्डप मंदिर आदि।

#### ➤ मामल्ल शैली –

- इस शैली का विकास पल्लव शासक नरसिंहवर्मन – प्रथम के काल में हुआ।





- इस शैली में मण्डप प्रकार के मन्दिरों के साथ-साथ रथ प्रकार के मन्दिरों का भी विकास हुआ। रथ प्रकार के मन्दिरों में प्राकृतिक चट्टानों को काटकर जिन एकाशमक रथ आकार के मन्दिरों का निर्माण किया उन्हें रथ मन्दिर कहा गया।
- उदाहरण – महाबलीपुरम के रथ मन्दिर –
- धर्मराज रथमन्दिर, भीम, अर्जुन, नकुल-सहदेव, द्रोपदी रथ मन्दिर एवं गणेश, पितारि, बलैयकुट्टै रथ मन्दिर प्रमुख हैं।
- सबसे बड़ा रथ मन्दिर – धर्मराज रथ मन्दिर
- सबसे छोटा रथ मन्दिर – द्रोपदी रथ मन्दिर
- द्रोपदी रथ मन्दिर को छोड़कर बाकी सात मंदिर सप्त पैगौड़ा मन्दिर कहा जाता है।

#### ➤ राजसिंह शैली –

- इस शैली का विकास पल्लव नरेश नरसिंहवर्मन द्वितीय (राजसिंह) के समय हुआ।
- इस शैली में मन्दिरों का निर्माण पहाड़ों को ना काटकर बल्कि पत्थरों तथा ईंटों की सहायता से स्वतन्त्र रूप (ईमारती) के मन्दिर की तरह हुआ।
- राजसिंह शैली में द्रविड़ शैली की सभी विशेषता जैसे – प्रांगण, गोपुरम, स्तम्भयुक्त मण्डप, विमान आदि देखने को मिल जायेगी।
- उदा. कांचीपुरम का कैलाश मन्दिर तथा महाबलीपुरम के तटीय (शोर) शिव मन्दिर।

#### ➤ नन्दिवर्मन शैली / अपराजित शैली –

- इस शैली में अपेक्षाकृत छोटे मंदिरों का निर्माण हुआ जिनमें प्रमुख है – कांची स्थित मुक्तेश्वर मन्दिर एवं मातंगेश्वर मन्दिर का निर्माण किया गया।
- इस शैली का विकास नन्दिवर्मन के शासन काल में हुआ।
- इस शैली में अपेक्षाकृत छोटे मंदिरों का निर्माण हुआ जिनमें प्रमुख है – कांची स्थित मुक्तेश्वर मन्दिर एवं मातंगेश्वर मन्दिर का निर्माण किया गया।
- इन मन्दिरों में स्तम्भयुक्त मण्डप तथा वृत्ताकार शिखर प्राप्त होते हैं।





## चोल साम्राज्य – राजधानी – तंजौर

### ❖ विजयालय –

- नरकेसरी – उपाधि
- पल्लवों का सामंत

### ❖ आदित्य - I

- इसने पल्लवनरेश अपराजित वर्मन को पराजित किया तथा चोलों को स्वतंत्र किया
- इसने गंगो तथा पाण्ड्यों को पराजित कर मदुरैकोण्ड की उपाधि धारण की।



### ❖ परान्तक – I

- इसने पाढ़यो तथा श्रीलंका के शासक को पराजित किया
- इसे राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण – III ने तक्कोल्लम के युद्ध में पराजित किया।
- परान्तक – I ने भूमि का सर्वेक्षण करवाया
- इसके उत्तरमेरुर अभिलेख से चोलों के स्थानीय प्रशासन की जानकारी प्राप्त होती है।

### ❖ परान्तक – II

- इसे सुन्दरचोल के नाम से जाना जाता है।

### ❖ राजराज – I – अरमोलिवर्मन

- इसने अपने पितामह की तरह लौह एवं रक्त की नीति अपनाई।
- ✓ विजय –
- ❖ चेर शासक – भास्कर वर्मन – पराजित
- ❖ पांड्य शासक – अरमभुजंग – पराजित
- ❖ श्री लंका शासक – महेन्द्र पंचम – पराजित
- इसने श्रीलंका पर आक्रमण कर उत्तरी श्रीलंका को विजित किया तथा श्रीलंका की राजधानी अनुराधापुर को नष्ट कर दिया, तथा उत्तरी श्रीलंका का नाम मामुण्डीचोलमण्डलम् रखा।
- उपाधि – शिवपादशेखर, रविकुल माणिक्य, मुम्माडिचोलदेव चोलमार्तंड
- इसने तन्जौर में वृहदेश्वर मन्दिर / राजराजेश्वर मन्दिर का निर्माण करवाया।
- इसने अपना एक दूत मण्डल चीन भेजा था।

### ❖ राजेन्द्र – I

- इसने श्रीलंका पर आक्रमण कर वहां के राजा महेन्द्र पंचम को पराजित कर सम्पूर्ण श्रीलंका को विजित किया।
- इसने गंगो, चेरो, पाँड्यों तथा शैलेन्द्र शासक विजयोतुगर्वमन को पराजित किया।
- इसने गंगा को पार कर महिपाल को पराजित किया तथा गंगैकोण्डचोल की उपाधि धारण की।
- इसने गंगैकोण्डचोलपुरम् नामक नई राजधानी बसाई।
- इसने चोलगंगम नामक एक नये तालाब की निर्माण करवाया।
- इसे पंडितचोल भी कहते हैं।
- इसके गुरु का नाम इसानशिव था।
- इसके समय बंगाल की खाड़ी को चोलों की झील कहने लगे थे।



❖ राजाधिराज – I

- चोल–चालुक्य संघर्ष प्रारंभ

❖ कुलोतुंग – I

- इसने चालुक्य नरेश विक्रमादित्य VI को हराया।

❖ कुलोतुंग – II

- इसने चिदम्बरम् मंदिर में स्थित गोविन्दराज की मूर्ति को समुद्र में फिकवा दिया, जिसे बाद में प्रसिद्ध वैष्णव सन्त रामानुजाचार्य ने पुनः प्राण–प्रतिष्ठित करवाया।

❖ राजेन्द्र – III

- यह अन्तिम चोल शासक था।
- चोलकाल में उच्च श्रेणी के अधिकारियों को पेरुन्दनम् तथा निम्न श्रेणी के अधिकारियों के शिरुन्दनम् कहा जाता था।
- प्रान्तीय प्रशासन –
- मण्डलम् – वलनाडु (कोट्टम) – (नाडू – कुर्म – ग्राम)



**चोल प्रशासन**

**चोल कालीन प्रशासनिक व्यवस्था**

- चोल संस्कृति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष उसकी शासन व्यवस्था है, चोल सम्राटों ने एक विशेष शासन व्यवस्था का निर्माण किया जिसमें प्रबल केन्द्रीय नियंत्रण के साथ ही साथ बहुत अधिक मात्रा में स्थानीय प्रशासन भी थी जिन्हे हम निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत देख सकते हैं।
  - सम्राट – चोल शासन का स्वरूप का राजतंत्रात्मक ही था, जिसके समस्त अधिकार राजा में निहित थी।
  - किन्तु राजा की शान–शौकत में पहले से अधिक वृद्धि राजप्रसाद में हुई।
  - राजा के पद का देवीयकरण हो चुका था, क्योंकि चोल राजाओं की प्रतिमाओं के रूप में पूजा की जाती थी उदाहरण के लिए तन्जौर के एक मंदिर में परान्तक एवं राजेन्द्र चोल की प्रतिमा प्राप्त होती है।
  - राजा कानून का निर्माता न होकर सामाजिक नियमों एवं व्यवस्था का प्रतिपालक था, वह सदैव राजगुरुओं की परामर्श से ही कार्य करता था।
  - सम्राट प्रायः अपने जीवन काल में ही युवराज का चुनाव कर लेता था।
- प्रशासनिक अधिकारी
  - चोल प्रशासन को चलाने के लिए एक सुव्यवस्थित अधिकारी तन्त्र था केन्द्रीय अधिकारी दो श्रेणियों में विभाजित थे – पेरुन्दनम् (उच्च अधिकारी), शिरुन्दनम् (निम्न श्रेणी के अधिकारी)।
  - उडनकुट्टम नामक अधिकारी का भी उल्लेख मिलता है, जो सदैव राजा के साथ ही रहते थे, नीलकंठ शास्त्री के अनुसार उडनकुट्टम का कार्य राजा तथा अन्य अधिकारियों के मध्य सामंजस्य बैठाना था।
  - अधिकारियों को वेतन के स्थान पर भूमिखण्ड दिये जाते थे, यह पद वंशानुगत थे।
- प्रान्तीय प्रशासन
  - चोल साम्राज्य के प्रान्तों में विभाजित किया था, प्रान्तों का मण्डलम् कहा जाता था, जिसका शासन प्रायः राजकुमार ही संभालता था।
  - मण्डलम् के शासक के पास अपनी सेना तथा न्यायालय होते थे, प्रत्येक मण्डलम् में एक केन्द्रीय अधिकारी रहता था, जिसका कार्य प्रान्तीय प्रशासन पर नजर रखना था।



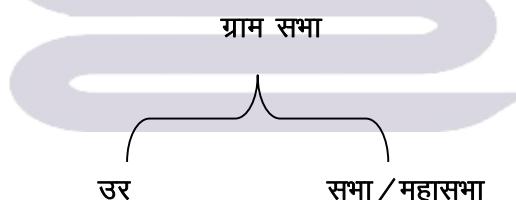
- मण्डलम् को वलनाडु कोडूम मे विभाजित करते तथा प्रत्येक वलवाडु मे कई नाडु (जिला) थी। नाडु की संस्था को नट्टार कहते। जिसका कार्य भू-राजस्व वसूलना था।
- नाडु का विभाजन कुरम (ग्रामो का समूह) मे था।
- सबसे छोटी प्रशासनिक संस्था ग्राम थी।
- नगर प्रशासन
- व्यापारिक नगरो मे 'नगरम्' नामक व्यापारियो की एक सभा होती थी।
- व्यापारिक श्रेणियों को राज्य की ओर से मान्यता प्राप्त होती थी, तथा वह श्रेणियाँ अपनी सुरक्षा के लिए अपनी सेना भी रखती थी।
- राजस्व प्रशासन
- राज्य की आय का प्रमुख साधन भू-राजस्व था, भू-राजस्व या लगान को कदमाई कहा जाता था।
- भू-राजस्व कुल उत्पादन का 1/3 भाग थी, यह नगद या अनाज के रूप मे ली जाती थी। चोल शासन भूमि कर के अतिरिक्त व्यापार कर तथा निकटवर्ती क्षेत्रो मे लूटकर से भी अपनी आय बढ़ाते थे।
- सैन्य संगठन
- राजा ही सैन्य संगठन का प्रमुख था, सेना गुल्य एवं छावलियों (कड़गम) मे रहती थी, सेना की टुकड़ी का नेतृत्व करने वाला नायक तथा सेनाध्यक्ष महादण्डनायक कहलाता था।

(NOTE- चोलो ने जल सेना पर विशेष बल दिया था।)

- न्याय एवं दण्ड व्यवस्था
- स्थानीय निगम न्याय का कार्य करते थे, चोल अभिलेखो मे न्याय समीतियों का उल्लेख मिलता है, जिसे 'न्यायात्तर' कहा गया है, न्याय का अन्तिम न्यायालय राजा का न्यायालय था।
- दण्ड व्यवस्था उदार थी, जैसे— जघन्य अपराधों के अतिरिक्त अन्य अपराधो मे आर्थिक दण्ड अथवा सामाजिक अपमान करने का दण्ड दिया जाता था।
- मृत्यु दण्ड प्रायः हाथी के पैरो के नीचे कुचलवाकर दिया जाता था।

## चोलो का ग्रामीण प्रशासन

- दक्षिण भारत मे स्थित चोल साम्राज्य की मुख्य विशेषता उनका स्थानीय प्रशासन था। इसकी जानकारी हमें परान्तक-प्रथम के उत्तरमेरुर अभिलेख से मिलती है।
- ग्राम स्वशासन की एक पूर्ण इकाई थी, जिसके प्रशासन मे राजा का कोई हस्तक्षेप नहीं होता था। इसका प्रशासन ग्रामवासी स्वयं समितियों के माध्यम से करते थे।

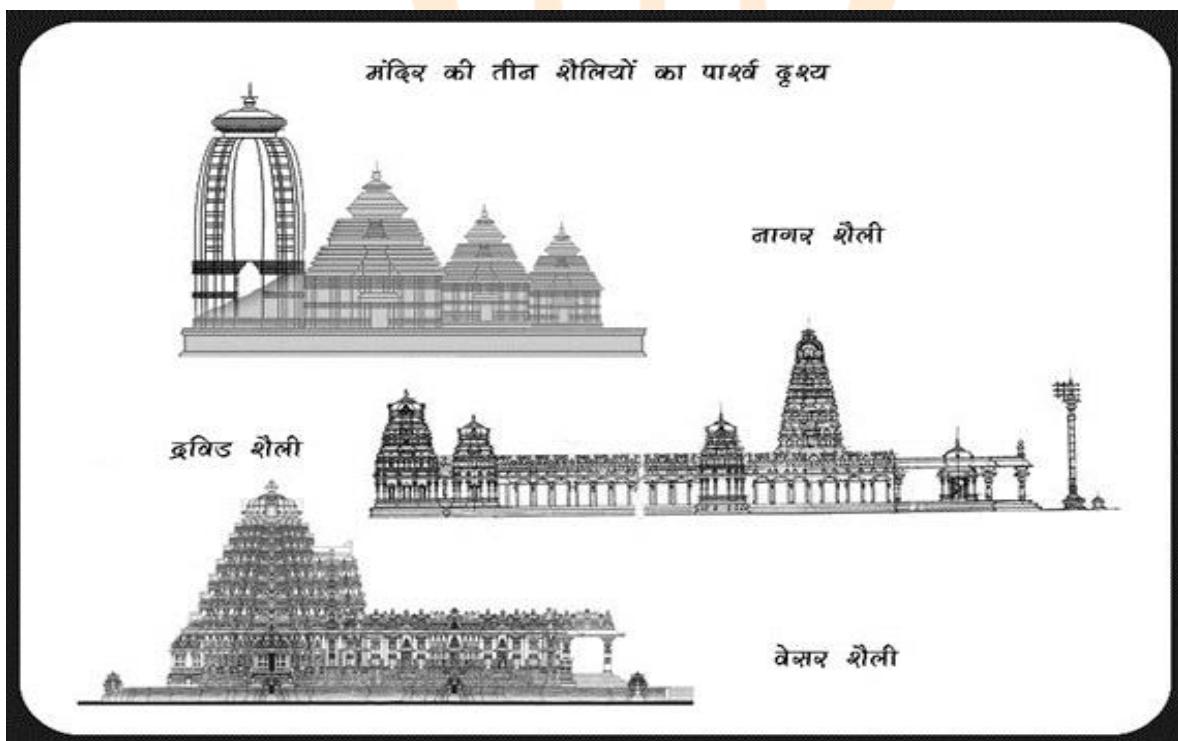


- साधारण गांवों की सभा मे सभी ग्रामीण भाग लेते थे।
- उत्तर की कार्यसमिति अलुंगानम या गणम् थी।
- इसके मुख्य कार्य कर वसूलना, तालाब एवं वाटिकाओं का निर्माण आदि है।
- महासभा / सभा
- ब्रह्मदेय/अग्रहारा ग्राम के विद्वान ब्राह्मण इसमे भाग लेते।
- उनकी कार्यसमिति को 'वारियम' कहा जाता था। ये निर्वाचित सदस्यों से बनी समितियाँ थीं।



क्र.	प्रमुख वारियम	कार्य विभाग	सदस्य
1-	टोट्ट वारियम	उद्यान समिति	6 सदस्य
2-	एरीवारियम	तालाब समिति	6 सदस्य
3-	पोन्वारियम	स्वर्ण समिति	
4-	संवत्सर वारियम	विभिन्न समितियों पर नियंत्रण देखरेख	12 सदस्य
5-	उदासीन वारियम	दूसरे गांवों से संबंध देखरेख (विदेश संबंध)	
6-	कोयिल्वारियम	मंदिरों के कार्यों की देखरेख	

- निर्वाचन की प्रक्रिया एवं योग्यताएँ
- अभिलेख के अनुसार वेरियम के सदस्य निर्वाचित होते थे।
- प्रत्येक ग्राम को आम तौर पर 30 वार्डों में विभाजित किया जाता था जिन्हें कुडुम्बस कहा जाता था और चुनावी मतपत्रों को कुडुवोलाई कहा जाता था।
- सदस्य सामान्यतः 1 वर्ष के लिए चुना जाता था जिसकी योग्यताएँ –
  1. 35 से 70 वर्ष की आयु के लोग
  2. जिनके पास स्वयं की भूमि ( $1/4$  वेली या डेढ़ एकड़ से ज्यादा जमीन) है।
  3. जो वेद या उसके भाष्य का ज्ञाता हो।
  4. जिनके पास निजी आवास हो।
- समितियों के सदस्यों के लिए कुछ अयोग्यताएँ भी थीं।
  1. जो पिछले 3 वर्षों में किसी समिति का सदस्य रहा हो।
  2. जिसने सदस्य के रूप में आय-व्यय का विवरण अपने विभाग को न दिया हो।
  3. भयंकर अपराधों में दोषी घोषित हो, वह निर्योग्य होगा।



# FOUNDERS



DINESH SIR

SANJEEV SIR

ADITYA SIR

PANKAJ SIR

(POLITY & SOCIOLOGY)

(HISTORY & MP CULTURE)

# MANAGEMENT



BRAJDEEP SIR



O.P. RATHORE SIR  
Maths

# TEAM OF TEACHERS



RAVINDRA SIR  
Science & Tech



KULDEEP SIR  
Paper 3rd & 4th



MALKEET SIR  
Geography Maping



VIJAY SIR  
Polity



AJEEET SIR  
Paper 1st & 2nd Mentor



DHARMENDRA SIR  
Paper 3rd & 4th Mentor



B.D. SIR  
MPGK



AMRISH SIR  
Paper 2nd Mentor



ANSHUL SIR  
History



AMIT SIR  
Hindi



ARUN SIR  
Ethics



MAYANK SIR  
Hindi

9893442214, 7524821440, 7970002214

INDORE BRANCH 1 - 3<sup>rd</sup> Floor Sundaram Complex Bhawarkua, Indore

INDORE BRANCH 2 - 160/3 1<sup>st</sup> Floor Near Vishnupuri I-Bus Stop, Bholaram Indore

GWALIOR BRANCH - 3<sup>rd</sup> Floor Infront Of Bank Of Baroda Near Sai Baba Mandir, Phoolbag, Gwalior